the public now demands One step further may we not hope that a new school of sculpture will arise in India inspired by new ideas but based on the study of the best forms produced by Indian artists in the past This requires not only a generation of eager artists but also a public that can, in various degrees, appreciate their work and is willing to support it and give it a place of honour. As a contribution towards that end, this work of Dr. Sita Ram seems to me to deserve the congratulations of the Hindi reading public and all lovers of the Arts

Lahore
20 2 1933

A. C. Woolner

प्राक्कथन

डाक्टर के० एन० सीताराम बाल्यकाल से ही वाल्मीकि की महती रामायणीय कथा के अनुरक्त श्रोता और अध्येता रहे हैं। व्यवसाय और शिक्षा दोनों ही से आप भारतीय कलाओं, विशेष करके प्रतिमा शिल्प, के अध्येता और समालोचक की कोटि में स्थान ग्रहण कर चुके हैं और वृहद्‌भारत में इस शिल्प के विकास से, विशेष करके जावा में उपलब्ध रामायणीय कथाओं के विसमयावह प्रदर्शनों से, बहुत ही प्रभावान्वित हुए हैं। इस छोटी सी पुस्तक में आपने यह दिखाने का प्रयास किया है कि प्राम्बनम् के विशाल मन्दिर के तक्षण पटलों के द्वारा रामायण को कैसे विशद रूप से प्रदर्शित किया गया है। पुस्तक हिन्दी में लिखी गई है और उसकी उपयोगिता अनेकों पटलों के उत्कृष्ट चित्रों की परम्परा की व्याख्या करने में है। मेरा विश्वास है कि इस रचना में लेखक ने एक नये क्षेत्र में प्रवेश किया है, चूंकि वे परिचित रामायणीय कथा की भिन्न भिन्न आख्यायिकाओं के सम्बन्ध में हिन्दी पाठकों को भारतीय कला की एक रोचक झांकी से साक्षात् कराते हैं। अनेकों को अजायबघर में, जहाँ इतने भिन्न भिन्न विषयों से ध्यान का बंटना अनिवार्य है, चक्कर लगाने की अपेक्षा भारतीय (और जावाई) तक्षणों का साक्षात्कार अधिक मनोमुग्धकारी सिद्ध हो सकता है। इन पटलों की मर्मज्ञता अनेकों को अपने

भारतीय तक्षण-विषयक ज्ञान को बढ़ाने में प्रवृत्त कर सकती है। उन दिनों की कलाविषयक उत्कृष्टता का भावावेश जनता के आधुनिक आग्रह की अपेक्षा, चाहे वह चित्रों के लिए हो अथवा ग्रन्थों के निदर्शनों के लिए, भारतीय विषयों के अधिक अनुरूप प्रत्यभिदर्शनों की लालसा को समुन्नत करने में उपयोगी हो सकता है। यही क्यों, क्या इस से आगे हम यह आशा नहीं कर सकते कि भारतवर्ष में नये विचारों से अनुप्राणित किन्तु प्राचीन भारतीय कला-कोविदों के उत्तम निर्माणों के आधार पर तक्षण की एक नयी शाखा आविर्भूत होगी? इसके लिए केवल उत्सुक कलाविदों का बेड़ा ही नहीं किन्तु साथ ही ऐसी जनता का होना भी आवश्यक है जो भिन्न भिन्न कोटियों में उनके कार्य के मर्म को समझ सकती हो और उसे सहारा देने और प्रतिष्ठा का स्थान प्रदान करने की इच्छुक हो। इस उद्देश्य की सिद्धि की एक आहुति के रूप में डा० सीताराम की यह रचना मेरे विचार में हिन्दी पढ़ी लिखी जनता और समग्र-कला-प्रेमियों की बधाई का भाजन है।

पंजाब विश्वविद्यालय
२०-२-३३

ए० सी० वुलनर

विषय	पृष्ठ

वृहद्भारतीय चित्रकारी में
रामायण

भारतीय औपनिवेशिक और सांस्कृतिक प्रसार

रामायण की अमर एवं अव्याज-मनोहर मानुषी कथा ने जहाँ भारतीय संगतराशों, चितेरों और ठठेरों की भक्ति को उद्दीप्त करके उन्हें काष्ठ और पाषाण, चूर्णलेप और वर्णिका, हाथीदांत और धातु पर अपने आख्यानों को स्थायी बनाने के लिए प्रेरित किया वहाँ हम यह भी देखते हैं कि भारतवासी, जहाँ कहीं भी वे गये, अपनी स्मृति में अपनी जन्मभूमि की इस समृद्ध पैतृक सम्पत्ति, इस अत्यन्त भव्य वीर-काव्य के उदात्त आदर्श, श्रीरामचन्द्र को भी साथ लेते गये। यही नहीं, जहाँ कहीं भी हिन्दुओं ने उपनिवेश बसाये और अपनी संस्कृति, धर्म और कला का बोलबाला स्थापित किया, लोग इस कथा पर इतने लट्टू हुए कि चरित्र-नायक राम जावा में जावन, बाली में बालियाई, चम्पा में चाम और कम्बोडिया में खमेर बन गये। भिन्न भिन्न द्वीपों और देशा-

न्तरों में वे उन उन द्वीपों और देशान्तरों के लोगों की आकृति-प्रकृति, उनके वेशभूषा, रूप-रंग के अनुसार ही ढाले जाने लगे, मानो वे उन्हीं स्थानीय वायुमण्डलों में पैदा हुए और पले हों। सारांश यह कि—"जिन्ह कै रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी।"

रामायण के दक्षिण भारतीय संस्करण के ४०वें सर्ग के २७वें श्लोक में जावा या यवद्वीप (जौ का द्वीप), टौलेमी के जवाद्यु का जो उल्लेख है उससे हम इस अनुमान पर पहुँचते हैं कि वाल्मीकि अथवा मूलग्रन्थ में इस विवरण को ठोंसनेवाले प्रक्षेप्ता के लिए यवद्वीप यूनानियों की "स्वर्ण भूमि" की भाँति रत्नों से झिलमिलाती, सोने और चाँदी से भरी हुई, केवल एक धुंधली, सुदूरवर्त्तिनी, मनोहर वस्तुविशेष था। किष्किधा काण्ड में यवद्वीप के सात राज्यों का जो एकमात्र उल्लेख है वह भी अन्य प्रमाणों के अभाव में विवेचना की कसौटी पर कोई अधिक नहीं टिक सकता। रामायण-का-जैसा, सांचे में ढला हुआ, जावा का वर्णन महाभारत में और अठारह महापुराणों में से आठ महापुराणों में भी मिलता है।

प्राचीन हिन्दुओं के ज्योतिष-ग्रन्थों में भी यवद्वीप का निर्देश है, वराहमिहिर और अन्य ग्रन्थकारों ने उसका उल्लेख किया है, किन्तु इससे हमें कोई ऐतिहासिक सहायता नहीं मिलती।

औपनिवेशिक कला पर दक्षिण भारतीयता की छाप

इसी प्रकार संगम काल की मणिमेखला नाम्नी उच्च कोटि की विश्रुत तामिल रचना का परिचय जावा-देश (शावकनाडु) से कुछ अधिक घनिष्ठ-जैसा तो प्रतीत होता है किन्तु उससे भी हमारी अभीष्ट ऐतिहासिक सामग्री की कोई विशेष वृद्धि नहीं होती। हाँ, उसके वर्णनों से इतनी बात अवश्य स्पष्ट है कि तामिल देश के प्राचीन माँझी जावा से इतने ही परिचित थे जितने आजकल ब्रिटन के रहनेवाले आस्टेलिया से हैं, यहाँ तक कि एक बार जब जावा (तामिल शावकम्) में अकाल पड़ा तो उसकी खबर तामिल देश की राजधानियों में इसी प्रकार फैल गई जैसे गुजरात की किसी बाढ़ या विपत्ति का समाचार पंजाब में फैल जाता हो। चोला ताम्रपत्र शासनों के स्वल्प ज्ञान से भी हमारी तृप्ति नहीं होती। किन्तु इस सारे पुञ्जीभूत प्रमाण से हम इस अनुमान पर पहुँचते हैं कि, आगा साकी गल्पों के होते हुए भी गुजरात अथवा भारतवर्ष के अन्य भागों के रहनेवालों की अपेक्षा दक्षिण भारतवासी जावा को अधिक अच्छी तरह जानते थे। दक्षिण भारत और जावा की यह पारस्परिक घनिष्ठता केवल जावा के कुछ आदिम शिलालेखों की ही नहीं किन्तु पूर्वी बोर्नियो के कोइटी शिलालेख की लिपि और भाषा से भी पुष्ट होती है। कोइटी

कोइटी का शिलालेख

का शिलालेख अथवा लोकपरिचित "राजा मूलवर्मा का यूपलेख" शुद्ध सरल संस्कृत में एक यज्ञ का उल्लेख करता है, जिसे ब्राह्मण पुरोहितों ने रचा था। मालूम होता है ये लोग उक्त राजा अथवा उसके पूर्वजों के साथ दक्षिण भारत से वहाँ पधारे थे, क्योंकि राजा के नाम के साथ "वर्मन्" पाठ तामिल राजाओं की,—चाहे वे पल्लव रहे हों या चेरा, एक विशेषता थी। इस शिलालेख की लिपि उस विशेष प्रकार की है जो विद्वानों को "ग्रन्थ पल्लव" नाम से ज्ञात है। दक्षिण भारत के साथ जावा के इस घनिष्ठ सम्बन्ध को केवल कोइटी का यह शिलालेख ही प्रमाणित नहीं करता किन्तु डच भारत (जावा) की राजधानी बटेविया के पास ही मिले हुए लगभग सन् ईसवी की पांचवीं शताब्दी के मध्य के चार और शिलालेख भी उसकी पुष्टि करते हैं। उदाहरण

विश्रुतवर्मा का शिलालेख

के लिए "चि अरुतन प्रपात में पड़े हुए एक विशाल शैलखण्ड पर मोटे अक्षरों में खुदा हुआ और पैरों (विष्णुपाद) के एक युग्म के नीचे लिखी हुई चार पंक्तियों का शिलालेख" हमें बतलाता है कि उसे तारुमा नगर के शासक वीर महीपति विश्रुतवर्मा ने खुदाया था। इस प्रबल रूप से वैष्णव शिलालेख की भाषा, लिपि और विषय-सामग्री में भी दक्षिण भारतीयता की एक विशेष झलक दृष्टिगोचर होती है।

चगल शिलालेख, जिसका समय प्रोफेसर फोगेल के अनुसार
शक सवत् ६५४ अर्थात् ईसवी सन् ७३२

चंगल शिलालेख है, मध्य जावा के किसी सजय नामी राजा से की गई शिवलिङ्ग की स्थापना का उल्लेख करता है। इस लेख की भाषा सस्कृत है और उसकी लिपि पश्चिमी जावा के शिलालेखों में प्रयुक्त वर्णमाला नहीं प्रत्युत दक्षिण भारतीय वर्णमाला का एक उत्तरकालीन रूप है। यह लिपि तामिल वात्तेलुत्तु से सबसे अधिक मिलती जुलती है। इस शिलालेख में बतलाया गया है कि उसे खुदानेवाले राजा के पूर्वज दक्षिण भारत के किसी कुञ्जरकुञ्ज नामी स्थान से वहाँ गये थे। क्या सन्देह है कि यह टिन्नेवेल्ली जिले का करिसूडमङ्गलम् गाँव रहा हो, क्योंकि यह उस जिले में उन सबसे पुराने स्थानों में से है जहाँ शिव की उपासना इतनी ही प्रसिद्ध है जितनी स्वय चिद-बरम् में। स्वय इस गाँव की स्थानीय दन्तकथाए, विशेषकर वहाँ के बड़े बूढ़ों से सुनकर सग्रह की हुई कथाएँ, उसके निवासियों की नाविक प्रकृति का प्रतिपादन करती हैं। इसके साथ ही जब हम देखते हैं कि यह गाँव रामायण और चाणक्य के अर्थशास्त्र के समय से भारतीय सागर और पोतविषयक इतिहास में विख्यात ताम्रपर्णी नदी के तट पर बसा हुआ है और कोरकई और कायल की प्राचीन तटस्थ तामिल राजधानियों से दूर नहीं है, जहाँ से

पाण्ड्यन पोत नियम से केवल लङ्का को ही नहीं किन्तु, कुछ विश्राम करने और लङ्का के मणिपल्लवम् स्थान पर दुबारा रसद लेने के उपरान्त, आगे जाना देश (तामिल शानकनाडू) और लहराते हुए समुद्रों (तामिल तिरई कडल) से परे अन्य द्वीपों को भी जाते थे तो हमारा अनुमान और भी पुष्ट हो जाता है। इस सम्बन्ध में यह बता देना रुचिकर होगा कि अव्वयर, जो तामिल देश के सब से प्राचीन कवियों में है और जिसे हम दक्षिण भारत का सैफो कह सकते हैं, अपने देशवासियों को उपदेश देती है कि वे

समुद्रयात्रा के विषय में तामिल कवि अव्वयर का उपदेश

लहरों से उद्वेलित समुद्रों (तिरई कडल ओडियम तिरनियम् तेडू) के पार जाकर भी धन-सञ्चय करें। दक्षिण भारत में आज भी इस अनुश्रुति को निभाया जाता है। समुद्र-यात्रा अथवा काला पानी पार करने की वहाँ कोई रोकटोक नहीं है। अनेकों आर्य्य बने हुए कट्टर ब्राह्मण निधड़क लङ्का और हिन्दमहासागर के दूसरे द्वीपों को जाते रहे हैं। उनके विरुद्ध शायद ही कभी किसी ने उंगली उठाई हो। और कोई उठाता भी कैसे? आखिर वे उन पूर्वजों की ही सन्तान तो हैं जिन्होंने राजराजा महान् जैसे अपने चोला शासकों के महिमाशाली दिनों में बर्मा और पीगू के दूरवर्ती देशों को जीतकर उनमें विजय-स्तम्भ स्थापित किये—जिनमें से

कुछ अभी तक विद्यमान है, जिन्हों ने हिन्दमहासागर को चोला सरोवर में परिवर्तित किया और श्रीविजय के राजाओं-जैसे दूरवर्ती शासकों को—जिनका राज्य कुछ अंश में जावा के द्वीप पर फैला हुआ था—सन्धि की मनमानी शर्तों पर विवश किया और चंगल शिलालेख की लिपि से बहुत कुछ मिलती जुलती लिपी में अपने शिलालेख खुदवाये; जब कि उनके पश्चिमी बान्धवों और निकट के पड़ोसी चेराओं ने कुछ शताब्दियों पहिले अनेकों समुद्री लड़ाइयों में गर्वीले रोम-निवासियों के छक्के छुड़ा डाले थे और उनके हाथों को उनकी पीठ से बांध कर और उन्हें नीचा दिखाने के लिए उनके सिरों पर तेल उँडेलते हुए उन्हें बन्दी बना कर देश की राजधानी में घुमाया था।

दिनय शिलालेख दिनय शिलालेख का समय, जिसमें तामिल लोगों के आश्रयदाता ऋषि आदि वैयाकरण अगस्त्य की मूर्ति की स्थापना का उल्लेख है, शक संवत् ६८२ अर्थात् सन् ७६० ई० है। इसकी लिपि भी प्राचीन तामिल लिपि का ही एक भेद है, जिसका प्रयोग दक्षिण भारतवासी आज भी संस्कृत लिखने में करते हैं।

महर्षि अगस्त्य महर्षि अगस्त्य का घर अब भी अगस्त्य कुडम् या अगस्त्य मलई कहलाता है, जो टिन्नेवल्ली जिले का आधुनिक पोदिकाई पर्वत है।

जब से इन आर्य ऋषिवर ने विंध्याचल को पार करके महासागर को पिया और दक्षिण भारत में उपनिवेश बसा कर तामिल जाति के कल्याण के लिए उसे अपना स्थायी घर बनाया, उनका पुनीत पर्वत कैलास पर्वत-जैसा ही तीर्थ माना जाने लगा। उसकी परिक्रमा करना अब भी पुण्य में गिना जाता है। यही नहीं, तामिल जाति के पुराने से पुराने लेख हमें बतलाते हैं कि उत्तर भारत के बनारस-जैसे दूरवर्ती स्थानों से भी यात्री इसकी परिक्रमा करने और साथ ही उसके समीपवर्ती कुमारी (कुमारी अन्तरीप) के उसी जैसे पुनीत मन्दिर को देखने आते थे, जिससे परे नीचे दक्षिण ध्रुववर्ती महाद्वीप तक कोई भूमि नहीं है।

कुम्भयोनि रूप में महर्षि अगस्त्य की उपासना

उत्तर भारत में महर्षि अगस्त्य की उपासना शायद ही कहीं होती हो, किन्तु दक्षिण में उनके कुम्भयोनि रूप में केवल उनकी मूर्तिया और उनके नाम से कहलाये जाने वाले तीर्थ ही अनगिनित नहीं हैं किंतु कम से कम टिन्नेवेल्ली और मदुरा के जिलों में कोई दक्षिण भारतीय ब्राह्मण अपने सनल्प में उनके और उनकी पत्नी लोपामुद्रा के नामों का आह्वान किये बिना (लोपामुद्रा समेध अगस्त्येश्वर-स्वामि-सन्निधौ) किसी भी धार्मिक अनुष्ठान को आरम्भ नहीं करता। इसके अतिरिक्त वे तामिल माँझियों के भी संरक्षक सन्त

थे। ये लोग अगस्त्य नक्षत्र के रूप में उनका उदय होने से पूर्व कभी अपनी समुद्री यात्राओं को आरम्भ नहीं करते थे। यह नक्षत्र इस बात का सूचक था कि वर्षाकाल बीत चला है और अगस्त्येश्वर की लाड़ली तामिल जाति उनके कल्याणकारी संरक्षण और आश्रय में विशाल महासागर के वक्ष स्थल को फिर से अपना उद्योगक्षेत्र बना सकती है।

विषय और लिपिविज्ञान की दृष्टि से तो ये शिलालेख प्रमाण हैं ही; इसके अतिरिक्त हम देखते हैं कि इनका समय शक संवत् में है जो केवल दक्षिण भारत में ही प्रयुक्त होता था, जब कि इसके विपरीत विक्रम सवत् अकेले उत्तर भारत मे प्रचलित था। मन्दिरों—विशेषकर डियग पठार के मन्दिरों, की बनावट में भी दक्षिण भारतीयता की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। जावा की कला के सारे उत्कृष्ट युग का तक्षण-शिल्प अपने बिगड़े हुए मलयाई रूप में आने से पूर्व यही बतला रहा है कि दक्षिण भारतीय पल्लवों और चेराओं से उसका उन्मेष हुआ था। बोरोबदुर के तक्षणों से उपलब्ध घरेलू वास्तुकला के कुछ दृष्टान्त और प्राम्बनम् के पास की मन्दिर-मालाएँ, विशेषकर बोरोबदुर के उस दृश्य में जिसमें जावा के लोग नावों के नष्ट होने से विपन्न नाविक मण्डली को भोजन खिला रहे हैं और

तक्षण और वास्तु-शिल्प

उस दृश्य में भी जिसमें सीता का अपहरण दिखलाया गया है, राम के अभिप्रेत राज्याभिषेक की तय्यारियों और उसके लिए एकत्रित हुए उपहारों को दिखानेवाला दृश्य, एवं प्राम्बनम् में हनुमान का लङ्का-दहन दृश्य और अनेकों अन्य दृश्य ऐसे घरों के नमूने प्रदर्शित करते हैं जो बीस वर्ष पूर्व स्मरणातीत काल से मालाबार में प्रचलित थे और जिन्हें देश के स्थानीय विद्वान् वास्तुकला का विश्वकर्मा प्रकार कहते हैं और जो ट्रैवनकोर की लौकिक अनुश्रुति में कोट्टि अम्बलम् नाम से प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार काष्ठ के बने हुये पुराने घर और मन्दिर अब भी केवल कोचीन, ट्रैवनकोर और ब्रिटिश मालाबार में ही नहीं किन्तु दक्षिण कनारा के समीपवर्ती प्रदेश में भी प्रचुरता से देखने में आते हैं। यहाँ, जैसा कि मुडबिद्री के कतिपय दृष्टान्तों से प्रगट होता है, अनेकों स्थितियों में जैन लोगों ने भी अपने लौकिक और पारमार्थिक उपयोग के लिए ऐसे घर बनाये। इस प्रदेश के कुछ हिन्दू मन्दिरों, विशेषकर टल्लिचेरी के बहुत पुराने मन्दिर, की सजावट में, अंशतः प्राम्बनम् के शिव-मन्दिर के ढंग पर, दृश्य के अनन्तर दृश्य और घटना के अनन्तर घटना को लेकर दर्शनीय काष्ठनिर्माण पर प्राय सम्पूर्ण रामायणीय कथा प्रदर्शित की गई है। जावा के कला-सम्बन्धी विकास की समष्टि के पोषक दक्षिण भारतीय कला और संस्कृति के इन स्पष्ट एवं निश्चित दृष्टान्तों के अतिरिक्त हम यह भी देखते हैं कि इस

द्वीप की सबसे बड़ी नदी को भी रामायण की उस प्राचीन पुण्य-सलिला सरयू (आधुनिक घाघरा) का ही नाम दिया गया है, जिसके तटों पर महर्षि वाल्मीकि और सर्वसंमत भारतीय अनुश्रुति के अनुसार राम की राजनगरी अयोध्या बसी हुई थी।

जावा की संस्कृति पर रामायण का स्थायी प्रभाव

यद्यपि आधुनिक जावा के अधिकांश लोगों ने उस धर्म को तिलाञ्जलि दे दी है जिसे उन्होंने भारतवर्ष से उसकी आदर्श संस्कृति और कला के साथ ग्रहण किया था तथापि वयांग कौतुकों के रूप में रामायण और महाभारत की घटनाओं के अभिनय के लिए उनकी अनुरक्ति बहुत कुछ उसी ढंग से अपरिक्षीण चली आती है जिस ढंग से मालाबार में, विशेषकर मन्दिर-महोत्सवों के अवसरों पर जिनमें अभिनय के मुख्य विषय भारत के इन दो विख्यात वीरकाव्यों से लिये जाते हैं, कथाकलि-विषयक रुचि अपरिक्षीण चली आती है। जिस प्रकार जावा-निवासियों के अपने पाठभेद हैं उसी प्रकार मलयाई लोगों का भी अपना विशेष पाठ है, जिन में उत्तर भारतीय पाठों से भिन्न होने पर भी केवल नाट्य में ही नहीं किन्तु अपने नियत नेपथ्य में भी कई बातों की पारस्परिक सदृशता पाई जाती है।

जिस प्रकार रामायण के दक्षिण भारतीय पाठ और कम्बन

रामायण के भिन्न भिन्न पाठ

और अन्य पाठ और मालाबार के पाठ, जो कथाकलि के कौतुकों में विषय रूप से निन्यस्त हैं, महाकवि वाल्मीकि के मूल संस्कृत ग्रन्थ से भिन्न हैं उसी प्रकार काकविन और सेई हिकायत पाठों की भांति ये जावन पाठ भी वाल्मीकि-रामायण से बहुत भिन्न हैं। इनके अतिरिक्त स्वयं उत्तरी भारतवर्ष में गोस्वामी तुलसीदास की हिन्दी रामायण है, दशरथ जातक और लङ्कावतार जातक में इस कथा के बौद्ध लोगों के अपने अलग ही पाठ हैं, और जैनियों के भी अपने विशेष पाठ हैं जिनमें राम की लीलाएँ इनके दो सम्प्रदायों की निराली धार्मिक मनोवृत्तियों से आरञ्जित हैं। भारतवर्ष के दूसरे दुहितृ-उपनिवेशों में और इस आश्चर्यजनक संस्कृति के मोहन-मन्त्र के वशीभूत चम्पा, कम्बोडिया, बाली और पूर्वी द्वीपसमूह के भिन्न भिन्न द्वीप-जैसे देशों में सर्वत्र उन लोगों के अपने अपने चाम, खमेर और बालियाई और मलयाई पाठ हैं। अतएव कोई आश्चर्य नहीं कि भारतवर्ष के निम्न लिखित जैसे मन्दिरों में—देवगढ़ के गुप्त मन्दिर में, कोल्हापुर राज्य के खिद्रापुर के मन्दिर में, धारवाड़ ज़िले के ऐहोल के मन्दिरों में, एलोरा के कैलास मन्दिर में और एलोरा और एलिफंटा की ब्राह्मणी गुफाओं में, हालबिड हौयसलेश्वर मन्दिर में, हाम्पी के हजरा रामस्वामी मन्दिर में, दक्षिण हैदराबाद के नलगोंडा ज़िले के नगलपाद मन्दिर में, उड़ीसा
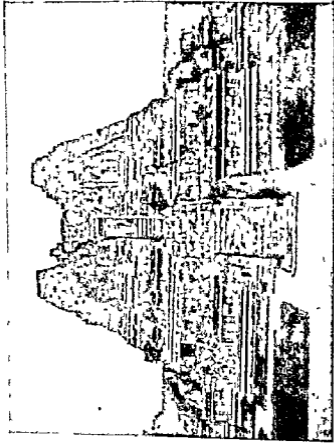
प्राम्बनम् का शिव मन्दिर। पृष्ठ १३।

के कोणार्क मन्दिर में, बंगाल के पहाड़पुर मन्दिर में, और इसी प्रकार दक्षिण भारत के अनेकों मन्दिरों में, विशेषकर मालाबार में जिसका मुख्य उदाहरण तेल्लिचेरी के पास का पुराना मन्दिर कहा जा सकता है जिसपर रामायणीय कथा खुदी हुई है, कहीं इस आश्चर्यजनक वीरकाव्य के विशेष दृश्य और कहीं पूरे आख्यान के आख्यान ही प्रदर्शित किये गये हैं।

वृहद्भारत में भी हम देखते हैं कि केवल जावा में ही नहीं किन्तु बाली, बर्मा, स्याम चम्पा, कम्बोडिया और लङ्का में भी रामायण की यही प्राचीन कथा शिलालेखन का विषय बनाई गई है।

जावा में इन रामायणीय शिलालेखों में से अधिकांश या तो प्राम्बनम् के शिवमन्दिर में या केद्री के अन्दर पनतारन में पाये जाते हैं, जबकि थोड़े से बिखरे हुए दृश्य चण्डी-सुरबन, चण्डी-केन्दालन और जालतुण्ड में भी मिलते हैं।

प्राम्बनम् का मन्दिर

इनमें प्राम्बनम् के नमूने अधिक पूर्ण हैं और जावा की कला के उत्कृष्ट युग से सम्बन्ध रखते हैं, जब भारतीय कला के प्रभाव के पूर्ण ज्वार ने अपनी अपरिक्षीण उर्जस्विता में रहकर उसे देश को आप्लावित कर दिया था। प्राम्बनम् (जो सम्भवतः संस्कृत ब्रह्मवनम् का बिगड़ा हुआ रूप है) का मन्दिर-नगर

काली ओपाक नाम्नी नदी के तट पर बसा हुआ है और उस घेरे के मध्य में शिखरीभूत है जिसे जावा का केन्द्रस्थ मन्दिर-क्षेत्र कहा जा सकता है। क्योंकि पास ही, बीस एक मील दूर, बोरोबदुर के बौद्धमन्दिर का आश्चर्यजनक स्तूप है, जबकि उससे भी निकट, आसपास चण्डी पलोसन, मेंदूत, कालासन और चण्डी सेवू की मन्दिर-मालाएँ स्थित हैं। इस विख्यात मन्दिर-क्षेत्र के केन्द्र, प्राम्बनम्, में, छोटे छोटे देवालयों और मठों से घिरे हुए, लगभग आठ ब्राह्मण मन्दिर स्थित थे। ये देवालय भी, जिनकी संख्या कम से कम २३२ रही होगी, आर्य धर्म की महिमा को बढ़ाने के लिए बनाये गये थे। इन मन्दिरों को किसी शैलेन्द्र-वंशी राजा, सम्भवतः दक्ष, ने, जिसका पूरा नाम अंग्रेजी वर्णमाला के लगभग चालीस अक्षरों में जाकर समाप्त होता है, नवीं शताब्दी के दूसरे पाद में बनवाया था; किन्तु दसवीं शताब्दी में राजसत्ता के बदलने और देश की राजधानी के उठ जाने के कारण वे उजाड़ हो गये। जावा के एक हस्तलेख के अनुसार सन् १५८४ में ज्वालामुखी पर्वतों के इस देश में एक ऐसा भूचाल आया जिसने उन्हें ढाह कर धराशायी कर दिया। १८८५ में जड़ प्रकृति के विनाश-कार्य को देशवासियों ने, जिनके धर्म में अब परिवर्तन आ

जावा का केन्द्रीय मन्दिर-क्षेत्र

इस केन्द्रीय मन्दिर क्षेत्र के उजाड़ होने के कारण

चुका था, और देश के डच शासकों की विनाशिनी पाशविकता ने पूरा कर डाला। तब से डच लोग इस कलङ्क को बहुत कुछ धो चुके हैं और डच पुरातत्त्व सर्विस ने, जो पूर्व में एक अत्यन्त बढ़ी चढ़ी सर्विस है, केवल प्रकृति और मनुष्य दोनों के ही उपद्रवों का परिशोध नहीं किया किन्तु पूर्ण फोटोग्रैफिक पैमाइश भी कर डाली है और उससे सम्बन्ध रखनेवाले विद्वत्तापूर्ण और लोकोपयोगी निबन्ध भी प्रकाशित कर डाले हैं।

डच पुरातत्त्व सर्विस

इस मण्डल के अनेकों मन्दिरों में सब से अधिक महत्त्वपूर्ण केन्द्रस्थ मन्दिर हिन्दू त्रिमूर्ति अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश की आराधना के लिए बनाये गये थे। इनमें बीचोंबीच शिव का मन्दिर स्थित है और उस की दाहिनी और बाईं ओर ब्रह्मा और विष्णु के मन्दिर हैं। शिव-मन्दिर इन सबसे बड़ा और अधिक सुरक्षित दशा में है। कारण यह है कि जावा में उपनिवेश स्थापित करने वाले दक्षिण भारतीय अथवा प्राचीन तामिल लोग अपनी जन्मभूमि की प्रथा के अनुसार हिन्दू वैश्वदेव के इन दो देवों की अपेक्षा शिव को अधिक मानते थे। इसलिये उन्होंने ब्रह्मा और विष्णु को शिव के सहकारी देव

हिन्दू त्रिमूर्ति

हिन्दू त्रिमूर्ति में शिव का महत्त्व

मान कर अपनी अनन्यसाधारण श्रद्धा के उपलक्ष में अपने इन देवाधिदेव के लिए सब से बड़ा और सब से अधिक केन्द्रवर्ती मन्दिर बनाया। यह एक अनोखी बात है कि यह शिव-मन्दिर अब भी जावा के सारे हिन्दू अथवा बौद्ध मन्दिरों में सबसे अधिक लोकप्रिय और सब से अधिक अभीष्ट है। स्थानीय अनुश्रुति बतलाती है कि इस मन्दिर और इसके आसपास के मन्दिरों का सम्बन्ध मध्य जावा के मेंडांग कमूलन देश के शक्तिशाली राजा रतु बाका की कन्या देवी रत्न-चण्डिला की कथा से है। कहा जाता है कि इन अनेकों मन्दिरों को उसके प्रेमी ने एक रात में बनाकर तय्यार किया था, क्योंकि राजकुमारी ने अपने पाणिग्रहण की शर्त ही यही रक्खी थी। स्थानीय अन्ध परम्परा के अनुसार

दुर्गा लोरा जोंगरांग

शिव-मन्दिर की उत्तरी कक्षा में रक्खी हुई दुर्गा या महिषासुरमर्दनी की मूर्ति लोरा जोंगरांग (चारुनितम्बिनी कुमारी) नाम से कहलाई जाने वाली इस रूपवती रमणी की ही मूर्ति मानी जाती है। उत्सव के दिनों में और साधारण दिनों में भी केवल स्थानीय जावानिवासी ही नहीं जो बहुधा मुसलमान हैं, किन्तु वर्ण-सङ्कर जातियाँ, यूरेशियन, डच और इस द्वीप में आकर बसने वाले अन्य लोग भी, कभी अकेले और कभी पतिपत्नी दोनों साथ साथ, उसके पास जाते हैं और नारियल, फल और फूलों से उस का पूजन करने

के बाद प्रेम, परिणय, दाम्पत्य सुख और सन्तति के लिए प्रार्थना करते हैं।

महाकाल शिव

इस मन्दिर के केन्द्रवर्ती और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देवालय (मूलस्थान या गर्भगृह) में अब भी काल-रूप शिव की प्रतिमा विद्यमान है। यह प्रतिमा नौ फुट ऊँची है और जिस पादपीठ पर वह खड़ी है उससे फन फैलाये हुए एक नाग निकला हुआ है। इसी प्रकार दुर्गा महिषासुरमर्दनी की मूर्ति भी कायपरिमाण से ऊँची है और अपनी अष्टभुजाओं में शङ्ख, चक्र, खड्ग, चर्म आदि लिये महिष की चित पड़ी हुई मूर्ति के ऊपर खड़ी है और अपने एक हाथ से इस मारे हुए पशु के सिर से उत्पन्न हुए असुर के सिर को दबाये हुई है। देवी सुन्दर आभरणों और भव्य वस्त्रों से सजी हुई है, और अपनी विभूतिमयी कटिमेखला के अतिरिक्त अति सुन्दर मुकुट धारण किये हुई है। इस शिव-मन्दिर की पूर्वी कक्षा में अब भी अम्बिका

गणेश

पुत्र गणेश की मूर्ति विद्यमान है और दक्षिणी कक्षा में गुरु (जावा के अन्दर "भतारगुरु" नाम से प्रसिद्ध) के

भतारगुरु शिव

वेश में शिव की मूर्ति विराजमान है जिसमें उन्हें एक मोटे दाढ़ियल ब्राह्मण या ऋषि का रूप दिया गया है। आरम्भ में इस मन्दिर के सामने शिव के शाश्वत अनुचर और वाहन (दिव्य बलीवर्द नन्दी) की मूर्ति थी, जिस प्रकार भारत में भी प्रत्येक शिवालय के सामने होती है। इसी तरह

ब्रह्मा और विष्णु की मूर्तियां

ब्रह्मा के आसन्नवर्ती मन्दिर में भी शान्त, समाधिस्थ, महानुभावता से आसीन, संसार के चतुर्मुख स्रष्टा की मूर्ति विद्यमान है, किन्तु उनका वाहन (हंस) अदृश्य हो चुका है। विष्णु के मन्दिर में भगवान् गरुड़वाहन की मूर्ति थी। और सामने उनके गरुड़ की मूर्ति थी। ये सभी मन्दिर तीनों दिव्य रमणियों अर्थात् दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी की प्रतिमाओं से अलङ्कृत थे, उनके चबूतरे तरह तरह की जटिल संगतराशी से परिष्कृत थे और उनमें हिन्दू वैश्वदेव के अन्य देवताओं को भी स्थान दिया गया था। इतना ही नहीं, ये मन्दिर कथा-ग्रन्थों का भी काम देते थे, उनके पाषाणमय पृष्ठों पर सम्पूर्ण रामायणीय कथा के साथ साथ कृष्ण की कथा भी खुदी हुई थी।

इस प्रकार शिव-मन्दिर के वाम पार्श्व में स्थित उक्त कृष्ण मन्दिर के कुट्टिम पर कृष्ण-सम्बन्धी गल्पों को समझानेवाली कथाएँ खुदी हुई हैं, जिनके अभी तक न तो फोटो लिये गये हैं और न कोई विवरण ही दिया गया है। शिव-मन्दिर में अन्य तक्षणों के अतिरिक्त रामायणीय कथा भी समाविष्ट है। यह कथा निकटवर्ती ब्रह्म-मन्दिर के कुट्टिम पर भी चली गई थी किन्तु अब यहाँ केवल विच्छिन्न अंश और विरल दृश्य पाये जाते हैं, शिव मन्दिर की जैसी अटूट कथा यहाँ नहीं मिलती। ये रामायणीय पटल चबूतरे के

निम्न भागों की स्तम्भपंक्ति के भीतरी पार्श्व को अलंकृत करते हैं। चबूतरे के बीचोंबीच मुख्य मन्दिर या गर्भ-गृह को एक सोपानमार्ग चला गया है। कथाएँ पटलों पर दाहिनी ओर से आरम्भ होती हैं और शनैः शनैः बांई ओर को बढ़ती चली गई हैं, जिससे यात्री प्रदक्षिणा करते हुए उन्हें पढ़ सकता है। इस समय केवल चौबीस पटल पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं, जिनमें लगभग बयालीस दृश्य समाविष्ट हैं। इन सबकी तदीयता का निश्चय किया जा सकता है। कुछ पटल ऐसे भी हैं जिनमें प्रत्येक पर अकेला दृश्य या आख्यान दर्शाया गया है, जब कि दूसरे पटलों पर दो दो, तीन तीन दृश्य खुदे हुए हैं।

पहला दृश्य

रामायण के प्रथम दृश्य में राजलीला आसन लगाये, वैश्विक सर्प शेषनाग की कुण्डलियों से बनी हुई शय्या पर आसीन, चतुर्भुज विष्णु वैकुण्ठ को दर्शाया गया है, जिनके सिर के पीछे परिवेष बना हुआ है। उनके एक हाथ में शङ्ख, दूसरे में चक्र और तीसरे में पद्म है और चौथा हाथ वरद मुद्रा में अवस्थित है। नाग का पेट और उसके दूसरे अवयव बहुत ही स्वाभाविक ढंग से दर्शाये गये हैं। इसी प्रकार खोलदार समुद्री मछलियों और

शेषशायी विष्णु

अन्य समुद्री जीवों के प्रत्याभिदर्शन से भी शिल्पी के पर्यवेक्षण की यथार्थता प्रगट होती है। विष्णु की बाई ओर उनके वाहन, विनता के पुत्र, अरुण-सहोदर, पक्षिराज गरुड़ की मूर्ति है। वह बैठे बैठे अपने स्वामी को नील कमल के फूलों का एक गुच्छा दे रहा है। इस अर्द्ध-पक्षी और अर्द्ध-मनुष्य के तीखी नुकीली चोंच और पैरों की जगह चगुल हैं, किन्तु सिर, धड़, हाथ आदि शरीर के अन्य अवयव मनुष्य के जैसे हैं। उसकी जटा मजबूती से पीछे को बंधी हुई है। उसकी कनपटियों पर कुण्डल लटक रहे हैं। उसके अन्य आभरण उसके पक्षिराज पद और विष्णु के चरण-सेवक के ही अनुरूप हैं। जिस पथरीले कूट पर वह बैठा है उस पर पशुओं और समुद्री जीवों के नमूने भी दिखलाये गये हैं। इसमें एक नन्हा सा ऊद-बिलाव जैसा लगता है। उसके बैठने के ढग से अपने स्वामी के प्रति परा कोटि का आदरभाव और प्रेम झलकता है।

विष्णु-वाहन वैनतेय

विष्णु की दाहिनी ओर ब्रह्मा के अधिष्ठातृत्व में दिक्पाल दर्शाये गये हैं। ब्रह्मा विष्णु से प्रार्थना कर रहे हैं कि आप मनुष्य अवतार लेकर राजा दशरथ के घर में जन्म लें और मर्त्यलोक और देवलोक दोनों को रावण-रूपी राक्षस-महामारी से मुक्त करें,

रामावतार के लिये विष्णु से प्रार्थना

देवता और दिक्पाल ब्रह्मा के अधिष्ठातृत्व में विष्णु अनन्तशयन से पृथिवी पर अवतरने की प्रार्थना कर रहे हैं। पृष्ठ २०।

जिसकी निष्ठुरता और निष्प्रयोजन अत्याचार पीडन की
को पहुँच चुके हैं । इस मण्डली के मध्य में भारतीय ऋषि की
आदर्श पोशाक पहने और अभ्यर्थना की हालत में हाथ बांधे
ब्रह्मा की दढ़ियल मूर्ति प्रदर्शित की गई है। इस से ऊपर दाहिनी
ओर आसीन जन अपनी आकृति की महानुभावता से देवेन्द्र शक्र
के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता, जब कि उस के बांये हाथ
के ऊपर अपनी आकृति की समान उग्रता से यूनानी प्लूटो का
भारतीय प्रत्यादर्श पाताल लोक का राजा यम पहचाना जा सकता
है। ब्रह्मा की दाहिनी ओर के दो और मुकुटधारी जनों में से एक
पश्चिम दिशा का लोकपाल और समुद्र का राजा वरुण हो सकता
है और दूसरा उत्तर दिशा का अधीश्वर और देवताओं का कोषा-
ध्यक्ष कुबेर, जिसके छोटे सौतेले भाई रावण के अत्याचार और
अनाचार का आतङ्क लोक में छाया हुआ था।

ब्रह्मा को आगे कर के देवताओं के विष्णु के पास जाने और
रावण के अत्याचारों से लोकत्राण के लिए प्रार्थना करने की इस
घटना का वर्णन रामायण के दक्षिण भारतीय संस्करण के १५ वें
और १६ वें सर्ग में भी किया गया है, जिससे कहा जा सकता है
कि इस पटल को तराशने वाले शिल्पी के मस्तिष्क में यह या इसी
से मिलता जुलता और कोई वर्णन विद्यमान था, यद्यपि आधुनिक
दक्षिण भारतीय स्थपति और शिल्पी की प्रथा से मालूम होता है

कि वह किसी परम्परागत कहानी को प्रदर्शित करने से पूर्व शायद ही कभी किसी पुस्तक को देखता हो। इसकी उसे कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ती। रामायणीय कथा को, चाहे वह वाल्मीकि

दक्षिण भारत में जीवन स्रोत से रामायण की घनिष्ठता

के अनुसार हो अथवा कम्बन या और किसी कवि के अनुसार, वह अपनी माता के दूध के साथ साथ ही ग्रहण करने लगता है। इसके अतिरिक्त रामायण को पढ़ कर सुनाने और अनुवाद करने और मन्दिरों और अन्य स्थानों में उसके भिन्न भिन्न आख्यानों से

मस्तिष्क उदात्त आदर्श श्रीरामचन्द्र की कथा से ओत-प्रोत हो चुके थे; इसी समृद्ध भण्डार को लेकर वे विविध पटलों का तक्षण करते चले गये। इसलिए यह देखने की चेष्टा करना निरा कालक्षेप है कि कोई पटल-विशेष या दृश्य वाल्मीकि के उत्कृष्ट काव्य से लिया गया है या महाभारत के रामोपाख्यान से अथवा बारह महापुराणों में से किसी एक महापुराण से किंवा रघुवंश वा उत्तररामचरित से अथवा भास के उन नाटकों से जिनमें राम की कथा दी गई है या इन्हीं के प्राचीन तामिल पाठों से अथवा जावन और मलयाई पाठों से।

दूसरा दृश्य

यज्ञ की रक्षा के लिए विश्वामित्र का राजा दशरथ से राम को माँगना

इस चबूतरे पर खुदा हुआ रामायण का दूसरा दृश्य राजा दशरथ से राजर्षि विश्वामित्र की भेंट को प्रदर्शित करता है। ऋषि ने यज्ञ आरम्भ किया है, किन्तु लङ्का के राजा रावण की प्रेरणा से मारीच और सुबाहु नाम के राक्षस उसमें तरह तरह की बाधाएँ डाल रहे हैं। उसे निर्विघ्न समाप्त करने के लिए विश्वामित्र सहायता के लिए राजा से उनके प्राणों से भी प्यारे पुत्र श्रीरामचन्द्र को माँगते हैं, उन्हें पुत्र-विछोह के लिए विवश करते हैं। वाल्मीकीय रामायण के दक्षिण भारतीय संस्करण के

बालकाण्ड के १८-२२ सर्गों में इस घटना का वर्णन इस प्रकार है—

महर्षि विश्वामित्र के पधारने पर राजा दशरथ अत्यन्त आदर भाव से उनकी आवभगत करते हैं, वे उन्हें वचन देते हैं कि कोई बात ऐसी न होगी जिसकी आप इच्छा करें और वह पूरी न की जाय। किन्तु जब विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के लिए राजा के ज्येष्ठ पुत्र राम को माँगने की बात छेड़ते हैं तो बूढ़े राजा को मूर्च्छा आ जाती है। चेत होने पर वे तरह तरह के बहाने बना कर राम के विछोह से अपनी असमर्थता प्रगट करते हैं और अन्त में यहाँ तक कह डालते हैं कि यदि आप चाहें तो मैं अपनी सेना लेकर स्वयं आपके साथ चले चलता हूँ, प्राणों के रहते धनुष बाण लेकर मैं समराङ्गण में सबके आगे आगे यज्ञ को भ्रष्ट करनेवालों से जूझूँगा। किन्तु ऋषि ने यह कुछ न सुना, राम को छोड़कर वे और किसी को लेने के लिए तय्यार न थे। क्रोध के कारण आपे से बाहर होकर और वृद्ध महाराज को उनकी भग्न प्रतिज्ञाओं के लिए सौभाग्य और समृद्धि का आशीर्वाद देकर वे वहाँ से चलने को ही थे। किन्तु रोषाविष्ट ऋषि को विदा होते देख इक्ष्वाकु राजवंश के कुलपुरोहित भगवान् वसिष्ठ राजा को समझाते हैं कि जिस प्रकार दहकती हुई आग से घिरे हुए अमृत का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता उसी प्रकार महिमाशाली ऋषि के

संरक्षण में कोई राम का बाल तक बांका नहीं कर सकता। उन्होंने कहा—महर्षि विश्वामित्र के पास ऐसे दुर्लभ मन्त्र हैं जिनके द्वारा वे सहायता के लिए वृपाश्व और कृशाश्व जैसे अस्त्रों (जृम्भक अस्त्रों) का आवाहन कर सकते हैं; धनुर्विद्या में भी वे एक ही हैं, यह सारा ज्ञान राम को देकर वे उन्हें रणक्षेत्र में अजय बना देंगे। आपका विमल वंश सत्यवादिता के लिए विश्रुत है, इस भव्य परम्परा की ओर भी कुछ ध्यान दीजिए। फिर, सर्वशक्तिशाली दिव्यर्षि विश्वामित्र को कुपित करना कौनसी अच्छी बात है? क्या आप नहीं जानते कि उन्होंने अपने माहात्म्य से दूसरे इन्द्र और वर्तमान संसार से भिन्न एक नये जगत् तक को सिरज डाला है? कुल-पुरोहित की ये दो अन्तिम युक्तियाँ काम कर गईं। इच्छा न रहते भी राजा अपने प्राणों से अधिक प्यारे पुत्र से बिछुड़ने को राजी हो जाते हैं। युवा राजकुमार को यथाविधि अभिषिक्त करके वे हुलास-भरे प्रतापी कुशिक के हवाले कर देते हैं।

निर्देश कर रही है और राजा से बातें कर रही है। उसके पास ही आदरभाव से हाथ बांधे उस की दासी बैठी है, जिसको देख कर अनायास ही मालाबार की किसी "तिया" स्त्री का भ्रम हो सकता है। इस मण्डली के नीचे एक दरबारी बैठा है जिसका मुख विशीर्ण हो चला है। सम्भवतः वह राजा या रानी की भेंट के लिए कुछ उपहार लाया है, जो राजदम्पती के सामने खुले पड़े हैं। थोड़ी दूर पर अलग, अपने परिचारकवर्ग से परिवृत, सम्भवतः युवराज श्रीरामचन्द्र बैठे हैं और उनके पीछे गले में घंटी लटकाये राजकुमार के वाहन विशालकाय हाथी की मूर्ति आविर्भूत है। पटल के परले छोर, स्तूप की तरफ़, दरबार-भवन के द्वार पर, बहुत कुछ उसी ढंग से जिस ढंग से हिज हाईन्यस कालिकट के ज़मोरिन राजा के वर्तमान महल का द्वारपाल बैठता है, अञ्जलि-मुद्रा से हाथ बांधे द्वारपाल बैठा है। इस द्वार दृश्य के नीचे एक पँछी किसी चीज़ को चोंचिया रहा है, जिसे सम्भवतः अपना आहार बनाने के लिए एक पालतू पशु निकट आ रहा है।

दूसरे भाग में महर्षि विश्वामित्र का प्रवेश दिखलाया गया है। उन्हें आवभगत के साथ दरबार में आसन दिया गया है। राजा दशरथ एक मण्डप के नीचे बैठे हैं, जिसकी छत पर घरेलू कौवे अपने साधारण व्यवसायों में व्यापृत हैं। राजा अपनी तीनों पटरानियों, कैकेयी, कौशल्या और सुमित्रा, से परिवृत हैं। सामने

दशरथ विश्वामित्र की अभ्यर्थना स्वीकार कर रहे हैं। पृष्ठ २६।

निर्देश कर रही है और राजा से बातें कर रही है । उसके पास ही आदरभाव से हाथ बांधे उस की दासी बैठी है, जिसको देख कर अनायास ही मालाबार की किसी "तिया" स्त्री का भ्रम हो सकता है । इस मण्डली के नीचे एक दरबारी बैठा है जिसका मुख विशीर्ण हो चला है । सम्भवतः वह राजा या रानी की भेंट के लिए कुछ उपहार लाया है, जो राजदम्पती के सामने खुले पड़े हैं। थोड़ी दूर पर अलग, अपने परिचारकवर्ग से परिवृत, सम्भवतः युवराज श्रीरामचन्द्र बैठे हैं और उनके पीछे गले में घंटी लटकाये राजकुमार के वाहन विशालकाय हाथी की मूर्ति आविर्भूत है। पटल के परले छोर, स्तूप की तरफ, दरबार-भवन के द्वार पर, बहुत कुछ उसी ढंग से जिस ढंग से हिज हाईन्यस कालिकट के जमोरिन राजा के वर्तमान महल का द्वारपाल बैठता है, अञ्जलि-मुद्रा से हाथ बांधे द्वारपाल बैठा है । इस द्वार दृश्य के नीचे एक पँछी किसी चीज को चोंचिया रहा है, जिसे सम्भवतः अपना आहार बनाने के लिए एक पालतू पशु निकट आ रहा है।

दूसरे भाग में महर्षि विश्वामित्र का प्रवेश दिखलाया गया है। उन्हें आवभगत के साथ दरबार में आसन दिया गया है । राजा दशरथ एक मण्डप के नीचे बैठे हैं, जिसकी छत पर घरेलू कौवे अपने साधारण व्यवसायों में व्याप्त हैं । राजा अपनी तीनों पटरानियों, कैकेयी, कौशल्या और सुमित्रा, से परिवृत हैं । सामने

दशरथ विश्वामित्र की अभ्यर्थना स्वीकार कर रहे है। पृष्ठ २६।

ताडका-वध। पृष्ठ २७।

क पृथक् आसन पर, जिस पर सम्भवतः व्याघ्रचर्म और कुशासन
बिछा है, आदर्श ऋषिवेश में राजर्षिविश्वामित्र विराजमान हैं। उन
के सिर के पीछे परिवेष है और वे जटा को मुकुट के रूप में बांधे
हुए हैं। उनका जनेऊ साफ नजर आता है और वे अपनी हथेलियों
को, बहुत कुछ उसी ढंग से जिस ढंग से आजकल के दक्षिणी
ब्राह्मण अपने किसी अब्राह्मण आश्रयदाता को आशीर्वाद देने के
लिए करते हैं, आशीर्वादात्मक ढंग से उठाये हुए हैं। ऋषि के पीछे
परिचारक अथवा शिष्य प्रदर्शित किये गये हैं। दूर पर एक नौकर
या साईस एक ओर जने की सहायता से, जो घोड़े की काठी को
थपथपा रहा है, एक बड़े ऊर्जस्वल घोड़े को शान्त कर रहा है।

तीसरा दृश्य

ताडका-वध

चित्रमन्दिर के रामायणीय आलेख्य पटलों का तीसरा दृश्य
विश्वामित्र की प्रेरणा से राम के द्वारा सुन्द-पत्नी, मारीचि-माता,
मनुजादिनी ताडका के वध की घटना को दिखलाता है। यह
दृश्य वाल्मीकि के पाठ से कुछ भिन्न है, क्योंकि उसमें राम अपने
बाण से राक्षसी के हृदय को बेंधकर उसे सीधे ही यमलोक को
नहीं पहुँचाते किन्तु पहले दोनों भाई उसके हाथ, नाक, कान
आदि काटकर उसे विकृत कर डालते हैं। वाल्मीकि की रामायण

के दक्षिण भारतीय संस्करण के बालकाण्ड के २५वें और २६वें सर्ग के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"एक समय सुकेतु नाम का कोई यक्ष था । उसने उग्र तपस्या करके ब्रह्मा का आराधन किया। ब्रह्मा ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसे एक ऐसा कन्या-रत्न दिया जिसमें सहस्र हाथियों की शक्ति थी। जब यह लड़की चन्द्रकलाओं की तरह बढ़कर सयानी हुई और उसमें शक्ति और सौन्दर्य का विकास हुआ तो उसके पिता ने उसे जम्भ के पुत्र सुन्द को ब्याह दिया । उससे उसके मारीच नाम का पुत्र पैदा हुआ । एक दिन सुन्द ने महर्षि अगस्त्य पर आक्रमण किया, जिससे ऋषि ने उसे जलाकर खाक कर दिया। यह देखकर ताड़का और मारीच दोनों माँ-बेटे फिर से आक्रमण करने के लिए ऋषि पर टूट पड़े, जिस पर उन्होंने मारीच को राक्षस और ताडका को विकृत आकृति और भ्रष्ट आचरण की मनुजादिनी बन जाने का शाप दिया । अब तो वह मनुष्यों को खाने लगी। उसने कारुषों के देश को उजाड़ कर दिया और पास के किसी जंगल में जाकर रहने लगी और ब्राह्मणों और गायों को विशेष रूप से अपना आहार बनाने लगी । इस कहानी को सुनकर राम असमंजस में पड़जाते हैं । वे सोचते हैं—क्या मेरे लिए यह उचित है कि मैं क्षत्रिय होकर स्त्री का वध करूँ। किन्तु विश्वामित्र उन्हें समझाते हैं कि ऐसी पराकाष्ठा की दशाओं में

देवता भी स्त्रीवध को विहित सिद्ध कर चुके हैं; उदाहरण के लिए जब मन्थरा ने पृथिवी को संहारना चाहा तो इन्द्र ने उसे यमलोक भेज दिया, और इसी प्रकार जब भृगुपत्नी ने स्वर्ग से इन्द्र का अस्तित्व मिटाना चाहा तो विष्णु ने उसकी जीवन-लीला समाप्त कर दी। अन्त में ऋषि के समझाने बुझाने पर राम धनुष पर डोर चढ़ाते हैं और उसे पूर्ण बल से टंकारित करते हैं। इस टङ्कार से बिजली के कड़कने की जैसी ध्वनि जो निकलती है तो केवल जंगल के जीव ही हड़बड़ा कर नहीं भागने लगते किन्तु क्रोध के कारण आपे से बाहर हुई ताड़का भी अपने डेरे से बाहर निकल आती है। वह राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों की तरफ झपटती है। राम कहते हैं—"देखो! इस दानवी की भयावनी दारुण आकृति को देखो। स्त्री होने से यह अवध्य है, इस लिए मैं केवल इसके नाक-कान काट डालूंगा, अथवा इसे बलहीन या चलने फिरने की शक्ति से रहित करके छोड़ दूंगा।" राम अभी कह ही रहे थे कि वह भुजाओं को उठाये भीषणता से राजकुमारों की ओर आ धमकती है, किन्तु विश्वामित्र अपनी हुँकार से उसकी गति रोक देते हैं। फिर तो राक्षसी उन सब पर पत्थर बरसाने लगती है, जिससे राम उसे भुजाहीन कर देते हैं और लक्ष्मण भी उनकी देखादेखी उसकी नाक और कान काट डालते हैं। इस पर ताडका अपनी माया का आश्रय लेती है और स्वयं अदृश्य हो कर

शिलाओं की तीव्र बौछार से दोनों भाइयों पर आक्रमण करती है। राम शिलाओं को अपने बाणों से काट कर टुकड़े टुकड़े कर देते हैं। विश्वामित्र देखते हैं कि वे राक्षसी को मारने में टालमटोल कर रहे हैं। इसलिए वे कहते हैं कि चूँकि दिन ढल कर शीघ्र ही साँझ होने वाली है, यदि तुम इसे जल्दी ही न मार लोगे तो फिर उसे मारना सम्भव नहीं, क्योंकि रात पड़ने पर राक्षस अजय हो जाते हैं। अतएव राम उसकी आवाज से उसे लक्ष्य करके उस ओर अपने तीर छोड़ते हैं। उनके बाणों से क्षत विक्षत हो कर वह सीधे उन पर आ धमकती है। राम तुरन्त ही सीधे उस के हृदय को लक्ष्य करके एक तीर छोड़ते हैं, जिससे उसके हृदय का मर्मस्थल छिद जाता है और भीमकाय दानवी धराशायिनी हो कर छटपटाती हुई पञ्चत्व को प्राप्त हो जाती है।

शिवमन्दिर का यह दृश्य सुगमता से दो पटलों में विभक्त किया जा सकता है। पहले पटल पर सबसे परे बाईं ओर हम लक्ष्मण को देखते हैं। उनके पार्श्व में दाहिनी ओर ऋषि की मूर्ति विद्यमान है, जिसका चेहरा कुछ अंश में विशीर्ण हो गया है। वे अपने हाथों को ऐसे ऊर्जस्वल ढंग से उठाये हुए हैं मानो राम से कह रहे हों कि तुम्हें राक्षसी को मार देना होगा। उनसे परे टांगों को ताने और अपने धनुष की डोर को पूर्ण विस्तार से खींचे और उससे अपने अमोघ बाण को छोड़ते हुए श्रीरामचन्द्र

सुबाहु का वध और मारीच का ताड़न। पृष्ठ ३१।

:ष्टिगोचर होते हैं। दूसरे पटल पर हम एक चील के साहचर्य में
:रिणों या एक दूसरे के ऊपर सटकर पड़े हुए खरगोशों से युक्त,
ार्मिक ढग से चित्रित, एक रमणीक आरण्य भूमिभाग को
ःखते हैं। इसकी दाहिनी ओर तीर के चुभने की वेदना से
ाराहाती और उसे खींच निकालने की चेष्टा करती हुई ताडका
देखाई देती है। उससे नीचे फिर हम इसी राक्षसी को देखते हैं,
उसके प्रयासों का अवसान हो चला है; वह मृत्यु की मूर्च्छा में
ारशायनी होकर, चट्टान के कूट पर अपनी कुहनी रखे, इस
ःसार से विदा हो रही है।

चौथा दृश्य

सुबाहु का मारा जाना और मारीच का समुद्र में फेंका जाना

यह दृश्य वाल्मीकीय रामायण के पाठ से कुछ भिन्न है।
ामायण के बालकाण्ड के २९वें और ३०वें सर्ग के अनुसार
कथा इस प्रकार है—जब राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ
सेद्ध आश्रम में पहुँचते हैं तो ऋषि लोग हृदय से उनका स्वागत
करते हैं। दोनों भाई नृपि से कहते हैं कि अब आप यज्ञ को
आरम्भ कर सकते हैं, उसकी निर्विघ्न समाप्ति का भार हम अपने

ऊपर लेते हैं। विश्वामित्र दीक्षा लेकर अपने सप्ताहिक यज्ञ को आरम्भ करते हैं। पहले दिन की सुबह को विधिपूर्वक स्नानादि से शुद्ध होकर राजकुमार वहाँ पधारते हैं और उपस्थित ॠषि उनसे कहते हैं कि महर्षि विश्वामित्र मौनव्रत धारण कर चुके हैं, इसलिए वे किसी से बोलेंगे नहीं; आपसे हमारी प्रार्थना है कि आप खूब चौकन्ने रहें। राजकुमार चौबीसों घंटे उन्निद्र रह कर कड़ा पहरा देने लगते हैं। छठे दिन राम लक्ष्मण को राक्षसों के आक्रमण के लिए तय्यार रहने को कहते हैं। थोड़ी देर में वे आकाश को एक काले बादल से ढका हुआ जैसा देखते हैं, जिस के मध्य में मारीच और सुबाहु अपनी माया से अपने आप को छिपाए हुए हैं। ये राक्षस अपने छिपने के स्थान से धारासार रुधिर बरसाते हैं, जिससे वेदी और उसके आस पास की भूमि भर जाती है। राम की दृष्टि पहले मारीच पर पड़ती है और वे अपने भाई से कहते हैं कि मैं उसे बादल के अनुरूप ही दण्ड दूंगा और उसे सौ योजन परे समुद्र में फेंक डालूंगा। यह कहते हुए वे अपना मानव अस्त्र छोड़ते हैं, जो दानव को सशरीर उठाकर समुद्र में फेंक देता है, और फिर सुबाहु को देखकर राम उस पर आग्नेय अस्त्र से प्रहार करते हैं जिससे वह मरकर पृथिवी पर आ गिरता है। दानव दल के दूसरे संघातियों का वे वायव्य अस्त्र से संहार करते हैं और उन्हें सीधे यमलोक को भेज देते हैं। इस पर महर्षि

से उसको ठोंकते देखते हैं। राक्षस के पास एक छोटी सी तलवार और एक ढाल है और ऐसा प्रतीत होता है कि वह पूर्ण वेग से भागा जा रहा है। सम्भवतः राम के मानव अस्त्र से उसकी यह दशा हुई है, और शायद इस इच्छा से कि इसके समुंद्र में फेंके जाने से पहले मैं भी इसे अपने शौर्य का आस्वादन कराऊं लक्ष्मण उसका थोड़ा सा ताड़न कर देना चाहते हैं। इस प्रकार यद्यपि यह आलेख्य वाल्मीकीय पाठ से कुछ भिन्न है तथापि चितेरे ने घटना को अधिक मानुषी और हास्योत्पादक बना कर उसमें उत्कर्ष पैदा कर दिया है।

पांचवां दृश्य

राम का अजगव धनुप को तोड़ना

आलेख्य पटलों का पांचवां दृश्य विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण के मिथिला के राजा जनक के यहाँ पधारने, राजा से उन्हें विख्यात अजगव धनुप के दिखाये जाने, अन्ततः राम से उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ाने और इतने से ही उस बड़े भारी ऊर्जस्वल धनुप के बीचों बीच टूट कर दो टुकड़े हो जाने की घटना को प्रदर्शित करता है। इस पर सीता राम को व्याही जाती हैं क्योंकि राजा जनक प्रतिज्ञा कर चुके थे कि जो कोई इस धनुप को उठायेगा और उस पर डोर चढ़ायेगा उसी के साथ सीता क

धनुर्भङ्ग। पृष्ठ ३४।

ाणिग्रहण होगा। पिछले दृश्य की भाँति यहाँ भी आलेख्य ाल्मीकीय पाठ से भिन्न है। बालकाण्ड के ६६-६७ सर्गों में ;स घटना का वर्णन इस प्रकार है,—

"प्रातः समय अपने धार्मिक कृत्यों से निवृत्त होने के उप- ान्त राजा जनक विश्वामित्र और रघुकुल के राजकुमारों को बुला भेजते हैं। उनके पहुँचने पर राजा ऋषि की आवभगत करते हैं। और उनसे पूछते हैं कि आपकी क्या खातिरदारी करूँ। ऋषि उन्हें ाजा दशरथ के पुत्रों का परिचय दिलाने के बाद उनसे कहते हैं के आपका अनुग्रह हो तो राजकुमार आपके विख्यात धनुष को देखना चाहते हैं। इस पर राजा जनक धनुष का पिछला इति- हास सुनाते हैं कि कैसे विश्वकर्मा ने उसे बनाया था, कैसे दक्ष प्रजापति के यज्ञ को नष्ट करने के लिए पहले पहल स्वयं शिव ने उसका उपयोग किया था और कैसे वह सम्हाल कर रखने के लिए स्वयं उनके पूर्वज देवरथ या राजा निमि को सौंपा गया था। वे यह भी बतलाते है कि इस धनुष और उसके सम्बन्ध से सीता के पाणिग्रहण के विषय में की हुई प्रतिज्ञा के कारण उन्हें अपने भक्ति परायण सिर पर कितने कुछ कष्ट न झेलने पड़े और कैसे उन्होंने सफलतापूर्वक इन कष्टों का सामना किया। इस कहानी को मन मारकर सुनने के बाद विश्वामित्र राजा से फिर विनति करते हैं कि उसे रघुकुल के

दिखायें। धनुष अनेकों आदमियों की सहायता से घसीटकर वहाँ लाया जाता है। मिथिलेश फिर उसकी प्रसिद्धि और महिमा के राग अलापने लगते हैं, किन्तु विश्वामित्र, राम से यह कह कर कि तुम स्वयं देख लो, बीच ही में राजा की बात को काट डालते हैं। राम लोहे की पेटी से धनुष को उठाकर बाहर निकालते हैं, और ऋषि की अनुमति और मनोरथ सिद्धि के लिए उनका आशीर्वाद लेकर खेल ही खेल में उसे बीचोंबीच पकड़ कर सहस्रों इकट्ठे हुए लोगों से सामने उस पर डोर चढ़ाते हैं और उसे तानकर जो खींचने लगते हैं तो वह जीर्ण धनु बीच में टूटकर दो टुकड़े हो जाता है। उसके टूटने से कर्णभेदिनी गूंज उठती है और राजा, ऋषि और स्वयं राम-भ्राता लक्ष्मण को छोड़कर अन्य सारे दर्शक मूर्च्छित हो जाते हैं। पराक्रम के इस ऊर्जस्वल प्रदर्शन से प्रसन्न हो कर राजा अपनी पुत्री सीता राम को देते हैं, और तुरन्त ही इस शुभ समाचार की सूचना देने और इस विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कराने और उसमें सम्मिलित होने का निमन्त्रण देने के लिए राजा दशरथ के पास दूत दौड़ाये जाते हैं।"

आलेख्य के पहले पटल पर सबसे परे बाईं ओर तीन जन प्रदर्शित किये गये हैं। उन में एक बैठा है और दो खड़े हैं। आकृति और पहनाव से वे विश्वामित्र के शिष्य प्रतीत होते हैं। उनकी दाहिनी ओर महर्षि विश्वामित्र बैठे हैं, जिनकी एक हथेली

"वरद-मुद्रा" का हालत में अवस्थित है। उनके पार्श्व में विदेह या मिथिला के राजा जनक की आसीन मूर्ति विद्यमान है। पास ही दाहिनी ओर वक्षःस्थल से हाथों को लपेट, बड़ों के प्रति छोटों के अनुरूप अदब से—जैसा कि राजा कौफेतुआ और उसकी भिक्षुणी दासी की प्रसिद्ध कहानी में दर्शाया गया है, श्रीरामचन्द्र बैठे हैं। बांई ओर लक्ष्मण आसीन हैं; उनकी आकृति से उत्साह्‌ट झलकती है और वे किसी वस्तु, सम्भवतः वहाँ लाये जाते हुए धनुष, की ओर निर्देश कर रहे हैं। यह सारी मण्डली एक मण्डप के नीचे आसीन है, जिसकी छत पर साधारण प्रथा के अनुसार कौवे बैठे हैं। पटल की बांई ओर सबसे परले छोर पर आम के पेड़ की एक फलों से लदी हुई टहनी का कुछ अंश दिखाई देता है। इसलिए इस दृश्य को हम "राजा से ऋषि और राजकुमारों का स्वागत" दृश्य कह सकते हैं। दूसरे दृश्य में राम शर-संधान के लिए लोकविश्रुत अजगव धनुष को पूर्ण विस्तार से ताने हुए दिखाई देते हैं। धनुष के निचले छोर को लक्ष्मण घुटने टेक कर अपने हाथों से थामे हुए हैं; किन्तु यह प्रसंग प्राम्बनम् के शिल्पी का निष्प्रयोजन पलोयन है, यह वाल्मीकीय रामायण में और उसके जितने भी संस्करण मुझे ज्ञात हैं उनमें भी कहीं नहीं मिलता। इस मण्डली के सामने दाहिनी ओर इस घटना को देखने के लिए आई हुई तीन राजकुमारियाँ प्रदर्शित

हैं। यह भी एक पलोथन ही है जो रामायण के किसी भी संस्करण में नहीं पाया जाता। केन्द्रस्थ-कुमारी अपने हाथ में एक फूल ली हुई है। वह दूसरी राजकुमारियों से अधिक ऊँची है और उसकी आकृति में राजन्यता की विशेष झलक दिखाई देती है। सम्भवतः वह राम की भवित्री भार्या सीता है, जिसका पाणि-ग्रहण महादेव के ऊर्जस्वल धनुप पर प्रत्यञ्चा चढ़ानेवाले मनुष्य के सौभाग्य और पराक्रम पर अवलम्बित था। अन्य दो में से बांई ओर की श्रुतकीर्ति होगी और दाहिनी ओर की ऊर्मिला, जिसका मुख आलेख्य में कुछ विशीर्ण हो गया है और जो बाद को लक्ष्मण को व्याही गई थी।

छठा दृश्य

परशुराम का दर्प-दलन

आलेख्य पटलों का छठा दृश्य मार्ग में पशुराम के साथ श्री-रामचन्द्र की भेंट को दर्शाता है, जबकि राम विवाह के बाद अपनी पत्नी सीता सहित अयोध्या को लौट रहे हैं। झल्लाया हुआ महर्षि हंसी उड़ाने की नीयत से राम को प्रत्यञ्चा चढ़ाने और शर-संधान के लिए अपना विशाल धनुप देता है। राम उस पर डोर चढ़ा कर और उन्हें यथेच्छ भ्रमण करने की शक्ति से भी हीन कर देते हैं। वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड के ७४-७६ सर्गों के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"विवाह के बाद महर्षि विश्वामित्र महाराजा दशरथ और जनक दोनों से विदा होकर और राजकुमारों को अनेक आशीर्वाद देकर उत्तर भारत के पर्वतों पर तपस्या करने चले जाते है। दशरथ भी राजा जनक से विदा होते हैं और राजकुमारों, उनकी नव वधुओं और अपने अनुयायिवर्ग के साथ अपने राज्य को प्रस्थान करते हैं। यात्रा के आरम्भ से ही उन्हें मार्ग में अपशकुन दिखाई देते हैं। अनिष्ट की आशंका से वे और उनका सैन्य-दल बड़े भीतचकित हो रहे हैं। दशरथ अभी इस विषय में अपने कुल-पुरोहित वसिष्ठ से परामर्श ही ले रहे थे कि इतने में उनकी सेना के चारों ओर अंधेरा छा जाता है और सैनिक राख से ढके हुए जैसे लगते हैं। एकाएक जटा बांधे कन्धे पर कुल्हाड़ा और हाथ में धनुष लिए, विकराल वेश में क्षत्रियकुल-केतु परशुराम आ पहुँचते हैं। बरात में आये हुए ऋषि लोग उनकी आवभगत करते है और उन्हें अर्घ्य और मधुपर्क देते है। ऋषियों के इस आतिथ्य को स्वीकार करके परशुराम सीधे राम के पास जा खड़े होते हैं और उन्हें सम्बोधित करते हुए कहते हैं,—"दशरथात्मज राम, मैंने अभी तुम्हारे पराक्रम और यश की चर्चा सुनी है। यह लो, यह जमदग्नि के पुत्र का धनुष है। इस पर डोर चढ़ाओ और शर-संधान करो। तुम्हारे पराक्रम को अपनी आँखों से देख लेने के बाद मैं तुम्हारे साथ मल्लयुद्ध करूंगा।" इस पर महातप

दशरथ को भारी भय होता है और वे एक लम्बी पेचीदी वक्तृता देने लगते हैं, जिसे अनसुनी करके परशुराम राम को अपने धनुष की महिमा और उसका इतिहास सुनाते हैं—"इस धनुष को विश्वकर्मा ने शिव-धनु के साथ ही विष्णु के लिए बनाकर तय्यार किया था। विष्णु ने उसे मेरे पितामह ऋचीक को दिया। ऋचीक से वह मेरे पिता जमदग्नि को प्राप्त हुआ। उन्होंने उसका कोई उपयोग नहीं किया, क्योंकि वे संकल्प कर चुके थे कि मैं कोई शस्त्र धारण नहीं करूँगा और अपना समय केवल तपस्या में बिताऊँगा। पिता जी से यह धनुष मुझे मिला है और समस्त क्षत्रिय जाति के उच्छेद करने के स्व्य ग्रहण किये हुए काम में मैंने कई बार इसका उपयोग किया है।

तुम्हें प्राणदान देता हूँ। किन्तु यह अमोघ वाण एक बार धनुष
चढ़ कर विफल नहीं होना चाहिए।' यह सुनकर परशुराम
ण के लक्ष्यवेध के लिए अपने यथेच्छ भ्रमण की शक्ति दे देते
राम को विष्णु का अवतार मानते है और उनकी प्रशंसा और
दक्षिणा करके उनके वाण के प्रभाव से अपने नियत निवास के
ए महेन्द्र पर्वत पर जा पहुँचते हैं।

शिव मन्दिर का यह पटल दो भागों में विभक्त किया जा
सकता है। पहले में सबसे परे बांई ओर धनुष्काण्ड लिये लक्ष्मण
कूच करते दिखाई देते हैं। उनके अनन्तर राम भी प्रयाण कर
रहे हैं। आगे आगे सम्भवतः कोई दरबारी है जो मार्ग-शोधन
करता चला जाता है। अनन्तर हम फिर राम और लक्ष्मण को
कूच करते देखते है और राम की दाहिनी ओर सीता की परिवेष-
युक्त प्रतिमा दृष्टिगोचर होती है। सीता के चरणों में एक छोटा
ठिगना मनुष्य, सम्भवतः कोई ब्राह्मण या ऋषि, डर के मारे जमीन
के अन्दर धंसा जाता है। अपने हाथ में कोई सौगात की वस्तु,
सम्भवतः परशुराम के लिए ऋषियों के दिये हुए अर्घ्य को, लेकर
वह इस क्षत्रियकुल-कालरात्रि के निकट आ रहा है। इस मण्डली
के सामने दाहिनी ओर एक धनुर्धारी मनुष्य की विशीर्ण मूर्ति है।
उसका चेहरा इतना छिल गया है कि उसे पहचानना सम्भव
नहीं। उसके पीछे अपने ऊर्जस्वल धनुष को वक्षःस्थल पर डाले,

जटामुकुट बांधे, आदर्श ब्राह्मण वेश में कुण्डलों और माला से सजी हुई, भार्गव की कोपाविष्ट मूर्ति खड़ी है। इस प्रकार के कुण्डल दक्षिण भारत में, विशेष कर उन लोगों में जो किसी भी वैदिक महायज्ञ को कर चुके हों, अब भी प्रचलित हैं।

दूसरे दृश्य में सबसे परे बांई ओर बहुत से हड़बड़ाये हुए जन ऋषि से भागते नजर आते हैं। उनमें दाहिनी ओर का अन्तिम व्यक्ति एक त्रिशूलधारी दढ़ियल ब्राह्मण है। ऋषि के सामने, जिनके हाथ का केवल एक अंश यहाँ दिखाई देता है, सीता बैठी हैं, पीछे से राम और लक्ष्मण हैं और पास ही एक परिचारक राम के तरकस को लिये घुटने टेक कर बैठा है। चरित्रनायक राम की प्रधान मूर्ति एक हाथ से धनुष थामे और दूसरे हाथ से उसकी डोर को पूर्ण विस्तार से खींचे और इस हाथ को अपने बांये कान के पीछे किये खड़ी है। इस मूर्ति के सिर के पीछे एक बड़ा अण्डाकार परिवेष है। उसके बाद पीछे की ओर परशुराम का सिर दिखाई देता है, जो मुकुट और कुण्डलों से अलंकृत और राम की भाँति परिवेष से उपलक्षित है। इस कर्मण्यता से विस्फुरित, सजीव दृश्य के सामने एक सुन्दर रमणीक आरण्य भूमिभाग है। उसमें एक आम का पेड़ है। पेड़ के नीचे वनस्पति जगत् के दूसरे पेड़ पौधे उगे हुये हैं। एक बन्दर—सम्भवतः धनुष की टङ्कार से, झिझक कर सिकुड़ा

पड़ा है। ओपोसम (Opposom)—जैसा घनी पशमीना से ढका हुआ, एक और पशु कुण्डलीभूत होकर अपनी सिकुड़ी हुई त्वचा के मध्य में अपना मुखड़ा दिखा रहा है; उसके शरीर के रोंए किसी तरुण हब्शी के सिर के बाल-जैसे लगते हैं। यहाँ भी जावा के इस तक्षण में वाल्मीकीय पाठ का थोड़ा सा व्यतिक्रम और अभ्यर्थना-प्रवण दशरथ के प्रतिमान का अभाव बुरी तरह खटकता है।

सातवां दृश्य

राम के यौव-राज्याभिषेक में उल्कापात

आलेख्य पटलों का सातवां दृश्य राम के यौवराज्याभिषेक से पूर्व, जो अगली सुबह को पुष्य नक्षत्र में होनेवाला था, कैकेयी और दशरथ के मिलन को दर्शाता है। यह घटना वाल्मीकीय रामायण के अयोध्या काण्ड के १० वें और उससे अगले सर्गों में इस प्रकार वर्णन की गई है,—

"बुढ़ापे की अशक्तता के कारण राजा दशरथ राजकाज की चिन्ताओं और कर्तव्यों से छुट्टी पाना चाहते हैं। इसलिए वे प्रजा के प्रतिष्ठित लोगों, अपने मन्त्री, कुल-पुरोहित और दूसरे लोगों को बुलाते हैं और उन पर अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को युवराज बनाने या मनोरथ प्रगट करते हैं, जिससे राजकाज के कम से कम एक

अंश का भार वे उनके ऊपर छोड़ सकें। बूढ़े महाराज का यह प्रस्ताव तुमुल हर्ष-ध्वनि के साथ ग्रहण किया जाता है। दशरथ राम को बुलाने के लिए सुमन्त्र को भेजते हैं और उन पर अपना आशय प्रगट करने के बाद नगर को सजाने आदि के लिए परिचारक-वर्ग को आज्ञा देते हैं। इसके बाद एक बार फिर सुमन्त्र को भेजकर वे राम को बुलाते हैं और उनसे कहते हैं कि मैंने कुछ चित्त को उद्विग्न करनेवाले और कुत्सित स्वप्न देखे हैं जिनसे किसी घोर विपत्ति की सूचना मिलती है। पुरोहित के द्वारा वे राम को कहला भेजते हैं कि अभिषेक के पूर्व की रात को सीता सहित व्रत रक्खें। तदनुसार राम अपनी पत्नी के साथ पवित्र भोजन करते हैं और दोनों उस रात को विष्णु के स्थानीय मन्दिर में शुद्ध हृदय से भगवान् की आराधना करते बिताते हैं। ब्राह्म मुहूर्त में स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर और समयोचित वस्त्रों से सज कर वे अभिषेक के सुअवसर की प्रतीक्षा करने लगते हैं। इसी बीच भोर होने से पहले बड़े तड़के कैकेयी के महल में मंथरा जाग उठती है और उसकी ऊँची अट्टालिका से क्या देखती है कि सारी अयोध्या हुलासभरी चुलबुल से गूँज रही है। जिज्ञासा से प्रेरित होकर वह पास ही खड़ी हुई धात्री से इस सारे आमोद-प्रमोद का कारण पूछती है। इस पर उसे उत्तर मिलता है कि शीघ्र ही राम को युवराज पद मिलने वाला है, उसी के उपलक्ष में ये रङ्गरलियाँ हो रही हैं। किसी तरह

अपनी निराशा को छिपाकर वह नीचे उतरती है और सीधे अपनी स्वामिनी, केकय-राज अश्वपति की पुत्री, कैकेयी के शयनागार को चल देती है, जो अभी नींद से उठ ही रही थी। वहाँ जाकर वह उसे उल्टी सीधी सुनाने और उसे मूढ़ा आदि कह कर उसकी अविवेकशीलता और पुत्र भरत के अधिकारों के प्रति उसके विस्मयावह प्रमाद पर व्याख्यान झाड़ने लगती है। वह उसे राम के भावी अभिषेक की सूचना देती है। इस शुभ समाचार से प्रसन्न होकर रानी उसे पारितोषक में एक सोने की माला देना चाहती है। किन्तु वह पारितोषक लेने नहीं आई थी। अन्ततः अपने शरीर ही जैसे कुब्ज मस्तिष्कवाली मन्थरा का वाग्विष कैकेयी के मस्तिष्क को दूषित कर डालता है। वह रानी को उस घटना की याद दिलाती है जिसमें उसने देवासुर संग्राम में दशरथ के प्राणों की रक्षा की थी और बदले में दो वर प्राप्त किये थे। वह कैकेयी को कोपभवन की शरण लेने और वहाँ जाकर अपने अनुरागान्ध पति की प्रतीक्षा में, जिसे यह अनर्थ दासी स्निग्धालापी धूर्त की उपाधि देती है, बाल बिखराये, मैले कुचैले वस्त्र पहने और गहने उतार कर अमङ्गल वेश में लेट रहने को कहती है। रानी इस विनाशिनी मन्त्रणा को सुनती है और जैसा उसे कहा जाता है वैसा ही करती है। बूढ़े महाराज कैकेयी को राम के राज्याभिषेक का शुभ समाचार सुनाने

के अभिप्राय से स्वयं वहाँ पधारते हैं और उसे इस दुर्दशा में देखते हैं। क्रोध के कुछ शान्त हो जाने पर वह राजा से अपने पुत्र भरत को राज्य और राम को चौदह वर्ष का वनवास दिलाने की प्रेरणा करती है। यह सुनते ही महाराजा दशरथ सन्न हो जाते हैं, और उसे मनाने की चेष्टा करते हैं कि अपने इस नारकीय संकल्प को छोड़ दे। किन्तु कैकेयी कब मानने वाली थी।

अतएव इस पटल में रामायण की उपर्युक्त घटना दर्शाई गई है। इसमें हम सबसे परे बांई ओर राजा के बहुत से परिचारकों को बैठे देखते हैं। एक मण्डप के नीचे, जिसकी छत पर वहें साधारण कौवे बैठे हैं, तकिये से पीठ लगाये राज-दम्पती कैकेयी और दशरथ आसीन हैं। दशरथ की आकृति दीन और अत्यन्त शोकातुर है, किन्तु कैकेयी के चेहरे से अनुनय टपक रहा है और वह अपने हाथ से किसी वस्तु की ओर निर्देश कर रही है, मानो राजा से कह रही हो कि राम को वन में भेज दो। इस आसीन दम्पती के सामने एक ऊँचे आसन पर राजा का एक मंत्री बैठा है, जिसकी बाँहों की अवस्थिति से आदरभाव प्रदर्शित होता है। मालूम होता है वह सामने एक आम के पेड़ के पास बैठे हुए लोगों से इस अवसर के लिए लाये हुए उपहारों को ग्रहण कर रहा है। पेड़ की शाखाओं पर तोते और दूसरे पक्षी उत्सुकता से अपने फलाहार में व्याप्त हैं। इन उपहारों में, जो

केकेयी का दशरथ से राम को वनवास और भरत को
राज्य दिलाने का दुराग्रह करना। पृष्ठ ५६।

दक्षिण भारत के नमूने हैं और जिनमें सभी आज भी मालाबार में पैदा होते हैं, हरे और कोमल नारियलों और केलों का एक गुच्छा प्रधानता से दृष्टिगोचर होता है। उपहारों के निकट आता हुआ, पालतू बिल्ली से मिलता जुलता, एक पशु भी यहाँ प्रदर्शित किया गया है।

आठवाँ दृश्य

एक काल्पनिक प्रदर्शन

आलेख्य पटलों के आठवें दृश्य में सम्भवत किसी राज्याभिषेक अथवा यौवराज्याभिषेक से पूर्व राम के पुण्य स्नान को प्रदर्शित किया गया है। क्या सन्देह है कि यह उस मानसिक चित्र का तात्क्षणिक प्रदर्शन हो जिसे, देवासुर संग्राम में अपने पति के प्राणों की रक्षा करने के बदले में मिले हुए दो वरदानों को दशरथ से अत्यन्त अकुलीनोचित ढग से खोस लेने के बाद, कैकेयी ने देखा। कुछ भी हो, कैकेयी को मनाने की चेष्टा के बाद और राम लक्ष्मण और सीता के वन को विदा होने से पहले की यह घटना न तो वाल्मीकीय रामायण में ही पाई जाती है और न इस विश्रुत वीर-काव्य के हिन्दी और तामिल पाठों में। श्रीयुत स्टटरहेम ने इसे मलयाई हिकायत के उस विवरण

प्रदर्शन बताया है जिसमें भरत के राज्याभिषेक का वर्णन किया गया है। श्रीयुत कौलेनफ्यल्स, ने उसका तादात्म्य भावी यौवराज्याभिषेक की उषा को राम और सीता के सिर पर किये गये पुण्य जलाभिषेचन से किया है। मि० कौलेनफ्यल्स का अनुमान दो कारणों से अग्राह्य है—(१) क्योंकि राम के साथ बैठा हुआ व्यक्ति और मण्डप के नीचे बैठे हुए शिरःपरिवेषयुक्त मुकुटधारी जन के साथ—जिसे रामायण का चरित्रनायक कह सकते हैं—आसीन व्यक्ति स्त्री नहीं है और सम्भवतः राजकुमार भी नहीं है, क्योंकि राजकुमार शायद ही कभी बिना मुकुट के प्रदर्शित किये जाते हैं; (२) जिस दृश्य में ब्राह्मण अपने हाथों में अभिषेक के जल से भरे हुए कलश लेकर चरित्रनायक के निकट आ रहे हैं वह वाल्मीकीय रामायण में नहीं पाया जाता।

मि० स्टटरहैम का अटकल भी नहीं टिक सकता, क्योंकि प्राम्बनम् के शिवमन्दिर के रामायणीय तक्षणों की परम्परा एक विशेष क्रम के अनुसार प्रदर्शित की गई है, और यद्यपि संगतराशों ने वाल्मीकि की कथा में यत्किञ्चित् हेरफेर किया है और जहाँ तहाँ उसे अलङ्कृत और परिष्कृत किया है तथापि समष्टि रूप से उन्होंने सच्ची निष्ठा के साथ वाल्मीकीय पाठ का ही अनुसरण किया है। अतएव मि० स्टटरहैम की बात को मान लेने में हमें केवल इस विप्रतिपत्ति का ही सामना नहीं करना पड़ता कि यह

घटना वाल्मीकीय रामायण में नहीं है किन्तु साथ ही एक असम्भव कल्पना को भी स्वीकार करना पड़ता है, क्योंकि इन सारी घटनाओं के होने से पहले ही राजा ने भरत को उसके ननिहाल भेज दिया था और वे राम के वन जाने और दशरथ के परलोक सिधारने के बहुत पीछे अयोध्या को वापिस आये। अतएव जब तक कोई विद्वान् इस दृश्य का कोई और नया समाधान नहीं करता तब तक यह रामायण के आश्चर्यावह श्लेय कथा-ग्रन्थ के उन कतिपय पटलों में ही गिना जायेगा जिनका अभी तक कोई स्पष्टीकरण नहीं हुआ है। जो कुछ भी हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह दृश्य किसी उत्सव या आमोद-प्रमोद के अवसर को प्रदर्शित करता है। एक मण्डप के नीचे, जिसकी छत पर लोकपरिचित कौवे अपने साधारण व्यवसायों में व्यापृत हैं, राजलीला आसन लगाये एक राजकुमार बैठा है। उसका बाया हाथ एक छोटे से तकिये पर टिका हुआ है। पास ही एक और मनुष्य है जिसके बाल खुले हुए हैं। राजसी प्रतिमा की बाई ओर एक ब्राह्मण या ऋषि खड़ा है, जो मुकुटधारिणी, आसीन मूर्ति के सिर पर अभिषेक के पवित्र जल को डालने ही वाला है। दाहिनी ओर दो और ब्राह्मण या ऋषि खड़े हैं; एक सामने से सम्भवतः राजकुमार को फूलों का कलश भेंट कर रहा है और दूसरा भावी समृद्धि के लिए राजा

को आशीर्वाद दे रहा है, क्योंकि उसका हाथ आशीर्वाद मुद्रा व
अवस्थिति में है, जैसी कि आजकल दक्षिण भारतीय ब्राह्मणों में
भी प्रचलित है। इस मण्डली के सन्मुख नाचने और गानेवालों
की एक टोली है, जिसमें प्रधान नर्तकी एक हाथ में ढाल और
दूसरे में एक छोटी सी स्थूल तलवार लिये एक प्रकार का ऊर्ज
स्वल समर-नृत्य कर रही है। उसके पास ही दाहिनी ओर ए
आसन पर राजमुकुट रक्खा है और इसकी दाहिनी ओर एक औ
रमणी हाथ में धनुष लिये बैठी है। इन दोनों के पीछे नृत्य-वादि
मण्डली के अन्य सदस्य प्रदर्शित हैं, जिनमें सब स्त्रियां हैं
इनमें गायिकाएँ भी हैं, जिनमें एक के हाथ में बांसुरी, दूसरी के
हाथ में पणव और तीसरी के सामने एक बड़ा मृदंग है। उन
नेपथ्य, आभरणों, मौखिक व्यञ्जकता, आकृति और खुले पादआ
णों का प्रत्येक अंश आज भी मालाबार में देखा जा सकता है
अतएव कोई आश्चर्य नहीं कि जावा के हिन्दू औपनिवेशकों
वहाँ भी अपनी जन्मभूमि का अनुकरण किया और इस प्रका
उसे पत्थर पर स्थायी बना दिया।

नवां दृश्य

(रा)म के वनवास के बाद शोकाकुल दशरथ की दयनीय दशा

अगला दृश्य, जो आठवें दृश्य का परिशेषत्र ही प्रतीत होता है, (इ)सी प्रकार के मण्डप के नीचे, जिसकी छत पर वही लोकपरिचित (प)ौवे बैठे हैं, दिखलाया गया है। सम्भवतः यह वाल्मीकीय रामा-(य)ण की उस घटना को दर्शाता है जिसकी कथा दक्षिण भारतीय संस्करण के अयोध्याकाण्ड के ४२ वें और उससे अगले सर्ग से ली गई है। इस *विवरण के अनुसार जब राम सीता और लक्ष्मण* के साथ वनवास के लिए प्रस्थान कर चुकते हैं तो दशरथ देर तक उस मार्ग को देखते जाते हैं जिससे रथ निकला है। शोक से विह्वल हो कर वृद्ध महाराज उसके आवेश में गिर पड़ते हैं। कौशल्या उनके दाहिने और कैकेयी बांये हाथ को पकड़ कर उन्हें खड़ा कर लेती हैं। कैकेयी के हाथ के स्पर्श से दशरथ के हृदय *में उसकी कटु स्मृतियां उमड़ आती हैं और वे रुखाई और कर्क*-शता से उसे ताकीद करते हैं कि खबरदार फिर मेरे शरीर को छूआ तो! एक बार फिर बूढ़े राजा करुण क्रन्दन करते और कैकेयी को कोसते हैं, एक बार फिर उन्हें मूर्च्छा आती है और सचेत होने पर वे अपने परिचारकों को आज्ञा देते हैं कि मुझे राम-माता कौशल्या के भवन में ले चलो। परिचारक उन्हें ले

जाते हैं। इस घटना के अनन्तर हम इस पटल पर वृद्ध महाराज को अपनी सबसे बड़ी रानी के साथ एक आसन पर बैठे पाते हैं। राजा का सिर और हाथ तकिये पर अवलम्बित हैं और उनकी आकृति अत्यन्त शोकाकुल है। इससे स्पष्ट है कि यह मुकुटधारिणी प्रतिमा राजा दशरथ की और पीछे बाईं ओर आसीन स्त्रीरूपिणी प्रतिमा उनकी रानी कौशल्या की है, जो वाल्मीकि के कथनानुसार तब तक इस दयनीय राजा का ढाढ़स बंधाती रही जब तक वे उसके ही भवन और उसी की भुजाओं में सदा के लिये सो नहीं गये। इसी आसन पर रानी के पीछे बाईं ओर उसकी दासियों में से किसी एक की मूर्ति है, जो अपने स्वामी और स्वामिनी के शोक को न सह सकने के कारण उनसे अपना मुख फेर रही है। उसके पीछे बाईं ओर दो लाड़ले पालतू पँछी हैं; उन पर भी इस शोक की छाया दिखाई देती है। उक्त आसन के नीचे कुछ और बाईं तरफ एक और स्त्री की प्रतिमा है; वह भी अपने मुख को कुछ उठाये और फेरे हुई है। राज-दम्पती के सामने मण्डप के नीचे शोकपूर्ण आदरभाव और परम विषाद की दशा में दो परिचारक बैठे हैं। उनके पीछे एक घोड़े और एक हाथी की प्रतिच्छायाएं हैं। हाथी की पीठ पर एक मनुष्य चढ़ रहा है और नीचे खड़ा हुआ एक और व्यक्ति उसे हौदे पर चढ़ने में सहायता दे रहा है।

दसवां दृश्य

वनवास के लिए प्रस्थान करने से पहले

उपर्युल्लिखित पटल का एक परिशेष शैलेय लिपि में हमारे लिए वाल्मीकीय रामायण की एक और घटना अर्थात् सीता और लक्ष्मण के साथ राम के वन के लिए विदा होने के आख्यान को प्रदर्शित करता है। अयोध्या काण्ड के ४० वें सर्ग के अनुसार कहानी इस प्रकार है,—

"फिर राम, लक्ष्मण और सीता हाथ जोड़े राजा की प्रदक्षिणा करते हैं। राम सीता समेत अपनी माता के पास जाकर उनसे विदा मागते हैं। लक्ष्मण भी कौशल्या के चरणों में झुक कर उन्हें प्रणाम करते हैं और फिर अपनी माता सुमित्रा के पैरों पर गिर कर उन्हें अपने हाथों से पकड़ लेते हैं। सुमित्रा रोती बिलखती और लक्ष्मण के सिर को सूघती हुई बार बार कहती है कि पुत्र! तुम्हारी यात्रा सफल हो, और अन्त में उन्हें यह आदेश देती है कि राम को दशरथ जानना, सीता को मुझे समझना और वन को अयोध्या मानना। इसके बाद सुमन्त्र लक्ष्मण को रथ पर चढ़ने को कहता है और सीता भी सज धज कर प्रसन्न चित्त से रथ पर चढ़ती है। दोनों भाइयों के अस्त्रशस्त्रों के यथाविधि रथ के अन्दर रखे जाने और सीता के बैठ जाने पर सुमत्र घोड़ों को पूर्ण वेग से भगाता है। यद्यपि रथ इतने वेग से भागा जा रहा है

तथापि छोटे बड़े सभी नागरिक उस अरण्य को जहाँ राम जाकर रहें दूसरी अयोध्या बनाने के अभिप्राय से पीछे पीछे दौड़े जाते हैं।

उक्त पटल पर हम मार्ग में रथ को भागते देखते हैं। मार्ग के एक पार्श्व में एक वृक्ष की झूलती हुई शाखाएँ दर्शाई गई हैं। पेड़ की एक टहनी पर एक गिलहरी बैठी है। चित्र में सबसे परे बांई ओर रथ के पीछे दौड़नेवाले अनेकों नागरिकों में से दो प्रदर्शित किये गये हैं, जो अपने थके हुए पैरों से यथाशक्ति पग पर पग मिलाने का प्रयत्न कर रहे हैं और रथ के ठीक पीछे पीछे भागे जाते हैं। रथ के दो पहिए दिखलाये गये हैं और यह वाहन, जिसका कलेवर खुला है, दो घोड़ों से खींचा जा रहा है। घोड़ों के आठ पैर, दो पूँछें, दो मुख और गर्दन पर के जुए भली भाँति दर्शाये गये हैं। तक्षण के इस विवरण में सुमन्त्र की मूर्ति नहीं है। घोड़ों का सञ्चालन और पथ-प्रदर्शन स्वयं राम कर रहे हैं। राम के पीछे कुछ दाहिनी ओर सीता की प्रतिमा प्रदर्शित है। उनके सिर के पीछे परिवेष है और वे बड़े ध्यान से अपने पति के रथ-सञ्चालन-कौशल को निहार रही है। राम के ठीक पीछे लक्ष्मण की सुखासीन परिवेषयुक्त प्रतिमा विद्यमान है। दुर्भाग्य से इस मूर्ति के मुख का एक अंश विशीर्ण हो गया है, और सीता के मुख में भी कुछ विशीर्णता आ गई है। फिर भी

पर्याप्त अंश ऐसा अवशिष्ट है जिससे वे स्पष्टता से पहचाने जा सकते हैं।

ग्यारहवां दृश्य

दशरथ-मरण

आलेख्य-पटलों के ग्यारहवें दृश्य में दशरथ का अन्त्येष्टि-कर्म दर्शाया गया है। वाल्मीकीय रामायण के अयोध्याकाण्ड के ६७वें सर्ग के अनुसार जब भोर होते ही सूत और मागध अपने मधुर और मंगलमय संगीत से राजा को जगाने आते हैं तो राज-धराने के लाड़ले पक्षी उठकर चहचहाने लगते हैं। फिर हरि-चन्दन आदि से सुगन्धित जल से भरे हुए सोने के कलशों को लेकर वे परिचारक आते हैं जिनका काम राजा के लिए नहाने की व्यवस्था करना है। जब राजा नहीं जागते तो उनकी छोटी पत्नियां उन्हें उठाने के लिए उनके शयनागार में प्रवेश करती हैं और वहाँ जाकर देखती क्या हैं कि प्राण पखेरू उड़ चले हैं! पिंजरा सूना पड़ा है। यह देखकर वे ऐसी हृदयविदारक चीत्कार करती हैं कि कौशल्या और सुमित्रा भी, जो राम के बिछोह के बाद शोक और उचाट के कारण अक्सर देर में उठती थीं, जाग उठती हैं और आकर राजा के मृत शरीर से लिपट जाती हैं। फिर सारा परिवार इकट्ठा होता है और सभी कैकेयी की निन्दा करते

हुए कहते हैं कि इसी की अनुचित हवस के कारण राजा की मृत्यु हुई है। इसी काण्ड के अगले सर्गों में भरत को बुला भेजने का वर्णन है। वे गन्धार देश में अपने ननिहाल को गये हैं। उन्हें वापिस लाने के लिए दूत भेजे जाते हैं। दूतों के पहुँचने से पहले की रात को उन्हें भयावने स्वप्न दिखाई देते हैं। वे इन बुरे स्वप्नों को दूतों से कहते हैं और उनसे कई प्रश्न पूछते हैं जिनका उन्हें कोई सीधा और स्पष्ट जवाब नहीं मिलता। राजकुमार भरत उद्विग्न चित्त से इक्ष्वाकुओं की राजनगरी अयोध्या में प्रवेश करते हैं और उसके साधारण आमोद-प्रमोद की जगह सर्वत्र शोक और विलाप के लक्षण देखते हैं। महल के अन्दर पहुँचते हैं तो उन्हें राजा नहीं दिखाई देते। वे अपनी माँ के भवन में दौड़े जाते हैं और उसके चरणों में गिर कर उससे इन सब बातों का कारण पूछते हैं। रानी उल्लास से उन्हें बतलाती है कि राजा दशरथ सनातन पथ के पथिक बन चुके हैं, राम को मैंने सीता और लक्ष्मण सहित देश निकाला करके बन में भेज दिया है और इसलिए अब तुम्हें अयोध्या का राजा बन कर राज्य करना होगा। यह सुनकर भरत की पवित्र और भ्रातृ-प्रेम में पगी हुई आत्मा को इतना क्षोभ होता है कि वे मूर्छित हो कर गिर पड़ते हैं और जब सचेत होते हैं तो अपनी माँ को बुराभला कह कर अपने [illegible] के बोझ को हल्का करते हैं। इस प्रकार शोक से

दशरथ का अन्त्येष्टि कर्म। पृष्ठ ५७

चित पड़े हुए वे अपनी माँ और उसकी करतूत को कोस रहे हैं। अन्त में कुलपुरोहित वसिष्ठ आकर उन्हें दशरथ के अन्त्येष्टि कर्म करने के लिए तय्यार होने को कहते हैं । यह सारा विवरण ७६ वें सर्ग में दिया गया है, और ७७ वें सर्ग में वे राजा का श्राद्ध करते हैं । राजा का मृत शरीर भरत के लौट आने तक तेल के कढ़ाह में रक्खा गया था । अब वह वहाँ से निकाला जाता है और मणिमाणिक्यों से खचाखच सजी हुई शय्या पर रक्खा जाता है। फिर श्मशान घाट पर ले जाने के लिए यहाँ से हटा कर उसे पालकी पर रखते हैं । अर्थी निकलने पर रानियां और अन्य राजमहिलाएँ और महल के नौकर चाकर भी उसके साथ चलते हैं। आगे आगे ऋत्विज और दूसरे लोग मार्ग में सोना और नाना प्रकार के बढ़िया वस्त्र बांटते चले जाते हैं । श्मशान में पहुँचने पर चन्दन, अगरु, पद्मक, चीड़ और दूसरी सुगन्धित लकड़ियों से चिता रची जाती है। अन्त में चिता पर आग लगाई जाती है और देह के जलकर भस्म हो जाने के बाद अर्थी के साथ जाने वाले लोग नहा धो कर घर लौट आते हैं।

प्राम्बनम् के आलेख्य पटलों में हम सबसे परे बांई ओर उपहारों के बांटने के दृश्य को देखते हैं। आज भी दक्षिण भारत में जब कोई ब्राह्मण मरता है तो ठीक यही बात देखने में आती है। एक खड़े हुए ब्राह्मण ऋत्विज के हाथ में एक भारी बटुवा

है, जिससे वह सामने बैठे हुए भिक्षुओं को धन दान दे रहा है। इस दृश्य की दाहिनी ओर हम दशरथ की चिता को देखते हैं। उस पर राजा का सिर और उसकी बांहें दृष्टिगोचर होती हैं। किनारों की ओर चिता ताड़ के पेड़ों और बहुपत्रकों से सजी हुई है। उसके नीचे एक पुरोहित खड़ा है जो हाथ में मशाल लिए उस पर आग लगा रहा है। उसकी दाहिनी ओर एक पशु अन्त्येष्टि की बलि के अन्न को खा रहा है। चिता के दाहिने छोर हम एक आदमी को वेदी पर एक मिट्टी का पात्र पटकते देखते हैं; आज भी दक्षिण भारत और मालाबार के ब्राह्मणों में इस प्रथा का पालन होता है। उससे नीचे दाहिनी ओर, उसी की बराबरी पर, कई स्त्री-पुरुष हैं। उनमें कोई बैठे हैं और कोई खड़े है और सब की आकृति से शोक की पृथक् पृथक् दशा प्रगट होती है। उनके आगे तीन ढके हुए घड़े रक्खे हैं जिन में सम्भवतः प्रेत के लिए उपहार अथवा बांटने के लिए थोड़ी सी नकद पूंजी है।

बारहवां दृश्य

आलेख्य-दर्शनों का यह पटल तीन अलग अलग दृश्यों में बांटा जा सकता है। पहले दृश्य में घोड़े पर चढ़ा हुआ राजकुमार भरत दर्शाया गया है। शायद शत्रुघ्न भी उनके साथ है। भरत स्वयं अपने हाथों से

राम को उनका पैतृक राज्य और मुकुट लौटाने और मना बुझा कर लौटा लाने और पूर्वजों के सिंहासन पर बैठाने के लिए उन्हें ढूँढ़ने जा रहे हैं। इसकी दाहिनी ओर दूसरे दृश्य में हम राजकुमार भरत को दो आम के पेड़ों के बीच खड़ा पाते हैं। उनके पीछे एक चाकर दिखाई देता है। सबसे परे दाहिनी ओर तीसरे दृश्य में फिर वे ही राजकुमार भरत दर्शाये गये हैं। वे अपने बड़े भाई राम से उनके खड़ाऊं ले रहे हैं, जो राम ने उन्हें दिये हैं। भरत के अयोध्या से विदा होने का दृश्य अयोध्या काण्ड के ७६वें और उससे अगले सर्ग में इस प्रकार वर्णन किया गया है,—

"दशरथ के दाह-कर्म के बाद चौदहवें दिन वे लोग, जिनका काम राजा नियत करना था, भरत के पास आते हैं और उनसे कहते हैं कि आपके पिता जी अपने ज्येष्ठ पुत्र राम और लक्ष्मण को वनवास देकर स्वयं परम धाम को सिधार चुके हैं। इसलिए कृपा करके अपने पैतृक राज्य को सम्हालिए, अपने सिर पर मुकुट धारण कीजिए और हम लोगों के रक्षक बनिये।"

राज्याभिषेक के लिए जो कुछ सामान और भाजन वहाँ लाकर रक्खे गये थे भरत उन सबकी प्रदक्षिणा करके सब लोगों को उत्तर देते हैं कि हमारे कुल की प्रथा है कि केवल ज्येष्ठ पुत्र को ही राजा बनना चाहिए, इसलिए आप लोग मुझसे राजा बनने का आग्रह न करें। राम मेरे बड़े भाई हैं। वे ही

राजा बनेंगे और मैं स्वयं उनके बदले बन में जाकर रहूंगा। यह कह कर वे आज्ञा देते हैं कि राज्याभिषेक के सारे आवश्यक साज को लेकर स्थपतियों, संगतराशों, पैमाइश करने वालों, लकड़ी काटने वालों आदि के साथ राज्य की सारी सेनाएँ तुरन्त उस स्थान के लिए रवाना हों जहाँ जंगल में सीता और लक्ष्मण सहित राम ठहरे हैं। इस प्रकार भरत घुड़-सवारों के साथ अयोध्या से विदा होते हैं।

एक आलेख्य पटल पर हम इस यात्रा के एक अंश को प्रदर्शित पाते हैं। दो पृथक् घोड़ों पर, जो घंटियों से सजे हुए हैं और जिनके चेहरे कुछ कुछ छिल गये हैं, सवार हुए वीर सम्भवतः दोनों भाई भरत और शत्रुघ्न, हैं जो अपने बड़े भाई की ढूँढ में नगर से निकले हैं। उनका वेश भूषा राजकुमारों का जैसा ही है, बाल छोटे और घुंघराले हैं और उनके सिरों पर कोई मुकुट नहीं हैं। मुकुटों का अभाव एक विशेष अभिप्राय को सूचित करता है, क्योंकि भरत ने कहा था कि जब तक मेरा बड़ा भाई और सिंहासन का असली अधिकारी वन में है मैं मुकुट नहीं पहिनूँगा। शत्रुघ्न भी जो भरत का ही प्रतिरूप है, जिस प्रकार लक्ष्मण राम का प्रतिरूप है, अपने बड़े भाई का अनुकरण करता है। यह भी हो सकता है कि यह दृश्य और इससे अगला दृश्य इसी एक घटना को दर्शाते हों और ये दोनों घुड़सवार भरत के दरबारी हों

राम का भरत को अपनी पादुकाएँ देना। पृष्ठ ६१।

जो सेना को लिये आते थे, जब कि भरत अपने एक अनुचर के साथ आगे आगे पैदल चले जाते थे, जिससे वे नंगे पाँव अपने बड़े भाई का सत्कार कर सकें।

तीसरे दृश्य में—अथवा यदि पहले दो दृश्यों को एक कर देने की बात ठीक हो तो दूसरे दृश्य में—भरत राम से खड़ाऊँ ले रहे हैं, जिससे वनवास की अवधि तक वे अपने बड़े भाई के नाम से राजकाज चला सकें। राम राजमुकुट पहने हैं। वे एक कोमल और बहुमूल्य तकिये के सहारे सम्भवतः क़ीमती वस्तुओं से सजे हुए चौपाल पर बैठे हैं। उनके वस्त्र और आभूषण भी राजसी हैं और उनके सिर के पीछे एक परिवेष है। उनकी दाहिनी ओर एक बर्तन है, जिसे दक्षिण भारत में कोलम्बी कहते हैं जो ऊपर तक मिठाइयों से भरा हुआ जैसा लगता है। राम के सामने बांई ओर भरत की झुकी हुई मूर्ति खड़ी है। वे भी बहुमूल्य वस्त्र पहने हुए हैं। उनका लम्बा जामा और आभूषण सब राजसी ढंग के हैं, सिर पर मुकुट और सिर के पीछे परिवेष है। वे घुटनों पर झुककर नम्रता से राम के दिये हुए खड़ाऊँ ले रहे हैं, ताकि उनके वनवास से लौट आने के समय तक वे इन्हें साक्षी कर राजा के प्रतिनिधि की हैसियत से शासन करते रहें। कथा का यह विवरण वाल्मीकि के विवरण से कुछ भिन्न है। रामायणीय कथा के अनुसार राम वल्कल-वस्त्र

धारण करके वन को पधारते हैं; आभूषण या मुकुट उनके पास कोई नहीं, और वहाँ वे तपस्वी का जैसा जीवन व्यतीत करते हैं। इस पटल पर हम राम को जिस विलासमय परिस्थिति में पाते हैं रामायण में उसका सर्वथा अभाव है। इसी प्रकार भरत भी वल्कल ओढ़े और जटा बांधे, तपस्वी के वेश में वन को जाते हैं। तक्षण में इन अनावश्यक मण्डनों के होते हुए भी हम कह सकते हैं कि भरत के राम से खड़ाऊँ ग्रहण करने के इस दृश्य का आधार वाल्मीकीय रामायण के दक्षिण भारतीय संस्करण के अयोध्या काण्ड के ११२वें सर्ग के २१वें और २२वें श्लोक हैं। तदनुसार राम अपने पैरों से सोने के मढ़े हुए खड़ाऊँ निकाल कर भरत को देते हैं। भरत खड़ाऊँ को प्रणाम करके अपने बड़े भाई राम से कहते हैं कि यदि आप नियत अवधि के अंदर अयोध्या को वापिस न आवेंगे तो फिर मुझे जीता न पावेंगे, मैं अग्नि में प्रवेश करके जीवन का अन्त कर दूँगा।

तेरहवां दृश्य

विराध-वध

आलेख्य पटलों के साथ इस दृश्य में राम और ... द्वारा विराध का वध दिखलाया गया है। किन्तु यह विवरण रामायणीय

कथा से भिन्न है। वाल्मीकि के अनुसार अरण्य काण्ड के २–४ सर्गों में इसका वर्णन इस प्रकार है,—

"जब राजकुमार विकराल पशुओं से भरे हुए दुर्गम दण्डकारण्य के अन्दर प्रवेश करते हैं तो वे एक भयंकर आकृति और पर्वत-जैसे डील वाले अत्यन्त घिनावने राक्षस को भाले की नोक पर सिंह, व्याघ्र, खरगोश, भेड़िये जैसे भाँति भाँति के जानवरों को बाँध कर ले जाते देखते हैं। सीता को देख कर वह उन पर टूट पड़ता है और उन्हें अपनी अँकवार में ले कर राजकुमारों को दुतकारने लगता है कि तुम लोग पाखण्डी हो, भला यह कहाँ का तापसी वेश है कि तुम धनुष बाण और स्त्री को अपने साथ लिये फिरते हो। अन्त में वह अपनी बातें को यह कह कर समाप्त करता है कि इस स्त्री को मैं अपनी पत्नी बनाऊँगा और तुम दोनों की निली हुई रुधिर-धारा से अपनी प्यास बुझा कर दिल ठंडा करूँगा। यह सुनते ही राम का गहरा शोक-सागर उमड़ उठता है। वे धारासार आँसू बहाते हुए अपने भाई से अपनी दारुण दुर्गति का रोना रोने लगते हैं। अपरिचित पुरुष द्वारा अपनी स्त्री के इस प्रकार छूए जाने से उन्हें वह दारुण वेदना पहुँचती है जो उनको राजपाट के चले जाने और अपने पिता के मरने से भी नहीं हुई थी। लक्ष्मण उन्हें यह कह कर सान्त्वना देते हैं कि भरत के प्रति, इस खयाल से

कि वे राज्य पर दांत गड़ाये हैं, मेरा जो कोप था उसे अब मैं विराध पर शान्त करूँगा। इसी बीच दानव उनसे उनका विशेष परिचय पूछता है और फिर अपने माता पिता आदि का परिचय देकर अपनी बात को यह कह कर समाप्त करता है कि यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो इस रमणी को मेरे आश्रय में छोड़कर तुरन्त भाग निकलो, फिर समय नहीं मिलेगा। राम क्रोध के कारण आपे से बाहर होकर उसे ललकारते हुए कहते हैं—'ठहर रे! हतभाग्य नीच, खड़ा रह। आ, मेरे साथ युद्ध कर। आज तू रणाङ्गण से जीता न जाने पावेगा।' यह कहते हुए राम अपने धनुष को तानते हैं और सोने की अनी वाले सात तीखे पक्षधर बाण छोड़ते हैं। इस पर राक्षस सीता को तो जमीन पर डाल देता है और भाला उठा कर राजकुमारों की ओर टूट पड़ता है, किन्तु राम भली भाँति संधाने हुए दो तीखे तीरों से भाले के दो टुकड़े कर डालते हैं। फिर दोनों भाई अपनी तलवारों से उसकी बाँहों पर प्रहार करके उसे घायल कर डालते हैं। एक बार फिर यह दानव उनकी ओर टूट पड़ता है और उन्हें पकड़ कर अपने कंधों पर चढ़ा लेता है, मानो वे अभी बच्चे ही हों। राम अपने भाई से कहते हैं,—'चलो, आनन्द से सवारी करते चलें, क्योंकि जिस ओर को यह जा रहा है उधर ही हमारा मार्ग भी है।' जब सीता देखती है कि दानव राम-लक्ष्मण को कंधों पर रक्खे

जंगल के अन्दर प्रवेश करने लगता है तो वे ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर कहती हैं कि इन्हें छोड़ दो और इनके बदले मुझे ले जाओ, नहीं तो मुझे भय है कि भेड़िये, व्याघ्र, अथवा जंगली हाथी मुझे मार डालेंगे। यह सुनकर राजकुमार तुरन्त ही राक्षस को मारने का निश्चय करते हैं। राम उसकी एक बाँह और लक्ष्मण दूसरी बाँह को काट डालते हैं, जिससे वह गिर पड़ता है और वे उससे छूट निकलते हैं। फिर वे घूँसों और लातों से उसका ताड़न करते हैं और बार बार उठा कर उसे ज़मीन पर पटकते हैं। इस प्रकार तीरों, तलवार की चोटों, लातों आदि से बुरी तरह घायल हो कर भी वह मरता नहीं। राम लक्ष्मण को बतलाते हैं कि यह सब कुछ होते हुए भी यह अपने तपोबल से प्राण धारण किये हुए है। इस पर राक्षस को अपने पूर्व जन्म की सुध आती है और वह कहता है कि अब मैं शीघ्र मर कर अपने पूर्व शरीर को प्राप्त कर लूँगा। वह उन्हें अपने शाप की कहानी भी सुनाता है। पिछले जन्म में वह तुम्बुरु नाम का गन्धर्व था। रम्भा नाम की अप्सरा पर उसकी अत्यन्त आसक्ति देख कर कुबेर ने उसे राक्षस बनने का शाप दिया था और उसे कहा था कि इस शाप का अन्त तब होगा जब राम और लक्ष्मण तुम्हें मार डालेंगे। यह कथा सुनाकर राक्षस ने राजकुमारों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट की और उनसे कहा कि पास ही शरभङ्ग ऋषि का आश्रम

है, वहाँ जा कर एक बड़ा गढ़ा खोदें और मेरे विशाल शरीर को उसमें डाल दें । राम लक्ष्मण को एक बड़ा भारी गढ़ा खोदने की—इतना बड़ा कि जितना किसी हाथी के लिए दरकार होता है, आज्ञा देते हैं, और जब गढ़ा तय्यार हो जाता है तो दोनों भाई उसके पांवों और गर्दन को पकड़ कर उसे छटपटाते और कराहते उसके अन्दर धकेल देते हैं।"

रामायण में विराध का इस प्रकार विस्तारपूर्वक वर्णन है, किन्तु आलेख्य-पटल पर उसे थोड़े ही में टाल दिया गया है । सबसे परे बांई ओर हम एक किरात को देखते हैं, जो सम्भवतः एक छोटी सी खुदी हुई तलवार को लिए हुए एक पेड़ के नीचे प्रायः नंगा खड़ा है। उसकी दाहिनी ओर राजकुमार लक्ष्मण, राम और सीता दिखलाये गये हैं। लक्ष्मण के हाथ में एक कमल है। तीनों मुकुटों से अलंकृत हैं और उनके सिरों के पीछे प्रभामण्डल विद्यमान हैं । सीता अपने दाहिने हाथ को इस तरह उठाये हुई हैं मानो किसी को वरदान दे रही हों। इस मंडली की दाहिनी ओर हम फिर लक्ष्मण को देखते हैं । वे निर्भीकता से खड़े हैं और सम्भवतः विराध के उपद्रवों के कारण सीता के हृदय को जो क्षोभ हुआ है उसे हल्का करने के लिए उन्हें सान्त्वना दे रहे हैं। लक्ष्मण की दाहिनी ओर राम खड़े हैं। वे दया और स्नेह भरी आँखों से सीता को निहार रहे हैं । सीता अपने घुटनों पर

झुक कर राम की जंघाओं से लिपटी हुई हैं, उनके सिर पर कोई मुकुट नहीं और मुख पर अत्यन्त दारुण त्रास और दीनता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। विराध से उठाये जाने के कारण उन्हें जो बेहोशी हुई थी उससे वे अभी पूरी स्वस्थ नहीं हो पाई हैं।

इस मण्डली की दाहिनी ओर पृष्ठ-भूमि पर हम एक आम के पेड़ की टहनियों और पत्तों को देखते हैं। उसके ठीक सामने धनुष को टंकारते, उसको पूर्ण विस्तार से खींचते और सम्भवतः उससे बाणों को छोड़ते हुए राम का दाहिना मणिबन्ध दिखाई देता है। निःसन्देह इन तीरों का लक्ष्य विराध का शरीर है, जो कुण्डल, माला आदि पहने और छिदरी दाढ़ी धारण किये हुए है और वाल्मीकि के वर्णन से सर्वथा भिन्न है। हम एक तीर को उड़ते और उसके सिर को छीलते देखते हैं। एक और तीर सम्भवतः उसके मणिबन्ध को छील निकला है। इसी प्रकार उसके शरीर रूपी विशाल लक्ष्य पर भी कुछ तीर लगे होंगे। दानव दर्द से कराहता और चीत्कार करता जैसा दिखाई देता है। वह वहाँ से भागा जा रहा है और तीरों को अपनी छाती पर लगने से बचाने की चेष्टा कर रहा है। उसकी दाहिनी ओर एक और दानव पलथी मारे बैठा है। वह भी राम के एक तीर के लगने से डर के मारे चीखता और चिल्लाता जैसा प्रतीत होता है। उसकी दाढ़ी के अभाव से स्पष्ट है कि वह विराध से भिन्न

कोई और राक्षस है। इसकी उपस्थिति भी वाल्मीकि के विरुद्ध है। इस मण्डली की दाहिनी ओर मालाबार कोट्टि अम्बलम् नमूने की एक झोंपड़ी दिखाई देती है। उसके फर्श पर एक फूल-दान है और पास ही एक सकोरे (तामिल सट्टी) पर कोई पदार्थ पकाया जा रहा है। निचले फर्श से कोई व्यक्ति सिर निकाले बाहर की ओर झांक रहा है और कुट्टिम (जमीन के फर्श) पर दो पौधों के पीछे एक स्त्री बैठी है, जिसकी प्रतिच्छाया आज भी मालाबार के पुलयडी, नयडी और चेरुमाओं में देखी जा सकती है।

चौदहवां दृश्य

चौदहवां दृश्य दो भागों में विभक्त है। पहले भाग में बांई ओर हम पति-पत्नी राम और सीता को प्रेम से बैठे पाते हैं। उनकी बांई ओर एक तपस्वी है जो उन्हें किसी बात की सूचना देने आया है, और सामने एक कौवा है। दूसरे भाग में दाहिनी ओर हम देखते हैं कि राम इस पक्षी को दण्ड दे रहे हैं। इसलिए यह दृश्य सम्भवतः रामायण की उस घटना को दर्शाता है जिसका वर्णन सुन्दर काण्ड के २१-३८ सर्गों में किया गया है। इस विवरण के अनुसार "जब राम और सीता चित्रकूट

पर्वत की उपत्यका में टिके हुए थे, दोनों एक दिन जलक्रीडा का आनन्द लेते हैं। इसके उपरान्त दोनों अपने आश्रम में आकर बैठते हैं। थोड़ी देर में क्रीडा-जनित थकावट के कारण सीता को नींद आने लगती है। अपने प्राणेश्वर के अङ्क को अपने सिर का सिरहाना बना कर वह शीघ्र ही झपकियां लेने लगती हैं। उनकी चालीस झपकियां पूरी हो जाने पर राम भी ऊंघने लगते हैं और इसलिए सीता के जागने पर वे भी अपनी बारी पर अपनी पत्नी की गोद को सिरहाना बना कर शीघ्र ही सुषुप्ति का आनन्द लेने लगते हैं। इसी बीच इन्द्र का पुत्र जयन्त कौवे के वेश में वहाँ आ पहुंचा था और वह इस दम्पती को खिजा रहा था अथवा, जैसी कि कौवों की आदत होती है, उन्हें अपने छल-छद्म दिखा रहा था। राम को गहरी नींद में पड़ा हुआ देखकर वह अधिक दिलेर हो जाता है और यों ही बिना किसी कारण के, केवल ईर्ष्या और शाप से प्रेरित होकर, सीता के स्तनों को ऐसी प्रचण्डता से चोंचियाने लगता है कि उनसे बड़े बड़े खून के ढले और फव्वारे छूटने लगते हैं। सीता इस निष्प्रयोजन आक्रमण के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकती। उन्हें इस बात का डर है कि यदि मैं ज़रा भी हिली डुली अथवा मैंने अपनी जंघाओं को विचलित किया तो राम की नींद टूट जावेगी। पतिव्रता और प्रेममयी पत्नी तो वे थी ही; सोचती है, प्राणेश्वर

की निद्रा क्यों भंग करूँ? थोड़ी सी शारीरिक वेदना ही क्यों न सह लूँ। सीता को इतनी अविचल देख कर कौवा और जोर से चोंच मारने लगता है। जब इस देवी के स्तनों से निकले हुए रुधिर की उष्ण धाराएं राम के मुख पर गिरती हैं तो वे उन्निद्र हो कर उठ बैठते हैं। उठ कर क्या देखते हैं कि प्यारी सीता के स्तन बुरी तरह क्षत-विक्षत हो रहे हैं और थोड़ी दूर पर कौवा बैठा है जिसकी चोंच लहू से लिबड़ी हुई है। क्रोध से उनके सारे शरीर में आग-जैसी लग जाती है। अपने बैठने के आसन से एक कुश निकाल कर और उसके अन्दर ब्रह्मास्त्र मन्त्र की शक्ति फूंक कर वे उसे कौवे की ओर छोड़ते हैं। कुश की शलाका आग की दहकती हुई लटा के रूप में बदल कर पक्षी को जला कर क्षार कर देने पर तुल जाती है और सभी लोकों में, जहाँ वह कभी इस ओर कभी उस व्यक्ति की शरण लेने के लिए भटकता है, उसके पीछे पीछे भागी चली जाती है। अन्त में जब स्वयं उसका पिता इन्द्र भी उसे आश्रय नहीं देता तो यह पक्षी अथवा जयन्त राम के चरणों में आकर उनसे क्षमा मांगता है। राम उसे कहते हैं कि एक बार फेंका हुआ महास्त्र फिर खाली नहीं जा सकता, वह अपना असर अवश्य दिखलावेगा। आखिर कौवे को विवश हो कर अपनी दाहिनी आँख अस्त्र की शक्ति के हवाले करनी पड़ती है।"

इस पटल में सबसे परे बांई ओर हम किसी एक पहाड़ के उपरले पार्श्व पर एक पेड़ उगा हुआ देखते हैं। नीचे एक सीध में एक दूसरे के ऊपर दो वाघ गुफाओं से सिर निकाले बाहर की ओर झांक रहे हैं। किञ्चित् दाहिनी ओर चोटी पर एक पक्षी पेड़ की टहनियों में चोंच मारते दिखाई देता है। नीचे प्रार्थना की हालत में एक मलिन आकृतिवाला जटाधारी तपस्वी बैठा है। सम्भवतः वह उन अनेकों भाँति के ऋषियों में से एक है जो उस जंगल में बसते थे और जो उसमें स्वच्छन्द फिरनेवाले अनगिनित राक्षसों के विरुद्ध अपनी रक्षा के लिए श्री रामचन्द्र से सहायता मांगने आते थे। इन राक्षसों में यह एक विशेष बात थी कि वे ऋषियों को सताते थे और कभी कभी उन्हें खा भी जाते थे। एक बरौठे के नीचे, जिसकी छत पर एक कौवा बैठा है, हम राम और सीता को एक बड़े तकिये के सहारे प्रेम से बैठे देखते हैं। उनके सिरों के पीछे प्रभामण्डल दिखलाये गये हैं। सीता अपने बांये हाथ को स्निग्धता से अपने पति के गले में डाले हुई हैं और दाहिने हाथ से कौवे के अनिष्टकारी इरादों की ओर इशारा कर रही हैं, जो इस दम्पती से कुछ हट कर दाहिनी ओर बैठा है। दम्पती के पीछे बांई ओर एक थाली रक्खी है, जिसमें शायद उन्होंने नदी में जलक्रीडा और स्नान करने से श्रान्त और क्षुधित होकर लौटने के बाद कुछ आहार किया है। कौवा

इन्द्र के पुत्र छद्मवेशधारी जयन्त के अतिरिक्त और कोई नहीं। इसी बीच वह अनर्थ की पराकाष्ठा दिखा चुका है, यद्यपि वाल्मीकि ने जैसा वर्णन किया है उसका यहाँ कोई प्रदर्शन नहीं है। इस दृश्य के दूसरे भाग में पत्नी के अपमान और उन पर किये गये आक्रमण से आगबबूला होकर राम ब्रह्मास्त्र छोड़ रहे हैं जो पक्षी की ओर उड़ता दिखाई देता है और जिससे इस पटल पर उसका सिर कट कर अलग पड़ गया है। वाल्मीकि के विवरण के अनुसार उसे केवल अपनी दाहिनी आँख खोनी पड़ी थी किन्तु यहाँ दण्ड को उसकी पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया गया है। राम को हम इस तरह खड़े देखते हैं मानो वे ब्रह्मास्त्र छोड़ रहे हों और दाहिने हाथ से इस दिव्य अस्त्र को दूर बैठे हुए अपने पंखों को फड़फड़ाते हुए अपराधी को दिखला रहे हों। इस दृश्य के ऊपर पत्तों और फलों से लदा हुआ एक आम का पेड़ दिखाई देता है।

पन्द्रहवां दृश्य

शूर्पणखा का विफल प्रणय और उसकी दुर्गत

इस पटल पर राम और लक्ष्मण के सन्मुख रावण और खर-दूषण की बहिन शूर्पणखा प्रदर्शित की गई है। राम लक्ष्मण ने

शूर्पणखा के प्रलोभन। पृष्ठ ७२।

उसके प्रणय और विवाह के प्रस्ताव को रद कर दिया है और वह निकृत और विमानित हो कर वहाँ से विदा हो रही है। यह दृश्य दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले में सम्भवतः उसके वहाँ पहुँचने और प्रस्ताव पेश करने का प्रदर्शन है और दूसरे में उसकी निफलता और दण्डविधान दर्शाये गये हैं।

वाल्मीकीय रामायण के दक्षिण भारतीय संस्करण के अरण्यकाण्ड के १७ वें और १८ वें सर्ग में कथा इस प्रकार दी गई है,—

"लक्ष्मण और सीता समेत गोदावरी में स्नान करने के बाद राम अपनी पर्णकुटीर को लौट आते हैं और ऋषियों से सत्कृत हो कर वहाँ रहते हैं और लक्ष्मण के साथ कथाएं पढ़ने में दिन बिताते हैं। इस कुटीर में,सीता के साथ राम ऐसे ही लगते हैं जैसे चित्रा नक्षत्र के साहचर्य्य में चन्द्रमा। जब वे इस प्रकार कहानियों में तल्लीन बैठे हैं, रावण की बहिन शूर्पणखा संयोग से वहाँ आ पहुँचती है। राम के रूप-लावण्य पर मुग्ध हो कर वह उन्हें पूछती है—तुम तपस्वी वेश में धनुष-बाण धारे और अपनी पत्नी को साथ लिये इस राक्षसों से सेवित स्थान में कैसे आये हो? राम बिना किसी दुराव या छोपछाप के अपने जीवन की कहानी कह सुनाते हैं और फिर शूर्पणखा से कहते हैं कि अब तुम अपना परिचय दो। वह अपनी और अपने भाई रावण,

कुम्भकर्ण और विभीषण की कथा कह सुनाती है और प्रत्येक की व्यक्तिगत विशेषताओं का भी चित्रण करती है। अन्त में वह राम से अपना पति बनने की प्रार्थना करती है और उन्हें अपनी कुरूपिणी जरठा स्त्री को त्यागने को कहती है और यह भी प्रस्ताव करती है कि इसे अपना आहार बना कर मैं प्रणय का मार्ग साफ किये देती हूँ। बड़े लाड़-चाव से वह उस विवाहित आनन्द की उपा का चित्र खींचती है जिसमें वे उसके साथ रमण करेंगे, किन्तु राम मुसकराते हुए जवाब देते हैं कि मेरा तो विवाह हो चुका है और पति को जिन सुखों की लालसा हो सकती है वे सभी मुझे प्राप्त हैं; तुम-जैसी रूपवती रमणियों का सौत के साथ रहना क्योंकर किसी की कल्पना में आ सकता है? इसलिए मेरी संमति से तुम अपने विवाह का प्रस्ताव लक्ष्मण के सामने रक्खो, उन्हें इसकी आवश्यकता भी है, चिरकाल से उन्होंने विवाहित जीवन के सुख का उपभोग नहीं किया है, वे दर्शनीय हैं, इसलिए वे सर्वथा तुम्हारे सौन्दर्य के अनुरूप जीवन के साथी बनने योग्य हैं। यह सुनकर वह लक्ष्मण से प्रणय की याचना करती है। लक्ष्मण कहते हैं—यह तुम्हारी कैसी याचना है? तुम्हें मालूम नहीं कि मैं अपने बड़े भाई का चाकर हूँ, उनके चरणों का दास हूँ? मेरे साथ विवाह करने से तुम्हें भी चाकरी करनी पड़ेगी, दासी बन कर रहना पड़ेगा। ऐसा विषम

सम्बन्ध तुम्हारी जैसी स्थिति और आकृति की रमणियों को शोभा नहीं देता। इसलिए मेरे बड़े भाई की कनीयसी पत्नी बनो, वे निस्सन्देह तुम्हारे रूप पर ऐसे रीझेंगे, उस पर इतने लट्टू होंगे कि वे अपनी उस जीर्ण स्थविरा की मनोज्ञताओं को भुला देंगे। शूर्पणखा, यह कुछ न चेत कर कि यह मुझे उल्लू बना रहे हैं, समझती है कि लक्ष्मण जो कुछ कहते हैं ठीक ही है। इसलिए वह एक बार फिर राम को सम्बोधित करती है; कहती है अपनी भुक्तभोगा जरठा के स्थान में मुझे अपनी पत्नी बना लो, दाम्पत्य-सुख के मार्ग को साफ करने के लिए मैं इसे अभी निगले देती हूँ। उत्तर की भी कोई प्रतीक्षा न कर अपनी बात को प्रत्यक्ष करने के लिए वह सीता की ओर लपकती है किन्तु राम उसे रोक लेते हैं और लक्ष्मण से कहते हैं—'लक्ष्मण! निष्ठुर असभ्य जंगली लोगों से तुम यह क्या ठठोली करते हो? सीता की दशा पर भी कुछ ध्यान दो। अब उचित यही है कि तुम इस राक्षसी को विकृत कर डालो। इसकी केवल आकृति ही घिनावनी नहीं है किन्तु यह तो शालीनता, शिष्टाचार और सहनशीलता को भी तिलाञ्जलि दे चुकी है।' यह सुनते ही लक्ष्मण अपनी तलवार को उठा लेते हैं, जो राम के निकट पड़ी थी, और उससे राक्षसी के नाक और उसके कानों को जड़ से काट फेंकते हैं। इस प्रकार विकृत होकर

और अपनी बदसूरती को दुगुनी करके वह चीख़ती और चीत्कार करती और खून से लथपथ हुई जंगल में उस स्थान को दौड़ी जाती है जहाँ उसका भाई खर था।"

इस रामायणीय प्रदर्शन में प्राम्बनम् के शिल्पी ने अनेकों हेर फेर कर डाले हैं। रामायण के अनुसार शूर्पणखा के आने के समय राम, लक्ष्मण और सीता तीनों अपनी पर्णशाला के आगे बैठे हुए कहानियां कह रहे थे। यहाँ सीता और लक्ष्मण हैं ही नहीं अकेले राम अपनी कुटिया के सामने बैठे हैं (यह कुटी मालाबार का नमूना है जिसे जावा के लोगों ने अपने उपयोग के लिए ग्रहण किया था)। वे आभरणों से सजे हैं, उनके सिर पर मुकुट विराज रहा है और वे एक तकिये के सहारे बैठे हैं। किन्तु वाल्मीकीय रामायण में चौदह वर्ष के वनवास के अन्दर राम को इन विलास की वस्तुओं के लिए कोई अवकाश नहीं। उनके आगे एक स्त्री है जो अंशतः अपने घुटनों पर इसी तरह झुकी हुई है जिस तरह आज भी दक्षिण भारतीय स्त्रियां अपने बड़ों के सन्मान में उनके सामने झुकती हैं। वह बहुमूल्य आभूषण और सुन्दर लहंगा पहने हुई है, सिर पर मुकुट है और मुकुट के पीछे प्रभामण्डल। उसके साथ एक परिचारिका है जिसका रूप रंग, मुख की आकृति शरीरविन्यास और पोशाक अथवा यों कहिए कि पोशाक का अभाव अपनी किसी उच्च कुल की मालकिन

की टहल सेवा करनेवाली आजकल की किसी भी मलयाली नौकरानी को भली भाँति फब सकते हैं । इन दोनों के पीछे एक आम का पेड़ है। प्रस्तुत रमणी रावण की प्यारी बहिन शूर्पणखा के अलावा और कौन हो सकती है? अपने प्रणय की सफलता के लिए वह लुभानेवाली आकृति की स्त्री बनकर एक बहुमूल्य कामदार तकिये, फलों और एक गठरी के अन्दर किसी अन्य वस्तु, सम्भवतः रत्नों या दुर्लभ आभरणों के उपहारों, से राम की आराधना कर रही है। इस मण्डली की दाहिनी ओर हम फिर शूर्पणखा को देखते हैं। वह पूर्ण ठाट के साथ राम के सामने अपने विलोभनों को प्रगट कर रही है । उसके बांये हाथ में एक लीला-कमल है और अपने दाहिने हाथ से सम्भवतः वह अलबेले मलय-मारुत (तामिल टेन्नेल कट्टू) में अपनी साड़ी के लहराते हुए वेष्टनों को सम्हाल रही है । इस खड़ी हुई मूर्ति की दाहिनी ओर दो आसीन परिचारक अथवा दण्डकारण्य के रहनेवाले आर्य ऋषियों आदि में से कोई हैं।

दृश्य के दूसरे भाग में एक झुँझलाये हुए राजकुमार बैठे दिखाई देते हैं। उनके हाथ में धनुष है और वे सामने बैठी हुई स्त्री की प्रतिमा की ओर सजा का संकेत कर रहे हैं अथवा उसे उसकी धृष्टता का स्वाद चखाने के लिए स्वयं खड़े हो रहे हैं। उत्तेजना में उन्होंने उसके फलों के उपहार की टोकरी पटक

डाली है, जो उनकी बांई ओर पड़ी है। स्त्री शारीरिक और मानसिक दुःख की वेदना से ज़ोर से चीत्कार करती हुई जैसी दिखाई देती है। पीछे से उसकी परिचारिका, जिसकी आकृति आँसुओं से मलिन हो रही है, उसे कह रही है कि रोओ मत, और दण्ड देनेवाले से भी मानो अपने बाये हाथ की उंगलियों से यह अनुनय-विनय कर रही है कि "कृपा करके ठहर जाओ", इस यन्त्रणा को अब और न बढ़ायें। "कृपा करके ठहर जाओ" सूचित करने का हाथ का यह विन्यास दक्षिण भारत में अभी तक प्रचलित है। अतएव सबसे परे बांई ओर दण्ड देने को उद्यत हुआ जैसा, रोषभरी दृष्टिवाला राजकुमार, सम्भवतः लक्ष्मण है; बहुमूल्य आभरणों, मुकुट और परिवेष से युक्त, रोनी-सूरत, सामने बैठी हुई रमणी जो उठने को ही है, शूर्पणखा है; और उसके पीछे की स्त्री उसकी भक्ति-प्रवण राक्षसी परिचारिका है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राम्बनम् के इस तक्षण में भी रामायणीय वर्णन मानुषी बनाया गया है, एक भद्दी घटना की पाशविकता को कम कर दिया गया है, यद्यपि ऐसा करने में मूल पाठ से भारी भिन्नता आ गई है।

सोलहवां दृश्य

हेम-मृग के रूप में मारीच-वध और सीता-हरण

यह पटल भी, जिस पर सोने के मृग मारीच का वध दर्शाया गया है, दो भागों में बांटा जा सकता है । पहले भाग में सीता लक्ष्मण को वहाँ जाने को कह रही हैं जहाँ से सहायता के लिए राम की जैसी आवाज़ सुनाई दी है । दूसरे में राम के द्वारा मृग-वेशधारी दानव की मृत्यु का प्रदर्शन है । चूँकि वाल्मीकीय रामायण में दूसरे दृश्य की घटनाएँ पहले घटित होती हैं, इसलिए हम पहले उसी पर विचार करेंगे । अरण्य काण्ड के ३१ वें सर्ग के अनुसार जब राम जनस्थान में खर और दूषण और उनके चौदह हज़ार राक्षसों की सेना का संहार कर डालते हैं तो केवल अकम्पन इस व्यापक संहार से बच कर रावण के पास दौड़ा जाता है और उसे इस का समाचार देकर बदले में सीता को हर लाने की संमति देता है । रावण जैसे गिरे हुए चरित्र के आदमी को इससे अच्छा और क्या हो सकता था कि उसके अन्तः पुर में एक और स्त्री की बढ़ती हो; और जब वह अकम्पन के मुख से सीता की शारीरिक मनोज्ञताओं की स्तुति सुनता है तो उसकी सलाह उसके हृदय में स्थान कर लेती है । इसलिए रथ सवार कर वह मारीच के आश्रम में आता है और इस नारकीय

उससे सहायता मांगता है कि वह सोने का मृग बन कर राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों को लुभा कर दूर ले जाय। किशोर अवस्था में राम के हाथ मारीच की जो दुर्गत हुई थी उसे वह अभी नहीं भूला था। इसलिए वह रावण को इस झमेले में पड़ने से रोकता है, और उसे मना बुझाकर और प्रतीति दिलाकर लङ्का को लौटा देता है। कुछ ही काल के बाद, जब रावण एक दिन दरबार में बैठा था (सर्ग ३२–३४), शूर्पणखा आती है और अपने विकृत वेश में उसके सामने गिर कर कभी उसकी कायरता के लिए उसे ताने मारती है, कभी भ्रातृभाव की दुहाई देकर उसे बदला लेने के लिये उकसाती है, किन्तु इससे भी अधिक उसकी काम-वासनाओं को जगाकर अन्त में उसे हर-लाने के लिए मना लेती है। दानव अपने सुवर्ण के रथ पर चढ़कर, जिस पर पिशाचों की जैसी आकृति वाले गधे या खच्चर जुते हुए थे और जिसे बहुमूल्य रत्न जड़कर खूब जी खोलकर सजाया गया था, ऐसे रथ पर चढ़कर समुद्र को पार करता है और मारीच के आश्रम में पहुँचता है मारीच रुरु मृग का चर्म ओढ़े और बल्कल वस्त्र और जटा धारण किये तपश्चर्या में अपने दिन बिता रहा है (सर्ग ३५, श्लोक ३७–३८)। आवभगत और आतिथ्य ग्रहण करने के बाद रावण अपनी अभ्यर्थना आरम्भ करता है (सर्ग ३६), और अपने

संकट और सन्ताप का रोना रोकर उस पर अपनी सारी आयोजनाओं को प्रगट करता है । दोनों में खूब ऊहापोह के साथ बातें होती हैं (सर्ग ३७–४०)। मारीच की प्रबल, युक्तियुक्त और निष्पन्न दलीलें राक्षसराज के दुराग्रह के चट्टान से टकरा कर निशीर्ण हो जाती हैं। अपनी धुन में वह उन्हें अनसुनी कर देता है। अनसुनी क्या करता है, उन्हें सुनकर आपे से बाहर हो जाता है। वह कड़क कर मारीच को ताकीद करता है कि तुरन्त मेरी आज्ञा को शिरोधार्य करो, नहीं तो अभी तुम्हारा काम तमाम किये देता हूँ । इस प्रकार विवश करके रावण उसे अपने रथ पर चढ़ाता है और उस कदली-वन के निकट छोड़ आता है जिसमें राम का डेरा है (सर्ग ४२, श्लोक ७–१३) । मारीच सहसा चकाचौंध कर देनेवाले, दर्शनीय हेम-मृग (सोने के हिरन) का रूप धारण करता है, उसकी पूँछ इन्द्रधनुष के रङ्गों से दमक रही है, शरीर पर रूपे के सितारे छितरे हुए हैं और सींग बहुमूल्य रत्नों से जड़े हुए हैं । सीता इस समय फूल तोड़ रही हैं (सर्ग ४३) । इस नई किस्म के हिरन की आश्चर्यजनक सुन्दरता को देखकर वे सहसा उस पर मुग्ध हो जाती हैं और जोर से पुकार कर राम और लक्ष्मण को धनुष-बाण लेकर वहाँ आने को कहती हैं। राम वहाँ पहुँचते हैं और लक्ष्मण हिरन की अस्वाभाविक आकृति पर सन्देह प्रगट करते हुए कहते हैं कि हो

न हो यह मारीच की करतूत है, यह मृग मारीच से भिन्न और कोई नहीं है । परन्तु सीता कम से कम उसके चर्म के लिए इतनी उत्सुक थीं कि उनकी प्रार्थनाओं से तंग आ कर अन्त में श्री रामचन्द्र लक्ष्मण से कहते हैं कि मारीच ने ऋषियों के विरुद्ध जो कुकर्म किये हैं उनका उसे अभी तक पूरा दण्ड नहीं मिला है, अतएव अब मैं अकेले ही उसे रहे हुए दण्ड को भोगने के लिए विवश करूँगा । यह कहते हुए और मृगरूपधारी राक्षस को मारने का संकल्प करके वे सीता को लक्ष्मण की देखरेख में छोड़ देते हैं और हाथ में धनुष लेकर माया-मृग के पीछे भाग निकलते हैं (सर्ग ४४) । मृग अपने छल छद्म से उन्हें लुभाता हुआ उनके डेरे से दूर जा निकलता है । अन्त में अधीर होकर और मन में यह विश्वास करके कि यह मारीच से भिन्न और कोई नहीं है राम उस पर ब्रह्मास्त्र छोड़ते हैं (श्लोक १३–१४) यह अस्त्र मृग के चर्म को भेद कर मारीच के हृदय को छेद डालता है । इस प्रकार "हाय ! लक्ष्मण, हाय ! सीते" का करुण क्रन्दन करता हुआ वह एक बार फिर अपनी असली राक्षसी देह को धारण करता है और माला, कुण्डल और अन्य आभरणों से युक्त उसी देह में अन्तिम साँस लेकर धराशायी हो जाता है । उसे मरा हुआ देख कर, राम अपशकुन देखते हुए और रास्ते में भोजन के लिए एक खरगोश को लेकर अपने डेरे की ओर दौड़े

आते हैं।

दूसरा दृश्य वाल्मीकीय रामायण के अरण्यकाण्ड के ४५वें सर्ग के अनुसार इस प्रकार है—"पति के इस करुण क्रन्दन को सुनकर सीता लक्ष्मण को वहाँ जाने को कहती हैं जहाँ सम्भवतः इसी तरह राक्षस के चंगुल में फंस गये हैं जिस तरह शेर के पंजे में बैल फंस जाता है। कहती हैं, भ्रमय के लिए इस करुण क्रन्दन को सुनकर मेरा हृदय और प्राण सूखे जाते है। लक्ष्मण अपने बड़े भाई की आज्ञा मानते हुए और राक्षसों के छल-छद्मों से भली भाँति परिचित होने से बिल्कुल विचलित नहीं होते। सीता को उनके आशय पर शङ्का होती है और वे उन पर दुनिया भर के आक्षेप करतीं हैं। लक्ष्मण सान्त्वना देते हुए कहते हैं कि राम स्वयं अजय हैं, उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता और यह सब जो तुमने सुना है मारीच का छल है। सीता आपे से बाहर हो जाती हैं, लक्ष्मण को कहती हैं तुम स्वार्थी हो, तुम्हारे हृदय में पाप है, तुम भरत के जासूस हो, राम संकट में पड़े हैं और तुम ऐसी निश्चिन्तता से बैठे बातें छांट रहे हो। नहीं जाते हो तो यह लो मैं भी गोदावरी में डूबकर अथवा विष खाकर या धधकती हुई अग्नि में जलकर इस शरीर का अन्त किये देती हूँ। इस तरह के निश्चित राग-द्वेष और अधिक्षेप के प्रदर्शन के सामने और कोई रास्ता

न देखकर लक्ष्मण हाथ जोड़ कर उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं और उन्हें वनदेवताओं के संरक्षण में छोड़ कर इच्छा न रहते भी मन मारकर अपने भाई की खोज में जा निकलते हैं।"

तक्षण में दाहिनी ओर राम के द्वारा सोने के माया-मृग का वध दिखलाया गया है। यहाँ हम राम को सम्पूर्ण आभरणों से सजा हुआ देखते हैं। उनके सिर पर मुकुट और सिर के पीछे प्रभामण्डल है। उनके पैर और टाँगें आलीढ आसन अर्थात् लक्ष्यवेध की हालत में हैं। वे धनुष की डोर को कानों की ओर खींच रहे हैं और उससे अमोघ महास्त्र छोड़ रहे हैं। उनके सामने पत्तों, फूलों और फलों से लदा हुआ एक कटहल का पेड़ है। दूर पर दाहिनी ओर एक मृग दिखाई देता है। वह घंटियों से सजा हुआ है और तीर उसकी पसलियों को बींधकर उसके मास में खुभ गया है। इस तरह घायल होने पर वह अपने मुँह को राम की ओर फेरता है। उसके सिर से आभरणों से सजा हुआ राक्षस बाहर निकलता हुआ दिखाई देता है, जो मारीच से भिन्न और कोई नहीं है और वेदना भरी वाणी से कराह रहा है—"हाय! लक्ष्मण, हाय! सीते, बचाओ, बचाओ!" इस दृश्य के सामने सुन्दर नैसर्गिक ढग पर एक अरण्य-प्रदेश दर्शाया गया है।

मारीचवध के इस दृश्य की बाईं ओर दूसरे भाग में हमें एक

रावण के द्वारा सीता का अपहरण । पृष्ठ ८४ ।

कुँम्हलाई हुई सी दिखाई देती है। वह एक तकिये के आगे आसन पर बैठी है, उसका शरीर गहनों से लदा हुआ है और उसके चेहरे से घातकता झलक रही है। यह सीता की प्रतिमा है। दहिनें हाथ से वे लक्ष्मण को इशारा कर रही हैं और शीघ्र वहाँ से दौड़ चलने की आज्ञा दे रही हैं। उनका बाया हाथ कटि-मेखला पर टिका हुआ है। अनोखी बात जो इस मूर्त्ति में दृष्टिगोचर होती है वह यह है कि उनकी साड़ी नाभि को नंगी छोड़े हुई है और उनके शरीर का ऊपरी भाग भी ढका हुआ नहीं है जैसा कि हाल ही में मालाबार में भी हुआ करता था। सामने उनके चरणों में एक पुरुष बैठा है। उसका हाथ वितर्कमुद्रा की हालत में उठा हुआ है, मानो वह सीता के साथ तर्क-वितर्क कर रहा हो, और बाजूबंद, कंगन, माला और मुकुट उसे अलकृत किये हुए हैं। यद्यपि चेहरा और कंधों का अंश निशीर्ण हो गया है तथापि इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह मूर्त्ति राजकुमार लक्ष्मण को प्रदर्शित करती है, जो अपनी रूठी हुई भावज को समझा बुझाकर शान्त करने की चेष्टा कर रहे हैं और उन्हें यह विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहे हैं कि राम को कोई नहीं मार सकता, यह सब राक्षसों का छल-छद्म है, उनकी दानवी माया है। दोनों एक ऐसे घर के नीचे बैठे हैं जो मालाबार के घरों का नमूना कहा जा सकता है और जिसे

लक्ष्मण ने स्वयं अपने हाथ से अपने बड़े भाई के लिए बनाया था।

सत्रहवां दृश्य

यह दृश्य तीन भागों में बांटा जा सकता है। सबसे परे बांईं ओर, पहले भाग में, सिरे पर एक आम का पेड़ दिखाई देता है। उसके पत्तों और मञ्जरियों के बीच एक पक्षी बैठा हुआ किसी चीज़ को चोंचिया रहा है। पेड़ के नीचे मालाबार के "कोट्टि अम्बलम्" नमूने के बाहरी बरामदे में एक दासी बैठी है। उसके हाथ में एक केलों का गुच्छा है जिसे मांगने को एक पालतू बन्दर हाथ पसारे हुए है। इस दृश्य की दाहिनी ओर ऊपर कहे हुए मालाबारी नमूने के घर के नीचे हमें एक और दासी दिखाई देती है। वह डर के मारे अत्यन्त विह्वल हो रही है। आतङ्क से उसकी आँखें मुँद गई हैं। उसकी बाँहें ऊपर को उठी हुई हैं और सम्भवतः वह चिल्ला कर कह रही है—"हाय! मरी, हाय! मरी, बचाओ! बचाओ!" झोंपड़ी के अन्दर, उसी आधुनिक मालाबारी ढँग पर, अचार चटनी और खाद्य पदार्थों के वर्तन खुँटी पर रखे हुए हैं और उनमें सम्भवतः एक तेल रखने का वर्तन भी है। दासी की किलकारें सुनकर छत पर से एक छिपकली और दो पंछी क्रन्दन

करते हुए इस भय के स्थान को छोड़ कर भागे जा रहे हैं। झोंपड़ी के पास ही एक केले का पेड़ है जिस पर बैठा हुआ एक छोटा पंछी एक सांप को देख कर भीत-चकित हो रहा है। इस केले के पेड़ के पत्ते बहुत ही नैसर्गिक ढंग पर दर्शाये गये है और एक बार फिर हमें वही दाक्षिण भारतीयता की झलक, नहीं, मलयाली प्रतिच्छाया दृष्टिगोचर होती है! केले के पेड़ के नीचे सम्भवतः एक मङ्गल-कलश है जिसके मध्य में एक कमल और दोनों पार्श्वों में से प्रत्येक में एक एक उत्पल है। भय से किलकारती हुई दासी के पैरों पर एक भात की देगची उल्टी पड़ी है और उसकी काठ की कर्छी भी उसके पास पड़ी हुई है। इस गड़बड़ी के अवसर से फ़ायदा उठाकर एक पशु देगची के भात को चट कर रहा है। शायद वह कोई गलियों की बिल्ली है जो आज भी दूसरों की विपदा से फायदा उठाने के ठीक अवसर को जानती है और दूसरों के प्रमाद से कहीं से एक ग्रास भात का तो कहीं से कोई अन्य खाद्य पदार्थ ले भागती है। इस नमूने के पारिवारिक दृश्य की दाहिनी ओर, जो परिस्थापना की छोटी से छोटी बातों में भी प्रबल रूप से मलयाली है, हम एक भद्र आकृति की स्त्री को झपटंझपटा करते देखते हैं। वह किसी ब्राह्मण वेशधारी साधु की पकड़ से अपने आप को छुड़ाने का भरसक

यत्न कर रही है। वह अपने स्थान पर दृढता से खड़ी है। साधु उसे वहाँ से डिगाकर हर लेजाना चाहता है। इस दुरात्मा का एक हाथ उसके वक्षःस्थल पर है, दूसरे हाथ से वह कंधे के पास उसके गले से लिपटा हुआ है। इस चेष्टा में वह अपने पैरों से भी काम ले रहा है। स्त्री का एक पैर उसके घुटने पर टिका हुआ है, दूसरे से वह उसके दूसरे पैर को इस तरह दबाये हुए है कि वह अपनी जगह से हलचल न हो सके। साधु की जटा ब्राह्मण की जैसी और उसके कानों पर दक्षिण भारतीय नमूने के कुण्डल लटक रहे हैं। स्त्री का दूसरा हाथ उसके कंधे के ऊपर से पीछे को निकला हुआ है। पुरुष का मुख कुछ ऊपर को उठा हुआ है और उस पर एक पक्षी बैठा है, मानों वह उसको इस नारकीय कृत्य से रोक रहा हो। उसके पीछे एक चँवर पड़ा है जो उसके हाथ से छूट गया है। पास ही पत्तों का छाता पड़ा है जो उसके दूसरे हाथ से छूट निकला है। इन दोनों के बीच एक और चीज, सम्भवतः भात की देगची उलटी पड़ी है। इस प्रकार ये पहले दो दृश्य सीता के पारिवारिक जीवन और तीसरा दृश्य रावण के द्वारा उनके अपहरण का दिग्दर्शन हो सकते हैं। जमीन पर से उठाई जाती हुई स्त्री सीता हो सकती है, इस नारकीय काम को करने वाला दुरात्मा रावण और उसके मुख पर

बैठा हुआ पक्षी सीता का रक्षक और उनके श्वसुर का मित्र जटायु हो सकता है। वाल्मीकीय रामायण के अनुसार रावण अपना बांया हाथ सीता के सिर के ऊपर और दाहिना हाथ उनकी जंघाओं के बीच रख कर उन्हें उठाता है और ऐसा करने से पहले वह अपने दस सिर और बीस भुजाओं वाले असली रूप को प्रगट करता है। वाल्मीकीय विवरण के अनुसार उसके पास छत्र भी है जिसे हम इस तक्षण में भी नीचे पड़ा हुआ पाते हैं; किन्तु चँवर की जगह, जो इस तक्षण में उसके पीछे है, हम उसके हाथों में दण्ड-कमण्डलु देखते हैं। फिर भी, इन भिन्नताओं के होते हुए भी, इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस दृश्य में रावण के द्वारा सीता का अपहरण दिखलाया गया है, जो वाल्मीकीय रामायण के अरण्य काण्ड के ४६-४६ सर्गों के अनुसार इस प्रकार है,—

"ऐसी कठोर बातें सुनकर लक्ष्मण झुँझलाये हुए राम को ढूँढ़ने निकलते हैं। बस अब क्या था, रावण को अवसर मिल गया। भगवे वस्त्र पहने, शिखा रक्खे और छत्र एवं दण्ड-कमंडलु लिये वह संन्यासी के वेश में तुरन्त कुटी के अन्दर प्रवेश करता है। सीता की सुन्दरता पर मुग्ध होकर वह मुक्त कण्ठ से उनकी स्तुति करने लगता है; स्तुति क्या है, अश्लीलता और पशुपना का नंगा चित्र है। अपने लम्बे स्तोत्र को समाप्त करते

हुए कहता है–'ऐ तन्वी, इतनी रूपवती और सुकुमार होकर तुम क्योंकर इस बीहड़ वन में, घातक जंगली जन्तुओं से संकुल इस अरण्य प्रदेश में, इस तरह निःशङ्क बैठी हो? इस परिस्थिति में तुम जैसी रमणी का यों अकेले बैठे रहना—यह तुम्हारी कैसी धीरता है!' उसे ब्राह्मण समझ कर सीता उसका उचित आतिथ्य और आवभगत करती हैं। अतिथि का वास्तविक स्वरूप जानने पर भी वे, भय से और इस आशङ्का से कि ब्राह्मण होने से यह कहीं शाप ही न दे दे, उसे अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाती हैं और फिर उससे उसका परिचय पूछती हैं। वह अभिमान से उत्तर देता है–'मैं लङ्का का राजा रावण हूँ जिसके नाम से तीनों लोक कांपते हैं, जिसकी चर्चा सुनते ही देव, दानव, नाग आदियों के प्राण सूखने लगते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी पत्नी और पटरानी बनो।' सीता इसके उत्तर में अपने पतिदेव श्रीरामचन्द्र के यश और पराक्रम की सराहना करती हैं–राम मेरे पति हैं, मेरे सतीत्व में बाधा डालनेवाले तुम कौन होते हो? यदि तुम्हें अपने प्राणों का कुछ भी मोह है, स्वयं अपने वंश का सत्यानाश नहीं कराना चाहते तो सम्हल जाओ, अपनी इस नीच जघन्य प्रवृत्ति को छोड़ दो। अपने वैभव को चाट खाओ। मैं इतनी नीच नहीं हूँ कि तुम-जैसे पापात्माओं की लपेट में आकर अपने पवित्र

आदर्श से गिर जाऊँ । सीता के इस उत्तर को सुनकर रावण आपे से बाहर हो जाता है, एक बार फिर सीता को डांट डपट दिखाता है, ज़ोर से अपने हाथों को पटकता है और अन्त में बनावटी वेश को छोड़ कर अपने वास्तविक स्वरूप को प्रगट करता है; बीस जिसकी भुजाएँ हैं और दस सिर, पर्वत-पार्श्व जैसा विस्तीर्ण वक्षःस्थल और रंग ऐसा मानो काजल की मूर्ति हो। कानों पर कुण्डल और सिरों पर किरीट हैं और शरीर पर युद्ध के सारे अस्त्र-शस्त्र लटक रहे हैं। एक बार फिर वह अपने अभीष्ट को सिद्ध करने का यत्न करता है; अनुनय-विनय, चाटुकारी और डांटडपट से सीता को अपनी पत्नी बनाना चाहता है, किन्तु उन्हें अपने व्रत पर पहले से भी अधिक दृढ़ देख कर वह कामवेदना से उन्मत्त हो उठता है और जैसे बुध ने रोहिणी पर बलात्कार किया था उसी तरह वह बरबस सीता से लिपट जाता है, बांये हाथ से उनके केश पकड़ कर और दाहिना हाथ उनकी जंघाओं के नीचे रख कर उन्हें उठा लेता है । इस तरह सीता को ले जाकर और एक बार फिर डांटडपट दिखा कर वह उन्हें गधों से खींचे जाने वाले अपने रथ पर रख लेता है और स्वयं गधों का जैसा शब्द करने लगता है।"

अठारहवां दृश्य

सीता को छुड़ाने की विफल चेष्टा में जटायु का वध

यह दृश्य दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले में रावण से सीता को छुड़ाने के निष्फल प्रयत्न में घायल हो कर जटायु जमीन पर पड़ा हुआ मौत की घड़ियाँ गिन रहा है। दूसरे में रावण जटायु के आक्रमण को विफल करके सीता को फिर से अपने दाँव में ले आया है; अपनी अनेकों भुजाओं में से एक को उनकी बाँह से लपेट कर वह फिर रथ पर चढ़ाता है, जिसे एक विकराल आकृति का भूत या राक्षस थाम कर आकाश में लिये जाता है। वाल्मीकीय रामायण के अरण्य काण्ड के ४६–५२ सर्गों के अनुसार कथा इस प्रकार है—,

"सीता, हाय राम! हाय लक्ष्मण! का आर्तनाद करती, रोती चिल्लाती, रावण से हरी जा रही हैं। रास्ते में जब उन की दृष्टि जटायु पर पड़ती है तो वे कहती हैं—बचाओ भगवन्! बचाओ! मुझे इस पापी के फंदे से छुड़ाओ। सीता को ऐसी दयनीय दशा में देख कर जटायु पेड़ पर से नीचे उतर आता है और रावण को अपना परिचय देकर कहता है—राजन्! राज-धर्म परायी स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करना है, उनकी मर्यादा को दूषित करना नहीं। राजाओं को अपनी स्त्रियों-के-जैसे ही दूसरों

की स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करनी चाहिए। अतएव यदि अपना कल्याण चाहते हो तो सीता देवी को छोड़ दो। अपनी तरुणाई और अपने धनुष-बाण पर न इतराओ, अपने इस कवच का भी गर्व न करो। मेरे पास हथियार नहीं तो न सही, बुढ़ापे ने मेरे शरीर को जर्जर कर दिया है तो इससे भी क्या ? नहीं जी ! मेरे रहते तुम यों आसानी से नहीं छूटने पाओगे। यह कहते कहते बूढ़ा जटायु रावण से जूझ पड़ता है और उसके साँय साँय करते हुए धारासार बाणों की कुछ परवा न करके उससे धनुष और मुकुट छीन लेता है और उसको सारथी-हीन कर देता है। अब तो रावण विवश हो कर सीता को छोड़ देता है और इस प्रकार बीसों भुजाओं के मुक्त हो जाने पर तलवार से बेचारे घायल पक्षी के पंखों को कतर डालता है। जटायु मरणान्तक घावों के लगने से धरती पर गिर पड़ता है। अपने रक्षक, बूढ़े जटायु, को मौत की वेदना में पड़ा देखकर सीता दौड़ कर उससे लिपट जाती हैं और इस तरह फूट फूट कर रोने लगती हैं जैसे कोई अपने पिता के लिए रोता हो। अन्त में रावण उन्हें फिर अपने रथ पर रख लेता है और लङ्का को उड़ चलता है।"

प्रस्तुत दृश्य के पहले भाग में रावण और जटायु के युद्ध का केवल अन्तिम अंश दिखलाया गया है। जटायु गहरे घावों के लगने से मूर्छित होकर राम के आश्रम के पास जा गिरा

उसके पखों पर कोई चोट-फटाक नजर नहीं आती । इस प्रकार यह दृश्य भी रामायणीय कथा से कुछ भिन्न है । इसकी दाहिनी ओर दूसरा दृश्य है । यहाँ रावण के रथ को एक राक्षस अपने कधों पर उठाये ले जा रहा है और उसके छोरों को पकड़े और थामे हुए है । इस निकट भार के नीचे उसकी आकृति की विकरालता दुगुनी हो गई है । उसके कानों से जजीर की कड़ी-जैसे आभरण लटक रहे हैं । इस रथ पर बाईं ओर सीता बैठी हैं । जटायु के गिरने से पहले वे उसे कुछ देने को हाथ बढ़ाये हुई हैं । यह मनोमुग्धकारी दृश्य रामायण में नहीं मिलता । अगले पटल से प्रतीत होता है कि सीता जटायु को अपनी अभिज्ञान-मुद्रिका दे रही हैं और उसे कह रही हैं कि जिस समय राम लौटते हुए आपको मिलें उन्हें यह अगूठी दे देना । दाहिनी ओर अपने वास्तविक राक्षसी वेश में रावण बैठा है । उसके दस सिरों की प्रबल पक्ति उसके मुख्य मध्यवर्ती सिर की दोनों ओर विन्यस्त है । प्रत्येक सिर पर अलग अलग मुकुट और कुण्डल हैं । रावण ने सीता को अपने अङ्क में बिठा लिया है । वे अपनी मानमर्यादा को बचाने के लिए भरसक प्रयत्न कर रही हैं । रावण की एक भुजा को उन्होंने अपनी बाँहों में जकड़ लिया है । दाहिनी ओर रावण की बीस भुजाओं में से दस भुजाएँ दिखलाई गई हैं, जिनमें से प्रत्येक

क्रम से धनुष, गदा, तलवार, परशु, पाश आदि धारण किये हुई है। उसके बाये हाथों में से एक में एक लम्बा भाला है। इन दोनों को ले जानेवाले राक्षस के भी विशाल पंख है जिनको फैला कर वह उड़ा चला जाता है और उसका पंख-भार सीता और रावण के पीछे दोनों पार्श्वों में इस तरह दर्शाया गया है मानो तह के ऊपर तह लगी हो। इस दृश्य के तल पर सबसे परे दाहिनी ओर एक बैठा हुआ तपस्वी या चाकर दर्शाया गया है, जिसके पीछे तीरों से भरा हुआ एक तरकस है। इसके पीछे एक वन-स्थली दिखाई देती है जिस पर वही परिचित आम का पेड़ या अशोक-वृक्ष विद्यमान है।

उन्नीसवां दृश्य

राम और लक्ष्मण से जटायु की भेंट

उन्नीसवें पटल का दृश्य चितेरे की अपनी कल्पना है; ...मायण में उसका कोई वर्णन नहीं। यह राम और लक्ष्मण ...साथ जटायु के मिलन का दृश्य है। जिस समय जटायु ...णोन्मुख दशा में घायल पड़ा है और फलत रावण बेखटके ...ा को लिये जाता है, उस समय सीता ने उसे सहदानी के ... अपनी अगूठी दी है। उसे ही वह यहाँ श्रीरामचन्द्र को ...ा है।

इस पटल पर सबसे परे बांई ओर दो राजकुमार बैठे हैं। उनकी आकृति पर शोक की गहरी छाया पड़ी है, वे सीता के खोये जाने से अत्यन्त उदास हैं। सबसे परे बांये छोर माथे पर हाथ लगाये श्रीरामचन्द्र हैं। उनके चेहरे पर भारी उदासी छाई हुई है, वे अपनी जीवन-संगिनी सहधर्मिणी के खोये जाने से दुःखी हो रहे हैं। उनके सिर के पीछे परिवेष बना हुआ है। उनकी दाहिनी ओर के व्यक्ति पर भी वही उदासी और उद्विग्नता छाई हुई है। परन्तु इस उदासी में कुछ कौतुहल का भी अंश है। यह और कोई नहीं, राम के छोटे भाई लक्ष्मण हैं। सम्भवतः वे अपने दाहिने हाथ से राम के ध्यान को अपने पुराने शुभचिन्तक जटायु की ओर आकर्षित

ऊपर दो गिलहरिया चढ़ी हुई हैं। यह एक ऐसा दृश्य है जो आज भी मालाबार के जंगलों से ढके हुए पहाड़ों पर देखा जा सकता है, जहाँ चन्दन के पेड़ इतनी ही बहुतायत से मिलते हैं जितनी मैसूर में।

बीसवां दृश्य

कबन्ध का दिव्य शरीर को प्राप्त होना

इस पटल पर कबन्ध राक्षस का वध दिखलाया गया है। इसे भी हम दो भागों में बाट सकते हैं। पहले में श्रीरामचन्द्र कबन्ध की जीवनलीला को समाप्त कर रहे हैं; दूसरे में दानव अपने नये दिव्य शरीर में कमलदलों से बटे-जैसे विमान पर बैठ कर स्वर्ग-लोक को जा रहा है। उसके सिर के नीचे परिवेष विद्यमान है। वाल्मीकीय रामायण के अरण्यकाण्ड के ६९—७२ सर्गों के अनुसार कथा इस प्रकार है—

"जटायु का दाह-संस्कार करने के बाद राम और लक्ष्मण पहले पश्चिम की ओर प्रस्थान करते हैं और फिर कुछ दूर चल कर दक्षिण को मुड़ते हैं। रास्ते में उन्हें अयोमुखी नाम की राक्षसी मिलती है। लक्ष्मण उसके स्तनों, नाक और कानों को

कतर डालते हैं। अन्त में आगे चलकर वे काले बादल-के-जैसे रङ्गवाले कबन्ध राक्षस को देखते हैं। उसका चेहरा और मुँह उसके पेट से जुड़े हुए हैं। उसकी भुजाएं एक एक योजन लम्बी हैं, जिनसे वह अपने सामने आनेवाले जंगली जीव जन्तुओं को समेट समेट कर अपने कन्दरा-जैसे मुख में ठोंस रहा है। अन्य जीवों के साथ राम और लक्ष्मण भी उसके मुख में खिंच आते हैं। हाय री निराशा! लक्ष्मण सन्न होकर ऐसा क्रन्दन करते हैं, उनका कलेजा इस प्रकार मुँह को आये जाता है मानो जीवन का अन्त होनेवाला है। जब वे उसके मुख के निकट खींचे आ रहे हैं, कबन्ध उनसे पूछता है कि तुम कौन हो और यहाँ कैसे आये हो। दोनों भाई उसे अपना वृत्तान्त कह सुनाते हैं। यह देखकर कि अब तो मुख के अन्दर जाने में कोई विलम्ब नहीं, राम उसका दाहिना हाथ काट कर अपने आप को उसकी लपेट से छुड़ा लेते हैं और लक्ष्मण को उसका दूसरा हाथ काटने को कहते हैं। दोनों हाथ कट जाने पर उसे अपने पूर्वजन्म का स्मरण हो आता है कि स्थूलशिरा ऋषि के शाप से मुझे यह विकृत शरीर मिला था। हर्ष-निर्भर हृदय से वह राम और लक्ष्मण को इस अनुग्रह के लिए, शाप से मुक्त किया जाने की इस अनुकम्पा के लिए, धन्यवाद देते हुए कहता है कि इन्द्र के वज्र के आघात से मेरी यह दुर्गत हुई थी, उसीसे मेरा मुँह और

सिर पेट पर जा लगे थे। यह सब कुछ कहने के बाद वह राम और लक्ष्मण से प्रार्थना करता है कि अशरणशरण! दीनानाथ! इतनी दया और करो कि मेरे शरीर को गढ़े में डालकर जला दो जिससे मैं अपनी पूर्व चेतना को प्राप्त करूँ और सीता देवी के ढूँढने में आपको अपूर्व सहायता दे सकूँ। उसकी इस अभिलाषा को पूरा करने के लिए राम लक्ष्मण को तैनात करते हैं, जिस पर उसका विशाल शरीर एक धधकते हुए भाड़ में झोंक दिया जाता है। शनैः शनैः स्थिरता और समता से आग अपना काम करने लगती है, मानो मक्खन के किसी विशाल पर्वत को जला रही हो। इस भस्मावशेष से कवन्ध एक दिव्य शरीर लेकर निकल आता है और हम उसे एक दिव्य विमान पर बैठा पाते हैं जिसे हंस आकाश-पथ पर उड़ाये लिये जाते हैं। राम को वह राय देता है कि "आप वानर-राज सुग्रीव को मिलें जिसको उसके भाई ने देश निकाला दे दिया है; उसकी सहायता से आप सीता का पता लगा सकेंगे, जो रावण के घर में शुद्ध आचारविचार से जीवन बिता रही हैं।"

यहाँ पटल के पहले भाग में, सबसे परे बांई ओर, प्रायः पिछले पटल के जटायु की सीध में ही हमें दो जंगली मनुष्य दिखाई देते हैं। बांई ओर के व्यक्ति के हाथ में एक लम्बा डंडा है और दाहिनी ओर का व्यक्ति अपने हाथ में एक छोटी मोटी

ठूंठ-जैसी तलवार लिये हुए है। इस मण्डली की दाहिनी ओर हम सबसे पहले लक्ष्मण को देखते हैं; वे बांये कंधे पर धनुष लटकाये हुए हैं जो जमीन को छू रहा है। उनकी दाहिनी ओर राम धनुष ताने तीर छोड़ रहे है जो कबन्ध के पेट में लगे हुए कन्दरा-जैसे मुख को छेद डालता है। तीर के लगने से दानव मरणान्तक मूर्च्छा में पड़ा हुआ है। यहाँ उसके दो चेहरे दिखाये गये हैं, एक छोटा और दूसरा उससे बड़ा। छोटा चेहरा अपने उचित स्थान पर है; किन्तु बड़ा उसके पेट से लगा हुआ है, जिस पर भयावने दांतों की पंक्तियां, दिखलाई गई हैं और उसकी गोल, बाहर को उठी हुई विकराल आँखों से धूर्तता झलकती है। शरीर के निचले भाग पर पीछे से दो अजगर निकले हुए हैं जो इस भयावने दृश्य को और भी भयावना बना रहे हैं। निचले अजगर के मुख के पास ही सामने बांई ओर एक मेंढक बैठा है, मानो उसकी अनधिकार चेष्टा और मुखरता के कारण उसके लिए अजगर का खुला मुँह ही उचित स्थान हो।

पटल के दूसरे भाग में हम देखते हैं कि कबन्ध का दाह संस्कार हो चुका है और पूर्वकालीन दानव कबन्ध दिव्य शरीर धारण कर एक आकाश-यान पर बैठा है। उसके हाथ वितर्क-मुद्रा की हालत में है, शरीर बहुमूल्य आभरणों से सजा

हुआ है, सिर पर अत्यन्त सुन्दर मुकुट विद्यमान है और सिर के पीछे प्रभामण्डल विद्यमान है।

इस प्रकार तचणं का यह विवरण रामायणीय कथा से दो बातों में भिन्न है। प्रथम तो रामायण में हमने देखा है कि कबन्ध की बाँहें काटी गई थीं और उसे उसकी प्रार्थना से भाड़ में झोंक दिया गया था, किन्तु यहाँ उसे परलोक पहुँचाने के लिए राम को तीर से काम लेना पड़ा है। दूसरी भिन्नता यह है कि रामायण में तो वह एक ऐसे विमान पर बैठकर आकाश-मार्ग से उड़ा चला जा रहा है जिसे हंस खींच रहे हैं, परन्तु यहाँ हम उसे एक पुष्पक (फूलों के बने हुए) विमान पर देखते हैं जो तह लगी हुई कमल की पंखुड़ियों से बना हुआ है।

इक्कीसवां दृश्य

राम सबरी के आश्रम में

इस पटल पर हम राम और लक्ष्मण को तपस्विनी सबरी के आश्रम में प्रवेश करते देखते हैं, जहाँ वह अपने आश्रम में पहुँचने से पहिले ही श्रद्धा और भक्ति से उनका स्वागत करती है। वाल्मीकीय रामायण के अरण्य काण्ड के ७४वें सर्ग के अनुसार कथा इस प्रकार है —

"कबन्ध के बताये हुए मार्ग से चलकर राम और लक्ष्मण पश्चिम की ओर पम्पा सरोवर पर पहुँचते हैं, जहाँ कमलों से भरे हुए अनेकों कुण्ड सरोवर की शोभा बढ़ा रहे हैं। चारों ओर से पेड़ों का घना उगान उसे सुरक्षित किये हुए है। अन्त में राम और लक्ष्मण सबरी के आश्रम में पधारते हैं। वह उन्हें देखते ही हाथ जोड़ कर उनके पाँवों पर गिरती है और पाद्य, अर्घ्य आदि देकर सब तरह से उनका उचित आतिथ्य करती है। उसकी सरलता और स्नेह से अत्यन्त सन्तुष्ट हो कर राम उसे पूछते हैं—'तुम्हारी तपस्या का अभ्युदय तो अच्छा हो रहा है?' वह उत्तर देती है 'महाराज, आज आपके दर्शन से मेरी तपस्या सफल हो गई है, मेरा यह जीवन सार्थक हो चुका है। मैं दिव्य विमान पर बैठ कर स्वर्गलोक को जा रही थी कि इतने ही में ऋषियों ने मुझे बतलाया कि भगवान् रामचन्द्र चित्रकूट में पधारे हैं, विदा होने से पहले उनके दर्शन कर लो; अतएव अब आपका आतिथ्य करने के बाद मैं परम धाम को जाऊँगी। यह कह कर वह दोनों भाइयों को भोजन जिमाती है और साथ ही उन्हें अपने आश्रम का इतिहास भी सुनाती है, जिससे राम को बड़ा आनन्द आता है। इसके बाद उनसे विदा होकर वह दहकती हुई आग में प्रवेश करती है और उससे दिव्य शरीर लेकर निकल आती है; जहाँ पहले उसके जीर्ण चर्म पर

झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं वहाँ अब नवीनता और सुन्दरता देखते ही बनती है, दिव्य आभरण और मालाएँ उसकी मनोज्ञता को और भी बढ़ा रहे हैं, अंग-प्रत्यङ्ग आलौकिक सुगन्धियों से अनुलिप्त है, इस प्रकार सुन्दरता को छिटकाती हुई वह प्रकाश-लोक को प्रस्थान करती है।"

पटल पर सबसे परे बाईं ओर पृष्ठभूमि पर वही परिचित आम के पेड़ की शाखाएँ दिखाई देती हैं, सामने एक किरात खड़ा है, जिसके कान फटे हुए हैं और जिस पर कोई आभूषण नहीं हैं, केवल दाहिने हाथ में नीलोत्पल की पखुड़ी और डंडी हैं। दाहिनी ओर आभूषणों से लदा हुआ कोई राजकुमार, सम्भवतः लक्ष्मण, है जिसका हाथ वितर्क-मुद्रा की हालत में है, वक्षस्थल पर यज्ञोपवीत लटक रहा है, सिर पर किरीट और सिर के पीछे प्रभामण्डल विद्यमान है। इसकी दाहिनी ओर हम फिर उसी राजकुमार को देखते हैं, किन्तु अब वह अपने बाये हाथ में धनुष लिये हुए है और दाहिने हाथ से अपने जनेऊ की ग्रन्थि को छू रहा है, जैसे कि आज भी संकट आदि के निवारण के लिए दक्षिण भारतीय ब्राह्मण करते हैं। उसकी दाहिनी ओर आलीढ-मुद्रा अर्थात् लक्ष्य-वेध की हालत में राम खड़े हैं। वे अपने धनुष की डोर को टङ्कारित कर रहे हैं और इस प्रकार अनागत भय के

के लिए तत्पर हो रहे हैं। इस दृश्य की दाहिनी ओर एक कमलों की बावड़ी के तट पर चट्टान और पेड़ दर्शाये गये हैं। पास ही एक साँप अपनी पातालवर्तिनी कन्दरा से जिज्ञासा-पूर्वक बावड़ी के अन्दर झाँक रहा है। ऊपर पेड़ की जड़ पर एक तोता बैठा है। यह कमल-सरोवर, जिसके तट पर सबरी का आश्रम था, बहुत सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है। पानी की वीचिमालाएं, उसमें तरल तरङ्गों और लहरों का उठना, उसमें उगे हुए नीले और लाल कमल, जिसमें सभी अवस्थाओं के नाल, पत्ते, कलियाँ और फूल विद्यमान हैं, सब भव्यतापूर्वक प्रदर्शित किये गये हैं। न ही उसमें जल-जन्तुओं की उपेक्षा की गई है। मछलियां वहाँ हैं और उनके ऊपर एक मगरमच्छ सिर निकाले झांक रहा है, जिसकी पत्थर-जैसे दांतों की पंक्ति और कान और आँख का पार्श्व-दृश्य स्पष्ट नजर आता है। इनसे परे, ऊपर सरोवर के तट पर, सबरी हाथ-जोड़े अपने प्रतिष्ठित पाहुनों, राम और लक्ष्मण, की आव-भगत कर रही है। उसके पीछे एक बंदरी अपने बच्चे का दुलार कर रही है, और दूर पर पीछे की ओर आश्रम के पले हुए वृक्षों की एक झलक दिखाई देती है। एक पेड़ की छाया में एक आश्रम-मृग हरी हरी घास को चट करते नजर आता है।

उक्त पटल का यह विवरण रामायणीय कथा से दो बातों में

भिन्न है,—(१) प्रथम तो रामायण के अनुसार जब कभी श्री रामचन्द्र किसी आश्रम में प्रवेश करते हैं तो उनके धनुष पर प्रत्यञ्चा नहीं चढ़ी होती; अतएव यहाँ उन्हें इस समरोन्मुख दशा में प्रदर्शित करना अनावश्यक है, विशेष करके ऐसे अवसर पर जब वे एक जराजीर्ण धर्मनिष्ठ तपस्विनी के आश्रम में प्रवेश करने को हैं। (२) इसके अतिरिक्त रामायण में सबरी का जो वर्णन है उससे मालूम होता है कि वह अत्यन्त जराजीर्ण और निर्बल है और तपस्या और संयम के कारण उसकी शारीरिक कृशता और भी बढ़ गई है और उसके वस्त्र पेड़ों की कठोर छाल के बने हैं। किन्तु यहाँ तो वह हमें आभूषणों से सजी हुई एक तरुणी जैसी लगती है जो अपने शरीर के निचले भाग को बहुमूल्य जरीदार पोशाक अथवा साड़ी से सजाने में स्त्रीजन-सुलभ गर्व से परे नहीं है।

बाईसवां दृश्य

राम और लक्ष्मण से हनुमान् की पहली भेंट

इस पटल पर राम और लक्ष्मण से वानरराज सुग्रीव के मन्त्री हनुमान् की पहली भेंट दर्शायी गई है, जिसमें वह उनसे प्रार्थना करता है कि आप हमारे निर्वासित राजा को अपना मित्र बनावें

और उन्हें संकट से छुड़ायें। किष्किधा काण्ड के २–४ सर्गों के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत के अपने अड्डे से राम-लक्ष्मण को आते देखकर संक्षुब्ध हो उठता है और भय से इधर उधर भागने लगता है। इसलिए उसके कर्मचारी और मन्त्री उसके चारों पास इकट्ठे हो जाते हैं और उसका मन्त्री हनुमान् उसे यह कह कर सान्त्वना देता है कि उनकी आकृति से प्रतीत होता है कि वे कोई सौम्य स्वभाव और भद्र आचरण के राजकुमार हैं, और आपके जानी दुश्मन और बड़े भाई वालि से उनका कतई कोई सम्बन्ध नहीं। इस प्रकार आश्वासन पाकर सुग्रीव हनुमान् को दूत बना कर भेजता है कि वह उनका पूरा पता लेकर आवे और उनसे पूछे कि आप इस जंगल में कैसे आये हैं। यह सोच कर कि कहीं उन्हें कोई सन्देह न हो हनुमान् भिक्षु के वेश में दाशरथि बन्धुओं के पास पहुँचता है और सुन्दर लच्छेदार संस्कृत में उनकी स्तुति करने लगता है, जिससे राम मन ही मन उसकी विद्वत्ता की सराहना करते हैं। अन्त में वह उन्हें पूछता है कि आप यहाँ कैसे आये हैं, किन्तु कोई उत्तर न पाकर वह अपने असली वानर वेश में प्रगट हो कर सब कुछ खुलासा कह डालता है कि मैं वायु का पुत्र हनुमान् और संकट में पड़े हुए राजा सुग्रीव का मन्त्री हूँ और अपने राजा की ओर से आप

से मित्रता और सहायता की याचना करने आया हूँ। राम लक्ष्मण को अनुरूप उत्तर देने की आज्ञा करते हैं। लक्ष्मण कहते हैं—'हाँ, राजा सुग्रीव के विषय में हम सब कुछ सुन चुके हैं और सच बात तो यह है कि हम इस समय उन्हें ही ढूँढने आ रहे हैं, वे जो कुछ कहेंगे हम करने को तय्यार हैं।' यह उत्तर सुन कर हनुमान् को अपने कार्य की सफलता पर बड़ी प्रसन्नता होती है और वह सुग्रीव की सारी कथा कह सुनाता है, जिससे लक्ष्मण की आंखों से छल-छल करके आँसू बहने लगते हैं और वे अपने भाई की विपत्तियों का रोना रोते हुए कहते हैं कि सुग्रीव ही के आश्रय के लिए तो हम व्यग्र हैं।"

पटल पर सबसे परे बांई ओर पत्तों का छाता लिये झबरे बालों का एक आदमी दिखाई देता है। उसका चेहरा कुछ मुंड़ा हुआ है और उससे शालीनता प्रगट होती है। कह नहीं सकते कि यह व्यक्ति कौन है। यदि कहें कि सम्भवतः यह भिखारी के वेश में हनुमान् है तो फिर उसे राम और लक्ष्मण के पीछे न होना चाहिए था; इसके अतिरिक्त दूत वेश में सामने जो बंदर की मूर्त्ति है वह सिवाय हनुमान् के और कोई नहीं हो सकता। इससे भी उक्त अटकल की निश्चितता जाती रहती है। इस छतरी वाले व्यक्ति की दाहिनी ओर एक राजकुमार खड़ा है। उसके बांये हाथ में एक नीला कमल है और दाहिने हाथ की उंगलियों से वह

विक्षोभपूर्वक अपने जनेऊ को छू रहा है। अतएव यह राजकुमार लक्ष्मण हो सकता है। उनकी दाहिनी ओर, सम्भवतः धनुष की डंडी को लिए, रामचन्द्र खड़े हैं। सामने खाद्य पदार्थों से भरे हुए दो बर्तन रक्खे हैं, जिन्हें सम्भवतः हनुमान् उपहार रूप में लाया है। यद्यपि रामायण में इसका कोई उल्लेख नहीं तथापि आज भी दक्षिण भारत में यह प्रथा चली आती है कि जब पहले पहल किसी बड़े आदमी अथवा अपरिचित व्यक्ति को मित्रभाव से मिलने जाना हो तो अपने साथ कुछ न कुछ उपहार अवश्य ले जाना चाहिए। चूंकि इन दृश्यों को प्रदर्शित करने वाले शिल्पी दक्षिण भारत के रहने वाले थे, उन्होंने इस छोटी सी मनोज्ञता को अपनी जातीय प्रथा से लिया होगा। उपहारों से परे दाहिने छोर हनुमान् ठीक उसी ढंग से बैठा है जैसे मलयाली आज भी किसी राजा या ब्राह्मण के सामने बैठता है। झाड़ियों और चट्टानों की साधारण पृष्ठभूमि भी यहाँ दर्शायी गई है।

यह विवरण वाल्मीकीय रामायण से तीन मुख्य बातों में भिन्न है, अर्थात् (१) रामायण में उपहारों का अभाव, (२) यहाँ हनुमान् का भिक्षु के रूप में नहीं किन्तु अपने वास्तविक रूप में आना, (३) अनभीष्ट छत्रधारी की उपस्थिति। किन्तु अन्य सभी बातों में,—लक्ष्मण का राम की ओर से उत्तर देने, हनुमान् का ध्यान पूर्वक सुनने के बाद बार बार वाग्मितापूर्वक प्रार्थना करने आदि में, यहाँ वाल्मीकि का अनुसरण किया

गया है। यहाँ एक ओर ध्यान देने योग्य विचित्र बात राम की बांई हथेली में एक फूल का होना है, जो सम्भवतः उनकी हस्तरेखाओं में से एक, अर्थात् पद्म-रेखा, का सांकेतिक प्रदर्शन है।

तेईसवां दृश्य

हनुमान् का राम-लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले जाना

इस पटल पर सम्भवतः वह दृश्य दिखाया गया है जिसमें हनुमान् राम और लक्ष्मण को अपने राजा सुग्रीव के पास ले जा रहा है। किष्किन्धाकाण्ड के चौथे सर्ग के २६-३६ श्लोकों के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"लक्ष्मण की उद्गार-भरी अभ्यर्थना को सुनने के बाद हनुमान् मधुर और स्निग्ध वचनों में उत्तर देता है कि सीता को ढूँढ लाने में हमारे महाराज सुग्रीव और हम सब कोई बात उठा न रक्खेंगे, केवल आपकी मेरे साथ चलनेमात्र की देर है। राम यह कहते हुए सहमत होते हैं कि हनुमान् के मुख से कभी झूठी बात नहीं निकल सकती। हनुमान् अपने वास्तविक वानर-वेश में राम-लक्ष्मण को अपनी पीठ पर उठा कर सुग्रीव के पास ले जाता है।"

सम्भव है कि उक्त पटल पर इसी रामायणीय घटना को दर्शाया गया हो, किन्तु उसकी भिन्नताओं को देखकर तो यही कहना पड़ता है कि शिल्पी ने अपने तक्षण के विषय को किसी और कहानी से लिया होगा या उस पर अपनी कल्पना का रङ्ग चढ़ाकर मूल कथा को बिल्कुल बदल डाला होगा। पटल के बाये छोर पर, पिछले पटल के आसीन हनुमान् के सामने, उसकी दाहिनी ओर, हम किसी एक राजकुमार को दाहिने हाथ मे धनुष-बाण लिये कूच करते देखते हैं। उसका शरीर आभूषणों से लदा हुआ है, सिर पर मुकुट और सिर के पीछे परिवेष विद्यमान है। यह राम हो सकते हैं। दाहिनी ओर, बहुमूल्य आभरण पहने एक और राजकुमार कूच करते दिखाई देता है। उसके दाहिने हाथ पर कमल का फूल है, सिर पर मुकुट कोई नहीं और न सिर के पीछे कोई परिवेष ही है। यद्यपि उसके कान, ग्रीवा और शरीर के दूसरे अवयव आभरणों से लदे हुए हैं तथापि इसमें यह बात साभिप्राय है कि न उसके सिर पर मुकुट है और न सिर के पीछे परिवेष। प्राम्बनम् के सभी रामायणीय तक्षणों में लक्ष्मण सदैव मुकुट पहनते हैं, उनके सिर के पीछे परिवेष होता है और उनका चेहरा डोलिसफैलिक प्रकार का है। किन्तु यहा हम एक ऐसे राजकुमार को देखते हैं जिसका चेहरा ब्रैकाइस-फैलिक है और जो अपने ललाट के ऊपर शिखा को इसी

तरह बांधे हुए जिस तरह आज भी मालाबार के कट्टर सनातनी लोग बांधते हैं। अतएव शिल्पी के तक्षण का आधार रामायणीय कथा से भिन्न और कोई कहानी होगी अथवा भूल से उसने अपने देश मालाबार के लोगों का ही जैसा सिर का बाना यहाँ भी प्रदर्शित कर दिया है। कूच करते हुए इन दो व्यक्तियों की दाहिनी ओर एक नंगा धडंगा वानर पथप्रदर्शन करते दिखाई देता है और उसकी दाहिनी ओर इस पथप्रदर्शक मण्डली का अधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति सम्भवतः हनुमान् है, जिसके अधिष्ठातृत्व में यह यात्रा हो रही है; उसके एक हाथ में गदा है और दूसरे हाथ से वह अपने साथी को धरती पर कोई वस्तु दिखा रहा है। पानी से निकली हुई कमल की कलियों से मालूम होता है कि वे सब सम्भवतः कमलों से भरे पम्पासरोवर के किनारे किनारे कूच कर रहे हैं। यह एक उल्लेखनीय बात है कि प्रधान वानर के हाथ में यहाँ जो गदा है वह मालाबार के आधुनिक मन्दिर-महोत्सवों में प्रयुक्त होने वाली चाँदी की गदा से मिलती जुलती है। इस चित्र को पूर्ण करने के लिए पृष्ठभूमि पर अरण्यस्थली दर्शायी गई है, जिस पर पक्षियों से युक्त पेड़, झाड़ियां, चट्टान, मिट्टी के तट कल्पित किन्तु स्वाभाविक रूप में विद्यमान हैं।

चौबीसवां दृश्य

सुग्रीव से राम की मैत्री

यह दृश्य तीन भागों में बाटा जा सकता है, जो उन सब घटनाओं के सूचक हो सकते हैं जिनके फल स्वरूप राम और सुग्रीव ने अग्नि को साक्षी करके परस्पर मैत्री स्थापित की। पाचवें सर्ग के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"ऋष्यमूक पर्वत से मलय पहाड पर जाकर हनुमान् राम लक्ष्मण का सारा भेद लेता है और उन्हें कपिराज सुग्रीव के पास ले जाता है। उनकी स्तुति करने के बाद वह कहता है—'महाराज, ये वीर राजकुमार आपके साथ मित्रता करने को तय्यार हैं, इसलिए आपको भी इसके लिए सहमत होना चाहिए और उनकी आराधना करनी चाहिये। हनुमान् के इन वचनों को सुनकर सुग्रीव का सारा भय जाता रहता है और मनुष्य का मनोहर रूप धारण कर वह प्रेम से उत्तर देता है—'जैसा कि हनुमान् ने फरमाया है यदि आप मेरी मित्रता चाहते हैं तो कृपया यह लीजिए, मेरे इस फैले हुए हाथ को शीघ्र अपने हाथ से ग्रहण कीजिए।' सुग्रीव के इन शिष्टजनोचित शब्दों को सुनकर राम हर्ष से उसके साथ हाथ मिलाते हैं। इसके बाद हनुमान् फिर अपने वास्तविक स्वरूप को ग्रहण करता है और काष्ट से अग्नि को प्रज्वलित करता है। इस धधकती हुई आग को फूलों से पूज

राम और सुग्रीव की मैत्री। पृष्ठ ११२।

कर राम और सुग्रीव उसकी प्रदक्षिणा करते हैं और उसे साक्षी करके शपथ लेते हैं कि हम सुख और दुःख में एक दूसरे के मित्र और सहायक बने रहेंगे। फिर एक दूसरे पर दृष्टि फेर कर वे अत्यन्त आनन्दित होते हैं। इसके बाद सुग्रीव एक शाल वृक्ष के पत्ते छिनार कर राम के साथ उसकी टहनियों में आसन ग्रहण करता है, जब कि हनुमान् लक्ष्मण को एक चन्दन की टहनी देता है जो फूलों के घने गुच्छों से भरी हुई है। अब राम वालि को मारने और सुग्रीव सीता को ढूँढ लाने की प्रतिज्ञा करते हैं।"

यहाँ पटल पर हम देखते हैं कि उसके दृश्य इस रामायणीय कथा से नहीं मिलते, किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनमें प्रधान घटना अर्थात् राम और सुग्रीव की मित्रता का प्रदर्शन किया गया है और सम्भवतः दो एक बातें रामायण से लेकर दर्शायी गई हैं, अर्थात् (१) आग बालने की लकड़ी, जो अग्नि की सूचक है, यद्यपि यहाँ उसे लानेवाला हनुमान् नहीं किन्तु लक्ष्मण है; (२) सुग्रीव का अत्यन्त हर्ष से एक पेड़ की टहनियों पर बैठा होना, यद्यपि यहाँ उसके साथ राम नहीं हैं; (३) राम का सुग्रीव को अभय का वचन देना और सुग्रीव का उसे कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करना।

पटल के पहले भाग में बायें छोर पर शिला पर बैठा हुआ एक राजकुमार दिखाई देता है। उसके शरीर पर बहुमूल्य

आभरण, सिर पर अलौकसुन्दर किरीट और सिर के पीछे परि-
वेष है। वह राजलीला आसन लगाये बैठा है, और उसकी आकृति
से प्रतीत होता है मानो वह गहरे विचारों में डूबा हुआ है
और शोक और चिन्ता से उसका हृदय संक्षुब्ध हो रहा है।
सामने दाहिनी ओर उसी तरह वस्त्राभूषणों से सजा हुआ
एक और राजकुमार झुक कर उसे एक पेड़ की टहनी अथवा
काष्ठ-खण्ड दे या दिखा रहा है। इस दूसरे राजकुमार के पीछे
पृष्ठभूमि पर एक आम का पेड़ दिखलाया गया है, जो पत्तों
और पके हुए फलों की पूर्ण छटा धारण किये हुए है। अतएव
पहला राजकुमार जो विचारों में डूबा हुआ है राम हो सकता
है और दूसरा उनका भाई लक्ष्मण। सबसे परे बांई ओर दूसरे
दृश्य में हम इसी राजकुमार लक्ष्मण को उक्त काष्ट-खंड को
जलाकर लाते देखते हैं। वह घुटने के बल बैठ कर उसे
पेड़ों की टहनियों में *राजलीला आसन से बैठे हुए राजकुमार*
को दे या दिखा रहा है, जिसकी आकृति से अत्यधिक प्रमोद
टपक रहा है। अतएव आग बालनेवाला राजकुमार लक्ष्मण
और अपनी नैसर्गिक शोभा से देदीप्यमान भद्र पुरुष सुग्रीव
हो सकता है। जिस वृक्ष पर सुग्रीव बैठा है उसकी जड़ पर
एक बकरी दर्शायी गई है, जो सम्भवतः उस बलि की सूचक
है जो राम और सुग्रीव की शाश्वतिक मैत्री के उपलक्ष में दी

गई होगी। लक्ष्मण की बाई ओर पृष्ठभूमि पर एक पशु दर्शाया गया है, जिसके कान लम्बे और खुर फटे हुए हैं और जो एक चट्टान की उपरली कगार पर लेटा हुआ है; जिस वृक्ष पर प्रमोद की हालत में सुग्रीव बैठा है उसके पास के वृक्ष के सिरे पर पत्तों के बीच एक जंगली बिल्ली दौड़ती हुई दिखलाई गई है।

तीसरे भाग में सबसे परे बाई ओर सुग्रीव के पार्श्व में एक शिला पर पलथी मारे कोई राजकुमार हाथ जोड़े बैठा है। उसके शरीर पर बहुमूल्य आभूषण हैं और सिर पर मुकुट विराज रहा है। अतएव यह राजकुमार लक्ष्मण हो सकता है। उसकी दाहिनी ओर राजसी और ओजस्विनी आकृति का एक और राजकुमार खड़ा है, उसका शरीर भी बहुमूल्य आभरणों से लदा हुआ है, सिर पर मुकुट और सिर के पीछे परिवेष है। उसका दाहिना हाथ इस तरह उठा हुआ है जैसे कोई वरदान दे रहा हो और बाये हाथ की स्थिति विश्वास की परिचायक है। यह श्रीरामचन्द्र हैं, जो सुग्रीव को अभय और सहायता का वचन दे रहे हैं और उसे कह रहे हैं कि वालि से डरने की कोई बात नहीं। दाहिनी ओर उनके चरणों पर सुग्रीव राम के इस वचन से प्रसन्न हो कर, खीस निकाले बैठा है और हाथ जोड़े अपनी कृतज्ञता प्रगट कर रहा है। इन तीन जनों के

पीछे पेड़, चट्टान और झाड़ियों से युक्त अरण्यस्थली की साधारण पृष्ठभूमि है।

पचीसवां दृश्य

राम का एक तीर से सात ताल-वृक्षों को छेदना

इस पटल पर उस रामायणीय घटना को प्रदर्शित किया गया है जिसमें राम सुग्रीव को अपनी शक्ति और लक्ष्यवेध-कौशल का विश्वास दिलाने के लिए एक ही तीर से सात तालवृक्षों को छेद डालते हैं। किष्किन्धा काण्ड, ११-१२ सर्गों के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"अपने शत्रु और भाई वालि के पराक्रम को सुनाने के बाद सुग्रीव राम से प्रार्थना करता है कि आप भी मुझे अपने कौशल और शक्ति का प्रमाण दें, जिस पर राम अपने पैर के अंगूठे से दुन्दुभि दैत्य के शरीर को उठा कर दस योजन परे फेंक देते हैं। यह देख कर सुग्रीव कहता है—'महाराज, इस राक्षस का शरीर तो कभी का सूखा पड़ा था, मांस मज्जा तो उसमें कुछ था ही नहीं; यही काम वालि ने भी उस समय कर दिखाया था जब दैत्य की देह में मांस रुधिर आदि सब कुछ था, यद्यपि वह स्वयं एक आयासकारिणी लड़ाई के कारण अत्यन्त श्रान्त और निर्बल

हो रहा था, इसलिए बेहतर यह है कि आप अपने तीर की शक्ति को इस सामने के ताड़ के पेड़ पर आजमा कर दिखावें।' यह सुन कर राम अपने विशाल धनुष को उठाते हैं, उस पर डोर चढ़ाते हैं और उससे एक तीर जो छोड़ते हैं तो वह केवल सुग्रीव के बताये हुए ताल-वृक्ष को ही नहीं किन्तु उसी की सीध में खड़े हुए छः और ताड़ के पेड़ों को भी छेद कर और फिर पृथिवी के गर्भ में प्रवेश करके एक मुहूर्त के बाद उनके तरकस में लौट आता है! शक्ति और कौशल के इस प्रदर्शन से हैरान होकर सुग्रीव हाथ जोड़ कर राम के पाँवों पर जा गिरता है।"

यहाँ पटल पर सबसे परे बाईं ओर हमें दोनों हाथों से पत्तों का एक छाता पकड़े एक अरण्यवासी दिखाई देता है। उसके पार्श्व में अपने दाहिने हाथ में नील कमल लिये लक्ष्मण हैं। उनकी दाहिनी ओर हम राम को अपने धनुष से अमोघ बाण छोड़ते देखते हैं। दुर्भाग्य से इस पटल पर राम का चेहरा विशीर्ण हो गया है। उनकी दाहिनी ओर एक पेड़ है और उससे नीचे एक और पेड़ के तले एक बन्दर बैठा है जिसके हाथ में एक फल है और जो विस्मय भरी आँखों से भक्तिपूर्वक राम को निहार रहा है। अतएव यह सुग्रीव का मन्त्री हनुमान् हो सकता है। हनुमान् की दाहिनी ओर हम सुग्रीव को देखते हैं, जो अपने घुटनों पर झुक कर इशारा कर रहा है, और राम से

मानो यह कह रहा है कि अपने कौशल और शक्ति को प्रत्यक्ष कर दिखावें। एक सीध में पत्तों और फूलों से भरे हुए सात ताड़ के पेड़ दिखाये गये हैं। पहले पेड़ को छोड़कर शेष छः पेड़ों की सिरे की टहनियों पर कौवे दर्शाये गये हैं और बाईं ओर से छठे पेड़ की जड़ पर एक और सातवां कौआ है; पहले पेड़ के तने पर एक जंगली बिल्ली ठीक उसी तरह चढ़ी जा रही है जिस तरह बिल्लियां पक्षियों के अण्डों को खाने के लिए किसी पेड़ पर चढ़ती हैं।

छब्बीसवां दृश्य

वालि और सुग्रीव की लड़ाई

इस पटल पर राम और लक्ष्मण दूर बैठ कर वालि और सुग्रीव की लड़ाई को देख रहे हैं, जिसमें सुग्रीव को बुरी तरह परास्त होना पड़ता है। किष्किंधाकाण्ड के १२वें सर्ग के अनुसार कथा इस प्रकार है—

"राम के तीर से सात ताल-वृक्षों और साथ ही पृथिवी को बींधे जाते देख कर सुग्रीव के आनन्द की सीमा नहीं रहती, वह चिल्ला कर कह उठता है कि अब राम के हाथ अवश्य वालि का निबेड़ा होगा। इस पर राम सुग्रीव को कहते हैं कि तुम आगे आगे चल कर वालि को ललकारो और उसे युद्ध के लिए तय्यार करो,

हम भी तुम्हारे पीछे पीछे चले आते हैं। सब के सब वालि की राजधानी किष्किंधा में पहुँचते हैं। राम लक्ष्मण आदि तो जंगल के वृक्षों के पीछे छिप जाते हैं और सुग्रीव आगे बढ़ कर वालि को युद्ध के लिए ललकारते हुए अपनी बिजली की कड़क जैसी गर्जना से अन्तरिक्ष को गुंजा डालता है। दोनों मल्लयुद्ध के लिए जुट जाते हैं और भयंकर मुक्के मार मार कर एक दूसरे को कूटने लगते हैं। राम देखते हैं कि वे एक दूसरे पर दनादन घूँसों का विकट आघात कर रहे हैं, किन्तु दोनों की अनुहार एक जैसी होने से यह नहीं जान सकते कि कौन वालि है और कौन सुग्रीव। इस भय से कि कहीं सुग्रीव ही को लक्ष्य न बना बैठें वे धनुष बाण को नहीं उठाते। कुछ ही देर में सुग्रीव की फूँक निकल जाती है, खून से लथपथ और सर्वथा परास्त होकर वह अपने भाई से अपने आपको छुड़ा लेता है और जंगल को भाग निकलता है; वालि उसका पीछा नहीं करता, क्योंकि यह जंगल उसके लिए निषिद्ध है।" अगले विवरण से मालूम होगा कि यहाँ उक्त पटल पर कई अनावश्यक बातें बढ़ा दी गई हैं, जिनका इस कथा पर कोई आधार नहीं।

पटल पर, सबसे परे बाई ओर, हमें राजसी वस्त्र और आभरण पहने शिला पर बैठा एक आदमी दिखाई देता है। हाथ में उसके धनुष्काण्ड है, चेहरे पर सोच की गहरी छाया पड़ी है, मुकुट और

परिवेष कोई नहीं; कह नहीं सकते कि यह व्यक्ति कौन है। ः
ऊपर एक चट्टान की कगार पर एक पक्षी, सम्भवतः कोई घुग
नीला पहाड़ी कबूतर, बैठा है । दाहिनी ओर एक बूढ़ा म
बैठा है जो कोई ऋषि जैसा लगता है और जिसकी भरी हुई
उसकी ठुडी से दो धाराएं हो कर उसके वक्षःस्थल पर अव
कर रही है । उसके सिर के ऊपर एक पहाड़ी टीले पर
हरिन लेटा हुआ दर्शाया गया है जो सोया हुआ जैसा लगता
इसके नीचे और बिना मुकुट के राजकुमार और ऋषि की दा
ओर राजलीला आसन लगाये एक और राजकुमार बैठा है; र
शरीर पर बहुमूल्य भव्य आभूषण झिलमिला रहे हैं, सिर पर अ
सुन्दर किरीट है, सिर के पीछे परिवेष, और हाथ इस तरह उ
जैसे कोई वितर्क करने में उठाता है। यह और कोई नहीं, राम
उनके पार्श्व में एक और राजकुमार (लक्ष्मण) इन्हीं के जैसे वस्त्राभ
पहने बैठा है, जो अपने दाहिने हाथ की उंगली से वालि और सु
की लड़ाई की ओर इशारा कर रहा है । इस राजकुमार के इस
हुए दाहिने हाथ के ऊपर एक पत्थर की शिला पर बैठा हुआ
और पक्षी, सम्भवतः एक कौवा दर्शाया गया है, जबकि इसके
पेड़ों की वही साधारण आरण्य पृष्ठ-भूमि विद्यमान है ।
आसीन राजकुमारों के सामने दाहिनी ओर कुछ दूर पर मरणा
आश्लेष से चिपटे हुए, दोनों भाई वालि और सुग्रीव, परस्पर हाथ

वानर वालि की मृत्यु का विलाप कर रहे हैं।

हाये, एक दूसरे के प्राणों के ग्राहक बनकर, लड़ते दिखाई
 हैं। इनकी दाहिनी ओर वही साधारण अरण्य-स्थली का
य दिखलाया गया है, जिसमें अपने बड़े बड़े लटकते हुए
लों समेत कटहल का एक पेड़ स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

सत्ताईसवां दृश्य

वालि का वध

इस पटल पर वालि का वध दर्शाया गया है। जिस समय वह मरणान्तक युद्ध में अपने छोटे भाई सुग्रीव से जुटा है, राम उस पर अपना अमोघ बाण छोड़ कर उसे परलोक भेज रहे हैं। किष्किन्धा काण्ड के १२-१६ सर्गों के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"सुग्रीव मनोजव से उड़ता हुआ ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचता है और लक्ष्मण और हनुमान् के साथ राम को मिलकर कहता है कि हमें कैसे विश्वास हो कि आप जैसा कहते हैं वैसा ही आचरण भी करेंगे। राम उसे समझा बुझाकर एक बार फिर अपनी सहायता का विश्वास दिलाते हैं और लक्ष्मण को उसके गले में फूलों से भरी हुई सलक्षणा लता की माला डालने को कहते हैं, जिससे वालि का वध करते समय उसे पहचानने में

कोई चूक न हो। यह हो जाने पर वे किष्किधा को प्रस्थान करते हैं। राम अपने विशाल धनुष और घातक बाण को लेकर तय्यार है। सुग्रीव फिर कड़क कर ललकारने लगता है। उसकी ललकार को सुनकर वालि अपने रनवास से नीचे कूद आता है, ताकि वह उसे इस धृष्टता का सबक सिखावे। अपने पति को इस दशा में देखकर तारा ज़ोर से उस पर लिपट जाती है और कहती है,—'नहीं, यह न होगा, भाई से लड़ना अच्छा नहीं अपने इस क्रोध को शान्त कीजिए और सुग्रीव को ... बना दीजिए; क्या आपको पता नहीं कि वह किस बिते पर इतनी कूदाफाँदी कर रहा है? हमारे अंगद को अपने गुप्तचरों से खबर मिली है कि उसने राम के साथ मैत्री कर ली है।' वालि उत्तर देता है—'राम जैसे भद्र पुरुष यों ही, बिना किसी कारण के, किसी का अनिष्ट नहीं करते; भला तुम्हीं बताओ मैं ने उनका क्या बिगाड़ा है!' यह कह कर वह अपनी पत्नी के नियन्त्रण से अपने आपको छुड़ा लेता है और सुग्रीव के निकट जाकर, प्राणों का ग्राहक बन कर, उससे जुट जाता है। तारा और रनवास की अन्य स्त्रियां रोती सिसकती अन्दर चली जाती हैं। वालि अपने भाई को धमकी देने के बाद उसके एक ऐसा मुक्का मारता है कि जिससे वह सन्न हो जाता है। इसके प्रतीकार में सुग्रीव एक समूचे बड़ के पेड़

ो उखाड़ कर ज़ोर से उसके ऊपर फेंक देता है । इस तरह तेनों में गुत्थमगुत्था होती चली जाती है, यहाँ तक कि आख़िर ुग्रीव के छक्के छूट जाते हैं और वह धराशायी होकर अत्यन्त नेराशा की हालत में शून्य दृष्टि से उस ओर देखने लगता है जेधर राम हैं । सुग्रीव को इस दयनीय दशा में देख कर राम अपने धनुष पर शर-सन्धान करते हैं, और उसे तान कर तीर जो छोड़ते हैं तो वह वालि के विशाल वक्षःस्थल पर इस प्रकार लगता है जैसे आकाश से वज्र गिरा हो, जिससे चकरा कर वह कुल्हाड़ी से कटे हुए वृक्ष की भाँति धड़ाम से धरती पर गिर पड़ता है।

यहाँ पटल पर सबसे परे हमें आभूषण और मुकुट पहने एक राजकुमार दिखाई देता है। उसके सिर के पीछे प्रभामण्डल है और वह विचारों में डूबा-जैसा अपने हाथ पर रक्खे हुए धनुष्कांड को देख रहा है । यह राजकुमार लक्ष्मण है । उनके पार्श्व में दाहिनी ओर राम आलीढ मुद्रा की हालत में धनुष ताने ज़ोर से तीर छोड़ रहे हैं । उनके भी वही साधारण राजसी वस्त्र और आभूषण हैं, सिर पर मुकुट और सिर के पीछे परिवेष है । उनके सामने दाहिनी ओर एक व्यक्ति बैठा है, जो उंगली से वालि के वध की ओर इशारा कर रहा है और जिसकी उपस्थिति अनावश्यक प्रतीत होती है । उसके

आगे दाहिनी ओर पत्तों और फलों से लदा हुआ एक आम का पेड है। इस पेड की दाहिनी ओर हम दो व्यक्तियों को लडते देखते हैं। इन में से सामने का व्यक्ति वालि है। बाण की अनी को इस तरह दर्शाया गया है जैसे वह उसकी छाती पर चुभ रही हो और उसके लगने से वह बरबस अपने बांये हाथ की उँगलियां उठाकर शान्ति की प्रार्थना कर रहा हो अथवा यह कह रहा हो कि कृपया क्षमा कीजिये, ठहरिये। उससे कुछ नीचे मुख फेरे सुग्रीव दिखाई देता है, जिसे वालि अपनी पाप जैसी लपेट में जोर ले ऐंठे हुए है और जिसे उस सक्की की माला से जिसको लक्ष्मण ने उसके गले में डाला था हम आसानी से पहचान सकते हैं। उसकी दाहिनी ओर एक पलाश का जैसा वृक्ष दर्शाया गया है, जिसके तने पर, सम्भवत राम के धनुष की टंकार से भीत-चकित होकर, एक जगली बिल्ली चढ रही है।

अठाईसवां दृश्य

इस पटल . है जहाँ वालि
के स्थान में राज. की रुमा

समेत सिंहासन की शोभा बढ़ा है और अपने दरबारियों के लाये हुए उपहारों को ग्रहण कर रहा है । यद्यपि रामायण में इस दरबार का उल्लेख नहीं है तथापि किष्किंधा कांड के २६वें सर्ग में राज्याभिषेक और उसके आगे और पीछे की सारी घटनाएँ बड़े रोचक ढंग से इस प्रकार वर्णन की गई हैं,—

"जब बालि का अन्त्येष्टि कर्म समाप्त हो जाता है तो सुग्रीव, तारा और अंगद को सान्त्वना देकर राम, जो उनके शोक से उन्हीं-जैसे दु खी हैं, उन्हें किष्किंधा में जा कर राजकाज सम्हालने को कहते हैं । उनके साथ चलने के निमन्त्रण को राम यह कह कर अस्वीकार कर देते हैं कि जब तक बनवास की अवधि पूरी नहीं होती मैं किसी नगर या ग्राम में पदार्पण नहीं कर सकता, सो तुम लोग जाओ और हमारे आदेश से सुग्रीव को किष्किंधा का राजा और अंगद को युवराज बनाओ । यह कह कर वे वर्षा ऋतु को बिताने के लिए अपनी गुफा में प्रवेश करते हैं । सुग्रीव सहस्रों वानरों के साथ नगर में प्रवेश करता है और वहाँ उसे राजोचित ठाट से सिंहासन पर बिठाया जाता है । ब्राह्मणों को बहुमूल्य रत्न, बढ़िया वस्त्र और उत्तम खाद्य देकर परितुष्ट किया जाता है और वे एक आलीशान तकिये के सहारे सुवर्ण के सुन्दर आसन पर बैठे हुए सुग्रीव के सिर पर चारों समुद्रों से सोने के कलसों में लाये हुए जल को उँडेल कर उसका राज-तिलक

करते हैं । यह अभिषेक गज आदि दस प्रमुख वानरों के द्वारा होता है।"

अतएव हम देखते हैं कि प्रस्तुत पटल पर यह घटना कुछ तारतम्य के साथ दर्शायी गई है । सबसे परे बांई ओर अभिषेक भवन के प्रकोष्ठ के नीचे हम अभिषेक के वस्त्राभरणों की अशेष महनीयता से महीयान् राजा सुग्रीव को बैठा पाते हैं। उसके सिर पर मुकुट विराज रहा है, सिर के पीछे प्रभामण्डल विद्यमान है, और दाहिना हाथ इस तरह उठा हुआ मानो वह अपने दरबारियों को यह प्रतीति दिला रहा हो कि तुम जैसा चाहते हो वैसा ही होगा । सिंहासन तक्षण-कला का एक उत्कृष्ट नमूना है, यद्यपि दुर्भाग्य से सुग्रीव का मुख कुछ विशीर्ण हो चला है जिससे उस का वानरी असौन्दर्य और भी बढ़ गया है । अभिषेक-भवन या मण्डप की छत पर वही साधारण पक्षी बैठे हैं और सुग्रीव की बांई ओर उसकी प्यारी स्त्री और पटरानी रुमा आसीन है; उसके शरीर पर बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण हैं, सिर पर मुकुट और सिर के पीछे परिवेष है । उसकी आकृति इतनी मनोमुग्धकारिणी है कि इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वालि उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए लालायित रहा और वानरों में वह सबसे सुन्दर मानी गई । सुग्रीव की दाहिनी ओर, सामने, वे बहुत से उपहार हैं जिन्हें

उसकी प्रजा के लोग लाये हैं; इनमें से कुछ तो भूमि पर रक्खे हैं और कुछ, जिनमें एक बहुमूल्य पोशाक भी है, अभी बन्दरों के हाथों में ही हैं जो उन्हें अपने राजा को भेंट कर रहे हैं। पहिले तीन प्रधान बन्दरों के सिर के ऊपर एक चट्टीले आले में तीन ढके हुए कलस रक्खे हैं, जो सम्भवतः उन सुवर्ण-कलसों के सूचक हैं जिनमें रामायण के अनुसार सुग्रीव के राज्याभिषेक के लिए चारों समुद्रों से जल लाया गया था। सामने भिन्न भिन्न मुद्राओं से बैठे अथवा खड़े हुए दस प्रधान बन्दर निःसन्देह वही बन्दर हैं जिनका उल्लेख वाल्मीकि ने किया है। अर्थात्, गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, गन्धमादन, मयन्द, द्विविद, हनुमान्, जाम्बवान् और नल, और सम्भवतः सामने बैठे हुए पहले तीन हनुमान्, जाम्बवान् और नल हैं। दृश्य के परले छोर एक मालाबारी नमूने का मकान दर्शाया गया है; उसकी ढालवां छतों में से एक पर दो कौवे प्रदर्शित किये गये हैं, जिनमें से एक किसी चीज को चोंथिया रहा है। छत के नीचे के एक छोटे से काठ के विवर या आले के अन्दर बिल्ली की क़िस्म का कोई एक जन्तु घुस रहा है, और इस मकान की छत के नीचे या उसकी दीवारों के सहारे बैठे हुए बन्दरों में से दो छोर के बन्दर ऐसे हैं जिनमें एक उपहारों से भरा हुआ एक करण्डक लिए हुए है और दूसरे उसके पीछे सम्भवतः अपनी दुम हिलाकर उस पर

बैठी हुई मक्खी को उड़ा रहा है—यह एक विशेषता है जो मन्दरों में आज भी देखी जा सकती है।

उनतीसवां दृश्य

सुग्रीव का राम से अपने प्रमाद के लिये क्षमा मांगना

इस पटल पर सुग्रीव का राम के पास आने का दृश्य दिखलाया गया है, जिसमें सम्भवत सुग्रीव अपने प्रमाद के लिए राम से क्षमा माग रहा है और कह रहा है कि अब भविष्य में सीता जी को ढूँढ़ लाने में कोई बात उठा न रक्खूगा। किष्किधा-काण्ड के ३१—३८ सर्गों के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"वर्षा ऋतु बीत चली है। सुग्रीव ने जो सहायता का वचन दिया था उसके पूरा होने के कोई लक्षण नज़र नहीं आते। शरद् सुन्दरी अपने पूर्ण शृङ्गार के साथ आ पहुँची है। उसके नाज़ नखरे राम की विरह-व्यथा को और भी बढ़ाने लगे हैं। वे कहते हैं—देखो, लक्ष्मण, दुर्दैव ने हमारे साथ यह क्या मखोल ठाना है। राम के हृदय को व्यथित देख कर लक्ष्मण को सुग्रीव पर क्रोध आता है, वे सहसा अपने आसन से कूद पड़ते हैं और वानर-राज को सीधा करने के लिए अपना धनुप बाण उठा लेते हैं। उन्हें इस प्रचण्डता से टूटते देख कर राम उन्हें रोक लेते

हैं उनके क्रोध को शान्त करते हैं और फिर नेक सलाह देकर प्रस्थान करने को कहते हैं । लक्ष्मण क्रोध से पहले ही आग बबूला हो रहे थे, सुग्रीव की राजधानी में पहुँचते हैं तो उसकी चौकसी करनेवाले बन्दरों पर और भी झुँझला उठते हैं । अन्त में जबरदस्ती वानरराज के अन्त पुर में घुसते हैं तो देखते हैं कि वहाँ कुछ और ही गुल खिला हुआ है, राजा शराब के नशे में चूर है, सारे अन्त पुर में पाशविक प्रेम की चहल पहल है, अश्लीलता नि संकोच अपना नंगा नृत्य कर रही है। इस बीभत्स दृश्य को देखकर क्रोध कार्य का रूप धारण कर लेता है; लक्ष्मण जोर से धनुष को खींच कर एक अमोघ बाण छोड़ते हैं, जिसकी बिजली की कड़क-जैसी टङ्कार से सारा अन्त पुर गूँज उठता है । इससे सुग्रीव को कुछ होश आता है और जैसे ही वह सिंहासन पर बैठता है उसके शरीर से कंपकंपी छूटने लगती है और अपनी चकनाचूर हालत से सम्हल कर वह बरबस अपने मस्तिष्क में उस विचारशीलता को लाने की कोशिश करता है जिसे हनुमान् और अगद की सारी नेक सलाहें न पैदा कर सकी थीं । वह तारा से, जिसकी रगरलियों से उसने अभी अपने आपको विमुक्त किया था, प्रार्थना करता है कि जाओ प्रिये ! लक्ष्मण जी को मना बुझा कर किसी तरह शान्त करो, वे राजकुमार हैं, वीर योधा हैं, अतएव वे अपने दिल की भड़ास को स्त्री पर न निका-

लेंगे। इस प्रकार तारा, सुन्दरी तारा, मदभरे रतनारे नयनों-वाली तारा, नशे से जिसके मुख से शब्द स्पष्ट नहीं निकलते, वह सुग्रीव की तारा विपर्यस्त नूपुर झनकारती, गहनों से लदी हुई छमछम करती हुई लक्ष्मण के सन्मुख उपस्थित होती है। उसकी उपस्थिति अपना काम कर गई। लक्ष्मण सुग्रीव के सिंहासनभवन में पहुँचाये जाते हैं, जहाँ वानर-राज सिंहासन से कूद कर उन्हें उस पर बिठा लेता है और उनसे अपने अतीत आचरण के लिए क्षमा मागता है और उनके सामने ही अपने सेनाध्यक्षों को आज्ञा देता है कि युद्ध के लिए वानरों की सारी सेना तय्यार करें। यद्यपि लक्ष्मण इतने से ही अत्यन्त प्रसन्न हो गये हैं तथापि वे सुग्रीव को अपनी राजनगरी छोड़ राम के पास चलने को कहते हैं। वानर-राज आज्ञा पाते ही उन्हें अपनी पालकी पर बिठा लेता है और स्वय भी उस पर बैठ कर अपने अनुयायिवर्ग के साथ राम के पास पहुँचता है। राम उसके साथ भविष्य के सम्बन्ध में मन्त्रणा करने के लिए उसे अपने निकट ही जमीन पर बिठा लेते हैं।"

पटल पर सबसे परे बाईं ओर गदा लिए सुग्रीव का विश्वस्त मन्त्री और दूत हनुमान् खड़ा है। उसका चेहरा कुछ दूसरी ओर मुड़ा हुआ है, मानो उसके स्वामी सुग्रीव को अपनी कर्तव्यविमुखता के कारण जो अवधीरणा और शर्मिंदगी उठानी

पड़ेगी उसे वह नहीं देखना चाहता। उसकी दाहिनी ओर हाथ में धनुष लिये, उचित आभरणों, मुकुट और परिवेष से अलंकृत, लक्ष्मण खड़े हैं, यद्यपि दुर्भाग्य से उनका चेहरा विशीर्ण हो गया है। उनकी दाहिनी ओर राम खड़े हैं जो सुग्रीव को आलिङ्गन और क्षमा करने के बाद दाहिने हाथ से जमीन पर बैठने का इशारा कर रहे हैं। वही पेड़ों की साधारण पृष्ठभूमि भी दृष्टिगोचर होती है, जिसकी बनावट से ऐसा प्रतीत होता है कि यह मिलन उस गुफा में हुआ होगा जिसमें राम और लक्ष्मण ने वर्षा ऋतु बिताई थी, क्योंकि परे ऊपर लटके हुए चट्टान के नीचे प्रकृति के हाथ से बनी हुई कन्दरा का भीतरी भाग दिखाई देता है।

तीसवां दृश्य

राम और लक्ष्मण का सुग्रीव से परामर्श लेना

इस पटल पर वह दृश्य दिखलाया गया है जिसमें राम और लक्ष्मण सुग्रीव से परामर्श ले रहे हैं। सबसे परे बाईं ओर वही लटकते हुए फलों से लदा हुआ आम का पेड़ नजर आता है। उसके पत्तों के बीच एक पक्षी बैठा है और तने पर एक वनबिलाव चढ़ रहा है। सम्भवतः इसकी छाया में अत्यन्त

आदरभाव से हनुमान् बैठा है। उसकी दाहिनी ओर एक माला-वारी नमूने के मकान के बारामदे में एक तकिये के सहारे और इसी तरह के एक और छोटे से तकिये पर बांया हाथ टेके लक्ष्मण बैठे हैं। मकान के एक बरामदे के ऊपर एक भद्रकलश दर्शाया गया है, जिसके सिरे पर एक कमल है। लक्ष्मण की दाहिनी ओर राम बैठे हैं। वे अपने हाथों को इस तरह उठाये हुए हैं जैसे सुग्रीव की अयोजनाओं को स्वीकार कर रहे हों, जो उनकी दाहिनी ओर बैठा हुआ उन्हें सीता को ढूँढ लाने की युक्तियाँ सुना रहा है।

इकतीसवां दृश्य

सुग्रीव का सेना सजाकर राम की प्रतीक्षा करना

सुग्रीव की सारी सेना तय्यार है। सेनानायक उसका सञ्चालन कर रहे हैं। केवल राम और लक्ष्मण से आज्ञा पाने की देर है। सुग्रीव उनकी प्रतीक्षा में है। यही दृश्य इस पटल पर दिखलाया गया है। सबसे परे बांई ओर एक अरण्य-स्थली का नमूना है, जिस पर घने पेड़ उगे हुए हैं और जो बनैले पशुओं से भरी पड़ी है। एक पेड़ के तने पर एक वनबिलाव चढ़ रहा है। वानर दल के एकत्रीभूत नेताओं के पीछे एक

धुँधला-जैसा श्याम का गुच्छा दिखाई देता है। सुग्रीव के पीछे पांच वानर नेता हैं, जिनमें से तीन अपने पद के चिह्नों से उपलक्षित हैं। उनमें से दो बैठे हुए हैं। इस मण्डली की दाहिनी ओर सबसे परे हम उनके राजा सुग्रीव को देखते हैं। वह घुटनों के बल जमीन पर झुककर और नक्काशी किये हुए चबूतरे पर हाथ टेक कर राम को उन भिन्न भिन्न शोध पार्टियों का परिचय दे रहा है जो सीता के कारावास का पता लगाने के लिए चारों दिशाओं में भेजी जाने वाली हैं। इसकी दाहिनी ओर सामने एक पृथक् और कुछ ऊँचे टीले पर दाशरथि बन्धु राम और लक्ष्मण दिखलाये गये हैं। बांई ओर धनुष हाथ में लिये लक्ष्मण हैं और दाहिनी ओर राम। इनके पीछे दाहिनी ओर दूर पर अत्यन्त आदरभाव से सुग्रीव की रुमा और तारा बैठी हैं। यह स्त्रियों से परामर्श लेने की उस प्रथा की प्रतिच्छाया है, जिसे आज भी मालाबार में निभाया जाता है। रामायण में इस अवसर पर या अन्तिम निर्णय के अवसर पर इस प्रकार का कोई दृश्य नहीं है। ऊँचे स्थान पर बैठी हुई स्त्री का चेहरा विशीर्ण हो गया है। इससे पीछे वही साधारण वन-स्थली का दृश्य दिखलाया गया है।

इकतीसवें दृश्य का परिशेष

रुमा और तारा

यह दृश्य पिछले दृश्य का परिशिष्ट अंश कहा जा सकता

है जिसमें सुग्रीव की पत्नियां, रुमा और तारा, दर्शायी गई हैं। रामायण में इसका कोई आधार नहीं है, किन्तु तब भी हम कह सकते हैं कि इस में घरों के अन्दर की आदर्श परिस्थितियों मे वानरों के पारिवारिक जीवन की एक झलक दिखलाई गई है, अथवा उन शिल्पियों के देश में, जिनकी छेनियों से ये दृश्य निकले हैं और जो सम्भवतः मालाबार से वहाँ पधारे थे, स्त्रियों की जो दिलजोई होती थी उसका यह यथार्थ चित्र है। सबसे परे बाईं ओर हम एक स्त्री को एक घुटना जमीन पर टेके बैठी देखते हैं, जो अपने बाये हाथ की उंगलियों से दूर पर किसी चीज की तरफ इशारा कर रही है। उससे ऊपर एक विशालकाय जाटनी जैसी है जो सम्भवतः उछलती कूदती और छलांगें भरती दौड़ी जा रही है, और अपने हाथों को इस तरह उठाये हुई है मानो किसी को डाटडपट दिखा रही हो और उसे मार कर चूरमूर कर देना चाहती हो। इन उकसाहट से भरी हुई वानर-स्त्रियों के सामने एक मकान है, जिसकी ऊपरली मंजिल पर शान्ति से एक बन्दर बैठा है। उसके एक हाथ में आमों का एक गुच्छा है और वह खीस निकाले उस झुँझलाई हुई स्त्री को घूर कर देख रहा है जो घर की तरफ भागी आ रही है। घर की छत और पहली मंजिल के चबूतरे पर तरह तरह की चेष्टाओं से युक्त पक्षी दर्शाये गए हैं, और जमीन के फ़र्श पर पत्थर की

अशोक-वन में सीता से हनुमान् की भेंट। पृष्ठ १३५।

श्रोणियों के पास पास घड़े रक्खे हैं, सम्भवत उनमें वे मदिराए और तरावट पहुँचाने वाले द्रव पदार्थ भरे हैं, जिन्हें वाल्मीकि के अनुसार राक्षस बड़े चाव से पीते थे । पास ही एक ढक्कनदार सन्दूक है, जिसमें सम्भवत परिवार के आभूषण-जैसी बहुमूल्य चीजें रक्खी जाती होंगी।

बत्तीसवां दृश्य

सीता से हनुमान् की भेंट

इस पटल पर सौ योजन समुद्र को फाँद कर हनुमान् ने रावण के अशोक वन में सीता से जो भेंट की थी और इस भेंट से पहले जो घटनाए हुई थीं उनका प्रदर्शन है। इस प्रकार प्रस्तुत पटल पर दो दृश्य समाविष्ट हैं। पहले दृश्य में, जो सबसे परे बाये छोर पर है, राजसी आकृति की दो रमणियाँ खड़ी हैं और एक और स्त्री, जो सम्भवत उनकी बादी है, उनके पाँवों पर झुक रही है। सबसे परे बाई ओर के व्यक्ति के शरीर का अगला हिस्सा निशीर्ण हो गया है और इससे उसका स्तनमण्डल, जिसे प्रधानता देने में भारतीय कलाविद् कभी नहीं चूकते, उसकी उपरली नग्न देह पर अपने पूर्ण पीनोन्नत रूप में नहीं देखा जा सकता, किन्तु उसकी पोशाक से उसके स्त्री होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता। उसकी बाई ओर अन्तरिक्ष में एक पक्षी अपने आपको समतोल किये ठहरा हुआ है । दाहिनी ओर उसी की जैसी

राजसी आकृति-वाली एक और रमणी दिखाई देती है; सिर पर मुकुट भी उसीका जैसा है, किन्तु रूप-लावण्य में वह उससे चौचंद है। हथेलियों को ऊपर को पलटाये वह अपने हाथों से किसी चीज की ओर इशारा कर रही है। पहली रमणी अपने दाहिने हाथ से अपनी झुकी हुई बांदी के सिर को छू रही है, जो सम्भवतः उसे कोई विस्मयावह बात सुना रही है। इस मण्डली की दाहिनी ओर एक छोटे से बाघ या चीते का सिर दिखाई देता है जो आस पास की, चट्टानों और पेड़ पौधों की, अरण्यस्थली के जंजाल में फँसा हुआ है। उधर एक छोटे से विवर से एक अजगर निकल कर ताजी ताजी हवा सेवन करने के लिए अपने सिर को उठाए और फण को फैलाये हुए है, जैसा कि अजगर करते हैं। पेड़ की छाया में अत्यन्त आदर भाव से हाथ जोड़े एक बन्दर बैठा है, जो ध्यान में डूबा हुआ जैसा लगता है।

यद्यपि वाल्मीकीय रामायण के सुन्दर काण्ड में, जहाँ यह घटना होनी चाहिए, ऐसा कोई दृश्य नहीं है तथापि इसे स्पष्ट करने के लिए हम एक उद्बोधन उपस्थित करने का साहस कर सकते हैं। सबसे परे बांई ओर रावण की काणसी स्त्री धन्यमालिनी होगी जिसने वाल्मीकि के अनुसार सीता पर से अपने पति के क्रोध को शान्त किया था। उसकी

दाहिनी ओर की स्त्री, जिसके चेहरे पर शोक की गहरी छाया पड़ी हुई है स्वयं सीता हो सकती है। उनके चरणों पर झुकी हुई श्री विभीषण की पुत्री त्रिजटा होगी, जो सीता की चारों ओर इकट्ठी हुई और उन्हें धमकानेवाली दैत्यमंडली को अपना स्वप्न सुना रही है, जिसमें उसने राम और सीता का शीघ्र आनेवाले भावी अभ्युदय और रावण को अधःपतन की ओर भागते देखा है। अत्यन्त आदर भाव और सावधानी से बैठा हुआ वानर हनुमान् से भिन्न और कोई नहीं है, जो स्वयं अदृश्य हो कर सारी बातों को सुनता और देखता जाता था।

दृश्य के दूसरे भाग में सबसे परे बायें छोर पर हम सम्भवतः धरती पर फलों के उपहार से भरे हुए एक करण्डक को देखते हैं, जिसे, भेंट करने से पहले, हनुमान् सीता जी को देने के लिए लाया था, यद्यपि सुन्दर काण्ड में इसका कोई उल्लेख नहीं है। इस दृश्य के ऊपर वही पेड़-पौधों चट्टान और झाड़ियों की उलझ-पुलझ से युक्त अरण्य-स्थली की भूलभुलैयां है, जिसमें एक अजगर भी अपने विवर से निकल कर परिस्थिति का पर्यवेक्षण कर रहा है। इसकी बांई ओर हनुमान् बैठा है जो अपने हाथ से सम्भवतः उस लम्बे मार्ग की ओर इशारा कर रहा है जिसे तै करके वह यहाँ पहुँचा है। दाहिनी ओर, सम्भवतः घर के बाहर एक ऊँचे चबूतरे पर, अपने एक हाथ को तकिये पर रख कर कोई स्त्री

बैठी है। उसके सामने सुन्दर रुचि के साथ फूल सजे हुए हैं। अतएव यही रामभार्या सीता होंगी जिन्हें ढूँढने के लिए हनुमान् अनेकों कष्ट झेल कर यहाँ पहुँचा है। पीछे की ओर एक और स्त्री पीठ के सहारे बैठी है, जो हनुमान् की कहानी को उतने ही चाव से सुन रही है जितने चाव से सीता सुनती हैं और जिसके नग्न स्तनों में से एक सीता की पीठ को छू रहा है। यह हर घड़ी सीता का साथ देनेवाली और उनसे सहानुभूति रखने वाली उनकी सखी, विभीषण की पुत्री त्रिजटा होगी। उसके सिर के ऊपर चट्टान के एक वर्गाकार चौपाल पर एक घनी झाड़ी उग रही है। अतएव यह दृश्य सीता के साथ अशोकवन में हनुमान् की जो भेंट हुई थी उसे दर्शाता है। सुन्दरकाण्ड के ३० वें और उससे अगले सर्गों में इस भेंट का वर्णन इस प्रकार है,—

"रावण सीता को तरह तरह के भय और डाँटडपट दिखला कर चलदेता है तो उसके बाद उसकी रखवाली के लिए नियुक्त की हुई राक्षसियाँ भी अपनी बारी पर सीता को आँखें दिखाने लगती हैं। जीवन से अत्यन्त तंग आकर सीता पास के शिंशपा वृक्ष की टहनी पर अपने लम्बे केशों की फाँसी लगाकर उसे समाप्त करना चाहती हैं। वे आत्मघात करने ही को थीं कि उन्हें भावी अभ्युदय के शुभ शकुन दिखाई देते हैं। अतएव वे इस घातक संकल्प को छोड़कर विस्मय से सोचने

लगती हैं कि मैं जागती हूँ, सोती हूँ या कोई गम्भीर स्वप्न देख रही हूँ। इसी बीच हनुमान् जो इन सारी घटनाओं को देख रहा था मन्द स्वर से, इतने मन्द स्वर से कि सिवाय सीता के और कोई न सुन सके, उनके पति श्रीरामचन्द्र की स्तुति करने लगता है। वे बड़े चाव से इसे सुनती हैं, उनका चेहरा चमकने लगता है और उनकी आँखों से जो आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी वह थम जाती है। हनुमान् सामने आकर उन्हें अपने आने का कारण बताता है और उनके संशय को दूर करने के लिए उन्हें राम की अँगूठी देता है, जिस पर उनका नाम खुदा हुआ है। इससे सीता को प्रतीति हो जाती है और वे देर तक उसके साथ राम के विषय में प्रेम से बातें करती हैं और अभिज्ञान के लिए उसे अपना सीसफूल और रामको यह सन्देश देकर विदा करती है कि दो महीने के अन्दर मुझे छुड़ा ले जाना; नहीं तो फिर मुझे इस लोक में न पाओगे।" अतएव उक्त दृश्य में यह रामायणीय घटना दर्शायी गई है। यद्यपि उसकी कई बातें महाकवि वाल्मीकि की बातों से कुछ भिन्न हैं।

तेतीसवां दृश्य

हनुमान की पूँछ पर आग लगाना और लङ्का-दाह

यह पटल दो भागों में विभक्त है। बांये छोर पर पहले भाग में हम राक्षसों को हनुमान् की पूँछ पर आग लगाते देखते हैं। दूसरे भाग में हम देखते हैं कि यह वीर वानर अपनी जलती हुई पूँछ से लङ्का के महलों और मकानों पर आग लगा रहा है। सुन्दरकाण्ड के ५२–५४ सर्गों के अनुसार इन घटनाओं का वर्णन इस प्रकार है,–

"जब हनुमान् युद्ध का कैदी बनाया जा कर रावण के सन्मुख लाया जाता है तो वह अपने मन्त्रियों के द्वारा उसे कहलवाता है कि देखो जो कुछ सच्ची बात हो उसे कह दो, नहीं तो तुम्हें कठिन दण्ड दिया जावेगा। हनुमान् कहता है—'मैं पुण्यकीर्ति पराक्रमी राम का दूत हूँ, सीता को लेने यहाँ आया हूँ, यदि तुम्हें अपना हित प्यारा है तो सीतादेवी को उनके प्राणाधार को लौटा दो और राम और सुग्रीव दोनों ही से मित्रता कर लो।' वन्दर-जैसे एक पोच जन्तु की ऐसी धृष्टता पर झुंझला कर रावण उसे मार डालने की आज्ञा देता है। किन्तु उसका भाई धर्मात्मा विभीषण बीच में पकड़कर समझाता है कि देखो महाराज, इस तरह क्रोध करना ठीक नहीं है, दूत की हत्या करना पाप है— सभी ने उसे अधर्म बताया है, और सजा आप जो चाहें दें— कोड़े लगवायें, उसके शिर को मुंडवा दें, उसके शरीर को विकृत

कर दें; किन्तु उसे जान से मार डालना, इसके लिए तो हम कानों पर हाथ रखते हैं। रावण के दिल में अपने भाई की यह बात बैठ जाती है, कहता है—'अच्छा, यदि ऐसा ही है तो इसकी पूँछ को—जिसे बन्दर अपना अलंकरण और आनन्द का साज समझते हैं, जला दो; हाँ, एक काम और करो, पूँछ पर आग लगा कर इसे नगर की गलियों में और हाट बाट पर फिराओ, जिससे नगरनिवासी उसे देख देख कर उसकी फबतियां उड़ावें और उस पर खूब तालियां पीटें।' झुंझलाये हुए जले-कटे राक्षसों को क्या चाहिए था, वे पुराना कपास और चीथड़े ला ला कर उसकी पूँछ पर बांधने लगते हैं और जब पूँछ खूब लम्बी हो जाती है तो उस पर तेल उँडेल कर आग लगा देते हैं। इस तरह जब उससे आग की लपटें उठने लगती हैं तो राक्षस हनुमान् को नगर की गलियों और सड़कों से खींच ले जाते हैं किन्तु वह इस उपहास की कुछ परवा नहीं करता; करता कैसे उस का ध्यान तो लङ्का को देखने में लगा हुआ है, वह देखना चाहता है कि इसमें कहाँ कहाँ पर कौन कौन से स्थल सामरिक दांव पेच के हैं, क्योंकि जिस समय उसने लङ्का में प्रवेश किया था वह उसे भली भाँति न देख सका था; वह समय रात का था और दूसरे उसे यह भी डर था कि कहीं ऐसा न हो कि नगर

का चक्कर लगाने में सीता को राम का सन्देश देने से पहिले ही पकड़ा जाऊं। सीता की टहल सेवा करनेवाली स्त्रियों में से एक उनके पास आकर उन्हें खबर देती है कि जो बन्दर तुम्हारे पास आकर तुमसे बातें करता था वह पकड़ा गया है, राक्षस उसकी पूँछ पर आग लगाकर उसे बाजारों में फिरा रहे हैं। यह सुनते ही वे अग्नि के अधिदेवता से प्रार्थना करती हैं कि प्रभो! यदि मैं सती हूँ तो हनुमान् को अपनी पूँछ पर की आग बर्फ-जैसी ठंडी लगे। ऐसा ही होता है और इस आनन्द-दायी परिवर्तन से स्वयं हनुमान् को विस्मय हो रहा है—हो न हो, यह सीता के निर्मल चरित्र, राम के पराक्रम और मेरे पिता मरुत् (हवा के अधिदेव) और अग्नि की मित्रता का प्रभाव है। जब नगर के द्वार पर पहुँचकर यह जलूस समाप्त होता है तो हनुमान् अपने असली परिमाण को धारण कर लेता है, अपने आपको अपने पकड़नेवालों से छुड़ा लेता है और पास ही तोरण के ऊपर रक्खी हुई गदा को लेकर एक एक करके उन सबको यम के कारावास में भेज देता है जो उसे शहर में घुमा रहे थे। फिर प्रहस्त के महल से आरम्भ करके वह एक मकान से दूसरे मकान पर, एक भवन से दूसरे भवन, एक महल से दूसरे महल पर कूदता हुआ लङ्का की सारी ऊँची इमारतों को आग की लहकती हुई ज्वालाओं की भेंट कर देता है; रावण के राजप्रासाद

भी उसमें स्वाहा कर दिये गये हैं, केवल विभीषण के महल को उसने जान बूझ कर आग की भेंट नहीं होने दिया है। फिर वह अपनी पूँछ को समुद में डुबो कर उस पर की ज्वालाओं को बुझा लेता है।"

यहाँ पटल के पहले दृश्य में सबसे परे बाईं ओर एक राक्षस हाथ पर तेल का बर्तन लिए खड़ा है। एक और राक्षस अपने कंधे पर एक तेल का बर्तन रक्खे उसके कानों पर कुछ कह रहा है। इन दोनों के सामने एक और राक्षस जमीन पर घुटने टेक कर हनुमान् की पूँछ को सीधी कस कर पकड़े हुए है, जिस पर एक और राक्षस बड़े प्रयत्न से फटे पुराने कपड़े और चीथड़े लपेट रहा है। हनुमान् इस मण्डली की दाहिनी ओर बैठा हुआ दर्शाया गया है। वह अपने मुँह को पीछे किये क्रोध से घूर कर उन राक्षसों को देख रहा है जो उसकी प्यारी पूँछ को इस तरह खराब कर रहे हैं।

दृश्य के दूसरे भाग में बाये छोर पर आग से ठिठक कर एक राक्षस उकसाहट से भरा हुआ हाथ उठाये और हथेलियों को ऊपर की ओर किये पीछे को भागा जा रहा है। मध्य में एक मालाबारी नमूने का—निरी लकड़ी का बना हुआ मकान दिखाई देता है, जिससे सम्भवतः आग लगने के कारण एक पशु अपने प्राणों को बचाने के लिए बाहर भागा आ रहा है।

हनुमान् इस मकान पर अपनी जाज्वल्यमान पूँछ के सिरे से आग लगा रहा है और इसके बाद वह इसी तरह एक मकान से दूसरे मकान को आग लगाता हुआ भागा जा रहा है, केवल उतने समय प्रत्येक घर की छत पर रुकता है जितना आग को सुलगने में लगता है। मकान की बांई ओर के दो राक्षस उस पर टूट पड़ने और उसे पीट कर भगा देने की चेष्टा कर रहे हैं; किन्तु जैसा कि उनकी भीतचकित आकृति से स्पष्ट हो रहा है, उनके किये कुछ नहीं बनता। मकान की दाहिनी ओर दो और व्यक्ति, सम्भवतः राक्षस-रक्षक अपने प्राणों को लेकर भागे जाते हैं। उनके इस प्रयास और आग के भय से उनकी टांगें मन मन भर की हो रही हैं, जिससे दौड़ कर भागने के बदले वे एक दूसरे पर गिरते पड़ते लड़खड़ाते चले जा रहे हैं।

चौतीसवां दृश्य

सीता का सोध लगा कर हनुमान् का राम के पास लौट आना

सीता से भेंट करके हनुमान् लङ्का से राम के पास लौट आता है और उन्हें और उनके पास इकट्ठे हुए लोगों को यह शुभ समाचार सुनाता है कि मैं सीता जी की सोध लगा आय

हूँ। यही घटना इस पटल पर दर्शायी गई है। सुन्दरकाण्ड के ६५वें सर्ग में इसका वर्णन इस प्रकार है,—

"समुद्र को लाँघकर लङ्का से लौट आने पर हनुमान् अपने उन सारे कारनामों को जाम्ववान् और अंगद और इनके नेतृत्व में इकट्ठे हुए बन्दरों को कह सुनाता है जो उसने वहाँ कर दिखाये थे। इस शुभ समाचार को लेकर वे सब घर के लिए रवाना होते हैं और अपने राजा के पास पहुँचने से पहिले वे रास्ते में सुग्रीव के क्रीडा-उद्यान "मधुवन" को नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं और दधिमुख नामी माली के आपत्ति करने पर उसका भी खूब तमाशा बनाते हैं। दधिमुख राजा सुग्रीव के पास शिकायत करने पहुँचता है तो लोग समझ जाते हैं कि बन्दर काम सिद्ध कर आये हैं। अन्तत उद्यान के फल फूलों से अघा कर बन्दर राम, लक्ष्मण और सुग्रीव के पास दौड़े जाते हैं और लङ्का में जाकर हनुमान् ने जो उपद्रव मचाया था, जिस तरह उसने सीता से भेंट की थी, और सीता की जैसी कुछ हालत थी, ये सारी बातें उन्हें कह सुनाते हैं। राम उनसे प्रश्न करते हैं, जिस पर वे सब हनुमान् को आगे कर देते हैं, क्योंकि इसमें वही प्रमुख पात्र था और इसलिए लङ्का में जो कुछ घटनाएँ हुई थीं उनका पूरा ज्ञान उसी को था। हनुमान् जिस दिशा में सीता थी उसको प्रणाम करके सीता के सोध-दल के प्रस्थान करने

समय से लेकर अपने सारे कारनामों को सुनाने लगता है। फिर सीता जी ने जो बात बताई थीं उन्हें कह सुनाता है—'महाराज, इन्द्र का पुत्र जयन्त जिस समय कौवे का रूप रख कर परीक्षा लेने आया था वह आपको याद है? आपने मेरे कपोलों पर उस दिन जो तिलक रचा था उसे भी आप न भूले होंगे।' ये ऐसी बातें थीं जिन्हें सिवाय राम और सीता के और कोई न जानता था। 'और', इससे भी प्रतीति न हो तो, 'लीजिए महाराज, सीतादेवी ने आपको अगूठी के बदले में यह अपना सीसफूल दिया है!' इस सीसफूल को देखकर राम के आनन्द की सीमा नहीं रहती, वे उसे अपने हृदय पर रखते हैं और दोनों भाइयों की आँखों से छल छल करके आँसू निकल कर कपोलों का आप्लावित करने लगते हैं। फिर राम हनुमान् से और और प्रश्न पूछते हैं, जिनके वह पूरे पूरे और यथोचित उत्तर देता है।"

पटल पर सबसे परे बाईं ओर एक पेड़ के नीचे, जिसकी टहनियों के बीच एक पक्षी दिखाई देता है, जो व्यक्ति बैठा है वह स्वयं हनुमान् है। यह आश्चर्यजनक वानर अपने रोचक पराक्रमों को राम को समझा रहा है। उसके सामने कोई एक छोटी सी चीज रक्खी है, जो शायद सीता का भेजा हुआ सीसफूल है। यह सीसफूल विवाह के अवसर पर जनक ने सीता को दिया था, जो उन्हें इन्द्र से मिला था। इस मणि के सामने

एक सिंहासन पर राम दर्शाये गये हैं। वे तकिये से पीठ लगाये बैठे हैं, और एकटक होकर अपने कानों से हनुमान् के वचनामृत का पान कर रहे हैं। उनके सिर पर मुकुट और सिर के पीछे प्रभामण्डल विद्यमान है। उनके पीछे दाहिनी ओर लक्ष्मण बैठे हैं। वे भी ध्यान से विस्मयावह पराक्रम की इस कहानी को सुन रहे हैं। उनके बायें हाथ में एक कमल का फूल है, जो मक्खियों को उड़ाने के लिए चँवर का काम दे रहा है। लक्ष्मण की दाहिनी ओर वानर-राज सुग्रीव बैठा है। उसका शरीर आभरणों से अलंकृत है। कानों पर कुण्डल और सिर पर मुकुट विराजमान है। वह सिर आगे को किये हुए है, उसकी गर्दन उठी हुई है और उसके चेहरे की एक एक रेखा यह दिखा रही है कि वह कितने उत्कट चाव से हनुमान् की बातों को सुन रहा है। सुग्रीव के पीछे एक नौकर बैठा है, जो सम्भवतः कोई मनुष्य, शायद कोई जंगल का रहनेवाला है। उसके पीछे दो बन्दर हैं, जो हनुमान् की वीर-गाथा को बड़े चाव से सुन रहे हैं और सम्भवतः अपने आपस में भी कुछ खुसरफुसर कर रहे हैं। बांये छोर पर हनुमान् से लेकर दाहिने छोर के अन्तिम बन्दर तक यह सारी मण्डली जंगल के पेड़ों के नीचे बैठी हुई जैसी दर्शायी गई है, जिनकी टहनियां और पत्ते पटल पर बहुत ही नैसर्गिक ढंग से अङ्कित किये गये हैं।

यह जगल रामायण के अनुसार प्रस्रवण पर्वत के पार्श्वों की शोभा बढ़ानेवाले रमणीक वन का छोड़ कर और कोई नहीं हो सकता ।

पैंतीसवां दृश्य

समुद्र-दर्पहरण

इस पटल पर वह घटना दर्शायी गई है जो वाल्मीकीय रामायण में 'समुद्र-दर्पहरण' नाम से प्रसिद्ध है, और जिसमें राम ने समुद्र के राजा वरुण के अभिमान को चूर किया था । यहाँ बाये छोर पर अत्यन्त आदर भाव से एक बंदर बैठा है जो हनुमान् को छोड़ कर और कोई नहीं हो सकता है । उसकी दाहिनी ओर एक राजसी प्रतिमा है जिसका एक हाथ जघा पर और दूसरा वक्षःस्थल पर है । दुर्भाग्य से उसका सिर नहीं है, इसलिए निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वह कौन है । सम्भावना यही है कि वह बन्दरों का राजा सुग्रीव है । उसकी दाहिनी ओर एक और जन है, जिसके बाये हाथ में सम्भवतः एक तीर है और दाहिना हाथ इस तरह नीचे को झुका हुआ जैसे वर देने में होता है । वेशभूषा, मुकुट और परिवेष बतला रहे हैं कि वह लक्ष्मण को छोड़ कर और कोई नहीं हो सकता । उनकी दाहिनी ओर

एक पथरीले चौपाल पर, जिसे तराश कर सिंहासन जैसा बना दिया गया है, राम बैठे हैं। उनकी एक टांग राजलीला आसन के ढंग पर लटक रही है, बांया हाथ दाहिने हाथ पर स्थित है और दाहिने हाथ से वे अपने प्रसिद्ध कोदण्ड धनुष को पकड़े हुए हैं, जिससे वे वरुण पर एक अमोघ बाण छोड़ चुके हैं और ऐसा मालूम होता है कि मानो वे उसके असर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आसीन राम की दाहिनी ओर, जिनके मुख पर क्रोध के कारण झुर्रियां पड़ रही हैं, लहरों और समुद्री जन्तुओं के मध्य से किसी मनुष्य का जैसा शरीर ऊपर को निकल आया है, जिसके शरीर का घुटनों के ऊपर का भाग दिखाई दे रहा है, हाथ अञ्जलि-मुद्रा के ढंग पर जुड़े हुए हैं, मुख पर पश्चात्ताप की भारी उदासी छाई हुई है और वह राम के सन्मुख हो कर उनसे क्षमा की प्रार्थना कर रहा है। यह समुद्रराज वरुण से भिन्न और कोई नहीं, जिसके राज्य को राम का बाण सुखा रहा है। उसके वक्षःस्थल पर यज्ञोपवीत है, कानों पर कुण्डल और सिर के बाल पीछे को गूंथ कर बांधे हुए हैं। इस पटल पर भिन्न भिन्न परिमाण के भीमकाय मच्छों, समुद्री लहरों आदि का जो दिग्दर्शन है उसकी नैसर्गिकता देखते ही बनती है। इस आश्चर्यजनक प्रदर्शन से प्रतीत होता है कि वहाँ के शिल्पी केवल जन-संचार रहित बीहड़ वनों का भयानक चित्र खड़ा

करने में ही अद्वितीय नहीं थे किन्तु समुद्री जीवन की भिन्न भिन्न स्थितियों का भी उन्होंने सूक्ष्म पर्यवेक्षण किया था। यह एक ऐसी विशेषता है जो शिल्पियों की मातृभूमि भारत में, विशेष कर के उत्तर भारतीय कला में, मिलनी दुर्लभ है। यह आख्यान वाल्मीकीय रामायण के युद्ध काण्ड के २१—२२ वें सर्गों में संक्षेप से इस प्रकार दिया गया है,—

"विभीषण अपने भाई रावण की शरण में आया है। वे उसे अभय का वचन देते हैं और फिर समुद्र के तट पर पहुँच कर कुशासन बिछाते हैं, और उस पर लेट कर समुद्र के स्वामी वरुण से प्रार्थना करते हैं कि हमारे वानर इस जल-राशि को लांघ कर कुशलपूर्वक लङ्का में पहुँच जांय। तीन रात तक निराहार रह कर वे उत्कट भावावेश और नम्रता पूर्वक समुद से इस अनुग्रह के लिए प्रार्थना करते हैं, किन्तु सुने कौन? वरुण का कहीं पता भी लगे तब न? आखिर अधीर हो कर राम लक्ष्मण के परामर्श से तड़ातड़ समुद्र के वक्षःस्थल पर तीखे तीर बरसाने लगते हैं, ताकि उसे अपनी यह धृष्टता याद रहे, उसे पता लगे कि किसी वीर से काम पड़ा था। समुद्र पर इसका असर पड़ा सही, उसे कुछ पीड़ा अवश्य हुई किन्तु फिर भी कोई उत्तर नहीं मिला। फिर तो राम अपना ब्रह्मास्त्र छोड़ते हैं, समुद्र सूखने लगता है, जलजन्तु छटपटाने लगते हैं। तुरन्त

सेतु-बन्ध। पृष्ठ १५१।

पश्चात्ताप की हालत में समुद्र का अधिष्ठातृ-देव ऊपर निकल आता है; बहुमूल्य रत्नों से उसका शरीर जगमगा रहा है, साथ में गङ्गा, सिन्धु आदि जैसी पत्नियां हैं। हाथ जोड़ कर और धीमे स्वर में—इतने धीमे स्वर में कि जैसा कोई कान पर कह रहा हो, नम्रता से प्रार्थना करके यह राम को प्रसन्न करता है। राम कहते हैं—'किन्तु समुद्रराज, हमारा यह अमोघ अस्त्र खाली नहीं जा सकता। इस पर वरुण उन्हें उत्तर की ओर आभीर आदि जंगली जातियों से बसा हुआ एक द्वीप दिखाता है कि इसे अपने अस्त्र का लक्ष्य बनाइये; फिर वह राम को संमति देता है कि विश्वकर्मा के पुत्र वानर नील की सहायता से उसकी देख रेख में आप पुल बंधवा सकते हैं।"

छत्तीसवां दृश्य

सेतु-बन्ध

इस पटल पर प्राम्बनम् के शिव मन्दिर का रामायणीय प्रदर्शन समाप्त हो जाता है। इसे दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में समुद्र के उत्तरी तट पर राम, लक्ष्मण सुग्रीव और उनकी वानरी सेनाएँ दिखाई देती हैं। बन्दर पुल की नींव तय्यार करने के लिए समुद्र में लकड़ी पत्थर फेंकते हुए

दर्शाये गये हैं। दूसरे भाग में पुल बन कर तय्यार हो गया है और सेनाएं कूच करती हुई संमुद्र के दाक्षिणी तट पर पहुँच रही हैं। यह वह दृढ स्थल है—वह चट्टान है, जिस पर रावण की राजधानी लङ्का बसी हुई है। वाल्मीकीय रामायण के युद्धकाण्ड के २२वें सर्ग के अनुसार कथा इस प्रकार है;—

"सागर की बात सुन कर नल आगे बढ़ता है और राम से निवेदन करता है कि पुल बनाने का काम मैं अपने जिम्में लेता हूँ। मैं इसे पूरा करके छोड़ूंगा। उसी समय समुद्र को पाटने के लिए बन्दर बुलाये जाते हैं; लकड़ी पत्थर, चट्टान वृक्ष, हरे सूखे सभी तरह के वृक्ष और अन्य ठोस पदार्थ जो कुछ भी उनके हाथ में आता है वे धम धम करके पानी में गिराने लगते हैं। पांच दिन में पुल बनकर तय्यार हो जाता है, और वह समुद्र में ऐसा शोभायमान लगता है जैसा आकाश में स्वाति नक्षत्र का मार्ग। अब विभीषण गदा लिए अपने चार हट्टे कट्टे राक्षसों के साथ पुल पार कर के लंका में कुशलपूर्वक वानर सेना को उतारने का ब्योंत देखता है। सुग्रीव के कहने से राम हनुमान् के कंधे पर और लक्ष्मण अंगद के कंधे पर चढ़ कर इस सौ योजन लम्बे पुलको जिसकी चौड़ाई दस योजन थी, पार करते हैं। इस प्रकार धनुष बाणों से सुसज्जित और अनागत भय के लिए चौकन्ने होकर राम, लक्ष्मण, सुग्रीव

के साथ सेना के आगे आगे समुद्र के परले तट पर पहुँचते हैं। वानरों में से कुछ पुल के बीच से होकर, कुछ उसके किनारे किनारे और कुछ पुल पर टकराते हुए उथले पानी से चलकर समुद्र पार करते हैं और कुशल से लंका की भूमि में पहुँच जाते हैं।"

पटल के पहले भाग में सबसे परे बांई ओर एक राजकुमार कूच करते दिखाई देता है। उसके वक्षःस्थल पर सम्भवतः एक छोटा सा बाण-युक्त धनुष लटक रहा है, और उसकी चाल ढाल से अत्यधिक शालीनता झलक रही है। सो यह राजकुमार लक्ष्मण हैं। उनकी दाहिनी ओर "त्रिवङ्ग मुद्रा" से राम खड़े हैं, शरीर पर अलोकसुन्दर आभरण, सिर पर मुकुट और सिर के पीछे परिवेष है। उनकी दाहिनी ओर सामने लक्ष्मण ही की जैसी नम्रता से वानरराज सुग्रीव प्रणाम कर रहा है। वह भी राजोचित मुकुट और प्रभामण्डल से अलंकृत है, और उसके बांये हाथ में एक तलवार है। उसके पांवों पर एक बन्दर हाथ जोड़े बैठा है, और उससे ऊपर एक और बन्दर खड़ा है। दाहिनी ओर कोई आधा दर्जन बन्दर समुद्र पर पुल बांधने के लिए उसमें पत्थर फेंकते हुए दिखलाये गए हैं। पुल के पूरा होने में थोड़ी ही कसर दिखाई देती है। नाके, गजमत्स्य, मगरमच्छ, विशालकाय केकड़े, समुद्री साँप, ऊदबिलाव जैसे समुद्री दानव, वनस्पति,

पानी के नीचे के स्थल-प्रदेशों में और उठती हुई लहरों के बीच सुन्दर नैसर्गिक ढंग से दर्शाये गये हैं। पक्षि-जीवन की भी उपेक्षा नहीं की गई है, क्योंकि हम देखते हैं कि पास ही एक पत्थर पर एक विशाल बगुला मुँह बाये बैठा है, जो दबादब छोटी छोटी मछलियों से भरा है जिन्हें वह निगल कर उदरसात् करता जाता है।

दृश्य के दूसरे भाग में सबसे परे बांईं ओर वह वानर-सेना है जिसने थोड़ी देर हुई लहरों से उद्वेलित फेनिल समुद्र को पार किया था। बांईं ओर का पहला बन्दर अपने हाथ से एक ऊदबिलाव को पकड़े हुए है। उसके दाहिने हाथ पर एक डंडा है, जो आधुनिक पुलिस के बेटन का बृहत् संस्करण कहा जा सकता है और जिससे शायद वह अपने कैदी को यह डर दिखा रहा है कि खबरदार! तुमने भागने की कोई चेष्टा की तो समझ लो कि यह डंडा तुम्हारे सिर पर होगा। उसको तीन और बन्दर घेरे हुए हैं। इस समुदाय की दाहिनी ओर हम राजकुमार लक्ष्मण को देखते हैं। उनके बांये हाथ पर एक विशाल धनुष है और दाहिने हाथ से वे बन्दरों को रास्ता दिखा रहे हैं। उनके पार्श्व में उन्हीं के जैसे वस्त्राभरण और मुकुट पहने किन्तु अधिक दृढ़ धनुष लिये हुए श्रीरामचन्द्र कूच करते दिखलाये गये हैं। वे अपने कोदण्ड को वक्षःस्थल पर डाले हुए

हैं। राम के सामने दाहिनी ओर अत्यन्त हुलास से सुग्रीव कूच कर रहा है, वस्त्राभूषण मुकुट आदि वही राजाओं के जैसे हैं, और बायें कंधे पर एक लम्बी टेढी तलवार है। उसके सामने तीन और बन्दर हैं। उनमें सबसे आगेवाला खुशी खुशी हँसता खेलता चला जा रहा है, पास एक छोटी मोटी और चौड़ी तलवार है जिसे टेक कर वह चट्टानों और शिलाओं से होकर मार्ग तै कर रहा है। यही हनुमान् होगा। उससे ऊपर बाईं ओर खीस निकाले शायद अंगद है, और दाहिनी ओर के वानर की विचारशील आकृति से मालूम होता है कि वह वृद्ध जाम्बवान् है। यद्यपि पटल का यह प्रदर्शन—बन्दरों के रहन सहन, भावभङ्गी आदि का यह चित्रण, निसर्ग-सुन्दर है, स्वाभाविक सौष्ठव से आरञ्जित है, तथापि, जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, यह वाल्मीकि के वर्णन से नहीं मिलता। उसमें हम देखते हैं कि राम हनुमान् के कंधे पर और लक्ष्मण अंगद के कंधे पर आरूढ हैं और यहाँ की तरह मध्य में नहीं हैं, किन्तु आगे आगे चल कर सैन्य-सञ्चालन कर रहे हैं। फिर भी पटल पर हनुमान् को आगे रख कर सबसे पहले लङ्का में फिर से पदार्पण करने का जो सन्मान दिया गया है वह रामायणीय विवरण से अधिक स्वाभाविक और सुन्दर है, क्योंकि इससे सीता को ढूँढ लाने में उसने जो प्रमुख पार्ट खेला है उसका वास्तविक महत्त्व

हो जाता है। यहीं, राम और उनके वानर सैन्यदलों के समुद्र पार करके लङ्का में पहुँचने पर ही, वे रामायणीय चित्रण, जो प्राम्बनम् के शिवमन्दिर की अन्दरूनी स्तम्भपंक्ति पर खुदे हुए हैं और जिन्हें यात्री महाकाल के केन्द्रीय शिवालय की प्रदक्षिणा करते हुए देख सकता है, समाप्त हो जाते हैं। सम्भवतः आगामी घटनाएं, राम की मित्र-सेनाओं का राक्षसों के साथ घोर युद्ध करना, राक्षसों का सर्वनाश करके सीता को प्राप्त करना, केवल विभीषण और उसके चार मन्त्रियों को बचा कर विभीषण को लङ्का का राज्य देना, सीता और लक्ष्मण के साथ राम का अयोध्या को लौट आना, उनका राज्याभिषेक, उनका शासन, लोकनिन्दा के भय से सीता को जंगल में छोड़ आना, दूसरी अग्नि-परीक्षा, पृथिवी का फटना और सीता का उसके अन्दर अन्तर्हित हो जाना, सरयू नदी के द्वारा राम का भाइयों सहित दिव्य लोक को पधारना, ये सारी घटनाएँ पास के ब्रह्ममन्दिर के कुट्टिम पर दर्शायी गई होंगी। किन्तु चूंकि इस मन्दिर के अब केवल खंडहर ही शेष हैं, इसलिए कह नहीं सकते कि रामायणीय कथा के अगले दृश्य इस मन्दिर के कुट्टिम पर प्रदर्शित किये गये थे या पास के विष्णुमन्दिर के कुट्टिम पर उनका उद्घाटन किया गया था; जिस पर कृष्ण-सम्बन्धी कहानियों के दृश्य अब भी मौजूद हैं; अथवा इसी शिवमन्दिर के अन्तर्गत नन्दी के मन्दिर के कुट्टिम

पर, जो अब उजाड़ पड़ा है, उनको स्थान दिया गया था। यह भी बिल्कुल निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि जिन शिल्पियों की छेनी से अवशिष्ट प्रकीर्ण अंश निकले हैं उन्होंने ही शिवमन्दिर के आलेख्य भी तैय्यार किये थे, क्योंकि इन दोनों के शिल्प में भाव, कौशल और मनोवृत्ति का बड़ा तारतम्य है। चूँकि ये अवशेष न तो पूर्ण हैं और न शृङ्खलाबद्ध ही मिलते हैं, इसलिए हम अलग अलग अंश अंश करके उनकी तदीयता दिखलावेंगे और जहाँ कहीं सम्भव हो वाल्मीकि के जिन वर्णनों के आधार पर वे दर्शाये गये हैं उनका उल्लेख भी करेंगे।

पहला तक्षण-खण्ड

लंका में वानर-सेना का प्रयाण

सो पहले खण्ड में समुद्र पार करने के बाद लंका की भूमि से हो कर बन्दर कूच करते दिखलाये गये हैं। इसमें बाये छोर पर सबसे परे सम्भवतः वृद्ध ऋक्ष जाम्बवान् है, क्योंकि उसका थूथना और मुख की आकृति उसकी दाहिनी ओर कूच करने वाले अन्य तीन बन्दरों के जैसे नहीं हैं। जाम्बवान् की दाहिनी ओर के बन्दर के पास कोई हथियार नहीं दिखाई देता जबकि इसकी दाहिनी ओर के दोनों साथियों के कन्धों पर लम्बे लम्बे डंडे हैं। उनके पीछे वही टहनियों और झाड़ियों से युक्त अरण्य-

स्थली का दृश्य दिखलाया गया है, जबकि उनके पैरों के पास केवल झाड़ियां ही उगती हुई नहीं दिखाई गई हैं किन्तु साथ ही दाहिनी ओर के अन्तिम बन्दर के पैर के नीचे एक सांप निकलता हुआ मालूम होता है। पत्थर पर बड़े बड़े छिद्र नज़र आते हैं और तक्षण भी हवा पानी आदि मौसिमी असरों से विशीर्ण हुआ जैसा लगता है।

दूसरा तक्षण-खण्ड

इस अंश में वानरों का एक नेता दर्शाया गया है जिसके पीछे उसी जैसे दो नंगे धड़ंगे बन्दर हैं। सबसे परे बांये छोर का बन्दर अपने एक हाथ को अपने आगे के बन्दर के पार्श्व में रक्खे हुए है, जो अपने बांये कंधे पर एक लम्बी गदा रक्खे हुए अत्यन्त आदर भाव से चला जा रहा है, क्योंकि उसके आगे ही उसका नेता, सम्भवतः अंगद, विद्यमान है। यह नेता अपने बांये हाथ से रस्सी के सहारे किसी जलजन्तु या जंगली पशु को लिये जा रहा है, जो एक बड़ा चूहा-जैसा लगता है; और ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अपने अनुयायियों को हुक्म देने के लिए पीछे को मुड़ रहा है। इस टोली के आगे पीछे पेड़ और झाड़ियाँ, पैरों के नीचे की खुरदरी ज़मीन का पहाड़ीपन, सब भले प्रकार स्वाभा-

निक ढँग से दर्शाये गए हैं; केवल कहीं कहीं पर कुछ तोड़ मरोड़ दृष्टिगोचर होता है।

तीसरा तक्षण-खण्ड

रावण और उसके महल का प्रदर्शन

इस तक्षण में लंका के राजा रावण को किसी पर्यवेक्षण स्थान, सम्भवतः उसके महल के किसी चबूतरे, पर बैठा हुआ दर्शाया गया है। उसके केवल दो पैर और एक धड़ है। सिर भी केवल चार पांच ही दिखाये गये हैं, दो मुख्य सिर की बाईं ओर और एक या दो दाहिनी ओर। उसके पावों पर घुँघरू लगे हुए हैं, वक्षःस्थल पर यज्ञोपवीत है और वह राजलीला आसन लगाये बैठा है। उसकी दाहिनी ओर के हाथ छिन्न भिन्न हो गये हैं; जबकि बाईं ओर दस हाथों में से केवल पांच ही दर्शाये गये हैं, जिनमें से प्रत्येक कँगन आदि उपयुक्त आभरणों से सजा हुआ है। कुछ बाईं ओर, उसके सामने, सम्भवतः खाद्य पदार्थों से भरा हुआ एक बर्तन रक्खा है जिसे शायद उसके किसी दरबारी ने उपहार के तौर पर भेंट किया है और जिस पर अपना हाथ (पहला बांया हाथ) रख कर राक्षसराज मानो अपनी स्वीकृति दे रहा है। उसके शक्तिशाली सिरों का बुर्ज और उसका अलौकिक विराट्

शरीर एक महल की पृष्ठभूमि पर भली भाँति दर्शाये गये हैं। इस महल की, एक के ऊपर एक, अनेकों मंजिलें दिखलाई गई हैं, क्योंकि वाल्मीकीय रामायण में लिखा है कि रावण के प्रधान महल में नौ मंजिलें थीं। सम्भवतः यह खंड युद्ध काण्ड के ४०वें सर्ग की कथा को प्रदर्शित करता है। कथा इस प्रकार है,—

"फिर राम और सुग्रीव उठते हैं और कुछ देर खड़े हो कर चारों ओर दृष्टि फेरते हैं। दूर पर उन्हें लंका दिखाई देती है जो रमणीक उद्यानों से सजी हुई है और बड़े अच्छे स्थान पर बनी हुई है। वे यह भी देखते हैं कि बुर्जों के सबसे ऊँचे शिखर पर दुर्धर्ष राक्षसराज रावण बैठा है।"

चौथा तक्षण-खण्ड

इन्द्रजित् के द्वारा वानर-सेना का संहार

इस तक्षण-खण्ड में विभीषण राम को उन बादलों की ओर इशारा कर रहा है जिनमें छिप कर रावण का लड़का इन्द्रजित् वानर-सेना का संहार कर रहा है और विशेष करके राम लक्ष्मण को अपने नागास्त्र का निशाना बनाने की घात में है। वह अपनी माया के कारण राम से तो अदृश्य है, किन्तु विभीषण, जो उसका चाचा है और स्वयं भी इस तरह

की राक्षसी माया में निपुण है, उसे साफ देख रहा है। यद्यपि रामायण के युद्धकाण्डान्तर्गत ४६वें सर्ग में कथा कुछ भिन्न है, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि प्रस्तुत तक्षण उसीका प्रदर्शन है। प्राम्बनम् के इस तक्षण-खण्ड में सबसे परे बांई ओर हम देखते हैं कि विभीषण अपने बांये हाथ पर त्रिशूल लिए खड़ा है और दाहिने हाथ से आकाश की ओर इशारा कर रहा है जहाँ से, बादलों में छिप कर, इन्द्रजित् राम पर बाणों की वर्षा कर रहा था। दाहिनी ओर राम धनुष से तीरों को छोड़ते हुए दर्शाये गये हैं; उनके पैर एक दूसरे पर टिके हुए हैं, और उनका लक्ष्य वह दिशा है जिसकी ओर विभीषण ने इशारा किया था। किन्तु इन्द्रजित् स्वयं चतुर था और चूँकि वह राम को देख रहा था और स्वयं उनसे अदृश्य था, इसलिए राम के बाण अन्तरिक्ष में पहुँच कर विफल हो जाते हैं। अतएव यह स्वाभाविक ही है कि राम के चेहरे पर उदासी और शोक की छाया दिखलाई गई है, क्योंकि उनके जीवन में यह पहला अवसर है जब उनके बाण लक्ष्य से भ्रष्ट हो रहे हैं।

पाँचवाँ और छठा तक्षण-खण्ड

इन्द्रजित् से लक्ष्मण का युद्ध

पाँचवें और छठे खण्ड में रावण के पुत्र इन्द्रजित् के साथ लक्ष्मण का युद्ध दर्शाया गया है, जिसमें उस भयंकर शत्रु के छल-छद्मों के विरुद्ध चतुर विभीषण ने इन्हें परामर्श दिया था और उससे इनकी रक्षा की थी। वाल्मीकीय रामायण (युद्ध-काण्ड) के अनुसार पहली बार इन्द्रजित् नागास्त्र से बन्धे हुए दोनों बन्धुओं को घायल करता है, और फिर उन्हें मरा हुआ समझ कर अपने पिता रावण के पास जाकर उसे यह समाचार सुनाता है। राक्षसों में बड़ा मोद-प्रमोद होता है। नागास्त्र के प्रभाव से अचेत होकर राम और लक्ष्मण रण-क्षेत्र में मरे हुए जैसे पड़े रहते हैं। शीघ्र ही साँपों का शत्रु पक्षिराज गरुड़ रण-क्षेत्र के ऊपर मंडराता हुआ उस स्थान पर पहुँचता है जहाँ दोनों भाई पड़े हुए हैं। इससे साँप उन्हें छोड़कर लुक-छिप जाते हैं। इस प्रकार जब राम लक्ष्मण बन्धन से छूट जाते हैं तो फिर लड़ाई होती है, जिसमें एक एक करके अनेकों सेनाध्यक्ष मारे जाते हैं। इसलिए रावण एक बार फिर इन्द्रजित् को ही रण-क्षेत्र में भेजता है।

इस बार भी वह उसी यज्ञ को करता है जिसके प्रभाव से उसके शत्रु उसको देख नहीं सकते। वानर-सेना छिन्न भिन्न

होने लगती है और अन्त में वह राम-लक्ष्मण पर ब्रह्मास्त्र छोड़ता है, जिसके प्रबल प्रभाव से उनको ऐसी मूर्च्छा आती है मानो वे मर गये हों । वानर-सेना के नायक आपस में सलाह करके हनुमान् को सञ्जीवनी बूटी लाने को भेजते हैं, जो किसी खास पहाड़ पर उगती थी। हनुमान् जल्दी में उस बूटी को पहचान नहीं सकता, इसलिए भ्रम से बचने के लिए वह समूचे पहाड़ को ही उठा कर उस स्थान पर ले आता है, जहाँ राम-लक्ष्मण और दूसरे वीर अचेत पड़े हैं । पहाड़ की हवा लगते ही सब जीवित हो उठते हैं, और पहले ही जैसे स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हो जाते हैं। तीसरी बार जब रावण का भाई कुम्भकर्ण और राक्षसी सेना के कुछ और दिग्गज सेनाध्यक्ष राम और लक्ष्मण के बाणों का शिकार बन कर सनातन पथ का अनुसरण करते हैं तो राक्षसराज को शोक की वह मूर्च्छा आती है जिसमें आश्वासन देना भी दुष्कर हो जाता है । इस संकट के अवसर पर फिर इन्द्रजित् ही उसका ढाढ़स बंधाता है। अपने पिता को आश्वासन देकर वह एक बार फिर यज्ञ करने के लिए निकुम्भिला की गुफा में जाता है, जिससे वह अपने शरीर को अलक्ष्य और इसलिए अजय बना सके। यह जान कर कि इन्द्रजित् कहीं बाहर ठहरा हुआ है विभीषण इस रहस्य को भाँप लेता है। वह लक्ष्मण को हनुमान् की पीठ पर चढ़ाता है, और सब मिलकर उस दुरात्मा

को अलक्ष्य बनने से रोकने के लिए उसके पास पहुँचते हैं। वे उसको तत्परता से यज्ञ करते हुए देखते हैं और जब उसकी दृष्टि विभीषण पर पड़ती है तो वह क्रोध से आग-बबूला हो जाता है। चाचा भतीजे का आपस में वादविवाद होने लगता है; अन्त में लक्ष्मण उससे कहते हैं 'वीर का काम चोर की तरह छिप कर लड़ना नहीं है।' छुटकारे का और कोई रास्ता न देख कर वह गधों से खींचे जाते हुए रथ पर चढ़ कर मैदान में कूद पड़ता है और फिर भयंकर युद्ध होने लगता है, जिसमें इन्द्रजित् गजब का हत्या-काण्ड रच कर राम की सेना को छिन्न-भिन्न कर डालता है। अन्त में उसके साथ लक्ष्मण का द्वन्द्व-युद्ध होता है, जिसमें प्रत्येक वीर अपनी निपुणता और दिव्य अस्त्र-शस्त्रों को चलाने की सिद्धहस्तता दिखलाता है। दोनों एक दूसरे को पछाड़ने की चेष्टा करते हैं, यहाँ तक कि आखिर लक्ष्मण ऐन्द्र अस्त्र की सहायता का आवाहन करते हैं और उसके अधिष्ठातृ-देव की आराधना करके सौगंद खाते हुए कहते हैं कि यदि राम धर्मात्मा और सदाचारी हैं तो इस अस्त्र से रावणि (इन्द्रजित्) के मरने में कोई सन्देह नहीं। फिर उस अस्त्र के अन्दर मन्त्र फूँक कर वे उसे सीधे इन्द्रजित् के गले पर लक्ष्य करके फेंकते हैं, जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो जाता है और वह निर्जीव हो कर धड़ाम से रणक्षेत्र में गिर कर

धराशायी हो जाता है।

पाँचवें तक्षण में हमें बांई ओर सबसे पहले राम दिखाई देते हैं। उनके बाद निशाना दागने की हालत में खड़े हुए लक्ष्मण अपने विशाल धनुष को टँकारित कर रहे हैं। उनकी दाहिनी ओर एक हाथ में एक छोटी-चौड़ी तलवार लिये हुए विभीषण खड़ा है। इस मण्डली के सामने एक बन्दर, सम्भवतः हनुमान्, बैठा हुआ लड़ाई देख रहा है। उसका चेहरा और घुटनों तक शरीर के कुछ अंश विशीर्ण हो गये है। छठे खण्ड में सबसे परे बांई ओर एक बन्दर रण-क्षेत्र में कूदता दिखाई देता है। उसके नीचे कुछ दाहिनी ओर को एक राक्षस है, जिसके बांयें हाथ में एक छोटी सी और दाहिने हाथ में एक लम्बी तलवार है। इस लम्बी तलवार से वह अपने सामने खड़े हुए किसी शत्रु पर आक्रमण कर रहा है। उसके ऊपर कुछ और दाहिनी ओर हम इन्द्रजित् को कमर तक बादलों में छिपा हुआ देखते हैं, जो स्वयं अदृश्य रह कर युद्ध का सञ्चालन कर रहा है। वह अपने दाहिने हाथ को उठाये तर्जनी दिखा रहा है। उसके नीचे घुमड़े हुए बादल सुन्दर स्वाभाविक ढँग से दर्शाये गये हैं। बादलों के नीचे एक भूत या राक्षस-जैसा दिखाई देता है, जिसकी बड़ी बड़ी आँखें हैं और जो मुँह बाये चिल्ला रहा है।

सातवां तक्षण-खण्ड

यह खण्ड अधूरा है और इसलिए यह बताना सम्भव नहीं कि उसमें रामायण का कौन सा दृश्य या घटना दर्शाई गई है। फिर भी हम इतना कह सकते हैं कि उसमें युद्ध-काण्ड की कोई घटना दर्शाई गई है, अथवा वह इसी काण्ड के किसी बड़े पटल का परिशेष-मात्र है। सबसे परे बांई ओर किसी राजकुमार का केयूर और कंगन से सजा हुआ दाहिना हाथ दिखाई देता है। वह इस हाथ में धनुष लेकर उसे खींच रहा है, ताकि उससे तीर छोड़े। उसकी दाहिनी जंघा और टांग के भी कुछ अंश दिखाई देते हैं, जो आलीढ-मुद्रा की दशा में स्थित हैं अर्थात् बांये पैर से कुछ आगे हटकर झुके हुए हैं। उसकी दाहिनी ओर एक और व्यक्ति धनुष से तीर छोड़ने के लिए खड़ा है, किन्तु उसका दाहिना हाथ और धनुष दोनों ही लुप्त हो चले हैं। इन दो व्यक्तियों के बीच किसी दढ़ियल आदमी का सिर और चेहरा दिखाई देता है। उसके कानों और शरीर के अन्य अवयवों को देखने से मालूम होता है कि यह रावण के भाई विभीषण को छोड़ कर और कोई नहीं हो सकता। इसलिए उसकी बांई ओर का धनुर्धारी व्यक्ति लक्ष्मण और उसकी दाहिनी ओर का मुकुटधारी व्यक्ति—जिसके पीछे परिवेष है—स्वयं श्रीरामचन्द्र होंगे।

आठवां तक्षण-खण्ड

इस खण्ड में राक्षसों को राम की सेना के किसी व्यक्ति पर आक्रमण करते दर्शाया गया है। ठीक ठीक नहीं कह सकते कि यह व्यक्ति कौन है। उस सेना में धनुर्धारी व्यक्ति सम्भवतः तीन ही थे, अर्थात् राम, लक्ष्मण और सम्भवतः रावण का भाई विभीषण। यह सोलहों आने स्पष्ट है कि उक्त वृद्ध व्यक्ति दोनों भाइयों में से किसी का भी प्रदर्शन नहीं है। इसलिए हो सकता है कि वह विभीषण ही हो, जो तर्जनी-मुद्रा से अर्थात् तर्जनी दिखा कर उन राक्षसों को चेतावनी दे रहा है जो उस पर टूट पड़ने के लिए उसके चारों पास इकट्ठे हो रहे हैं। तक्षण के सबसे परे बांई ओर सामने से चारेक व्यक्ति धनुष बाण लिए उस पर दाहिनी ओर से आक्रमण कर रहे हैं। ये सब के सब राक्षस हैं। सबसे ऊपर वाला उस पर किसी चट्टान या अन्य भारी पदार्थ को फेंकने की चेष्टा कर रहा है। सबसे परे दाहिनी ओर का अन्तिम व्यक्ति शायद रावण का पुत्र इन्द्रजित है। उसके सिर पर मुकुट विराजमान है और कानों से कुण्डल लटक रहे हैं।

यद्यपि यह खण्ड अधूरा है, तथापि हम यह अनुमान कर सकते हैं कि सम्भवतः यह उस तक्षण का एक अंश है

लक्ष्मण और विभीषण मेघनाद के यज्ञ में बाधा डालते और उसे लड़ने को विवश करते दर्शाये गये होंगे, जिससे वह अब अपने आप को छिपा कर अदृश्य और अतएव अजय नहीं बना सकता था।

नवां और दसवां तक्षण-खण्ड

कुम्भकर्ण के जीवन की घटनाएँ

ये खण्ड रावण के सदा-निद्राशील भाई कुम्भकर्ण के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली भिन्न भिन्न घटनाओं को दर्शाते हैं। वाल्मीकि के विवरण के अनुसार रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण इन तीनों भाइयों ने भयंकर तपस्याएं कीं। ब्रह्मा उनके प्रयत्नों से प्रसन्न होकर प्रत्येक को वर देने को उपस्थित हुआ। रावण ने देवों, असुरों, नागों इत्यादि से अजय बनने की प्रार्थना की। नर और वानर उसकी दृष्टि में अवहेलनीय थे, सर्वथा तुच्छ थे। इसलिए रावण ने उनके आक्रमणों से अपनी अजेयता के सम्बन्ध में उनकी कोई चर्चा ही नहीं चलाई। विभीषण ने, ऐसे वरों और अनुग्रह की चाहना न करके जिनसे स्वार्थसिद्धि हो, केवल विष्णु की दृढ भक्ति के लिए अपनी लालसा प्रगट की। कुम्भकर्ण अनपढ़ तो था ही, उसने सौ बात की एक बात जीवन की नित्यता चाही। किन्तु जब देवताओं को पता लगा तो उन्होंने

सरस्वती से प्रार्थना की कि वह उसकी जीभ में जाकर बैठे और उसकी वाणी में उल्टापन पैदा करे। बेचारे के मुख से निद्रात्व के बदले निद्रात्व निकल पड़ा। सृष्टिकर्त्ता ने कोई विलम्ब न करके 'तथास्तु' कहा, और स्वयं वहाँ से चलता बना। किन्तु जब फिर प्रार्थना की गई तो ब्रह्मा का दिल पसीज गया और उसने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर कुम्भकर्ण बीच बीच में जगाया भी जा सकता है। अपने कुछ बढ़िया से बढ़िया जनरलों के मारे जाने पर रावण रण-क्षेत्र में कूद पड़ता है और वानर-सेना में प्रलय का दृश्य उपस्थित करने लगता है। राम दूर से उसको देखते हैं और हनुमान् के कंधे पर चढ़कर वहाँ पहुँचते हैं। क्रोध के आवेश में दोनों में कुछ कहा-सुनी होती है और रावण अत्यन्त चिढ़ कर हनुमान् पर निर्दयतापूर्वक तीरों की वर्षा करता है। वह अभी इस बात को नहीं भूला है कि इसी ने मेरे प्यारे कनिष्ठ पुत्र को मारने और लंका पर आग लगाने की ढिठाई की थी। राम अपने प्रीतिभाजन की यह दुर्गत देख कर मारे क्रोध के बौखला जाते हैं और राक्षस को रथ, घोड़ों, रथी और मुकुट से हीन कर देते हैं। रात्रि का अन्धकार बढ़ रहा था। रावण अत्यन्त थक गया था। उसकी शक्तियां क्षीण हो चली थीं। अतएव वह तिरस्कारपूर्वक रण-क्षेत्र छोड़ कर चला जाता है और रात को अपने युद्ध के अनुभवों पर विचार करते बिताता है।

रावण पूर्ण निराशा की दशा में लड़ाई के मैदान से लौटा था। उसका सिर सर्वथा नीचा हो चुका था। वह उन सब शापों को याद करता है जिन्हें उसने अपने अविनय और निष्प्रयोजन दुर्व्यवहार के दिनों में अपने सिर पर लादा था। अन्त में वह निश्चय करता है कि अब मेरा छुटकारा और मेरी विजय मेरे भीमकाय भाई कुम्भकर्ण के हाथ में है। इसलिए वह आज्ञा देता है कि कुम्भकर्ण राक्षसों के लिए यह युद्ध करने को जाग उठे। उसे जगाने का लंबा और पसीना पसीना कर देनेवाला क्रम वाल्मीकीय रामायण के युद्धकाण्ड के ६०वें सर्ग में वर्णन किया गया है। यहाँ कहा गया है कि हजारों राक्षसों ने मिलकर मांस-के, विशेष कर हरिणों, भैंसों, सुअरों, इत्यादि के मांस के, पहाड़-जैसे खड़े कर दिये और भात के ढेर और खून और शराब की बावड़ियाँ तय्यार कीं। इसके बाद उन्होंने इस दानव के शरीर पर चन्दन के लेप और अन्य सुगन्धित मरहमों को मला और उसे फूलों से सजाया। अतएव यहाँ प्रस्तुत तक्षण में हम कुम्भकर्ण को जगाने और उस पर उबटन करने के दृश्य को देखते हैं। पटल के बीचोंबीच का व्यक्ति अपने बिछौने पर लेटा हुआ गहरे खर्राटे ले रहा है। उसकी नाक मानो कोई कन्दरा है। उसके अधखुले मुँह से खर्राटों की प्रतिध्वनियाँ निकल रही हैं। उसके आस पास बहुत से राक्षस खड़े हैं।

उनमें से चार उत्पटन करने और उसे जगाने में लगे हुए हैं। बाईं ओर से तीसरा व्यक्ति इस काम को कर रहा है और दूसरे तीन व्यक्ति भिन्न भिन्न सुगन्धित द्रव्यों से उसे सहायता दे रहे हैं। सबसे परे बाईं ओर, इस मण्डली के सिरे पर, हाथ का एक अंश दिखाई देता है, जो सम्भवतः पंखा लिये हुए है।

नवां तक्षण-खण्ड

कुम्भकर्ण को जगाने का दृश्य

आठवें खण्ड में इस प्रारम्भिक क्रम के पूरा हो जाने के बाद नवें खण्ड में हमें गहरी नींद में पड़े हुए दानव को जगाने के भागीरथ प्रयत्न दृष्टिगोचर होते हैं। यह दृश्य भी युद्धकाण्ड के ६०वें सर्ग में भली भाँति वर्णन किया गया है। तक्षण में सबसे परे बाईं ओर एक घुड़सवार कुम्भकर्ण के शरीर पर चढ़ कर उसे जगाने की चेष्टा कर रहा है। उसके पार्श्व में दाहिनी ओर एक और राक्षस उसके पेट के पास एक लम्बा और पैना हथियार, सम्भवतः बर्छी, घुसेड़ रहा है। दाहिनी ओर का तीसरा राक्षस भी एक छोटी मोटी तलवार सोये हुए दानव के कंधों में चुभो कर इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए सचेष्ट है। एक और दैत्य उसके कानों पर शंख बजा कर सचमुच ...

फेफड़ों को उड़ा देना चाहता है। पीछे एक पांचवां राक्षस बग़ैर मुट्ठ की तलवार की धार के टुकड़े को हाथ में लिए खड़ा है। शायद दानव की त्वचा लोहे से अधिक मजबूत और कड़ी होने के कारण तलवार टूट कर टुकड़े टुकड़े हो गई है, और राक्षस हार मान कर पीछे को खिसक चला है। उसके पार्श्व में एक विशाल हाथी दानव के विराट् शरीर को रौंदने की तय्यारी कर रहा है। इस हाथी के बनाने में शिल्पी ने अपनी छेनी का अतुल उत्कर्ष प्रदर्शित किया है। हाथी की सूँड के नीचे कुछ दाहिनी ओर को हट कर, एक बौना-जैसा राक्षस उसके गले की रस्सी पकड़ कर खड़ा है। यह सम्भवतः उसका महावत है, जो चुमकार पुचकार कर और केवल बलात्कार से भी हाथी को कुम्भकर्ण की देह पर चढ़ने को विवश कर रहा है।

दसवां तक्षण-खण्ड

कुम्भकर्ण के जागने के बाद

अन्त में कुम्भकर्ण जागता है, और सब भोजन चट कर जाता है। वह मदिरा के सारे भांडे एक ही घूँट में खाली कर देता है। फिर वह पूछता है, मेरी नींद को भंग करने और मुझे बरबस जगाने का क्या कारण है? रावण का मन्त्री यूपक्ष उत्तर

कुम्भकर्ण वानरों से जूझ रहा है। पृष्ठ १७२।

देता है कि राम और लक्ष्मण लंका पर चढ़ आये हैं, और सर्वत्र उनका आतंक छा रहा है। कुम्भकर्ण अपने बड़े भाई रावण के पास जाता है। यहाँ अधिकाय के उद्दतावरण और असंमन्यता के विरुद से प्रोत्साहित किये जाने पर वह प्रतिज्ञा करता है कि मैं समस्त वानरों का संहार करके अपनी क्षुधा शान्त करूँगा, और राम और लक्ष्मण के खून को पीकर अपनी अन्तिम प्यास बुझाऊँगा। इस बात से प्रसन्न होकर रावण स्वयं उसको कवच और आभरण, हार और मुकुट पहिनाता है, और फिर उसको गले से लगाता है। यहाँ से विदा होकर कुम्भकर्ण मोर्चे को लांघ कर राक्षसों से घिरे हुए रण-क्षेत्र में पहुँचता है। जीते जागते मांस के इस पहाड़-जैसे विशाल ढेर को किलकार करते हुए सेना की ओर टूटते और हाथ में अपने शरीर से अधिक लम्बा भाला लिये देख कर बंदर अपने अपने प्राण लेकर भागने लगते हैं। नल, नील, अंगद और अन्य वानर-नेता और जनरल किसी तरह सेना को दम-दिलासा देते हैं और उन्हें एक बार फिर शत्रु का सामना करने को कहते हैं। इस प्रकार वानर पेड़ों और चट्टानों को उठा कर एक बार फिर रण में लौटते हैं। युद्धकाण्ड के ६७वें सर्ग (श्लोक ३२-३६) में यह घटना इस प्रकार वर्णन की गई है,—

"पहाड़-जैसे भीमकाय वानर उस पर ऐसे चढ़े जैसे कोई

किसी पहाड़ पर चढ़ता हो। उससे लिपट कर उन्होंने उसको काटा, अपने नाखूनों से उसको नखियाया, दांतों से उसको काट खाया और मुक्कों और लातों से उसको कूट डाला। उसने भी बन्दरों को अपनी बाँहों से समेट कर ऐसे चट कर डाला जैसे गरुड़ साँपों को निगल जाता है, इत्यादि।"

रामायण का यह विषय प्रस्तुत खंड में सजीव ढंग पर प्रदर्शित किया गया है। सबसे परे बांई ओर एक वानर तर्जनी से कुम्भकर्ण को डाँट रहा है, और मुँह बाये अपने चमचमाते हुए खीसों से उसे काटने ही को है। उसकी दाहिनी ओर एक और वानर है। उसने कुम्भकर्ण के सिर पर अपने दांतों को गहरा चुभो दिया है और एक हाथ से मजबूती से उसका गला पकड़े हुए है, जिससे उसके सिर से मांस निकाले बिना ही नीचे न फिसल पड़े। दानव मध्य में स्थित है। वह अपने बांये हाथ से एक बन्दर को ऐंठे हुए है जो अपने अशक्त हाथ को उसकी छाती पर रक्खे हुए है, और दम घुटने के कारण सम्भवतः मृत्यु-मुख में पहुँच चुका है। उसकी दाहिनी ओर एक और बन्दर का हाथ दिखाई देता है, जो इसी तरह मौत के मुख में पहुँचाया गया है। एक पांचवां बन्दर अपने दांतों से उसके दाहिने कंधे को काटता हुआ दिखाई देता है। कुम्भकर्ण के कलश-जैसे लंबे-चौड़े कान कुण्डलों से सजे हुए हैं। उसकी आँखें बाहर

रावण की रानियां उसकी मृत्यु का शोक कर रही हैं। पृष्ठ १७५।

को उमड़ी हुई हैं और उसका मुँह बहुत विशाल है जिसके भीतर भयंकर दांत नज़र आते हैं। उसकी अनार्य-जनोचित नाक अत्यन्त बड़ी हुई है। उसके नासारन्ध्र कन्दराएँ-जैसे लगते हैं। इन सब अवयवों का प्रदर्शन बहुत ही सजीव और नैसर्गिक है, सर्वथा वाल्मीकि के वर्णन के अनुरूप है।

ग्यारहवाँ तक्षण-खण्ड

रावण की शोकाकुल पत्नियाँ

इस खण्ड में सम्भवतः रावण की पत्नियाँ दर्शाई गई हैं, जो देव और दानवों के हृदयों को दहलाने वाले राक्षस-राज की मृत्यु के शोक में बिलख रही हैं। इस विलाप का वर्णन युद्ध-काण्ड के ११३वें और ११४वें सर्गों में किया गया है। वाल्मीकीय विवरण, सर्ग १११, के अनुसार बड़ी देर तक राम और रावण एक दूसरे से युद्ध करते रहे। इन्द्र का रथ और सारथि मातलि इस युद्ध में राम को दिये गये थे। आखिर रामचन्द्र जी को याद आती है कि वह दिन निकट आ गया है जिसे देवताओं ने रावण के विनाश के लिए नियत किया था। अतएव वे उसके विरुद्ध अपना ब्रह्मास्त्र सम्हालते हैं और वैदिक मंत्रों से उसकी आराधना करके उसे जोर से रावण की छाती पर छोड़ते है। यह दिव्य अस्त्र उसके हृदय के

टुकड़े कर देता है, जिससे उसका मृत शरीर खून से दूषित धूलि में गिर पड़ता है और अस्त्र श्रीरामचन्द्र के तरकस में लौट आता है। रनवास में जब उसके मरने का समाचार पहुँचता है तो अन्य रानियों सहित उसकी पटरानी मन्दोदरी वहाँ आती है। सब फूट फूटकर रोने लगती हैं। विशेष कर मन्दोदरी के विलाप में गौरव और दाम्पत्य प्रेम कूट कूट कर भरे हैं। संस्कृत साहित्य में ऐसे केवल दो ही प्रसंग और हैं जिनसे मन्दोदरी के विलाप की तुलना की जा सकती है, अर्थात् कालिदास के रघुवंश में अजविलाप और कुमारसम्भव में रति-विलाप। प्रस्तुत तक्षण रामायणीय विवरण से कुछ भिन्न है। रामायण में रावण का शव खून से दूषित धूलि में पड़ा है, किन्तु यहाँ वह शय्या पर लेटा हुआ दिखलाया गया और उसके सिर के नीचे तकिया दर्शाया गया है। रामायण में कोई भी स्त्री फूलों का चढ़ावा लेकर नहीं आती, किन्तु यहाँ पटरानी मन्दोदरी के हाथ में हम एक कमल का फूल देखते हैं, जिसे वह सम्भवतः अपने पति के चरणों में चढ़ाना चाहती है। इस तक्षण का केन्द्रवर्ती व्यक्ति रावण है, जो शय्या पर निश्चेष्ट अकड़ा पड़ा है। उसके पैरों पर कड़े हैं, सिर पर मुकुट है, और उसके प्रधान सिर की दोनों ओर दो और सिर दर्शाये गये हैं। उसके गले पर तीन त्रिवलय हैं और उसके सिरों के एक पार्श्व में कुण्डल लटक रहे हैं। उसके पैरों

में पटरानी मन्दोदरी बैठी है। वह अपने नित्य-प्रति के आभरणों से जगमगा रही है। उसके सिर पर मुकुट और सिर के पीछे परिवेष है। अपने दोनों हाथों से वह एक कमल के फूल को पकड़े हुए है, जिसे सम्भवतः वह अपने पति के चरणों में चढ़ाना चाहती है। उसकी दाहिनी ओर की दूसरी स्त्री बड़े करुण भाव से अपने हाथ से रावण के ठंडे पड़े हुए हाथ को छू रही है। न उसके सिर पर मुकुट और न सिर के पीछे परिवेष। सबसे छोटी रानी धन्यमालिनी, जो रावण की सबसे अधिक प्रेम-भाजन थी, उसके वक्षःस्थल के उस घाव को देख रही है, जो राम के उड़कर बाहर निकलने वाले तीर के चुभने से लगा था। उसका चेहरा कुछ अंश में विशीर्ण हो चला है, और उसके केश-बन्ध और कर्णपत्र ठीक वैसे ही हैं जैसे अब भी मालाबार में प्रचलित हैं। इस रानी के बाद रावण की एक और स्त्री है। पांचवीं रानी, जिसका वर्णन रामायण में दिया गया है, सम्भवतः इस नजारे को देखने और अपने शोक को सहन करने में असमर्थ होने के कारण मरणान्तक मूर्छा में पड़ी है। मन्दोदरी के पार्श्व में स्थित रमणी रावण की दूसरी पत्नी होगी, किन्तु उसका चेहरा इतना विशीर्ण हो गया है कि उसे पहचानना सम्भव नहीं है। तक्षण भी कुछ अंशों में विशीर्ण हो गया है और शय्या के नीचे तीन स्थानों पर बिल्कुल मिट गया है।

किनारे की ओर, रावण के सिरों की दाहिनी तरफ, जहाँ पर स्त्रियां खड़ी हैं, उनके ठीक सामने, एक छोटी सी धुँधली प्रतिमा दिखाई देती है जो हनुमान् की मूर्ति-जैसी लगती है। उसका मुँह दूसरी ओर को फिरा हुआ है, किन्तु कौन कह सकता है कि यह स्वयं पत्थर ही की विशेष बनावट नहीं है? और इस कारण उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का अटकल लगाना उचित नहीं है।

बारहवां और तेरहवां तक्षण-खण्ड

राम को बधाई देने को आये हुए ऋषि

ये दो खण्ड परस्पर सम्बद्ध हैं। इन में वे ऋषि दिखलाये गये हैं जो रावण के मारे जाने के बाद राम के अयोध्या को लौट आने पर उन्हें बधाई देने के लिए राजधानी में पधारे थे। उत्तरकाण्ड के पहले दो सर्गों में बतलाया गया है कि सीता और लक्ष्मण सहित राम के कुशल से अयोध्या को लौट आने पर पृथिवी के सभी भागों से ऋषि लोग उन्हें बधाई देने के लिए वहाँ इकट्ठे हुए थे। महल के फाटक पर पहुँचने पर अगस्त्य सब ऋषियों की ओर से द्वारपाल को कहते हैं कि राम को जाकर सूचना दे दे कि ऋषि लोग आये हैं। ज्यों ही वह रामचन्द्र जी को खबर देता है, वे तुरन्त ऋषियों को

लिवा लाने की आज्ञा देते हैं। उनके अन्दर पहुँचने पर राम हाथ जोड़ कर सिंहासन पर से उठ खड़े होते हैं। वे इन प्रतिष्ठित और विमल अतिथियों को प्रणाम करते हैं, और उन्हें आदर से सोने के आसनों पर बैठने को कहते हैं, जिन पर मृगचर्म और कुश बिछे हुए हैं। जब ऋषिलोग आराम से आसन पर बैठ चुकते हैं तो वे राम को रावण, कुम्भकर्ण, इन्द्रजित् जैसे राक्षसों से संसार को मुक्त करने की महती सिद्धि के उपलक्ष में बधाइयां देते हैं और दया भाव से उन्हें पूछते हैं कि आपके राज्य और नाते-रिश्तेदारों में सब प्रकार से कुशल तो है। राम कहते हैं—यदि यह कोई गुप्त रखने की बात न हो तो मैं जानना चाहता हूँ कि इन्द्रजित् स्वयं अपने पिता से भी अधिक शक्तिशाली क्यों था। ऋषियों की ओर से कुम्भयोनि अगस्त्य रावण, इन्द्रजित् और अन्य राक्षसों की कहानी सुनाना आरम्भ करते हैं। यह कहानी आगे के अनेकों सर्गों में चलकर समाप्त हुई है।

बारहवां तत्त्व-खण्ड

महर्षि अगस्त्य

इस खण्ड पर हम सम्भवतः अगस्त्य को कहानी कहते पाते हैं। हम ऋषि को उसी तरह एक बहुमूल्य आसन पर बैठा देखते हैं जिस तरह आजकल दाक्षिणात्य लोग बैठते हैं। उनके

आभरण भी थोड़े बहुत उसी तरह के हैं जिस तरह के उन धर्मनिष्ठ समृद्ध दाक्षिणात्य गृहस्थों के होते हैं जो वाजपेय-जैसे कतिपय महायज्ञों को कर चुके हों। वे कुण्डल और अन्य आभरण पहने हुए हैं, और उनके सिर पर जटा-मुकुट है। उनके चेहरे को कभी क्षौर-कर्म का अवसर नहीं मिला है और इस कारण उनकी दाढ़ी खूब बढ़ी हुई है। वक्षःस्थल पर जनेऊ लटक रहा है। उनका एक हाथ उनके अङ्क में है, और दूसरा वक्षःस्थल पर अवस्थित है। उनकी आकृति से परुष धार्मिक गौरव झलकता है, और उससे यह भी प्रगट होता है कि वे रावण और अन्य राक्षसों की जीवनी और उनके विक्रमों की कथाएँ सुना रहे हैं। उनके पीछे एक तरुण राजकुमार है, जो बांये हाथ से ऋषि को छू रहा है, और दाहिने हाथ में मधुपर्क लिये हुए है। सम्भवतः यह राम के भाइयों में से कोई, शायद राजकुमार शत्रुघ्न, है। पृष्ठभूमि पर एक पेड़ की पत्तियां और शाखाएँ नज़र आती हैं।

तेरहवां तक्षण-खण्ड

यह खण्ड नं० १२ का परिशेष है। इसमें सबसे परे बांई ओर बहुमूल्य आभरणों से सजा हुआ राजकुमार अथवा राजा

बैठा है। उसके सिर पर वर्तुलाकार मुकुट और सिर के पीछे परिवेष है। यह सम्भवतः रामचन्द्र जी के श्वशुर, महाराज जनक, हैं जो क्षत्रिय होने पर भी वेद शास्त्रों के धुरंधर पण्डित थे—ब्रह्मज्ञान में निष्णात और सदा विद्वानों के सत्संग में रमण करने वाले थे। उनकी दाहिनी ओर एक और व्यक्ति बैठा है, जिसकी आकृति और वेशभूषा से प्रगट होता है कि उसका सम्बन्ध भी किसी राजघराने से है। उसका चेहरा और हथेलियां विशीर्ण हो गये हैं, और उसके सिर के पीछे परिवेष विद्यमान है। सम्भवतः यह रावण का भाई और श्रीरामचन्द्र का विश्वासभाजन मित्र विभीषण है। सम्भवतः वह हाथ जोड़े खड़ा है। उसके पार्श्व में दाहिनी ओर वानर-राज सुग्रीव है, जिसके सिर पर मुकुट और सिर के पीछे परिवेष विद्यमान है। उसका चेहरा बंदरों का जैसा है। उसके पार्श्व में एक और व्यक्ति का एक अंश दिखाई देता है, किन्तु यहाँ पर तक्षण-खण्ड सर्वथा विछिन्न हो गया है। सुग्रीव के पीछे पृष्ठ-भूमि पर पेड़ की पत्तियां और शाखायें दिखाई देती हैं। आकृति से यह वट-वृक्ष जैसा लगता है।

चौदहवां तत्तण-खण्ड

राम का पारिवारिक जीवन

चौदहवें तल्तण-खण्ड पर लङ्का से लौट आने के बाद राम और सीता अपनी पर्ण-कुटीर में आनन्द से बैठे हुए दिखलाये गये हैं, और इसी खण्ड पर अयोध्या में राम का राज्याभिषेक भी दर्शाया गया है। युद्धकाण्ड के ४३वें सर्ग में उनके पारिवारिक जीवन का वर्णन इस प्रकार किया गया है,—

पाहुनों और अतिथियों के चले जाने और कुबेर का पुष्पक-विमान उसे लौटाने के उपरान्त राम दिल-बहलाव के लिए अपने अशोक-वन में प्रवेश करते हैं, जो नाना प्रकार के दुर्लभ वृक्षों और झाड़ियों से हरा-भरा है। इस बाग में एक भवन है, और उस भवन के बाहर बैठने के लिए आसन बने हुए हैं। राम एक ऐसे आसन पर बैठते हैं जिस पर गद्दे बिछे हुए हैं, और जो फूलों से सजा हुआ है। फिर वे सीता के साथ पवित्र मैरेय पीते हैं, जिस प्रकार इन्द्र शची के साथ बैठ कर मदिरा पीता है। नौकर राम के लिए बढ़िया भोजन और फल लाते हैं। मतवाली तरुणियां, जो नृत्य और संगीत की कलाओं में निपुण थीं, उन्हें अपना नाच दिखलाती हैं इसी प्रकार वे नित आमोद-प्रमोद में दिन बिताते हैं और सीता के साथ ऐसे देदीप्यमान लगते हैं जैसे अरुन्धती के साथ वसिष्ठ।

प्रस्तुत तक्षण-खण्ड पर सम्भवतः राम और सीता को इसी रूप में दिखलाया गया है । इस खण्ड के किनारे अधूरे और टूटे-फूटे पड़े हैं, अतएव हम नाच का केवल अनुमान मात्र कर-सकते हैं । एक ऐसे ही नाच को हम आलेख्य-पटलों पर उस अवसर पर देखते हैं जब भरत का अभिषेक होने वाला था और उनकी माता की इच्छा से भरत के सामने नाच की आयोजना की गई थी । प्राम्बनम् से २० मील परे बोरोबुदुर के चण्डी के आलेख्य-पटलों में इस प्रकार के लगभग ४० तक्षण हैं, जिनमें नाच दर्शाया गया है ।

यहाँ उक्त तक्षण-खण्ड पर हमें काठ के मकान का एक मालाबारी नमूना दिखाई देता है । उसकी ढालवीं छत पर दो पक्षी हैं । इनमें से नर-पक्षी प्रेम के आवेश में अपनी सहचरी को ढांपने की तय्यारी कर रहा है, जो अनमनी होकर दूसरी ओर देख रही है । मकान के सामने हमें सोपान के एक भाग में तकियों और गद्दों से ढके हुए आसन पर राम और सीता बैठे दिखाई देते हैं । चित्र की बांई ओर राम विराजमान हैं । वे जगमगाते हुए आभरणों से अलंकृत हैं और तकिये पर झुके हुये हैं । वे अपने दाहिने हाथ को बाये हाथ पर रक्खे हुये हैं, जो उससे कुछ छोटा है और जिससे वात्स्यायन सूत्रों के पण्डित भली भाँति परिचित हैं । उनका बांया हाथ वरद-मुद्रा की हालत में स्थित है, मानो वे किसी को

वर दे रहे हों। उनके पीछे उनकी पत्नी सीता बैठी हैं। राम के दाहिने घुटने का एक अंश उनकी जंघाओं के ऊपर टिका हुआ है। उनकी दाहिनी हथेली उनके दाहिने घुटने पर टिकी हुई है, जब कि दूसरे हाथ में वे कोई एक फूल अथवा सम्भवतः कोई छोटा सा शराब का प्याला लिये हुई हैं। उनकी नाक थोड़ी सी विशीर्ण हो गई है, उनके कानों में कुण्डल लटक रहे हैं। उनकी बांहों पर बाजूबन्द और कँगन हैं। वे एक असाधारण सी और छोटी सी मोतियों की माला पहिने हुई हैं, और उनके गले में एक रुद्राक्ष की माला भी है। उनके सिर पर किरीट है जिसके बीच से काले घुंघराले बालों की लटें छूट रही हैं। मुकुट के पीछे परिवेष है, और जैसा कि मालाबार में सर्वत्र रिवाज है उनका वक्षःस्थल राम के वक्षःस्थल की भाँति खुला पड़ा है। दक्षिण भारतीय प्रथा के अनुसार राम की नाभि भी दिखाई देती है।

पन्द्रहवां तक्षण-खण्ड
सीता का निर्वास

इस तक्षण-खण्ड में सम्भवतः सीता का निर्वास दिखलाया गया है, जब लक्ष्मण उन्हें राम की आज्ञा से गङ्गा के उस पार छोड़ आये थे। वाल्मीकीय रामायण के युद्धकाण्ड के ४२-४६

सर्गों में कथा इस प्रकार दी गई है,—"जब रामको सीता के साथ आनन्द से बहुत समय बीत चुका था तब एक दिन उन्हें सीता के गर्भवती होने की शुभ सूचना मिली। उन्होंने सीता से कहा—'प्रिये मुझे मालूम होता है कि ईश्वर के आशीर्वाद से तुम शीघ्र ही सन्तान का मुख देखोगी। यदि इस समय तुम्हारे हृदय में किसी भी प्रकार की कोई अभिलाषाएँ हों तो मैं उन्हें पूरा करने के लिए तय्यार हूँ। सीता ने कृतज्ञता से मुसकराते हुए कहा—'प्राणनाथ इच्छा होती है कि एक बार फिर भगवती भागीरथी के तटों पर रहनेवाले ऋषियों के दर्शन करूँ, और कन्दमूल और फल खा कर एक रात वहीं वन-वृक्षों की छाया में बिताऊं। राम नें कहा—'जैसी तुम्हारी इच्छा', और उनसे साथ वायदा किया कि कल बड़े तड़के मैं तुम्हें गङ्गा के तट पर भेज दूंगा। इसके बाद राम अपने मित्रों के साथ उठकर बाहर जाते हैं और वे समय बिताने के लिये एक दूसरे को हँसी-खेल, वाग्विलास आदि की कथाएँ सुनाते हैं। फिर राम उनसे कहते हैं—'आप लोग बिना किसी भय के मुझे बतायें कि मेरे और मेरे भाइयों के प्रति प्रजा के कैसे भाव हैं और लोग हमारे विषय में क्या कुछ बातें करते हैं।' इस पर वे उत्तर देते हैं—'महाराज, प्रजा आपके पराक्रम की प्रशंसा कर रही है, आपने जो समुद्र पर पुल बाधा है और वानरों और रीछों को मित्र बना कर रावण

को मारा है उसके लिए लोग हृदय से आपकी स्तुति कर रहे हैं, किन्तु वे कहते हैं हमें आश्चर्य इस बात का है कि राम कैसे सीता को पत्नी रूप से ग्रहण करके उनके साथ भोगविलास में अपना समय बिताते हैं। उनका कहना है कि रावण के अङ्ग-स्पर्श से सीता दूषित हो चुकी हैं, उनका सतीत्व नष्ट हो चुका है। यही नहीं, वे एक वर्ष स्वयं राक्षस-राज की राजधानी लङ्का के अन्दर अशोक-वन में उसके कारावास में रहीं हैं। वे कहते हैं कि जब हमारे महाराज ही ऐसी बातों की उपेक्षा करने लगेंगे तो फिर प्रजा का क्या हाल होगा। स्त्री जाति के लिये इससे अधिक बुरा आदर्श और क्या हो सकता है कि स्वयं राजा ही पातिव्रत धर्म की उपेक्षा करने लगे। राम अपने मित्रों से विदा होते हैं। इन बातों को सुनकर उनके हृदय को मर्मस्पर्शिनी वेदना होती है, और वे द्वारपाल को आज्ञा देते हैं कि शीघ्र ही हमारे भाइयों को हमारे पास बुला लाओ। वे आते हैं, और देखते क्या हैं कि महाराज की आँखों से आँसू टपक रहे हैं। भाइयों को हृदय से लगाने के बाद राम लक्ष्मण को आज्ञा देते हैं कि सीता को सुमन्त के रथ पर चढ़ा कर गङ्गा के उस पार महर्षि वाल्मीकि के तपोवन के निकट छोड़ आओ। यह आज्ञा पाकर लक्ष्मण सीता को रथ पर चढ़ा लेते हैं। बेचारी सीता को क्या पता था कि मेरे साथ निर्दयी विधाता निष्ठुर हास्य कर रहा है।

उन्होंने समझा कि पतिदेव ने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके मेरी अभिलाषा पूर्ण करने के लिये यह सब कुछ तय्यारी की है। गङ्गा के उस पार पहुँच कर लक्ष्मण आदर सहित सीता को यह हृदय को दहलाने वाला अनिष्ट-समाचार सुनाते हैं। सीता इसका उत्तर ऊर्जस्वल शब्दों में देती हैं। किन्तु लक्ष्मण यह सब कुछ सुनकर भी उन्हें हिंस्र जन्तुओं से संकुल वन में अकेली छोड़ कर लौट आते हैं। इस प्रकार बीहड़ वन में छोड़े जाने पर सीता ज़ोर से मर्मस्पर्शी करुण-क्रन्दन करने लगती हैं, जिसे सुनकर वाल्मीकि के शिष्यों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित होता है। वे सीता के पास आते हैं, और फिर अपने गुरु के पास जा कर जनकनन्दनी की दयनीय दशा का वृतान्त सुनाते हैं।

यहाँ इस लक्षण में हम सीता को बीहड़ वन में अपने भाग्य की निष्ठुरता पर आँसू बहाते और अपने पति की हृदय-हीनता पर चिन्तन करते देखते हैं, मानो वे सोच रही हों—यह कैसी विडम्बना है, पुरुष की निष्ठुरता का यह कैसा भयङ्कर उदाहरण है कि एक निर्दोष पतिपरायणा पत्नी को पूर्ण गर्भ की नाज़ुक हालत में इस प्रकार तिलाञ्जलि दी जाये। वे अत्यन्त अनमनी हो कर बैठी हैं। उनका बांया हाथ उनके पैरों की उंगलियों पर टिका है, और दाहिना हाथ हार की भांति गले से

लगा हुआ है। वे झीने वस्त्र पहिने हुई हैं, जिनसे उनकी नाभि और शरीर के दूसरे अङ्ग साफ दिखाई देते हैं। इस तक्षण में उनका पेट अत्यन्त फुलाया हुआ दिखलाया गया है। जैसा कि आजकल मालाबार की प्रथा है, उनका वक्षःस्थल खुला छूटा हुआ है। उनके कानों से कुण्डल लटक रहे हैं। उनके सिर पर एक वर्तुलाकार मुकुट है, जिसके पीछे परिवेष बना हुआ है। जिस पत्थर पर वे स्थित हैं उसके तले एक साँप और एक मेंढ़क दर्शाये गये हैं, जिनमें सम्भवतः साँप मेंढक के पीछे भाग रहा है, और उसको अपना आहार बनाना चाहता है। सीता की मूर्त्ति के ऊपर दाहिनी ओर एक जंगली बिल्ली अथवा कोई और जन्तु दर्शाया गया है। उनके पीछे वनस्थली का दिग्दर्शन कराया गया है, जिसको देखकर जंगल की उस भयङ्करता और निर्जनता का रोमाञ्चकारी दृश्य आँखों के सामने उपस्थित हो जाता है जिसमें लक्ष्मण उन्हें छोड़ आये थे।

सोलहवां और सत्रहवां तक्षण-खण्ड

अश्वमेध और ब्रह्मभोज

सीता के वनवास और लक्ष्मण के लौट आने के बाद श्री-रामचन्द्र अपने भाइयों, ऋषियों और अपने कुल पुरोहित वसिष्ट

और दूसरे लोगों से मन्त्रणा करते हैं। अन्त में वे अश्वमेध करने का निश्चय करते हैं; इसलिए सब बातों की उचित आयोजना करने के लिए भरत आगे आगे नैमिषारण्य में भेजा जाता है, और यज्ञ का घोड़ा खुला छोड़ दिया जाता है। स्वयं राम सीता की सुवर्ण प्रतिमा को लेकर उसके पीछे पीछे चलते हैं, क्योंकि विना धर्मपत्नी की उपस्थिति के कोई भी धार्मिक कर्म नहीं किया जा सकता था। यज्ञ बड़ी धूमधाम के साथ आरम्भ होता है; लोगों को बड़ी भारी जेवनार दी जाती है, और जी खोलकर आमोद-प्रमोद की आयोजना की जाती है। ब्राह्मणों, ऋषियों और दूसरे लोगों को बढ़िया पकवान खिलाये जाते हैं, और सर्वत्र "दो दो और खाओ खाओ" की ही ध्वनि सुनाई देती है। यह बात उत्तर काण्ड के ९१ वें और ९२ वें सर्गों में वर्णन की गई है। यहाँ इन दो तक्षण-खण्डों में इसी प्रकार की जेवनार की चहल-पहल दर्शाई गई है। पहिले खण्ड में हमें एक राजकुमार और एक ऋषि किसी विषय पर बैठ कर बातें करते हुए और जेवनार में सम्मिलित होने की तय्यारी करते दिखाई देते हैं। दूसरे तक्षण में सबसे परे बांई ओर एक राजकुमार दिखाई देता है। उसकी दाहिनी ओर एक ऋषि स्थित है, जिस की आकृति से सन्तोष झलकता है। इस ऋषि के पास एक और व्यक्ति है जो राजदरबार से मिले हुए दान से सन्तुष्ट न हो,

कर अधिक पाने की इच्छा से हाथ पसारे हुए है।

अठारहवां तक्षण-खण्ड

अश्वमेध के बाद ब्रह्मभोज

यह तक्षण-खण्ड पिछले दो खण्डों का ही संक्षेप है। यहाँ हम ब्राह्मणों और ऋषियों को भोजन जीमते देखते हैं। आलेख्य में सबसे परे बांई ओर जटा-मुकुट पहिने एक ऋषि दिखाई देता है। उसका एक हाथ अपने दाहिनी ओर के ऋषि की जंघा पर टिका हुआ है, और दूसरे हाथ में, जिसको वह अपने मुँह के सामने उठाये हुए है, कोई ऐसी वस्तु रक्खी हुई ह जो पहिचानने में नहीं आती, किन्तु जो सम्भवतः कोई खाद्य पदार्थ है। उससे आगे दाहिनी ओर किसी ऋषि या ब्राह्मण की आसीन मूर्ति दिखाई देती है, जिसके कानों से कुण्डल लटक रहे हैं, और जिसकी बांई ओर का ऋषि इसकी जंघा को थप-थपा रहा है। वह बाजूबंद और कंगन पहने है, जो सम्भवतः रुद्राक्ष के बने हुए हैं। उसके गले में रुद्राक्ष की माला और और कमर पर रुद्राक्ष की मेखला है; वह जनेऊ भी पहिने हुए है, और उसकी धोती ठीक उसी प्रकार बंधी हुई है जिस प्रकार दक्षिण भारतवर्ष में बांधी जाती है; उसके पेट पर एक और वस्त्र लपेटा हुआ है, जैसा कि आजकल भी

दक्षिण भारत में चलन है, जिस पर 'ह्रीं·ॐ' लिखा हुआ है; उसका एक हाथ घुटने पर टिका हुआ है, और दूसरा, जिसमें कोई खाद्य पदार्थ रक्खा है, उसके मुँह की ओर उठा हुआ है; वह मुँह बायें खड़ा है, मानों हाथ में रक्खे हुए ग्रास को निगल कर अपनी तृप्ति करना चाहता है। उसके पीछे एक और ब्राह्मण बैठा हुआ है, जो पूरा पूरा नजर नहीं आता, जिसके ललाट का उपरला अंश निशीर्ण हो गया है, और जिसके हाथ में भी कोई खाद्य पदार्थ है। इन तीनों के सामने सबसे परे बाईं ओर दोनों में दो प्रकार के मास या मछलियों के ढेर लगे हुए हैं, और बीच में चपातियां और सम्भवत. छोटी मछलियां और दूसरे खाद्य पदार्थ दिखाई देते हैं।

उन्नीसवां तक्षण-खण्ड

कुश और लव का यज्ञ के घोड़े को रोकना

इस तक्षण-खण्ड में सम्भवत. राम और सीता के पुत्र और वाल्मीकि के शिष्य कुश और लव यज्ञ के घोड़े को रोकते, अथवा राम की सेना के साथ युद्ध करते दिखाये गये हैं, जो लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु की अध्यक्षता में अश्वमेध के घोड़े की रक्षा करने और उसको कुशल-पूर्वक लौटा लाने के लिए भेजी गई थी। यद्यपि यह घटना वाल्मीकीय रामायण के आजकल के

दक्षिण भारतीय संस्करणों में कहीं भी नहीं पाई जाती तथापि दक्षिण भारत के तामिल ब्राह्मण बालक सात वर्ष की आयु से पहले ही उससे परिचित हो जाते हैं। इस घटना का विवरण इस प्रकार है,—'बालक कुश और लव अश्वमेध के घोड़े जैसे विलक्षण जानवर को बड़ी तेजी से दौड़ते देखकर और उसकी आकृति से मुग्ध होकर उसको पकड़ कर वाल्मीकि के आश्रम में ले आते हैं। घोड़े की रक्षा करने वाले सैनिक गाली गलौज देते हैं, जिस पर युद्ध आरम्भ होता है जिसमें अन्ततः स्वयं राम और लक्ष्मण को भी भाग लेना पड़ता है। कुश और लव अपने मोहन अस्त्र से केवल राम की सेना को ही मूर्छित नहीं करते किन्तु रामायण के दोनों चरित्र-नायकों, राम और लक्ष्मण, को भी बन्दी कर लेते हैं, और उन्हें हनुमान् और जाम्बवान् की पीठ पर चढ़ा कर अपनी माता सीता के पास ले आते हैं। सीता वियोग के दुःख में एक ओर बैठी सोच रही हैं। उनके शोक की कोई सीमा नहीं, और इसी प्रकार अब उनके आश्चर्य की भी सीमा नहीं रहती। सीता के सामने कुछ दूर पर हनुमान् है, जिससे वे इतना स्नेह करती थीं, और इस वृद्ध वानर की पीठ पर एक सांवले रंग का सुन्दर व्यक्ति है, जिसे कुश कहता है कि मैं नहीं जानता किन्तु जिसकी आकृति उससे कुछ कुछ मिलती जुलती है। लव दूसरे व्यक्ति की ओर इशारा

करता है, जो वृद्ध रीछ जाम्बवान् की पीठ पर है और जिसका रंग रूप स्वयं लव का ही जैसा है। यही लक्ष्मण हैं। दोनों बालक अपनी रण-कथा को सुनाते हुए अपनी माँ से कहते हैं कि इन दो आदमियों के हाथ में बड़े बड़े धनुष थे, किन्तु जब इन्होंने हमें देखा तो दोनों इतने स्तब्ध और हैरान हुए कि न इनसे धनुष पर डोर चढ़ाई गई और न ये तीर ही छोड़ सके। अतएव कुश ने आसानी से अपने मोहन अस्त्र के प्रयोग से सारी सेना को सुला दिया और दोनों भाई सेना-नायकों को अपनी माँ के पास ले आये।

यहाँ प्रस्तुत खण्ड पर सबसे परे बांये छोर पर हमें एक तापस बालक दिखाई देता है, जिसके हाथों में राजकुमार कुश का तरकस है। उसकी दाहिनी ओर कुश को प्रदर्शित किया गया है, जो आलीढ़ मुद्रा अर्थात् लक्ष्य-वेध की हालत में खड़ा होकर जोर से धनुष ताने बड़ी स्फूर्ति और ओजस्विता के साथ सम्भवतः मोहन अस्त्र को छोड़ रहा है, जो विधिपूर्वक अभिषिक्त किया गया है। उसके कानों पर कुण्डल हैं और शरीर पर थोड़े से आभूषण भी हैं, वह तापस शिष्यों के अनुरूप जटा-मुकुट धारण किये है, उसकी दाहिनी ओर उसका छोटा भाई लव है। लव का पहनावा भी कुश ही का जैसा है, किन्तु उसका जटा-मुकुट उतना बड़ा और दिखलावटी नहीं है; उसके चेहरे

अत्यधिक रोष झलक रहा है; उसके पाँव भी आलीढ़ मुद्रा की हालत में स्थित हैं । इस मण्डली के पीछे एक पेड़ के पत्ते दिखाये गए हैं, जो सम्भवतः पलाश का पेड़ है ।

बीसवां तक्षण-खण्ड

इस खण्ड पर एक पेड़ की छाया में एक बन्दर अपने नंगे नैसर्गिक वेश में बैठा हुआ दिखलाया गया है । इस पेड़ के पत्ते और टहनियां बन्दर के पीछे और उसके ऊपर प्रदर्शित किये गये हैं । बन्दर का एक पैर, जिसका पंजा और टांग झुके हुए हैं, कुछ नीचे उस पत्थर पर टिका हुआ है जिस पर वह बैठा हुआ है; उसका दूसरा पैर कुछ और नीचे एक और पत्थर पर झूल रहा है । इस पत्थर के नीचे, जिस पर उसका दाहिना पैर रखा हुआ है, एक बिल है जिससे एक काले नाग का फन और कलेवर दर्शाये गये हैं; बन्दर उसको सम्भवतः आतङ्क और आश्चर्य से देख रहा है, और अपने बांये हाथ को अपनी जंघा के पास रखे हुए है । यद्यपि यह तक्षण असम्बद्ध है तथापि इस में शिल्पी ने भावविन्यास और आकृति की सजीवता दिखला कर अपनी कला का उत्कर्ष भली भाँति व्यक्त किया है, जिससे

प्रकट होता है कि शिल्पी को बन्दरों से सहानुभूति थी और वह उनके जीवन और शील को समझता था।

इक्कीसवां तक्षण-खण्ड

यह पटल यद्यपि टूटी फूटी दशा में है तथापि उसके बायें छोर पर एक स्तम्भ दिखाई देता है, जिसकी विशेषता यह है कि उसके आधार, मध्यभाग और सिरे पर कलश बने हुए हैं; यह स्तम्भ ब्रह्म या वर्गाकार स्तम्भों की श्रेणी का है, और इसके भी ब्रह्मा ही के जैसे चार मुख अथवा पार्श्व हैं। सबसे परे दाहिनी ओर विष्णु के स्वामिभक्त परिचारक और शाश्वतिक वाहन गरुड़ की मूर्ति दिखलाई गई है। आलेख्य में वह खड़ा नजर आता है, और उसके पैरों के पास एक जावाई नमूने का जंगल दर्शाया गया है जिसमें पथरीले चट्टान और उष्ण कटिबन्ध के घने घास दृष्टिगोचर होते हैं। पक्षिराज गरुड़ आधा मनुष्य और आधा पक्षी है; उसकी आकृति मनुष्य की अपेक्षा पक्षी से अधिक मिलती है, उसके पैर और पञ्जे पक्षी के जैसे हैं और उसके शरीर का जंघाओं तक का अंश पक्षियों का जैसा है; उसकी जंघाओं पर छोटे छोटे रोंए जैसे उग रहे हैं, जैसे कि पक्षियों में भी होते हैं। शरीर का ऊपर का

भाग मनुष्य का जैसा दिखलाया गया है; उसके कान, चेहरा, ललाट, ठुड्डी, नाभि, हाथ आदि सब मनुष्यों के जैसे हैं। बांहों में बाजूबन्द और कङ्गन हैं, और कानों से कुण्डल लटक रहे हैं; कुण्डल के अन्दर से एक तिहरी मुक्तामाला अन्तरिक्ष में अठखेलियां कर रही है। किन्तु उसका मुख, उसकी आँखें, नाक और चोंच पक्षी के-जैसे हैं। उसके अर्द्ध-पक्षी-पन को अधिक प्रबल बनाने के लिये उसकी चोंच से विशाल पंख उगते हुए दर्शाये गये हैं, और इस सम्बन्ध में रहे सहे सन्देह को दूर करने के लिये उसके मुकुट पर भी पंखों के रोंए दर्शाये गये हैं। यद्यपि उसका एक हाथ छिल गया है तथापि उसके दूसरे हाथ की स्थिति से हम यह अनुमान कर सकते हैं कि वह पुष्पाञ्जलि मुद्रा की दशा में हाथ जोड़े खड़ा है, जिसका कारण सम्भवत: यह है कि वह अपने प्रभु नारायण के सामने उपस्थित है। ऊपर वर्णन किये गये दृश्यों और बिखरे हुए तक्षण-खण्डों के अतिरिक्त प्राम्बनम् के शिवमन्दिर में निम्नलिखित तक्षण भी हैं—(१) राम और सीता की खड़ी मूर्तियां, जो स्तम्भ पंक्ति के एक कोने पर बनाई गई हैं, और जिनमें सुन्दरता और उत्कर्ष लाने में शिल्पी ने कोई बात उठा नहीं रक्खी है। यह स्तम्भ पंक्ति अब भी उस उजड़े हुए मन्दिर के अंग रूप से विद्यमान है। यहाँ हम सीता को

राम की बांई ओर खड़ी देखते हैं। वे बहुत से रत्नों और आभरणों से अलंकृत हैं, उनके सिर पर मुकुट है, और, चूंकि वे स्वयं लक्ष्मी का अवतार थीं, उनके हाथ में एक कमल भी दर्शाया गया है। उनकी दाहिनी ओर राम खड़े हैं, जिनकी आकृति में उग्र गौरव झलकता है, और जो अलौक-सुन्दर आभरण और मुकुट धारण किये हुये हैं; उनका दाहिना हाथ उनकी कमर से लगा हुआ है, और बांया हाथ 'चिन्मुद्रा' अर्थात् ज्ञानोपदेश की दशा में स्थित है। यह समुदाय समस्त भारत और उद्वेलित समुद्रों से परे सारे विशाल भारत की तक्षण कला के नमूनों में सबसे अधिक गौरवमय और स्वभाव-सुन्दर है।

(२) दूसरे समुदाय में भी, जो स्तम्भ पंक्ति के बाहरी पार्श्व पर पाया जाता है, सम्भवतः राम को ही प्रदर्शित किया गया है। वे अपने परिचारकों के साथ खड़े होकर पास ही किसी नाच या आमोद-प्रमोद के दृश्य को देख रहे हैं। रामायणीय पटलों और बिखरे हुये तक्षण-खण्डों के अतिरिक्त, जो इस मन्दिर पर दर्शाये गये हैं, हम यहाँ नाना प्रकार के अन्य कपोल-कल्पित व्यक्तियों और उनके समुदायों को भी देखते हैं, जिससे उस समय के सामाजिक जीवन का एक काफी अच्छा चित्र आँखों के सामने आ जाता है। इस प्रकार एक समुदाय, जो बार बार दर्शाया गया है, अप्सराओं का दिग्दर्शन कराता है जो सम्भवतः सङ्गीत, नृत्य

और वास्तुकला की अधिष्ठात्री देवियां, अथवा शायद इन्द्र के स्वर्ग की वे तीन विख्यात अप्सराएँ हैं जिनके नाम उर्वशी, मेनका और तिलोत्तमा हैं। एक और विशेष समुदाय, जो कई बार दोहराया गया है, कल्पवृक्ष को प्रदर्शित करता है, जिसके प्रत्येक पार्श्व में दोनों ओर एक एक किन्नरी (अर्द्ध पक्षी और अर्द्ध मानुषी) और गायिका दिखलाई गई है। अपने काल, भैरव आदि रूपों में नटराज शिव और नाना प्रकार के अन्य विषय भी यहाँ प्रदर्शित किये गये हैं, जिनमें दक्षिण भारतीयता की झलक दृष्टि गोचर होती है। अन्ततः महर्षि अगस्त्य के तपोवन की भाँति, जिसका वर्णन अरण्यकाण्ड के बारहवें सर्ग के १७-२० श्लोकों में दिया गया है, यहाँ भी हम देखते हैं कि पूर्वी द्वार से आगे प्रदक्षिणा क्रम से मुख्य दिशाओं के निम्नलिखित देवता और दिक्पाल प्रदर्शित किये गये हैं,—(१) इन्द्र, जो पूर्व दिशा का दिक्पाल और देवताओं का राजा है, (२) बृहस्पति, जो देवताओं का कुल-पुरोहित और गुरु है, (३, ४) अग्नि, जो देवताओं का दूत है, (५) हनुमान्, जो राम का स्वामि-भक्त सन्देशहर और सेवक और भाविष्य का निर्वाचित ब्रह्म है, (६, ७) यम, जो दक्षिण दिशा का दिक्पाल और प्रेतलोक का स्वामी और धर्माध्यक्ष है, (८) ब्रह्मणस्पति, जो प्रार्थनाओं या वैदिक मन्त्रों का अधिष्ठातृ देव है, (९) नैऋति, जो नैऋत्य

कारण का दिक्पाल है, (१०, ११) सूर्य, जो प्रकाश और स्वास्थ्य का देवता है और नित्य पूर्व में उदय और पश्चिम में अस्त होता रहता है, (१२, १३) वरुण, जो समुद्र और जलों का स्वामी, नदियों का पति, और पश्चिम दिशा का दिक्पाल है, (१४) कार्तिकेय, जो शिव और पार्वती का पुत्र और देवताओं की सेनाओं का प्रधान सेनानी है, (१५, १६) वायु, जो हवा का अधिष्ठातृदेव, प्राणों का स्वामी और हनुमान् का पिता है, (१७) काम, जो प्रेम का अधिष्ठातृदेव और रति का पति है, (१८) कुवेर, जो देवताओं का कोशाध्यक्ष, उत्तर दिशा का दिक्पाल और शिव का मित्र है, (१६) सोम, जो चन्द्रमा का अधिष्ठातृदेव, रात्रि का राजा, तारों का पति और देवताओं को अमर बनानेवाला है, (२०) विश्वकर्मा, जो दैवी वास्तुकार, इञ्जिनियर, तक्षक और देवताओं का सबसे बड़ा शिल्पी है, (२१-२२) शिव, विश्व का संहार करनेवाला और प्रलय का अन्तिम कारण, त्रिमूर्ति में सबसे छोटा और सबसे अधिक शक्तिशाली, पार्वती या उमा का पति और कैलास का अधीश्वर है, (२३) नारद, जो विष्णु का परम भक्त और सङ्गीत का आविष्कार करनेवाला है, (२४) इन्द्र या शक्र, जो देवताओं का राजा और शची पौलोमि का पति है और जो देव परम्परा को पूरा करने के

लिए फिर दर्शाया गया है, क्योंकि वह देवताओं में प्रथम और अवम (अन्तिम) है।

इसी प्रकार प्राम्बनम् की भाँति जावा के मध्यवर्ती प्रदेश के अन्दर ब्लित्तर जिले में भी, केलुत नाम से विख्यात पर्वतों के दक्षिण पश्चिम में, मन्दिरों का एक समुदाय स्थित है, जिन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण वह समुदाय या मन्दिर-मण्डल है जिसको चण्डी-पनतरन कहते हैं। यद्यपि प्राम्बनम् के मन्दिरों के लोरा जोंगरांग समुदाय की समष्टि की तुलना में यह मन्दिर-मण्डल तुच्छ जैसा लगता है, तथापि यह समुदाय भी बहुत रोचक है। मुख्य मन्दिर, जो चण्डी-पनतरन के नाम से विख्यात है, मागापैंट (विल्वतिक्त) के राजाओं और रानियों के अवशेषों के स्मृति चिन्हों को रखने के लिए बनाया गया था। मागापैट पूर्वी जावा के राजवंश की राजधानी थी। इस वंश की उत्पत्ति रानी जयविष्णुवर्धनी से हुई थी। उक्त मन्दिर के बन जाने के बाद और भी मन्दिर राजा हयमवुरुक के शासन के अन्त तक उसके आसपास बनते रहे। सम्भवतः इस मन्दिर के आसपास के खंडहर पालाह नगर के ध्वंसावशेष हैं। इस नगर का वर्णन जावा के राजाओं के नगरकृतागम नामी इतिहास में बड़े सजीव ढंग से दिया गया है, जिसको प्रपञ्च नाम के प्रसिद्ध कवि ने रचा था और जिसकी हस्तलिखित प्रति एक जलते हुए

कटन से बचाई गई थी। इस मन्दिर के शिलालेखों में जो अभी तक अपने मूलस्थान में विद्यमान हैं, ११९७, १३२०, और १३७५, ये तिथियां दी गई हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि मन्दिर का मुख्य ढाचा १३२० के लगभग बन कर तय्यार हो गया था, और हेयमवुरुक के शासन-काल (१३५०-८९) में और और मन्दिर बना कर उसके साथ जोड़े जाते रहे। जब पूर्वी जावा का अन्तिम हिन्दूवंश अन्तर्हित हो गया और मुसलमानों के आक्रमणों के कारण उसके प्रतिनिधि बाली के समीपवर्ती द्वीप के आतिथ्यमय शरण में जा पहुँचे तो पालाह और मागाफैट की राजधानियां और यह मन्दिर-मण्डल नष्ट भ्रष्ट किये गये, जिसमें प्रकृति ने भी पूर्ण योग दिया। जिस प्रकार प्रकृति और मनुष्य के हाथ से उजाड़ हुए जावा के मन्दिरों का पुनरुद्धार किया गया उसी प्रकार डच ईस्ट इण्डीज आर्किओलौजिकल सर्विस ने इन मन्दिरों को ढूँढ निकाला है, और उनका पुनरुद्धार करके उन्हें सुरक्षित कर दिया है। चण्डी-पनतरन मन्दिर के दो फर्श या चबूतरे हैं। उपरले चबूतरे पर हमें कृष्ण के जीवन की घटनाओं का प्रदर्शन उपलब्ध होता है, जिन्हें हम सुविधा के लिए कृष्णायन पटल परम्परा कहेंगे। निचले चबूतरे पर और कुछ अंश में बिचले चबूतरे पर राम के जीवन की घटनाएं दिखलाई गई हैं, जिन्हें हम रामायणीय पटल परम्परा

कहेंगे। पनतरन के इन रामायणीय तक्षणों और प्राम्बनम् के रामायणीय तक्षणों में समय और निर्माण-शैली का बड़ा अन्तर है। प्राम्बनम् के रामायणीय पटलों का समय सन् ईसवी की ९वीं शताब्दी के अन्त के लगभग पड़ता है, जब कि पनतरन के आलेख्य पटलों का निर्माण-काल चौदहवीं शताब्दी के मध्य और अन्त के लगभग पड़ता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पनतरन और प्राम्बनम् के निर्माण के बीच लगभग पांच शताब्दियों का अन्तर है। निर्माण-शैली और कला की दृष्टि से प्राम्बनम् के आलेख्य जावा की कला के सर्वोत्कृष्ट काल से सम्बन्ध रखते हैं, जब भारतीय आदर्शों से अनुप्राणित और दक्षिण भारतीय शिल्पियों की देखरख और प्रदर्शन में निर्मित होकर जावा की कला महत्त्व के चरम शिखर पर पहुँची, जिसके बौद्ध प्रदर्शन बोरोबदुर में और शुद्ध हिन्दू नमूने प्राम्बनम् (संस्कृत ब्रह्मवनम्) के त्रिमूर्ति (शिव, ब्रह्मा, विष्णु) के मन्दिर में पाये जाते हैं। पनतरन के मन्दिर जावा के हिन्दू आधिपत्य की अन्तिम दशाओं से सम्बन्ध रखते हैं, जब भारतीय संस्कृति का दीपक आरम्भिक असभ्यता के घने अन्धकार में लीन होने से पूर्व निर्वाणोन्मुख दीप्ति की अन्तिम टिमटिमाहट के साथ चमक रहा था, और जब मुसलमानी धर्म के मूर्ति-भञ्जक आक्रमणकारी टिड्डी-दल सेनाएँ लेकर देश में प्रवेश करने लगे थे।

भवितव्यता अपने पूर्वभास के द्वारा पहिले ही अपने आने

की सूचना दे देती है, क्योंकि हम देखते हैं कि जावा में मुसलमानों के आने और देशवासियों को विधर्मी बनाने से बहुत पहिले उसकी कला का अधःपतन आरम्भ हो चुका था। एशिया के मलाया आदि भिन्न भिन्न मुल्कों के विदेशी अवयवों ने भारतवर्ष के सभ्यता देनेवाले प्रभावों को रुद्ध करना आरम्भ कर दिया था और जब लगभग १४वीं शताब्दी के आरम्भ में मरुस्थल के असभ्य जंगली आक्रमणकारियों के विरुद्ध गाय और ब्राह्मणों की रक्षा में लग जाने के कारण विपन्न भारत-वसुन्धरा से जावा का औपनिवेशिक प्रसार थम गया तो नये नये कर्म-क्षेत्रों को ढूँढ़ने और धर्म का प्रचार करने की भावनाएँ भी जाती रहीं। अतएव जितना जितना हिन्दू प्रभाव क्षीण होता गया उतना ही देशीपन की आरम्भिक जड़ता अपने प्रसार से पुराने निकम्मे अंगों को पुष्ट करने लगी। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राम्बनम् के तक्षण भारत से, विशेष करके दक्षिण भारत से, गई हुई उत्कृष्ट हिन्दू कला के नमूने हैं, जब कि पनतरन के तक्षण मलाया और अन्य देशी कला के उत्कृष्ट नमूनों के सूचक हैं; और इस पर भी इतना तारतम्य, इतना भारी अन्तर! विषय वही है—वही रामायणीय घटनाएँ, किन्तु जहाँ हिन्दूकला ने उस पर परिमार्जित सभ्यता की छाप लगाई है, उसके अन्दर स्वारस्य, लालित्य, सौन्दर्य और सरसता की प्राण-प्रतिष्ठा की है, वहाँ

पनतरन की तत्तण-कला में ग्राम्य पौरुष और उर्जस्विता है, उज्ज-डता और असभ्यता के मिश्रण से वह शिष्टाचार की सीमा से बाहर जा पड़ी है, वह दैवी प्रभाव न रह कर दानवी शक्ति हो गई है। प्राम्बनम् के तत्तणों का उद्देश्य सौन्दर्य है और वे उसकी सिद्धि में सफल हुए हैं। इसके विपरीत पनतरन के तत्तणों का लक्ष्य दानवी उर्जस्विता और उज्जडता है, जिनमें वह शक्ति विद्यमान है जिसके द्वारा ऊटपटांग, घिनावने, ग्राम्य विषयों का प्रदर्शन किया जा सकता है, और इसमें वे भी सफल हुए हैं। जहाँ भारतीय कला सभ्य समाज की स्त्री जाति के चरम सौंदर्य का विकास करती है, वहाँ जावा की देशी कला नङ्गे धड़ङ्गे जंगलियों की गठीली नशों और स्नायुओं और उनकी आदिम शक्ति को व्यक्त करती है जिन पर सभ्यता के प्रभावों की कोई छाया नहीं पड़ने पाई है। भारतीय कला देवी देवताओं वीरों और वीराङ्गनाओं और दिव्य नर-नारियों के प्रदर्शन में अपनी विशेषता दिखलाती है, जबकि जावा की देशी कला बन्दरों पिशाच-पिशाचनियों भूत-प्रेतों और राक्षसों आदि के प्रदर्शन में आनन्द लाभ करती है। पहिली कला में स्पष्टता और उज्ज्वलता है, इसके विपरीत दूसरी ऊटपटांग, धुन्धली और तमो-वृत है। जब हम इन दो कलाओं के विषयों का विश्लेषण करते हैं तो हम देखते हैं कि भारतीय कला रामायणीय कथा के आ-

रम्भ से शुरू होती है और राम की सेना के समुद्र को पार करके लंका में पहुँचने के बाद समाप्त हो जाती है; इसके विपरीत जावा के देशी तक्षणों में कथा का आरम्भ हनुमान् के लंका में पहुंचने के बाद होता है, और सम्भवतः कुम्भकरण की मृत्यु के साथ उसका अन्त हो जाता है, अर्थात् प्राम्बनम् के तक्षणों में वे घटनाएं दर्शायी गई हैं जो वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड से आरम्भ होती हैं और अरण्य काण्ड के अन्त में सहसा समाप्त हो जाती हैं; इसके विपरीत पनतरन के तक्षणों में यही कथा सुन्दरकाण्ड के आरम्भ से ली गई है और युद्ध काण्ड के मध्य में उसका अवसान किया गया है। अन्त में यह कह देना उचित होगा कि प्राम्बनम् के तक्षणों की तुलना रामायणीय कथा के उस सभ्य नाटकीय प्रदर्शन से की जा सकती है जिसमें दर्शक सभ्य और सुसंस्कृत हों और जिसमें सौन्दर्य करुणा और रसों की निष्पत्ति के लिये दृश्यों के नये से नये ढंगों का प्रयोग किया गया हो और उच्च कोटि के अभिनय से उसको रङ्गमञ्च पर प्रत्यक्ष किया गया हो; इसके विपरीत पनतरन के तक्षण इस कथा को छाया नाटक (जावा के वयाङ्ग) के रूप में प्रदर्शित करते हैं, जिसमें प्रकाश और अन्धकार के आयोजन से शरीर के अवयवों को विकृत बीभत्स रूप दिया जाता है। प्राचीन भारतीय नृत्त सम्बन्धी पुस्तकों की उपमा के आधार

हम कह सकते हैं कि प्राम्बनम् के तक्षण पार्वती के लास्य नृत्य की स्निग्ध परिमार्जित और ललित चेष्टाओं से मिलते जुलते हैं (देखो कुरुवत्ति मन्दिर); इसके विपरीत पनतरन के तक्षणों की तुलना शिव के भयंकर ताण्डव नृत्य, विशेष करके "मृत्यु ताण्डव", के अङ्ग-भङ्गों और स्नायुओं को तड़कानेवाले घुमावफिरावों से की जा सकती है, (देखो यलोरा)।

पनतरन के पहिले दृश्य में हनुमान् को भारतीय तट से समुद्र के ऊपर लंका को छलांग मारते दिखलाया गया है। हनुमान् की इस तय्यारी को सुन्दरकाण्ड के पहिले सर्ग में बहुत रोचक और हृदयंगम ढंग से वर्णन किया गया है। अतएव हम कह सकते हैं कि पनतरन का यह दृश्य सुन्दरकाण्ड के थोड़े से आरम्भिक श्लोकों का मूर्तिमान् प्रदर्शन है। यहाँ हम देखते हैं कि हनुमान् का शरीर और उसके अवयव नैसर्गिक मनुष्य के जैसे दर्शाये गए हैं; भेद केवल इतना ही है कि—(१) उसका चेहरा मनुष्य का जैसा नहीं है, यद्यपि उसके कानों से कुण्डल लटक रहे हैं, (२) उसके पैर भी मनुष्य के जैसे नहीं हैं, (३) उसकी पीठ के पीछे से एक पूंछ निकली हुई है जो सीख की तरह अकड़ी हुई जैसी लगती है। अन्यथा उसके हाथ उसका वक्षःस्थल और उसके शरीर के अन्य अवयव भी मनुष्य के जैसे हैं और वह नैसर्गिक मानव चरित्र-नायक के

- जैसे वस्त्र और आभरण पहिने हुए है; उसका वक्ष.स्थल विशाल और कमर पतली है, उसके हाथ सकल्प-मुद्रा की हालत में बंटे हुए है, मानो वह प्राणों पर खेल कर भी किसी भी कर्तव्य-कर्म को करने के लिए दृढ सकल्प के साथ तय्यार हो; उसके मुकुट से और जिस परिस्थिति में वह रक्खा गया है उससे आज भी जावा के छायानाटक अथवा वयाङ्ग के पात्रों के प्रदर्शन की याद आती है।

दूसरा दृश्य

रावण के पारिवारिक जीवन की एक झलक

यह एक पारिवारिक जीवन का दृश्य है। लंका का राजा रावण यहाँ अपने अन्त पुर में बैठा हुआ है। उसके प्रत्येक पार्श्व में उसकी अनेकों पत्नियों में से एक एक बैठी है। रावण के शयनागार का रात्रि का दृश्य वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड के आठवें और उससे अगले सर्गों में बड़े सुन्दर स्वाभाविक और सजीव ढग से वर्णन किया गया है। सम्भवत. इस दृश्य में रावण को, विश्राम करने से पहिले, अपनी दो पत्नियों के साथ हास विलास करते दर्शाया गया है, जिससे मदोन्मत्त और विलास-मय रात्रि-जीवन का प्रभाव नींद की विस्मृति में हल्का किया जा सके। यहाँ हम राक्षस-राज को आसन के मध्य में बैठा देखते हैं; उसकी दोनों

टांगें एक दूसरी के ऊपर अन्तरिक्ष में झूल रही हैं; वह बहुमूल्य वस्त्र पहिने और आभरणों से लदा हुआ है, जिनमें मुकुट, माला, कुण्डल, कङ्कन और सोने का ब्रह्मसूत्र सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त उसके पैर भी आभरणों से अलंकृत हैं, जैसा कि अब भी तामिल देश में रिवाज है। उसके शरीर का नाभि के ऊपर का भाग नङ्गा पड़ा है, और वह अपने पेट पर एक और वस्त्र (उत्तरीय) बांधे हुए है। उसकी दाहिनी और बांई ओर उसकी दो पत्नियां हैं; इनका पहनावा भी मालाबार का जैसा ही है; दोनों ही पुष्पाञ्जलि मुद्रा की हालत में हाथ जोड़े उपस्थित हैं; रावण उन्हें अपने हाथों से बड़े प्रेम से पकड़े हुए है; उसके हाथ उनकी पतली कमरों से लिपटे हुए हैं, और वह स्वयं इस प्रकार दर्शाया गया है मानो बांई ओर की रमणी के साथ, जो शायद उसकी सबसे छोटी पत्नी और प्रीतिभाजन धन्यमालिनी है, बातें कर रहा हो अथवा उसको प्रेम से निहार रहा हो। दूसरी शायद उसकी पटरानी और इन्द्रजित् की माता मन्दोदरी है। इस रमणी के आसन के नीचे राजा की दाहिनी ओर एक दासी बैठी हुई दर्शाई गई है, जो सम्भवतः मंदोदरी की परिचारिका है। इस मण्डली के ऊपर नीचे बादल जैसे ऊटपटांग आभरण और बेल बूटे बने हुए हैं, जो इस मन्दिर की सजावट की विशेषता हैं।

तीसरा दृश्य

रावण का अन्तःपुर

इस में रावण का कोई एक महल अथवा उसका कोई एक कमरा, सम्भवतः उसका अन्तःपुर, दिखलाया गया है, जहाँ जाकर हनुमान् ने व्यर्थ ही सीता को ढूंढने का प्रयत्न किया। इस कमरे अथवा भवन और उसके अन्दर के जीवन का वाल्मीकीय रामायण के सुन्दर काण्ड के ६–११ सर्गों में बड़ा रोचक वर्णन दिया गया है।

यहाँ हमें जावा के विशाल महल-जैसे केटन का साधारण नमूना दृष्टिगोचर होता है। उसकी छतें ढालुवां हैं, और उससे मालाबार के मकानों के इसी प्रकार के काष्ठ के नमूनों का प्रबल स्मरण हो आता है। प्रत्येक भवन साधारणतया दूसरों से पृथक् और अकेले स्थित है। उसकी छत पर, जो शायद काष्ठ अथवा पत्तों की बनी हुई है, हमें अत्यन्त भव्य रूप में एक मोर बैठा हुआ दिखाई देता है। उससे कुछ ऊपर घरेलू कबूतर-जैसा एक पक्षी अपने पंखों को फड़फड़ाता और उड़ता हुआ दर्शाया गया है।

चौथा दृश्य

हनुमान् सम्भवतः अशोक-वृक्ष पर

इस दृश्य में हनुमान् को एक वृक्ष पर, सम्भवतः अशोक वृक्ष पर, रावण की अशोक वाटिका के आसपास की वस्तुओं को अगोरते दर्शाया गया है, जहाँ सीता को कैद करके राक्षसियों और अन्य पहरेदारों की चौकसी में रखा गया था। सम्भवतः वह इस वृक्ष की शाखाओं और उसके पत्तों में छिप कर सीता को देख रहा है और उसकी बातें सुन रहा है। अन्त में उसे सीता को डाँट-डपट दिखाते और उसके साथ अश्लील आलाप करते राक्षस-राज रावण दृष्टिगोचर होता है, और वह देखता है कि सीता भी वैसी ही चुस्ती और ओजस्विता के साथ उसकी बातों का उत्तर दे रही हैं। वृक्ष के नीचे हमें रावण के प्रमद-वन की रक्षा करनेवाला राक्षस पहरेदार दिखाई देता है, उसके एक हाथ में नङ्गी तलवार है, और दूसरे हाथ में कोई ऐसी वस्तु है जो शङ्ख जैसी लगती है। अतएव हम कह सकते हैं कि राक्षस पहरेदार को छोड़ कर इस दृश्य का विषय वाल्मीकीय रामायण के दक्षिण भारतीय संस्करण के सुन्दरकाण्ड के अठारहवें सर्ग के पचीसवें श्लोक से लिया गया है।

पांचवां दृश्य

कामार्त रावण का प्रमत्त प्रलाप

इस दृश्य में सीता के प्रति काम-वासना से उन्मत्त रावण के भर्त्सनावह, भीषण और अश्लील प्रलाप का दिग्दर्शन कराया गया है। सुन्दर काण्ड के बीसवें और उससे अगले दो सर्गों में कथा इस प्रकार दी गई है,—"तपस्विनी सीता को मलीन वेश में देखकर रावण कहता है—'ऐ सुन्दर जंघाओं वाली, तू अपने स्तन-मण्डल और उदर को छिपा कर अपने आपको मेरी दृष्टि से अदृश्य करना चाहती है, किन्तु सुन्दरि! मैं तुमसे प्रेम की भिक्षा मांगने यहाँ आया हूँ, तुम्हें भीत चकित करने नहीं। ऐ भीरु! बरबस परस्त्री-गमन राक्षसों का सदा का धर्म रहा है, किन्तु मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे हृदय का साम्राज्य प्राप्त किये बिना तुम्हारा अङ्ग-स्पर्श करूँ। देवि! लंका की राज्यश्री तुम्हारे चरणों में लोट रही है, उसे ठुकरा कर इस दीन मलीन वेश में जीवन बिताना तुम्हारे अनुरूप नहीं है। यह तुम्हारा यौवन बीता जा रहा है। नदी की धारा के समान एक बार चले जाने पर फिर न लौटेगा। सीते! इस यौवन-वसन्त को यों खराब न करो। अपने उद्धार की आशा छोड़ कर मेरी पटरानी बनो और पृथ्वी पर स्वर्ग का आनन्द लूटो।' पतिपरायणा स्वाभिमानिनी

सीता पापी निशाचर की इन अश्लील बातों को सुनकर उत्तर देती हैं—'मुझ से अपना मन हटालो, और अपनी स्त्रियों से प्रेम करो। तुम्हारा मुझ से प्रणय-याचना करना ऐसा ही है जैसा पापी का सिद्धि की लालसा करना। धर्म यह है और श्रेय इसी में है कि तुम जैसे अपनी स्त्री की रक्षा करते हो वैसे ही पराई स्त्री की भी रक्षा करो। क्या यहाँ सत्पुरुष नहीं रहते? अथवा तुम उनका संग नहीं करते, जिससे तुमने ऐसा निन्दनीय आचरण ग्रहण किया है। याद रक्खो तुम्हारे इस पापाचरण से रत्नराशियों से भरी हुई यह लंका शीघ्र ही नष्ट हो जायेगी। मैं राम की पतिव्रता भार्या हूँ। ऐश्वर्य मुझे कर्तव्य-पथ से विचलित नहीं कर सकता। यदि तुम अपना हित चाहते हो तो मुझे श्रीराम के पास पहुँचा दो। इस भ्रम में न रहो कि राम से युद्ध करके मैं विजयी हूँगा।' सीता की इन बातों से झुँझला कर रावण कहता है—'दो महीने के बाद यदि तुम मुझे अपना पति स्वीकार न करोगी तो मेरे रसोइये कलेवे के लिये तुम्हारा भुर्ता बना डालेंगे।'

रावण के द्वारा सीता का इस प्रकार तिरस्कार होते देखकर देव और गन्धर्व कन्याओं को बड़ा विषाद होता है; कोई होंठों से, कोई आँखों से, कोई मुँह के इशारे से उनका ढाढस बंधाती है। इस प्रकार आश्वासन पाकर सीता रावण से कहती हैं—

'मालूम होता है इस लंका में कोई भी तुम्हारा कल्याण चाहने-वाला नहीं है। ऐ नीच राक्षस, अमित तेजस्वी रामचन्द्र की पत्नी के लिए जो पाप की बातें तुमने कही हैं उनसे कहां जाकर अपनी रक्षा करोगे? उनकी निन्दा करते तुम्हें लज्जा नहीं आती? जब तक तुम उनके सामने नहीं जाते तब तक निन्दा करलो। तुम्हारी ये काली पीली और क्रूर आँखें बुरे अभिप्राय से मेरी ओर देखती हुई उखड़ कर जमीन पर क्यों नहीं गिरतीं।' इन बातों के कारण क्रोध से जल भुन कर साँप के समान फुँकारता हुआ रावण कहता है,—'नीति-हीन दरिद्र रामचन्द्र पर अनुराग करनेवाली, आज ही मैं तेरा काम तमाम किये देता हूँ।' यह कहकर वह विकराल वेश-धारिणी राक्षसियों की ओर देखता है और कहता है—'सीता जिस प्रकार शीघ्र मेरी वश-वर्तिनी हो तुम सब मिलकर वैसा करो। अनुकूल और प्रतिकूल उपायों से साम, दाम, दण्ड और भेद का उपयोग करके तुम लोग सीता को वश में करो।' यह कहकर पृथ्वी को कम्पाता हुआ रावण वहाँ से चल देता है, और दीप्तिमान् सूर्य के समान अपने घर में प्रवेश करता है।

हम देखते हैं कि वाल्मीकि के इस विवरण में जावा के शिल्पी ने दो एक स्थानीय विशेषताएँ और जोड़ दी हैं। वाल्मीकीय रामायण में हम रावण को उसकी स्त्री अङ्गरक्षिकाओं

से घिरा पाते हैं, जिनमें से बहुत सी किसी न किसी अर्थ में उसकी पत्नियां हैं। किन्तु प्रस्तुत तक्षण में इन रमणियों के स्थान में हमें जावा के नाटकों के विट चेट आदि अधम पात्र अर्थात् पनकवन दिखाई देते हैं। इन में से एक, जो बांई ओर स्थित है, सम्भवतः अपने हाथ में लङ्केश्वर का पानदान लिये हुए है, और दूसरा उसके पैरों में झुककर किसी चीज की ओर इशारा कर रहा है और उससे कुछ कह रहा है, सम्भवतः अपनी अशिष्ट ग्रामीण हंसी-मजाकों से उसके क्रोध को हंसी में बदलने की कोशिश कर रहा है। रावण को एक हाथ में नङ्गी तलवार लिये दर्शाया गया है, और उसके दूसरे हाथ की उंगलियों से प्रगट होता है कि वह सीता को डांट-डपट दिखला रहा है। उसके सामने अशोक वृक्ष है, और उसके चारों ओर वही साधारण धुंधली वर्तुलाकार अलंक्रियाएँ हैं जो पनतरन की चित्रकारी की विशेषताएँ हैं। उसके सिर पर वही साधारण शङ्कु की आकृति का मुकुट है जो अब भी मध्य काल की दक्षिण भारतीय वैष्णव ताम्र मूर्तियों के सिर पर पाया जाता है। उसके एक ही सिर है, प्राम्बनम् के कतिपय तक्षण-खण्डों की भाँति अनेकों नहीं।

छठा दृश्य

त्रिजटा का सीता को आश्वासन देना

इस दृश्य में विभीषण की बहिन त्रिजटा सीता का ढाढस बंधाती दिखलाई गई है। वह एक वृद्ध स्त्री है, और अपने पिता ही की भाँति धार्मिक है। अन्य राक्षसियों की भाँति वह नहीं चाहती है कि रामभार्या सीता के प्रति सताने और डराने के अमानुषी तरीकों का प्रयोग किया जाय। उसके विपरीत, जब सीता रावण के नारकीय प्रस्तावों का तिरस्कार कर चुकती हैं, शूर्पणखा और उसके साथ की राक्षसियां उसका आहार और उसके बाद निगुम्भिल के कालिका के मन्दिर के सामने शराब के नशे में चूर होकर नाच की रंगरलियां करना चाहती हैं। रावण के चले जाने के कुछ समय बाद, जिसको उसकी सबसे छोटी पत्नी ने सीता पर बलात्कार करने से रोका था, सीता की चौकसी करनेवाली राक्षसियां उन्हें भाँति भाँति का भय दिखलाती हैं। इसी बीच त्रिजटा एक सुन्दर स्वप्न देखती है, जिसका अर्थ वह यह लगाती है कि सीता और राम के वैभव के दिन आनेवाले हैं। वह जागती है और सीता को खाने के लिये तय्यार हुई राक्षसियों से कहती है,—'ऐ असभ्य चाण्डालिनियों! सीता के बदले अपने आप को क्यों नहीं खातीं।' यह कहकर वह सीता

के महिमाशाली पद का वर्णन करती है । इस पर राक्षसियां त्रिजटा से अपना स्वप्न सुनाने को कहती हैं । त्रिजटा स्वप्न सुनाती है और अपनी कथा समाप्त करने पर एक बार सीता के निकट आती है, और उसे शान्ति और सान्त्वना देती है, (वाल्मीकीय रामायण सुन्दरकाण्ड सर्ग २७) ।

सुन्दरकाण्ड के २७वें सर्ग की इस कथा को प्रस्तुत तक्षण खण्ड पर प्रदर्शित किया गया है । यहाँ हम सीता को एक पत्थर के चबूतरे पर बैठी देखते हैं, जो अशोक वृक्ष के चारों ओर बना हुआ है। उनकी पीठ वृक्ष से सटी है और वृक्ष के पत्ते सुन्दर नैसर्गिक ढंग पर दर्शाये गए हैं; उनकी पोशाक मालाबारी नमूने की है, और वे त्रिजटा की ओर मुँह किये बैठी हैं । त्रिजटा चबूतरे के पास की धरती पर खड़ी है, और उसका बांया हाथ चबूतरे पर टिका हुआ है । अपने दाहिने हाथ से सीता की ओर इशारा करती हुई सम्भवतः वह उनसे कह रही है कि इतनी उदास और इस प्रकार व्यर्थ भीत चकित न होओ, शीघ्र ही बड़ी शान से तुम्हारा छुटकारा होनेवाला है । त्रिजटा की पोशाक भी मालाबारी नमूने की है, और वह अपने शरीर पर थोड़े से गहने भी पहने हुई है । इसके विपरीत सीता के शरीर पर कोई गहने नहीं हैं, और आभरणों का यह अभाव वाल्मीकीय वर्णन के अनुरूप ही है (मण्डनार्हाम् अमण्डिताम्) ।

सातवां दृश्य

सीता से हनुमान् की भेंट

इस दृश्य में हम हनुमान् को सीता से मिलते और उन्हे सादर उनके प्राणवल्लभ का सन्देश देते देखते हैं। वाल्मीकीय रामायण के सुन्दर काण्ड के ३१वें और उससे अगले सर्गों में कथा इस प्रकार दी गई है—"हनुमान् रावण के चले जाने के बाद अपने छिपने के स्थान से सब कुछ देख और सुनकर अपने मन में विचार करता है कि यदि मैं अब जरा भी विलम्ब करूँगा तो सीता अपने शोक की निराशा के कारण अपने प्राणों पर खेल बैठेंगी। अतएव पास ही के एक वृक्ष पर बैठ कर वह मधुर और स्निग्ध वाणी में अपने आने का कारण और दशरथ के समय से लेकर सारी रामायणीय कथा सुना डालता है। सीता इस विलक्षण कहानी को सुनती हैं और साथ ही अपने सामने के वृक्ष की टहनियों और पत्तों के बीच एक बन्दर को बैठा देखती हैं। वे सोचती हैं शायद मेरे विनाश के लिये यह एक और माया-जाल रचा गया है, और अपने पति और देवर के नाम से त्राहि त्राहि करती हुई चिल्लाना और बिलखना शुरू करती हैं (सुन्दर काण्ड सर्ग ३२)। फिर सोचती हैं शायद मैं स्वप्न देख रही हूँ, और चूँकि नींद में बन्दर का स्वप्न देखना अशुभ समझा जाता था, वे समझती हैं भाग्य मुझे

किसी और गहरे गढ़े में ढकेलना चाहता है। अन्ततः वे अपने मन में निश्चय करती हैं कि मेरी सारी धारणाएँ भ्रममूलक और मेरे समग्र भय निराधार हैं; क्योंकि रावण न कभी राम की इस तरह प्रशंसा करता और न ही वह प्राणनाथ की जीवनचर्या को इतनी बारीकी से जानता है। फिर वाचस्पति, अग्नि आदि जैसे सारे हिन्दू देवी-देवताओं से सहायता और रक्षा की प्रार्थना करती हुई वे इस निश्चय पर पहुँचती हैं कि जिस व्यक्ति ने यह सारी बातें कह सुनाई हैं वह बन्दर के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। हनुमान् पेड़ पर से उतर कर नीचे आता है, अपने रूप को बदलता है, और सीता की परिक्रमा करके अत्यन्त आदर भाव से उन्हें प्रणाम करता है और फिर सिर झुकाये और अञ्जलिमुद्रा की दशा में हाथ बांधे बड़े मधुर शब्दों में सीता को सम्बोधित करके कहता है—

'ऐ कमल-पत्राक्षि, मलीन कौशेयवस्त्र-धारिणी, तुम कौन हो ? तुम्हारी आँखों से ये शोकाश्रु क्यों गिर रहे हैं ? देवता, असुर, नाग, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, इन में से तुम किसकी हो ? मुझे तुम कोई देवता जैसी लगती हो, किन्तु रोने, श्वास लेने, पृथ्वी स्पर्श करने, और राज-लक्षणों से युक्त होने के कारण मैं तुम्हें देवाङ्गना नहीं समझता। तुम्हारी आकृति से मालूम होता है कि तुम किसी महाराजाधिराज की पटरानी हो। जनस्थान से

रावण ने जिसका हरण किया है यदि तुम वही सीता हो तो जो कुछ मैं पूछ रहा हूँ उसका उत्तर दो । तुम्हारी जैसी यह दीनता है, जैसा अलौकिक रूप है, और तपस्वियों का जैसा वेश है, उससे मालूम होता है कि निःसन्देह तुम राम की महारानी हो।"

उक्त दृश्य को हम यहाँ प्रस्तुत तक्षण-खण्ड पर प्रदर्शित पाते हैं। सबसे परे बाईं ओर सीता के चत्वरासन के सामने एक घुटना टेके धरती पर बैठा हनुमान् दिखाई देता है। उसके हाथ अञ्जलि-मुद्रा की आदर और भक्तिभावयुक्त दशा में स्थित हैं, और उसके बैठने का ढंग वैसा ही है जैसा कि आज भी दक्षिण भारत में प्रचलित है। वह साधारण आभरण पहने हुए है, और उसकी पूँछ पीठ के पीछे मुड़ कर उसके मुकुट के पास पहुँची हुई है। उसके ठीक सामने हम उदाराशया सीता को चबूतरे पर बैठा देखते हैं। उनकी पीठ अशोक वृक्ष के तने के सहारे किंचित् झुकी हुई है; वे हनुमान् के अमृतमय सन्देश की मनोहर और अभीष्ट मधुरता को पीने के लिये बड़ी उत्सुकता से आगे को झुकी हुई हैं। उनका एक हाथ उनके अङ्क में है, और दूसरे हाथ को वे हनुमान् के सामने इस प्रकार उठाये हुई हैं जैसे उससे प्रश्न कर रही हों। उनके पीछे उनकी विश्वास-पात्र सखी और विपत्ति में रक्षा करनेवाली त्रिजटा खड़ी है, जो नये आये हुये सन्देशहर के चेहरे को बड़ी उत्सुकता से अगोर

रही है और सीता के आनन्द में स्वयं आनन्द का अनुभव कर रही है।

आठवाँ दृश्य

सीता त्रिजटा से परामर्श ले रही हैं

इस दृश्य में सीता अशोक वन के चैत्य-प्रासाद में बैठी हुई और भविष्य कामों की युक्तियों के विषय में त्रिजटा से परामर्श करती हुई, अथवा शायद त्रिजटा और सीता दोनों हनुमान् के आश्चर्यजनक साहस और उसके लाये हुए सन्देश के विषय में तर्क वितर्क करती हुई दिखलाई गई हैं। त्रिजटा यह भी कहती है कि मेरा स्वप्न शीघ्र ही फलीभूत होने वाला है। यहाँ हम देखते हैं कि जिस सिंहासन पर सीता त्रिजटा की तरफ मुँह किये बैठी हैं। उसके ऊपर एक दूसरी से उठी हुई तीन छतें हैं; यह छतें सम्भवतः छोटी छोटी वर्गाकार ढलानों में कटी हुई ईंटों की बनी हैं, जिनका अन्तिम मेल सब से ऊपर की छत पर होता है जिस पर एक पक्षी (तोता) बैठा है।

नवां दृश्य

इस खण्ड में एक भवन के कोने पर कोई राक्षस या रावण का कोई अनुचर खड़ा है। सम्भवतः वह हनुमान् के साथ झपट-झपटा करने और लडने के लिए खड़ा है। वह मुक्का बांधे आक्रमण के लिए तय्यार है। उसकी कलाइयों पर कंगन हैं, कान फटे हुए और अत्यन्त लम्बे हैं, नाक उठी हुई और चपटी-जैसी है, दांत छिदरे, लम्बे और नुकीले हैं।

दशवां दृश्य

यह एक पत्थर का आभरण है जिसके वर्तुलाकार घेरों के बीच एक पार्श्व में किसी अत्यधिक ऊँचे राक्षस की आकृति के बाहरी चिन्ह धुंधले-जैसे नजर आते हैं।

ग्यारहवां दृश्य

समर के लिए उद्यत हुआ हनुमान्

इसमें हनुमान् धैर्य-पूर्वक प्रतीक्षा करते दिखलाया गया है। उसका एक हाथ कमर पर है, और दूसरा बटा हुआ है। वह क्रोध से इस ताक में है कि देखें कोई राक्षस बाहर निकलने का साहस करता है या नहीं, ताकि मैं उसको कूट पीटकर

क्षेत्र में भेजता है। दोनों में बड़ी देर तक गुत्थमगुत्था होती है, विजय-लक्ष्मी कभी इस ओर और कभी उस ओर डुलती प्रतीत होती है। अन्त में हनुमान् एक विशाल वट-वृक्ष को उखाड़ कर उसके सामने खड़ा कर देता है, जिससे राक्षस सफाई से अपने आप को बचा लेता है और जिसको वह अपने बाणों से टुकड़े टुकड़े कर डालता है, और एक बार फिर हनुमान् को अपने तीव्र बाणों का लक्ष्य बनाता है। अन्ततः अधीर होकर हनुमान् उसी लोहे की गदा को लेकर, जिससे उसने किङ्कर राक्षसों को यम-सदन पहुँचाया था, और उसे सम्भाल कर भीषण वेग से फिरा कर वज्र के प्रहार की भाँति विद्युत्-वेग से इस वीर योधा जम्बुमाली के वक्षःस्थल पर दे मारता है, जिससे उसका शरीर चूर-मूर हो जाता है और उसके साथ ही वह रथ, जिस पर वह बैठा हुआ था, उसका सारथी और उसके घोड़े भी इस विनाश-कार्य में काम आते हैं। यह समाचार सुनकर रावण हनुमान् के विरुद्ध अपने मन्त्रि पुत्रों को भेजता है; किन्तु उन्हें भी उसी पथ से संसार से विदा होना पड़ता है जिस पथ का अनुसरण रावण के किङ्करों ने किया था। इसके बाद रावण अपने सबसे छोटे बेटे अक्ष को बुलवा भेजता है, और उसे हनुमान् के विरुद्ध युद्ध करने को भेजता है। चमकते हुए कवच से अपने शरीर को ढांप कर, और युद्ध के सारे अस्त्र शस्त्रों से सजकर, वह एक अलौक-

थ पर चढ़ता है जो बड़े दिलेर और ऊर्जस्वल घोड़ों से
ा रहा है। दोनों में देर तक भीषण युद्ध होता है।
। हनुमान् उसको उसके घोड़ों, रथ और सारथी से
र देता है। इसके बाद भी युवा राजकुमार हनुमान् के
टि कर युद्ध करता है, और तीव्र वेग से उस पर बाणों
ी करता है। हनुमान् उसका सामना करने के लिए एक
क्ति निकालता है। वह राक्षस के नीचे होकर उसके पैरों
पकड़ लेता है और उसको चारों ओर घुमा कर पास की
: धरती पर पटक डालता है, जिससे उसका सिर और उसके
की सारी हड्डियां चूरमूर हो जाती हैं, और शरीर के स्थान
र्स का एक आकृति रहित ढेर लग जाता है।

इस तक्षण-खण्ड पर और इससे अगले कतिपय खण्डों पर
की भिन्न भिन्न अवस्थाएँ प्रदर्शित की गई हैं। अन्त में इन्द्रजित्
ान् को क़ैद कर लेता है, और उसको अपने नागास्त्र से बांध
ावण के पास ले जाता है।

बारहवां दृश्य

किङ्करों से जूझने को हनुमान् का कूच करना

बारहवें खण्ड पर सम्भवतः हम किङ्करों को हनुमान् से
। को कूच करते देखते हैं। दो राक्षस रण-स्थली की ओर

क्षेत्र में भेजता है। दोनों में बड़ी देर तक गुत्थमगुत्था होती है, विजय-लक्ष्मी कभी इस ओर और कभी उस ओर ढुलती प्रतीत होती है। अन्त में हनुमान् एक विशाल वट-वृक्ष को उखाड़ कर उसके सामने खड़ा कर देता है, जिससे राक्षस सफाई से अपने आप को बचा लेता है और जिसको वह अपने बाणों से टुकड़े टुकड़े कर डालता है, और एक बार फिर हनुमान् को अपने तीव्र बाणों का लक्ष्य बनाता है। अन्ततः अधीर होकर हनुमान् उसी लोहे की गदा को लेकर, जिससे उसने किङ्कर राक्षसों को यम-सदन पहुँचाया था, और उसे सम्भाल कर भीषण वेग से फिरा कर वज्र के प्रहार की भाँति विद्युत्-वेग से इस वीर योधा जम्बुमाली के वक्षःस्थल पर दे मारता है, जिससे उसका शरीर चूर-मूर हो जाता है और उसके साथ ही वह रथ, जिस पर वह बैठा हुआ था, उसका सारथी और उसके घोड़े भी इस विनाश-कार्य में काम आते हैं। यह समाचार सुनकर रावण हनुमान् के विरुद्ध अपने मन्त्रि पुत्रों को भेजता है; किन्तु उन्हें भी उसी पथ से संसार से विदा होना पड़ता है जिस पथ का अनुसरण रावण के किङ्करों ने किया था। इसके बाद रावण अपने सबसे छोटे बेटे अक्ष को बुलवा भेजता है, और उसे हनुमान् के विरुद्ध युद्ध करने को भेजता है। चमकते हुए कवच से अपने शरीर को ढांप कर, और युद्ध के सारे अस्त्र शस्त्रों से सजकर, वह एक अलौक-

सुन्दर रथ पर चढ़ता है जो बड़े दिलेर और ऊर्जस्वल घोड़ों से खींचा जा रहा है। दोनों में देर तक भीषण युद्ध होता है। अन्त में हनुमान् उसको उसके घोड़ों, रथ और सारथी से हीन कर देता है। इसके बाद भी युवा राजकुमार हनुमान् के साथ डट कर युद्ध करता है, और तीव्र वेग से उस पर बाणों की वर्षा करता है। हनुमान् उसका सामना करने के लिए एक नई युक्ति निकालता है। वह राक्षस के नीचे होकर उसके पैरों को पकड़ लेता है और उसको चारों ओर घुमा कर पास की कठोर धरती पर पटक डालता है, जिससे उसका सिर और उसके शरीर की सारी हड्डियां चूरमूर हो जाती हैं, और शरीर के स्थान में मांस का एक आकृति रहित ढेर लग जाता है।

इस तक्षण-खण्ड पर और इससे अगले कतिपय खण्डों पर युद्ध की भिन्न भिन्न अवस्थाएँ प्रदर्शित की गई हैं। अन्त में इन्द्रजित् हनुमान् को कैद कर लेता है, और उसको अपने नागास्त्र से बांध कर रावण के पास ले जाता है।

बारहवां दृश्य

किङ्करों से जूझने को हनुमान् का कूच करना

बारहवें खण्ड पर सम्भवतः हम किङ्करों को हनुमान् से लड़ने को कूच करते देखते हैं। दो राक्षस रण-स्थली की ओर

कूच करते दिखाये गये हैं । इनमें एक का शरीर छोटा और दूसरे का बड़ा विशाल है। बाईं ओर सामने का व्यक्ति रण-क्षेत्र की ओर दौड़ता हुआ दर्शाया गया है। उसके हाथ में एक शस्त्र है, जो मध्यकालीन यूरप का रण-परशु-जैसा लगता है; और उसके पीछे दाहिनी ओर जो दानव दर्शाया गया है उसके सामने वह छोटा और ठिंगने कद का जैसा लगता है। यह दानव सचमुच मांस का पहाड़ जैसा प्रतीत होता है; उसके एक हाथ में उसके क़द के अनुरूप एक नंगी तलवार है, और दूसरे हाथ को वह सम्भवतः हनुमान् की ओर इस तरह खड़ा किये हुए है मानो उसको डांटडपट दिखला रहा हो और उसे अपने साथियों को दिखला रहा हो। उसका पेट बहुत फूला हुआ दिखलाया गया है; सम्भवत. यह प्रदर्शन वाल्मीकि के वर्णन के अनुकूल है, जिस में राक्षसों को महोदर कहा गया है। उसका शरीर आभरणों से सजा हुआ है, और उसके गले में एक कपाल-माला है, जो उसकी नाभि से कहीं नीचे तक लटक रही है । तक्षण में यह माला बिल्कुल खुली दिखाई देती है, क्योंकि दक्षिण भारतीय प्रथा के अनुसार उसकी पोशाक भी नाभि के नीचे से आरम्भ होती है । उसके सिर के ऊपर और उसके आसपास वही साधारण ज्वालाएँ जैसी दिखलाई गई हैं, जो इस प्रकार के आलेख्यों में आभरणों का काम देती हैं।

तेरहवां दृश्य

एक राक्षसी

इस खण्ड पर एक राक्षसी खड़ी है, जो सम्भवतः एक सुरक्षित दूरी से उस विनाश को दृष्टि-गोचर कर रही है, जिसे हनुमान् उन राक्षसी सेनाओं में ढाह रहा था जो उस पर आक्रमण करने को भेजी गई थीं। उसका एक हाथ उसकी कमर पर है, और दूसरा हाथ असावधानी से नीचे को लटक रहा है, उसके असाधारण लम्बे कान कर्णपत्रों से सजे हुए हैं, जैसा कि आजकल भी दक्षिण भारतीय अब्राह्मण स्त्रियों, विशेष कर के डिल्ले और मुदालियर स्त्रियों, में प्रचार है। वह गले पर कोई आभरण पहिने हुई है, जो दक्षिण भारतीय कण्ठा-जैसा लगता है; उसकी नाक चपटी और उठी हुई है। उसकी आकृति की बीभत्सता प्रस्तुत तक्षण की विशीर्णता के कारण और भी बढ़ गई है। उसके नितम्ब अत्यधिक मोटे और भली भांति लक्षित हैं, और वाल्मीकि के विनोदास्पद किन्तु नैसर्गिक वर्णन के अनुरूप हैं; उसके पीन स्तन और पीवर उदर लटके हुए और अति विशाल हैं (लम्बोदर-पयोधराः), जिससे मज्जा और मेद की विकृति प्रगट होती है। उसके सिर के ऊपर वही साधारण भँवर-जैसी वर्तुलाकार सजावट है, जो पनतरन की विशेषता है।

चौदहवां दृश्य

किङ्कर सैनिक

इसमें उन अनगिनत राक्षसों में से एक दर्शाया गया है जो किङ्करों की सेना में थे, जिसे रावण ने हनुमान् के विरुद्ध भेजा था। उसकी आँखें बाहर को निकली हुई और बतख के कटे हुए अण्डे के परिमाण की हैं। सम्भवत उसके पास मनुष्य की हड्डी का एक शस्त्र है; उसके विरल, छोटे, मोटे और ठूँठ जैसे केश शिखा से पीछे को लटक रहे हैं; उसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं है, और उसके गले पर केवल एक पुराने ढंग का कण्ठा है। वह मुँह बाये रणक्षेत्र की ओर टूटा जा रहा है; उसके तीखे दांतों की पंक्ति चमक रही है; उसकी नाक चपटी और ठूठ जैसी है, और कपाल छोटा और संकरा है, जिससे उसकी आकृति की बीभत्सता और भी बढ़गई है। उसके चारों पास वही साधारण वास्तु-कला-विषयक सजावटें हैं, जो जावा की कला की इस अवस्था की विशेषता हैं और एशिया के भिन्न भिन्न देशों के प्रभावों से ओतप्रोत और परिप्लावित हैं।

पन्द्रहवां दृश्य

हनुमान् रण-क्षेत्र में

यह खण्ड दो भागों में बाँटा जा सकता है। उपरले भाग में हनुमान् को एक राक्षस के साथ लड़ते अथवा लड़ने की तय्यारी करते दिखलाया गया है। राक्षस के पास एक ऐसा शस्त्र है जो मालाबार के उर्मिनाम शस्त्र से मिलता जुलता है और जिसका प्रचार तीन शताब्दी पहिले नायर योधाओं में था, जब सम्भवतः ततचोलि वंश के चन्दु और उसी जैसे अन्य वीर योधा विद्यमान थे। निचले भाग में दो राक्षस दर्शाये गये हैं; बड़े के गले में खीसतें हुये मनुष्यों के कपालों की माला हैं, और साथ ही एक कण्ठा भी है, जिसका मेरु भी कपाल ही है। उसकी आँखें गोल और उसके चेहरे पर तिरछी जैसी लगी हुई हैं; उसका मुँह गुफा की भाँति चौड़ा है, जिसके अंदर छोटे किन्तु प्रबल दांत जड़े हुए हैं। उसके एक हाथ में मालाबारी वाल-जैसा एक अस्त्र है; दूसरे हाथ से, जो उसके लटके हुए पेट के ऊपर स्थित है, वह किसी वस्तु की ओर इशारा कर रहा है। वह अपनी कमर से नीचे वस्त्र पहिने हुए है। उसके सामने का व्यक्ति, जो ठिंगना जैसा है और खीस निकाले खड़ा है, अपने हाथ में एक शस्त्र लिये हुए है जिसे पहिचानना सम्भव नहीं है। उसका सारा शरीर नंगा है, और उसके केश पीछे की

ओर बिखरे पड़े हैं और वायु में फहरा रहे हैं, जो संक्षुब्ध मनुष्य के केशों की अपेक्षा उद्विग्न साही के कांटों से अधिक मिलते जुलते हैं। उक्त दोनों मण्डलियों के बीच वही साधारण पनतरनी सजावटें हैं।

सोलहवां दृश्य

हनुमान् रण-क्षेत्र में

इस में भी वही लड़ाई का दृश्य अर्थात् ऊपर कहे हुए राक्षसों के साथ हनुमान् का युद्ध दिखलाया गया है। एक राक्षस सेनानी अंशतः अन्तरिक्ष में बैठा हुआ दर्शाया गया है, और उस पर हनुमान् को चढ़ते दिखलाया गया है, जो अपने पैरों को दैत्य के शरीर के निचले अवयवों पर टिकाये हुए है और उस पर कठोर, सम्भवतः मरणान्तक, प्रहार करने को है। बांई ओर एक नङ्गा राक्षस, जिसके ज्वाला-जैसे केश हैं और शरीर की आकृति भद्दी है, हनुमान् पर टूटता हुआ दर्शाया गया है; वह एक टेढ़ी तलवार और ढाल लेकर यथाशक्ति अपने सहचर और देशभक्त सेनानी को बचाने की कोशिश कर रहा है।

इस मण्डली के नीचे हम देखते हैं कि हनुमान् ने एक और राक्षस को पछाड़ दिया है, जो धराशायी होकर सम्भवतः

जीवन की अन्तिम सांस ले रहा है । उसका एक निर्जीव हाथ दुहरा होकर धरती पर पड़ा है । उसकी बाईं ओर एक और राक्षस हनुमान् के विक्रम का पर्याप्त परिचय पाकर पृथ्वी के अन्दर धंसा जा रहा है, ताकि वह इस कठोर भूमि को अपने जीवन की अन्तिम शय्या बनाये; शायद हनुमान् ने उसको एक ज़ोर का मुक्का अथवा लात मार कर अन्तरिक्ष से पृथिवी पर पटक डाला है।

सत्रहवां दृश्य

हनुमान् के समर-कौतुक

इस दृश्य में हनुमान् आलीढ मुद्रा अर्थात् लक्ष्य-वेध करने की दशा में दर्शाया गया है। उसका एक हाथ उसकी कमर पर है, और दूसरे हाथ से, जो सीधा और अकड़ा हुआ है, वह किसी वस्तु की ओर डांट-डपट का जैसा निर्देश कर रहा है। वह खीस निकाले अपहास जैसा कर रहा है, और उसकी आकृति और हाव-भावों से अत्यधिक हुलास झलक रहा है; वह अन्य राक्षसों की बाट जोह रहा है, जो आकर उसकी चुनौती को ग्रहण करें, ताकि वह उन्हें भी परलोक का रास्ता दिखलाये। उसके पैरों में एक दूसरे के नीचे दो राक्षस हैं, जिन्हें उस ने सहसा मार डाला है अथवा पटक कर बेहोश कर दिया है; वे मुँह फेरे धरती पर

पड़े हुए हैं। उनकी पोशाक और आकृति से ऐसा प्रतीत होता है कि वे राक्षस जाति में कुछ गौरवमय पद रखते हैं।

अठारहवां दृश्य

हनुमान् के समर-कौतुक

इस दृश्य में सम्भवतः हनुमान् के द्वारा रावण के अशोक-वन के विनाश का एक और दृश्य दिखाया गया है। तक्षण के उपरले सिरे पर हमें एक वृक्ष दिखाई देता है, जिसकी जड़ें जमीन के अन्दर दृढता से जकड़ी हुई हैं, और जिसकी कुछ शाखाएँ टूटी हुई नजर आती हैं। इसके नीचे एक और वृक्ष है, जिसकी केवल कुछ शाखाएँ ही टूट कर जमीन पर नहीं गिर रही हैं किन्तु जड़ें भी उखड़ रही हैं और उसे शीघ्र ही धरा-शायी करनेवाली हैं। सम्भवतः ये वृक्ष किसी सरोवर के तट पर स्थित हैं, जिसमें केवल उनकी कुछ शाखाएँ ही नहीं गिर पड़ी हैं किन्तु जिसके अन्दर हनुमान् ने एक राक्षस को भी समाधिस्थ कर दिया है, जो शायद अशोक-वन के रक्षकों में से है। उसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं हैं, और सम्भवतः वह ऊपर आने की चेष्टा कर रहा है, किन्तु डूबते हुए मनुष्यों की भाँति फिर नीचे को चला जा रहा है।

उन्नीसवां दृश्य

एक मन्दिर का दृश्य

इस दृश्य में अनेकों चबूतरों का मन्दिर दर्शाया गया है, जो आधार शिला से लेकर शिखर तक पूरा है; उसके पास ही एक राक्षस प्राणों की बाजी लगाकर-जैसा दौड़ रहा है। सम्भवतः उसने हनुमान् को अपनी ओर आते देखा है, जिससे वह भागकर अपने आपको बचाने की चेष्टा कर रहा है।

बीसवां दृश्य

इस में भी एक और राक्षस को उसी तरह भागने की चेष्टा करते हुए दर्शाया गया है, किन्तु मन्दिर के स्थान में उसकी पृष्ठ-भूमि परम्परागत कल्पित वृक्षों और अन्य ऊटपटांग सजावटों से बनी हुई है, जो पनतरन की विशेषता है।

इकीसवां दृश्य

विषण्ण और झुँझलाया हुआ रावण

इस दृश्य में हम रावण को किसी पत्थर के चबूतरे अथवा सिंहासन पर बैठा देखते हैं; उसकी पीठ एक वृक्ष के सहारे

टिकी हुई है, जो अपने पत्तों से अशोक-जैसा लगता है। वह बहुत से आभरणों से अलंकृत है, और तक्षण में उसका केवल एक सिर दिखाया गया है, जिस पर उसका कोणाकार मुकुट स्पष्ट नजर आता है। यद्यपि उसका चेहरा यत्किञ्चित् विशीर्ण हो चला है तथापि उस पर मूँछें दिखाई देती हैं और उसके मुख से अत्यधिक विषण्णता और झुँझलाहट टपकती है।

रावण के आसन के तले एक सन्देशहर या राक्षस दर्शाया गया है, जो अपने एक घुटने को धरती पर टेक कर हाथ बांधे स्थित है, और अपने राजा और प्रभु को किन्नरों की सारी सेना के विनाश की खबर दे रहा है, जिसे रावण ने हनुमान् का सामना करने भेजा था।

बाईसवां दृश्य

यहाँ हमें सम्भवतः रावण का एक सेनानी अपने प्रभु की उपस्थिति में सामने जमीन पर एक घुटना टेके बैठा दिखाई देता है। उसके गले में भी वही साधारण मुण्ड-माला लटक रही है जिसे रावण के सारे सेनाध्यक्ष और महारथी पहनते थे; इसके अतिरिक्त वह आभरण भी पहने है; उसके सिर पर मुकुट है, कानों पर कुण्डल लटक रहे हैं,

और वह कंगन, माला इत्यादि धारण किये हुए हैं। उसकी आकृति और मुख से ऐसा प्रतीत होता है मानो वह क्रोध से आग-बबूला हो कर गरज रहा हो। यह सम्भवतः महस्त है, जिसका लड़का जम्बुमाली किन्नरों की सेना के विनाश के बाद हनुमान् के विरुद्ध भेजा गया था और वहीं रण में काम आया था।

तेईसवां दृश्य

राक्षसों के साथ हनुमान् के समर-कौतुक

इस दृश्य में हम दो राक्षस योधाओं को हनुमान् से युद्ध करने के लिए जाते देखते हैं। इनमें से बांई ओर का योधा अपने हाथ में एक नङ्गी टेढ़ी तलवार की मुट्ठ को पकड़े हुए और दूसरे हाथ को मुक्का मारने को जैसे बढ़े हुए हैं। दाहिनी ओर के राक्षस के एक हाथ में दक्षिण-भारतीय कुन्दम से मिलता-जुलता एक हथियार है, और दूसरे हाथ में वह एक लम्बी चौड़ी और सीधी तलवार की बेंट को पकड़े हुए है। दोनों ही दौड़ते हुए दिखलाये गये हैं। सम्भवतः दाहिनी ओर का राक्षस पीछे के राक्षस की अपेक्षा हनुमान् के पास पहुँचने और उस पर आक्रमण करने को अधिक उत्सुक है।

चौबीसवां दृश्य

इसमें भी दो राक्षस सम्भवतः हनुमान् पर टूटते हुए दिखलाये गये हैं; किन्तु उनके मुख नजर नहीं आते। बांई ओर के राक्षस का बाया हाथ बढा हुआ है, और दाहिने हाथ में वह रण-परशु लिये जा रहा है। दाहिनी ओर का राक्षस मनुष्यों की मुण्डमाला से अलंकृत है। उसके बाये हाथ में एक हथियार है, जिसके दोनों किनारे पैने हैं और जो अन्दर की ओर भारी है, जिसको वह हनुमान् पर लक्ष्य करके फेंकने की तय्यारी कर रहा है। *उसके पैर आलीढ़ मुद्रा की हालत में स्थित हैं;* उसकी नाक अत्यन्त लम्बी है और उसमें कुरूपता के वे सभी भयंकर लक्षण विद्यमान हैं जिनका रोमाञ्चकारी वर्णन वाल्मीकि ने किया है, और इसलिए यह रावण के मन्त्री प्रहस्त का लड़का जम्बुमाली हो सकता है।

पच्चीसवां दृश्य

समरोन्मुख हनुमान् एक मन्दिर के सामने

यहाँ एक राक्षस-मन्दिर के सामने एक तोरण पर हनुमान् युद्ध के लिए राक्षसों को ललकारता हुआ दिखलाया गया है; उसके

पांव आलीढ मुद्रा अर्थात् लक्ष्य-वेध की हालत में हैं, और वह हाथ से मुक्के मारने को तय्यार है।

जावा के अन्तिम हिन्दू राजघराने अर्थात् मागापैट राजवंश के सर्व-विजयी इस्लाम के प्रभावों का ग्रास बनने से पहिले, यह मन्दिर जावा के इतिहास में उक्त काल की मन्दिर-वास्तुकला का एक अच्छा नमूना है। इस मन्दिर की सबसे अधिक रोचक विशेषता उसका द्वार है, जिसके ऊपर मध्य में सिंहवक्त्र या कीर्तिमुख का बहुत ही सुन्दर प्रदर्शन है और जहां से मन्दिर के गर्भ-गृह को रास्ता जाता है। तोरण के नीचे, जो बिल्कुल सादा अर्थात् एक चपटी शिला के दोनों छोर पर पत्थरों के लम्बाकार स्तम्भों को खड़ा करने से बना है, हम देखते हैं कि एक नंगा राक्षस खड़ा होकर ऊपर को हनुमान् की ओर देख रहा है। वह अपने हाथ में रक्खे हुए डमरु को बड़े जोर से बजा रहा है; सम्भवतः उसे यह आशा है कि इस तरह हनुमान् वहाँ से भाग निकलेगा। (सुन्दरकाण्ड सर्ग ४६, श्लोक १८)। यहाँ पर यह उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा कि बंदरों को अपने घरों के अहातों से खदेड़ने के लिये मालाबार में आज भी यह उपाय काम में लाया जाता है।

छब्बीसवाँ दृश्य

हनुमान् के रण-कौतुक

इस दृश्य में हनुमान् एक राक्षस नेता को कूटते हुए अथवा उसकी खोपड़ी को तोड़ते हुये दर्शाया गया है। एक राक्षस अपनी बाहों के बल धरती पर औंधा पड़ा हुआ है, जिसको सम्भवतः हनुमान् ने इस दशा में पटक दिया है। जमीन पर पड़ा हुआ और अंशतः इस राक्षस के ऊपर टिका हुआ हमें एक और राक्षस सरदार दिखाई देता है; उसके गले में मुण्ड-माला लटक रही है, उसके एक हाथ में छोटी सी टेढ़ी तलवार है, और दूसरा हाथ जमीन पर टिका हुआ और कंगनों और बाजू-बन्दों से अलंकृत है। हनुमान् इस आधे चित पड़े हुए दैत्य के ऊपर खड़ा है; उसका एक पैर राक्षस के पेट पर है और दूसरा उसके दाहिने पैर के ऊपर, जिसको वह मजबूती से दबाये हुए हैं। हनुमान् ने अपने एक हाथ से राक्षस के उठे हुए हाथ को जिसको उसने हनुमान् पर तलवार से प्रहार करने के लिये उठाया है, दृढता से पकड़ लिया है। दूसरे हाथ में वह किसी पेड़ के, सम्भवतः शाल या किसी चीड़ के, तने को लिये हुए है, जिस पर पत्तियाँ और शाखाएँ कुछ भी नहीं हैं, किन्तु जड़ों के कुछ अंश अभी तक ज्यों के त्यों जैसे ही पड़े हैं। इस तने से वह अपने पैर के नीचे दबे हुए राक्षस

सरदार के कपाल पर प्रहार करने की युक्ति सोच रहा है, और जब यह प्रहार अपना काम कर चुकेगा तो राक्षस निःसन्देह यम-सदन को जा पहुँचेगा, और इस संसार में केवल अपने चूरमूर हुए सिर को छोड़ जायेगा। इस प्रकार सम्भवत इस दृश्य में हनुमान् को प्रहस्त के पुत्र जम्बुमाली का संहार करते हुए दिखाया गया है, यद्यपि वाल्मीकीय रामायण का विवरण इससे कुछ भिन्न है; अथवा यह विरूपाक्ष और यूपाक्ष की मृत्यु का नजारा है (सुन्दर काण्ड सर्ग ४६, श्लोक ३०)। कुछ ऊपर और इस तक्षण की दाहिनी ओर हम एक राक्षस को अत्यन्त प्रबल वेग से दौड़ते देखते हैं; उसका एक हाथ उसके कपाल पर लगा हुआ है और दूसरे हाथ में सम्भवत. पुराने जमाने का कोई शस्त्र है।

सत्ताईसवां दृश्य

इस दृश्य में एक राक्षस सरदार, सम्भवत रावण के मन्त्रियों के लड़कों में से कोई एक, दर्शाया गया है, जिसे हनुमान् के विरुद्ध युद्ध करने भेजा गया था। यह सरदार आक्रमण करने के लिए दौड़ता दिखाई देता है। उसके गले में भी वही साधारण मुण्ड-माला है; उसके एक हाथ में दक्षिण भारतीय कुन्दम जैसा

एक काष्ठ का बना हुआ हथियार है, और दूसरा हाथ उसकी कमर से लगा हुआ है । उसकी बांई ओर एक और राक्षस, सम्भवतः उसका परिचारक, दिखलाया गया है, जो अपने सरदार के जरीदार और धज्जियों से युक्त झंडे को लिये जा रहा है। उसके एक हाथ में पताका का डण्डा है, और दूसरे हाथ से वह हनुमान् के विशाल वक्षःस्थल पर मुक्का मारने के लिये तय्यार है । इन दोनों के बीच एक और राक्षस दिखाया गया है, जिसके आग की ज्वाला जैसे केश हैं और छींके जैसे कुण्डल, और जो रण-स्थली से किसी तरह भाग निकलने की युक्ति सोच रहा है।

अठाईसवां दृश्य

इस में शायद रावण की सेनाओं के पांच मुख्य सरदारों (पञ्च सेनाग्रनायक) के साथ हनुमान् का युद्ध दर्शाया गया है, जिसका वर्णन सुन्दरकाण्ड के ४६वें सर्ग में किया गया है । यहाँ हम देखते हैं कि हनुमान् ने एक महावत के सिर को काट कर जमीन में फेंक दिया है । हाथी घुटने टेक कर जमीन पर पड़ा हुआ है जिससे सीढ़ी का काम लेकर हनुमान् ऊपर चढ़ आया है और उसने सम्भवतः उसकी पीठ पर चढ़े हुए सेनाग्रनायक को प्राणान्तक प्रहार करके पृथ्वी पर सुला दिया है, जो

एक हाथ उठाये हाथी की पीठ पर लेटा हुआ दिखाई देता है। हनुमान् ने उसकी जंघाओं पर अपने घुटने खुभो कर उसकी एक बाँह को अपने हाथों से अथवा लात के प्रहार से उखाड़ फेंका है। *इस प्रकार रण-विजयी हनुमान् विजय की शान में* खड़ा है; उसका एक पैर हाथी की सूण्ड पर और दूसरा उसके गले पर है, और वह दूसरे राक्षसों को अपने साथ लोहा लेने के लिए ललकार रहा है।

उनतीसवां दृश्य

इस दृश्य में एक राक्षस सरदार दिखलाया गया है जो आभरणों से भूषित और मनुष्यों के मुण्डों की माला से अलंकृत है, और हनुमान् के सामने से जल्दी जल्दी पीछे को भागा जा रहा है। हनुमान् रण-क्षेत्र में विकराल वेश धरे फिर रहा है, और चारों ओर मृत्यु और विनाश का दृश्य उपस्थित कर रहा है। राक्षस सरदार उसका एक परिचारक, जो उसके आगे आगे भागा जा रहा है, दोनों यह जानने के लिये कि हम काफी दूर निकल आये हैं या नहीं पीछे को मुड़कर देख रहे हैं।

तीसवां दृश्य

इस तक्षण खण्ड पर तीन राक्षस दर्शाये गये हैं, जिन्हें हनुमान् ने परलोक भेज दिया है; सम्भवतः यह उस सेना के सैनिक हैं जिसके पांच सेनानी थे अथवा उन पांच सेनानियों में से ही कोई तीन हैं। नीचे जमीन पर हम एक निर्जीव सरदार को पृथ्वी को चूमते देखते हैं; उसके ऊपर एक घोड़े की लाश है, जिसने अपनी स्वामिभक्ति के कारण मृत्यु में भी अपने स्वामी का साथ दिया। इसके ऊपर हम एक राक्षस को हाथ उठाये जमीन पर लेटा हुआ और आकाश की ओर मुँह करके जीवन की अन्तिम सांस लेते देखते हैं; उसकी दाहिनी ओर एक और राक्षस अपने धराशायी विश्वासपात्र मित्रों का उनके शाश्वतिक विश्राम में साथ देने के लिए आकाश से अथवा ऊपर से नीचे को गिर रहा है। सुन्दर काण्ड के ४६वें और अन्तिम श्लोकों में इन सब का बड़ा सजीव और रोचक वर्णन दिया गया है।

इकतीसवां दृश्य

यह सम्भवतः पिछले दृश्य का परिशेष है। यहाँ हम हनुमान् को एक राक्षस सरदार के ऊपर चढ़ा पाते हैं, जिसको वह जमीन पर पटक रहा है और अपने पैरों को उसके शरीर के सुविधा-

युक्त मार्गों पर रक्खे हुए है। हनुमान् ने एक हाथ से. उसकी शिखा को पकड़ लिया है, जिसको छुड़ाने और अपने हाथ को हनुमान् के हाथ से झटकाने की राक्षस सेनानी चेष्टा कर रहा है। दूसरे हाथ को उठाये हनुमान् उस पर प्रहार करने अथवा ज़ोर से थप्पड़ मारने को है। पास ही एक और राक्षस मुक्का उठाये, क्रोध से अधीर होकर, इस युद्ध को देख रहा है।

बत्तीसवां दृश्य

इस में एक राक्षस सरदार अपने सैनिकों के साथ हनुमान् से जूझने के लिए कूच करते दर्शाया गया है। सबसे परे बांये छोर के व्यक्ति के हाथ में कोई हथियार नहीं है; वह नंगा धड़ंगा और मुक्का उठाये खड़ा है। बीच में राक्षस सरदार मनुष्यों की मुण्डमाला से अलंकृत है और एक हाथ से मुक्का उठाये और दूसरे हाथ में, जो ऊपर को उठा हुआ है, एक भारी बेंट की सीधी नङ्गी तलवार लिये हुए है। उसकी दाहिनी ओर का राक्षस भी जो उन दोनों की तरह लड़ने को उत्सुक है, उनके साथ साथ दौड़ा जा रहा है। उसका एक हाथ मुक्के की हालत में उठा हुआ है और दूसरे हाथ में वह एक लम्बा भाला लिये हुए है, जिसका सिरा कोणाकार है।

तेतीसवां दृश्य

यहाँ एक राक्षस दर्शाया गया है, उसके पास एक हथियार है और वह रणक्षेत्र से पीछे को भागा जा रहा है। उसके साथ साथ एक और सैनिक भी मुट्ठी बट कर दौड़ा जा रहा है। उसके कानों से कुण्डल लटक रहा है किन्तु शरीर पर कोई वस्त्र नहीं है।

चौंतीसवां दृश्य

इस में रावण का एक अनुचर अथवा सन्देशहर दर्शाया गया है, जो सम्भवतः हनुमान् के द्वारा उसके विरुद्ध भेजी हुई सेनाओं के विनाश का समाचार देने आया है। वह एक घुटना टेक कर जमीन पर बैठा है, उसके हाथों पर कङ्कन हैं और वह पुष्पाञ्जलि मुद्रा से हाथ जोड़े हुए है। उसके कानों पर वृत्त-कुण्डल लटक रहे हैं, और कतिपय आभूषण उसके सिर और केशों को अलंकृत कर रहे हैं। इस प्रकार का आसन और ऐसी भावभङ्गी सदृश परिस्थितियों में दक्षिण भारत में अब भी प्रचलित हैं।

पैंतीसवां दृश्य

यह पिछले दृश्य का परिशेष है और इसमें रावण को व्यग्रता से अपने दूत का सन्देश सुनते हुए दर्शाया गया है। वह एक सिंहासन पर बैठा है जिसकी चित्रकारी जटिल और ऊटपटांग जैसी है और वह स्वयं सब प्रकार के आभूषणों से सजा हुआ है, जिनमें उसका वर्तुलाकार मुकुट, कुण्डल, कङ्गन, हार, बाजूबन्द, इत्यादि शामिल हैं, और उसकी मूँछों को छोड़ कर उसका सारा सिर मुंडा हुआ है; एक हाथ से वह मुक्का दिखा रहा है और दूसरे हाथ से किसी वस्तु की ओर निर्देश कर रहा है अथवा किसी वस्तु पर ज़ोर दे रहा है, जिसके विषय में वह अपने दूत से अधिक विस्तृत ब्योरा सुनना चाहता है। उसके सिंहासन के निकट जमीन पर दो राक्षस बैठे हैं, जिनमें से एक अपने लाड़ले कुत्ते के साथ खेल रहा है जो सम्भवतः उसको चुम्बन दे रहा है; और दूसरा अपने हाथों में कोई बाजा लिये हुए है। ये दोनों ही शायद दरबार के विदूषकों अथवा जात्रा के पनकवनों को प्रदर्शित करते हैं, जो सदा चरित्र नायक के मनोविनोद के लिए उसके साथ दर्शाये जाते हैं।

छत्तीसवां दृश्य

इस खण्ड पर एक विकट आकृति का राक्षस हनुमान् के साथ युद्ध के लिये कूच करते दर्शाया गया है । उसके पास उसके कद के अनुरूप एक विशाल नंगी तलवार है, उसके गले में मनुष्यों की मुण्डमाला लटक रही है और वह अन्य आभरण भी पहिने हुए है । सम्भवतः वह क्रोध से दान्त पीस रहा है और हनुमान् को अपना आहार बनाने की आशा में है ।

सैंतीसवां दृश्य

यह पिछले दृश्य का परिशेष मात्र है, जिसमें हम एक नङ्गे राक्षस को देखते हैं । उसके कान फटे हुए और लम्बे हैं, शरीर पर कोई आभूषण नहीं है और वह अपने एक हाथ में वसूला-जैसा हथियार लिये और अपने मांसल कंधे पर एक टोकरी लटकाये पिछले दृश्य के भीमकाय दानव के आगे आगे कूच करता चला जा रहा है । उसके नीचे एक कमरे में अथवा सजे हुए भवन के अन्दर कोई स्नेही पति-पत्नी बैठे हैं, जो प्रत्यक्षतः नङ्गे अथवा कम से कम आधे नङ्गे हैं । पत्नी अपने पति से किसी वस्तु के लिये आग्रह पूर्वक अभ्यर्थना कर रही है, जिसका उत्तर पति स्नेह भरे शब्दों में दे रहा है ।

अड़तीसवां दृश्य

इसमें भी एक राक्षस योधा हनुमान् के साथ युद्ध करने के लिये दौड़ता हुआ दर्शाया गया है। उसके गले में मुण्ड-माला है, एक हाथ से वह मुक्का उठाऐ हुए है और दूसरे हाथ में एक चौड़ी ठूंठ जैसी नङ्गी तलवार लिये हुए है। उसके सिर के ऊपर वही साधारण ऊटपटांग जैसी पनतारनी सजावटें हैं, जिनमें से बांई ओर की एक अलंक्रिया किसी दानव के शरीर के कमर से ऊपर के भाग का खाका प्रदर्शित करती है।

उनचालिसवां दृश्य

इस दृश्य में हनुमान् से जूझने के लिए कूच करती हुई राक्षसी सेना का एक अंश प्रदर्शित किया गया है, जिसे दो योधाओं की तीन पंक्तियों में विभक्त किया जा सकता है। उपरली पंक्ति में सामने का नंगा राक्षस एक हाथ में वसूला लिए हुए है, और दूसरे हाथ में एक और हथियार है। उसके पीछे का व्यक्ति, जो उसी की भांति नंगा है और दौड़ा जा रहा है, सम्भवतः एक हाथ में घन और दूसरे हाथ में मुद्गर लेकर प्रहार कर-रहा है। मध्य में दोनों शैतान, जो भागे जा रहे हैं, नंगे हैं और हाथों से मुक्के उठाये हुए है। सबसे नीचे की पंक्ति में

सामने का दैत्य एक हाथ से मुक्का उठाये और दूसरे हाथ में मनुष्य की हड्डी का एक शस्त्र लिये हुए है। वह कुण्डलीभूत नाग की आकृति का एक विलक्षण कण्ठा पहिने है और अपने छिदे हुए कान के कर्णकुहर को मनुष्य की खोपड़ी से सजाये हुए है, जो उसको कुण्डल का काम दे रही है। उसके पीछे दौड़ते हुए राक्षस दोनों हाथों से मुक्के उठाये हुये हैं; उसका चेहरा जंगली सूअर के थूथने से मिलता जुलता है और वह एक तंग कसी हुई लँगोटी पहिने हुए है।

चालीसवां दृश्य

इस दृश्य में उस हत्याकाण्ड का दिग्दर्शन कराया गया है जिसे हनुमान् ने रणक्षेत्र में राक्षस योधाओं के बीच उपस्थित किया था। सबसे नीचे का नंगा व्यक्ति मृत्यु की सुषुप्ति में अक्षरशः ज़मीन को चूम रहा है; उसके ऊपर एक और लाश उत्तान-मुख किये पड़ी है। इनके ऊपर तीन और राक्षस मृत्यु की भिन्न भिन्न स्थितियों में प्रदर्शित किये गये हैं, जब कि छठा राक्षस अपने एक पैर को पसार कर बैठा है, और हनुमान् से प्रार्थना कर रहा है कि वह निकट न आवे, और अपने हाथ को इस तरह उठाये हुए है जैसे कोई शरणागत उठाता है।

इकतालीसवां दृश्य

यहाँ हनुमान् किसी राक्षस को मृत्यु के मुख में भेजते हुए दर्शाया गया है, जो अंशतः जमीन पर झुका हुआ बैठा है। इस योधा के गले में भी वही साधारण मुण्डमाला है, उसका एक हाथ नीचे को झुका हुआ और मुक्के की हालत में स्थित है, जब कि दूसरे हाथ में वह एक तलवार लिये हुए है। हनुमान् ने उसको जमीन पर पटक डाला है, और अपने एक पैर को उसके गले पर और दूसरे पैर को उसके पैर पर गड़ा दिया है। अपने एक हाथ से वह राक्षस के उस हाथ को पकड़े हुए है जिसमें तलवार है, और इस प्रकार वह उससे अपना बचाव कर रहा है। इस प्रकार उपद्रव के लिये व्यग्र हुये राक्षस को वशीभूत करने के बाद हनुमान् उसकी नाक पर एक अन्तिम मुक्के को लक्ष्य कर रहा है, जिससे उसका राक्षसी जीवन समाप्त हो।

बयालीसवां दृश्य

इस में एक नङ्गे दैत्य को किसी भवन के पास दौड़ते दर्शाया गया है, जिसकी सीढ़ियां भली भांति प्रदर्शित की गई हैं। उसका ध्यान हनुमान् की ओर लगा हुआ है। राक्षस के पास कोई हथियार नहीं है, वह केवल मुक्का उठाये हुए है और

उसके कान वर्तुल जैसे कुण्डलों से अलंकृत हैं । उसके केश बिखरे हुए हैं, और वह अन्तरिक्ष में उड़ा जा रहा है ।

तेतालीसवां खण्ड

यह एक दीवार की सजावट है, जिसमें केवल किसी असभ्य ग्रामीण, अथवा रीछ, के रूप में एक बादल ही नहीं दर्शाया गया है किन्तु एक लम्बे हट्टे-कट्टे मनुष्य या राक्षस की शीत और आतप से विशीर्ण आकृतियां भी समाविष्ट हैं, जो दीवार के बिल्कुल पास ही प्रदर्शित किया गया है। राक्षस की इस धुंधली छाया-जैसी मूर्ति की दाहिनी ओर हम किसी नग्न दानव-दम्पती को एक प्रतिमा-आधार के नीचे रंगरलियाँ और जल-पान करते और कामकेलि के लिये प्रस्तुत होते देखते हैं। राक्षस रमणी एक नीची शय्या पर बैठी है, उसका एक हाथ नीचे को लटक रहा है और दूसरे हाथ को वह अपने प्रेमी के गले से लिपटा कर उसको अपने अङ्कवार में खींच रही है । राक्षस, जो सम्भवतः राक्षसी की अपेक्षा अधिक कामातुर है, ठीक वैसा ही आचरण कर रहा है जैसा कोई असभ्य अनाड़ी प्रेमी करता है; उसके केश उसके सिर के मध्य में जटाग्रन्थि के रूप में बंधे हुए हैं। स्त्री का चेहरा किञ्चित् विशीर्ण हो चला है।

चवालीसवां दृश्य

इस दृश्य में एक नङ्गा धड़ङ्गा राक्षस दर्शाया गया है, जो कर्णाभरणों और कण्ठे से अलंकृत है और किसी महल या भवन की सीढ़ियों के पास खड़ा है और हनुमान् से जूझने के लिये बाहर निकलने को ही है। वह अपने एक हाथ से मुक्का दिखा रहा है और दूसरे हाथ में एक बसूला-जैसी तलवार लिये हुए है।

पैंतालीसवां दृश्य

इस दृश्य में उस आक्रमण का दिग्दर्शन है, जिसे रावण के सब से छोटे और लाड़ले पुत्र राजकुमार अक्ष अथवा अक्षय-कुमार ने हनुमान् पर किया था। उन्हीं साधारण उल्कामुखी ऊटपटांग जैसी अलंक्रियाओं के नीचे एक महल है। हनुमान् अकेले खड़ा दिखाई देता है, वह अपने एक हाथ से मुक्का उठाये हुए है और दूसरे हाथ से राजकुमार अक्ष के फेंके हुए अस्त्रों के निराकरण की चेष्टा कर रहा है। उसके पैर आलीढ़ मुद्रा अर्थात् लक्ष्य-वेध की स्थिति में एक दूसरे से पृथक् हैं, और उसकी चारों ओर अक्षयकुमार के फेंके हुए भाँति भाँति के तीर, भाले, त्रिशूल, इत्यादि अस्त्र दर्शाये गये हैं।

छयालीसवां दृश्य

प्रस्तुत दृश्य पिछले पटल का ही परिशेष है, जिसमें दो हरिनों के सिरों के नीचे, जिनके मध्य में एक ऊटपटांग कीर्तिमुख आभरण रक्खा है, हम एक राजकुमार को बैठे देखते हैं, जिसका एक घुटना धरती पर टिका हुआ है और दूसरा पांव ऊपर को उठा हुआ है। उसके बांये हाथ में एक अंकुश की आकृति का शस्त्र है, जब कि उसके दाहिने हाथ को हनुमान् ने काट कर जमीन पर गिरा दिया है, जो उसके पास ही पड़ा हुआ है और धनुष अभी तक उसके कंधे को सजाये हुए है। इस राजकुमार के सामने, बांई ओर, रणक्षेत्र में उसका सारथी अथवा परिचारक बैठा हुआ है। उसकी दाहिनी बाँह और कन्धा कट कर अलग गिर पड़े हैं; उसके एक हाथ में राजकुमार का बाणों से भरा हुआ तरकस है जो उसके कन्धे से लटक रहा है, और उसकी दोनों हथेलियां खुली पड़ी हैं।

वाल्मीकीय रामायण में अक्ष और हनुमान् की लड़ाई के इस परिष्कार और प्रपञ्च का अभाव साभिप्राय है, जहाँ इसके विपरीत हम देखते हैं कि जब सारथी, रथ और घोड़े को गंवाने के बाद अक्ष अन्तरिक्ष में भटकता फिरता और युद्ध करता था, हनुमान् ने समर-कौशल से उसके नीचे आकर उसके दोनों पांव

पकड़ लिये थे और भीषण परिवर्त के साथ उसको घुमा घुमा कर जमीन पर पटक दिया और उसके मस्तिष्क को चूरमूर कर दिया था।

सैंतालीसवां दृश्य

इस दृश्य में हनुमान् को अन्तरिक्ष में उड़ान लगाते दर्शाया गया है, मानो वह कोई गरुड़ हो; उसके पांव इस प्रकार दिखाये गये हैं जैसे वह उड़ रहा हो, उसकी पूँछ पीछे से ऊपर को उठी हुई है, और उसके हाथ मुक्कों के रूप में बंटे हुए हैं, ताकि उसको जब कभी कोई राक्षस मिले वह उसे सीधा कर सके।

अड़तालीसवां दृश्य

इसमें भी वही वीर हनुमान् समुद्र में अवगाहन करते दर्शाया गया है; समुद्र की लहरें, जो सुन्दर नैसर्गिक ढंग से दिखलाई गई हैं, उसके वक्षःस्थल पर अठखेलियां कर रही हैं, हिन्दमहासागर की लहरों और तरंगों के सुन्दर नैसर्गिक दिग्दर्शन के अतिरिक्त हम देखते हैं कि मछलियां भी सराहनीय ढंग से अङ्कित की गई हैं, जिनमें नाके का लम्बा, तीव्र और भयावह थूँयना अथवा खड्ग-मत्स्य देखा जा सकता है, जिससे भारतवर्ष

और लङ्का दोनों ही देशों के सीपी-मछलियों को मारने वाले डरते हैं।

उनचासवां दृश्य

यह ठीक वैसा ही दृश्य है जैसा कि ४७वें खण्ड में वर्णन किया गया है; अतएव इस पर कोई और टीका टिप्पणी करना अनावश्यक है।

पचासवां दृश्य

यहाँ हमें एक रमणीक आरण्य भूमि-भाग का नैसर्गिक दिग्दर्शन दृष्टिगोचर होता है, जिसमें वनस्पति जगत् और पशु और पक्षी जीवन के नमूने समुचित पृष्ठ-भूमि पर सन्निविष्ट हैं, जिनके निकट सम्भवतः एक विशाल वर्गाकार और स्थूल स्तम्भ अपने आधार और शीर्ष सहित आविर्भूत है। आलेख्य के पाद पर हमें एक साही अपने बिल में प्रवेश करती हुई दिखाई देती है, जिसके ऊपर हम किसी हरिन को पीछे को मुँह फेरे दौड़ते देखते हैं। हरिन के सामने एक वृक्ष दिखाई देता है, जिसके पत्ते और फल स्वाभाविक ढंग से दर्शाये गये हैं। ऊपर अन्तरिक्ष में दो पक्षी, सम्भवतः एक कौआ और एक तोता, दर्शाये गये हैं, मानो वे पेड़ के फलों या उसके फूलों के पराग को खाने के लिये

उसकी ओर उड़े आ रहे हों, जबकि इस के ऊपर वही साधारण ऊटपटांग सजावट है जो पनतरन की उत्तम वास्तुकला-विषयक अलंक्रिया की विशेषता है।

इकावनवां दृश्य

यहाँ सीता से भेंट करने के बाद हनुमान् से रावण के अशोक-वन को उजाड़ने का दृश्य दिखलाया गया है, जो सुन्दर-काण्ड के ४१वें और ४२वें सर्गों में सुन्दर हृदयंगम और नैसर्गिक ढंग से वर्णन किया गया है। अतएव यहाँ प्रदर्शित किये गये दृश्य का एक अंश उस घटना का दिग्दर्शन है जिसका उल्लेख सुन्दरकाण्ड के ४२वें सर्ग के पहिले श्लोक में किया गया है। यहाँ हम देखते हैं कि रोचकता की दृष्टि से इस आलेख्य का केन्द्रस्थ व्यक्ति, हनुमान्, दो पृथक् अवस्थाओं में प्रदर्शित किया है; आलेख्य के सबसे परे बांये छोर पर हम उसे एक छोटे से नगण्य बन्दर के रूप में देखते हैं, जो एक वृक्ष के पत्तों और उसकी शाखाओं से छिपा हुआ है और सम्भवतः सीता के साथ रावण की भेंट और उन अन्य दृश्यों को देख रहा है जिनका वर्णन हम पहिले कर चुके हैं। आलेख्य के दाहिने पार्श्व में हम देखते हैं कि सीता के साथ उसकी भेंट समाप्त हो

चुकी है और वह रावण के अशोक वन को उजाड़ने के निश्चय को चरितार्थ कर रहा है, ताकि वह राक्षस-राज के क्रोध को उभाड़ सके। हम देखते हैं कि हनुमान् आलीढ मुद्रा अर्थात् लक्ष्य वेध की हालत में पैरों को पृथक् किये खड़ा है; एक हाथ से वह मुक्का उठाये हुए है और दूसरे हाथ से एक पेड़ के तने को झुका और तोड़ रहा है, जो आकृति से अशोक-जैसा लगता है। उसके पांव के पास से एक भीतचकित खुर्दरी छिपकली जैसी दौड़ रही है, जिसे तामिल देश में उदुम्बु कहते हैं। पेड़ के ऊपर हनुमान् के इस काम से भीतचकित पक्षी अपने आपको बचाने के लिये उड़ते हुए जैसे दर्शाये गये हैं।

बावनवां दृश्य

यहाँ हम उसी वीर हनुमान् को एक शिला पर अथवा किसी भवन के सामने के चबूतरे पर बैठा देखते हैं; वह उत्सुक आँखों से यह देखने के लिये दूर तक दृष्टि-पात कर रहा है कि कोई राक्षस बाहर निकल आने और मेरे साथ जूझने का साहस तो नहीं कर रहा है। अपने एक हाथ को वह शान्ति से अपने घुटने के ऊपर रक्खे हुए है और दूसरा हाथ उसकी जंघा पर है, और मध्यमा को छोड़ कर उसके हाथों की उंगलियाँ बटी हुई

हैं। उसके सामने, उसके नीचे और उसके ऊपर भवन के अतिरिक्त वही साधारण ऊटपटांग वास्तुकला-विषयक सजावटें हैं।

त्रेपनवां दृश्य

इसमें वे राक्षस वीर दर्शाये गये हैं जिन्हें हनुमान् ने मारा था; सम्भवतः ये रावण की सेनाओं के पांच सेनानियों में से कोई तीन हैं, जिन्हें हनुमान् ने यम-सदन भेज दिया था और जो एक पशु के ऊपर पड़े हुए हैं जो बलि के लिये मारा गया है अथवा मूर्छित हो कर मर गया है, ताकि उन सबके शरीरों को एक साथ ही जलाया जावे और विधान-पूर्वक दाह-संस्कार किया जावे, जैसा कि वस्तुतः रावण का दाहकर्म किया गया था जिसके मरने पर उसकी चिता में एक पशु की बलि दी गई थी।

चौवनवां दृश्य

इसमें रावण का सबसे बड़ा लड़का इन्द्रजित् हनुमान् से जूझने के लिये रणक्षेत्र में प्रवेश करते दिखलाया गया है, यद्यपि यहाँ के तक्षण का विवरण वाल्मीकीय रामायण के सुन्दर काण्ड के ४८वें सर्ग से किञ्चित् भिन्न है, जहाँ

हम इन्द्रजित् को एक ऐसे रथ पर चढ़ कर रणक्षेत्र में प्रवेश करते देखते हैं जो व्यालों से खींचा जाता था; किन्तु यहाँ हम उसे घोड़े पर सवार देखते हैं, जिसके सम्भवतः चार या पांच मुख हैं, जिनमें से यहाँ केवल एक मुख दर्शाया गया है जो घोड़े के मुख का अस्थि-पंजर जैसा लगता है। जैसा कि रामायण में वर्णन है, यहाँ भी हम उसको विशाल धनुष धारण किये पाते हैं, जिसको वह निरन्तर टंकारित कर रहा है और पूर्ण लचक से झुका कर उससे असंख्य तीर छोड़ रहा है। अश्वारोही समर-वीर इन्द्रजित् के पीछे एक और राक्षस सरदार खड़ा है। उसके एक हाथ में तलवार और ढाल है और दूसरे हाथ में एक और शस्त्र है। इन दोनों के नीचे तीन राक्षस अथवा साधारण सैनिक दर्शाये गये हैं; वे भी युद्ध में साथ दे रहे हैं। सामने का नंगा धड़ंगा दैत्य, जिसका एक कान फटा हुआ और लम्बायमान है, सम्भवतः हनुमान् पर लोहे के एक गोल टुकड़े अथवा पत्थर को लक्ष्य कर रहा है। उसके पीछे के व्यक्ति के हाथ में कोई हथियार नहीं है; सम्भवतः उसने अपने अस्त्र को पहिले ही सीधे हनुमान् पर फेंक डाला है, जिस पर वह जा लगा है। यह दैत्य भी नंगा दर्शाया गया है, और उसके मुख पर सन्तोष का जैसा अपहास झलक रहा है, जब कि सबसे पीछे का व्यक्ति, जो इन दोनों ही की तरह नंगा है, अपनी छोटी

सी तलवार को हनुमान् के शरीर में घोंपने के लिये आगे बढ़ रहा है।

पचपनवां दृश्य

इसमें संग्राम के चित्र के दूसरे पार्श्व का दिग्दर्शन है। यहाँ हम हनुमान् को एक पेड़ की शाखा पर खड़ा और राक्षस-वीर इन्द्रजित् को ललकारते देखते हैं। इन्द्रजित् का एक पक्षधर बाण उसके घुटने के ऊपर जा लगा है। इस वृक्ष के नीचे जो पत्तों से ढका हुआ है और हनुमान् को अड्डे का काम दे रहा है, हम दो राक्षसों को देखते हैं, जिनमें से सम्भवतः एक हनुमान् को भीत-चकित करने के लिये एक कांसी का घड़ियाल बजा रहा है, जब कि दूसरा, एक ऐसे हथियार को लिये जो लोहे के बने हुए हथियार की अपेक्षा किसी लम्बी हड्डी से अधिक मिलता जुलता है, आक्रमण के लिए कूच कर रहा है।

छप्पनवां दृश्य

यहाँ हम देखते हैं कि इन्द्रजित् का दिव्य अस्त्र हनुमान् पर अपना असर दिखला चुका है, यद्यपि वहाँ भी तात्त्विक विवरण वाल्मीकीय विवरण (सुन्दरकाण्ड सर्ग ४८) से भिन्न है।

वाल्मीकि के अनुसार इन्द्रजित् हनुमान् पर अपने विधिपूर्वक अभिमंत्रित ब्रह्मास्त्र को छोड़ता है, जो उसे अपने पाशों में बांध कर धरती पर गिरा देता है। यह सोचकर कि कहीं हनुमान् अस्त्र के पाशों से भाग न निकले इन्द्रजित् के मूढ़ अनुयायी उसको सन की रस्सियों से बांधे देते हैं, ताकि बंधन दुगुना दृढ़ हो जाय; उन्हें यह क्या पता था कि अपनी इस मूर्खता से वे इस दिव्य अस्त्र के प्रबल प्रभाव को मिटा रहे थे। इसके विपरीत यहाँ हम देखते हैं कि हनुमान् नागास्त्र के पाशों में बंधा हुआ चित पड़ा है। इस तरह विवशता की हालत में जमीन पर पड़े हुए हनुमान् के सामने हम मध्य में इन्द्रजित् को उसके शरीर पर एक लम्बी त्रिशूल घोंपते और उसे जख्मी करते देखते हैं, जबकि उसकी बांई ओर एक नङ्गा राक्षस हनुमान् के ऊपर एक विशाल शैल-खण्ड फेंकने की कोशिश कर रहा है, जिसे वह अपने सिर के ऊपर तुलाये हुए है। इन्द्रजित् की दाहिनी ओर हम दो और राक्षसों को देखते हैं, जो बसूलों से हनुमान् पर प्रहार कर रहे हैं; इनमें से एक वस्त्र पहिने हुए है और दूसरा नङ्गा है। इस मण्डली के ऊपर वही साधारण ऊटपटांग वास्तुकला-सम्बन्धी सजावटें हैं, जो पत्तों और वर्तुलाकार वेलों का अनमिल संमिश्रण हैं।

१

सतावनवां दृश्य

इसमें इन्द्रजित् हनुमान् को युद्ध का क़ैदी बनाकर रणक्षेत्र स लौटता हुआ दर्शाया गया है। हनुमान् पांच नंगे राक्षसों के कंधों पर लेजाया जा रहा है, जिनमें से प्रत्येक के पास एक एक हथियार है। हनुमान् एक विशाल नाग की कुण्डलियों में बन्धा हुआ है, जिसका फन संक्षोम की जैसी दशा में ऊपर को उठा हुआ है और जिसके जबड़े खुले हुये हैं। इस जलूस के साथ साथ, जिसमें समर-वीर मारुति लेजाया जा रहा है, इन्द्रजित् आगे आगे प्रयाण कर रहा है। वह एक हाथ से मुक्का उठाये हुए है और दूसरा हाथ तर्जनी-मुद्रा अर्थात् डांट-डपट की हालत में स्थित है। पीछे बाईं ओर एक भीमकाय राक्षस सेनानी कूच कर रहा है; उसके हाथ में एक विलक्षण शस्त्र है, गले में मुण्ड-माला है और कानों में कुण्डल लटक रहे हैं; उसके सिर के बाल सम्भवतः माथे के ऊपर सुवर्णमय सूत्रों से बंधे हुए हैं और हवा में बिखर बिखर कर उड़ रहे हैं। इस मण्डली के ऊपर वही साधारण ऊटपटांग सजावटें हैं।

अट्ठावनवां दृश्य

इसमें हनुमान् को रावण के सन्मुख प्रदर्शित किया गया है। इस प्रसंग का वर्णन सुन्दरकाण्ड के ४९वें सर्ग में किया गया है। यहाँ हम रावण को एक बहुमूल्य वस्तुओं से खचित आसन या सिंहासन पर बैठा देखते हैं, जिसके पीछे वही परिचित अशोक वृक्ष है जिससे उसका इतना प्रेम था। उसकी आकृति पनतरन की उन्हीं आकृतियों से मिलती जुलती है जिनका वर्णन पहिले किया जा चुका है। अपने बांये हाथ से वह मुक्का उठाये हुए है और दाहिने हाथ से हनुमान् को ललकारने का निर्देश कर रहा है, अथवा अपने अनुचरों को आज्ञाएँ दे रहा है, जो सामने किञ्चित् निम्न आसन पर विद्यमान हैं; उसकी बांई ओर उसका पुत्र इन्द्रजित् बैठा है, जो अपने पिता के सामने आदर और श्रद्धा से घुटने टेके किसी बात को सुना रहा है और अपने हाथों की स्थिति से उस पर जोर देता हुआ प्रतीत होता है। रावण के ठीक नीचे दो राक्षस खड़े दिखलाये गये हैं; जिनमें से इन्द्रजित् के निकट का व्यक्ति हनुमान् से कुछ पूछ रहा है, जब कि उसके पीछे का दूसरा व्यक्ति तलवार या छोटे भाले के तीखे छोर को हनुमान् के शरीर पर चुभा रहा है, जो नाग फांस में बंधा हुआ विवशता की हालत में जमीन पर पड़ा हुआ है।

यह राक्षस अपने दूसरे हाथ से मुक्का उठाये हुए है।

उनसठवां दृश्य

इसमें रावण का एक मंत्री अपने ऊँचे सिंहासन या राज-आसन पर बैठा हुआ दिखलाया गया है, जिसकी पच्चीकारी और सजावट बहुत ऊटपटांग और अपरिष्कृत है। वह एक हाथ से मुक्का उठाये हुए है और उसका दूसरा हाथ सम्भवतः वरदमुद्रा अर्थात् दान देने की हालत में स्थित है। उसके राजासन के नीचे उसका एक राक्षस परिचारक बैठा हुआ है, जो चर्म-रज्जु से एक ऊर्जस्वल शिकारी कुत्ते को थामे हुए है।

साठवां दृश्य

इसमें समर-वीर इन्द्रजित् सम्भवतः हनुमान् को क़ैद करके अपने पिता के हवाले करने के बाद अपने महल को लौटता हुआ दर्शाया गया है। यहाँ भी उसका वैसा ही वेशभूषा है जैसा कि पनतरन के अन्य दृश्यों में। अपने दोनों हाथों से वह मुक्के उठाये हुए है।

इकसठवां दृश्य

इस में हम देखते हैं कि हनुमान् की पूँछ पर आग लगी हुई है और वह एक राक्षस सरदार पर आक्रमण करने के लिए उछल रहा है, जो वहाँ से भागा जा रहा है और जिसके गले में मनुष्यों के मुण्डों की माला है। नाग-पाश, जिनमें हनुमान् बंधा हुआ था, सब जर्जरित होकर टुकड़े टुकड़े हो गये हैं और हनुमान् के पैरों के पास जमीन पर बिखरे पड़े हैं, जो अपने पैरों को आलीढ मुद्रा अर्थात् लक्ष्य-वेध की हालत में रक्खे अकड़कर सीधा खड़ा है और घूँसों से राक्षसों की खोपड़ियों को चूरमूर करने के लिये तत्पर है। उसकी पूँछ से, जो शान से अन्तरिक्ष में उठ कर उसके मुँह के सामने पहुँची हुई है, हमें आग की ज्वालाएँ दहकती हुई और धक्‌धक् करके ऊपर को उठती हुई जैसी नज़र आती हैं। इस प्रज्वलित पूंछ से हनुमान् अपने सामने के मुण्डमाला-धारी राक्षस को झुलसाने अथवा जलाने की चेष्टा कर रहा है, जो अपने बाये हाथ पर इस ज्वाला का अनुभव करने के बाद प्रबल वेग से भागते हुए उससे बचने की चेष्टा कर रहा है। इस मण्डली के सिर के ऊपर हमें चार दहकती हुई ज्वालाएँ अथवा अग्नि-जिह्वाएँ या शायद धुंए की घटाएँ उठती हुई दिखाई देती हैं, जो यहाँ की ऊटपटाग वास्तुकला-सम्बन्धी सजावट में समाविष्ट हैं।

बासठवां दृश्य

इस में रावण आलीढ़ मुद्रा की भर्त्सनात्मक स्थिति में अपने पैरों को पृथक् किये खड़ा दिखलाया गया है; वह हनुमान् को मारने के लिये म्यान से अपनी तलवार को खींच रहा है। यद्यपि इस दृश्य का वाल्मीकीय रामायण में कोई उल्लेख नहीं है, तथापि सुन्दरकाण्ड के ५२वें सर्ग में हम रावण को हनुमान् के लिये प्राण-दण्ड की व्यवस्था करते देखते हैं। जब सम्राट् रावण खुले दरबार में इस निर्णय की घोषणा करता है तो उसका सबसे छोटा धर्मनिष्ठ भाई विभीषण उठता है और अनुनय विनय से अपने रोषाविष्ट भाई को समझाता है कि दूत की हत्या करना अन्तर्जातीय कानून और सदाचरण के विरुद्ध है। वादविवाद का ज्वार कभी प्रबल वेग से उठता है और कभी क्षीण हो जाता है। अन्ततः रावण अपने भाई के इस उद्बोधन से सहमत हो जाता है कि चूँकि हनुमान् दूत है, इसलिए उसे न मारना चाहिये किन्तु उसको ऐसे ढंग से अपमानित करना चाहिए जिस को वह जन्म भर न भूले। चूँकि बंदर के शरीर में पूँछ ही सबसे अधिक अभिप्रेत अवयव है, रावण आज्ञा देता है कि उस पर उद्दीपनशील वस्तुएँ लपेटी जांय और तेल उंडेल कर आग लगाई जाय। फलतः

ऐसा ही किया जाता है जिसका परिणाम राक्षसों के लिये विनाश-कारी होता है।

त्रेसठवां दृश्य

इस दृश्य में हम लंका के एक घर का नमूना देखते हैं, जो हनुमान् की पूँछ से आग लगने के कारण धधक् धधक् कर जल रहा है और ज्वालाओं से घिरा हुआ जैसा प्रतीत होता है। यह आग तीव्र वेग से चारों ओर फैल जाती है और सारे नगर को एक विशाल भाड़ में झोंक देती है। आग की असख्य जिह्वाएँ आकाश की ओर लपलपाती जा रही हैं और एक भवन को चटका कर जर्जरित कर रही हैं, जिसके भयंकर पड़ोस में हम एक राक्षस परिवार को इतस्तत भागते देखते हैं, जिसके सारे व्यक्तियों के मुखों पर आतङ्क की प्रतिच्छाया पड़ी हुई है और जो यह निर्णय नहीं कर सक रहे हैं कि कहाँ जाय और किसकी शरण लें। एक बालक, जिसके बाल बिखरे हुए हैं, रपट कर अपने घुटनों के बल ज़मीन पर गिर पड़ा है, जब कि एक और उसी की भांति गिर कर अपनी कुहनियों के सहारे भूमि पर पड़ा हुआ है। एक और पीछे को झांकता हुआ भागा चला जा रहा है जब कि एक चौथा व्यक्ति अपनी पत्नी का हाथ पकड़ कर उसे मार्ग दिखला रहा है और किसी सुरक्षित स्थान की

ओर लिये जा रहा है। इस उद्धार के काम में उसका पुत्र उसे सहायता दे रहा है, जो अपनी मूर्च्छित होती हुई माता को इस भयंकर घटनास्थल से दूर ले जाने को उतना ही व्यग्र है जितना उसका पिता।

चौंसठवां दृश्य

इस में हनुमान् एक नमूने के राक्षस-भवन की छत के काष्ट पर अपनी उद्दीप्त पूँछ से आग लगाते हुए और अपने इस अग्निकार्य में वेग से अग्रसर होते हुए दर्शाया गया है। घर के एक कमरे के कुट्टिम पर हम दो राक्षस हतकों को जल कर निष्प्राण हुए देखते हैं; आग की ज्वालाओं, धुंए और आतङ्क से दम घुट जाने के कारण वे जीवन की अन्तिम सांस लेते हुए कोयले का ढेर बन गये हैं। घर के परले छोर पर एक और व्यक्ति है जो सम्भवतः आग की आंच लगने से किञ्चित् झुलस गया है और रुद्ध-कण्ठ हो गया है और प्राणों को लिये भागा जा रहा है। घर के सबसे परे दाहिने छोर पर हमें फलों के गुच्छों से लदा हुआ एक ताड़ का पेड़ दिखाई देता है, घर किसी नमूने के मालाबारी मकान की भांति लकड़ी के खम्भों पर खड़ा है, उसकी छत खपरैलों की बनी हुई और ढालुवां है, जिस

पर छज्जे और कूट नजर आते हैं। इस प्रकार के घर आज भी कच्छों और नारियलों के देश में देखे जा सकते हैं।

पैंसठवां दृश्य

इस में सम्राट् रावण को अपने प्राण बचाने के लिए अपने महल से भागते दर्शाया गया है, जिस पर आग लगने को ही है; उसके एक हाथ में तलवार है और उसके पीछे और इर्द गिर्द उसके रनवास की स्त्रियां, उसकी पत्नियां, उसकी वेश्याएँ और दासियां हैं, जिनकी गति और आकृति में आतङ्क के कारण स्तब्धता आगई है, शरीर की ऐसी दशा हो गई है कि काटो तो लहू नहीं। उसका महल, जो एक विशाल चहारदिवारी से घिरा हुआ है, एक तड़ाग के मध्य में खड़ा दिखलाया गया है, जिसमें बतख, हंस और अन्य जलपक्षी रहते थे। यह गगन भेदी महल वास्तुकला के मालाबारी आदर्श ढंग पर बना हुआ है। दूर तट पर वृक्ष खड़े हैं, और चारों ओर से इस कृत्रिम सरोवर की शोभा बढ़ा रहे हैं, प्राचीर के बाहरी किनारे के पास ही फलों से लदा हुआ एक नारियल का पेड़ दर्शाया गया है जैसा कि किसी नमूने का मालाबारी अरण्यस्थली पर देखा जा सकता है। इससे परे बड़ी साधारण उटपटांग सजावट है, जो आधा वनस्पति और

आधा रूढ़ि के अनुसार कृत्रिम पल्लव-गुच्छों, रेखाओं और तरंगाकार वर्तुलों से बनी हुई है।

छासठवां दृश्य

इस में हनुमान् को एक बार फिर सीता से भेंट करने और उनसे विदा होने के लिए आकाश मार्ग से लौटते हुए दर्शाया गया है; लंका को जला कर उसने अपनी पूंछ की अग्नि-ज्वाला समुद्र में शान्त कर दी है और अब सीता से मिल कर राम के पास लौट आने की तय्यारी कर रहा है, हम उसे पेड़ों के शिखरों के ऊपर और बादलों के निचले प्रदेशों से उड़ते देखते हैं। दूर बांये छोर पर हमें एक मकान दिखाई देता है, जो सम्भवतः किसी पहाड़ के शिखर अथवा टीले पर स्थित है और मालाबारी किसानों के इसी ढंग के घरों से मिलता जुलता जैसा लगता है। इसके ठीक नीचे, जैसा कि मालाबार में भी दिखाई देता है जो अपने केलों के लिये प्रसिद्ध है, एक केले का पेड़ प्रदर्शित किया गया है, जिससे फलों का एक गुच्छा लटक रहा है। इससे कुछ और नीचे एक छोटे प्रकार का नारियल का वृक्ष दर्शाया गया है, जो आजकल मालाबार में नवकारी येंगु अर्थात् निकोबार नारियल नाम से प्रसिद्ध है और जिसकी औसत ऊंचाई एक काफी लम्बे आदमी की ऊंचाई

के बराबर होती है। इस नारियल के वृक्ष के बाद बांई ओर एक और वृक्ष है और इन वृक्षों की दाहिनी ओर वही बादल जैसी पनतारनी सजावट है, जिनमें एक बादल की अनोखी मानवी जैसी आकृति है।

सतसठवां दृश्य

इसमें सीता के साथ हनुमान् की दूसरी भेंट और समुद्र के उस पार प्रतीक्षा करनेवाले अपने मित्रों के पास यह हर्ष समाचार ले जाने और वहाँ से राम और लक्ष्मण को सारी घटनाओं की खबर देने के लिए, जो उत्सुकता से दिन गिन गिन कर उस नियत अवधि के अन्तिम दिन की बाट जोह रहे थे जो हनुमान् और अंगद की अध्यक्षता में सीता को ढूँढने के लिए दक्षिण की ओर भेजे गये वानर दल के लौटने के लिए निश्चित की गई थी, फेनिल और तूफानी समुद्र को पार करने से पहिले, सीता से अन्तिम बार विदा होने का दृश्य दिखलाया गया है। वाल्मीकीय रामायण के सुन्दर काण्ड के ५५वें सर्ग के अनुसार हम देखते हैं कि लंका के अधिकांश महलों और भवनों को जलाकर छार कर देने और समुद्र में अपनी पूँछ बुझाने के बाद हनुमान् अत्यन्त शोकाकुल और पश्चात्ताप से युक्त है कि लंका को जलाने

के उत्साह और आवेश में मैंने इस भीषण व्यापक अग्निकाण्ड की आयोजना करके जो अशोक वन तक पहुँच चुका है सीता को भी अज्ञानता से मृत्यु मुख में पहुँचा दिया है। -इस प्रकार गहरी चिन्ताओं और अपशकुन की भावनाओं में डूबा हुआ वह फिर अशोक वन की ओर मुड़ चलता है, जहाँ से उसने इस विनाश कार्य को आरम्भ किया था। रास्ते में उसको शुभ शकुन दिखाई देते हैं जिनसे उसका ढाढ़स बंधता है और हृदय में उल्लास की तरगे उठने लगती हैं, और अन्त में जब वह सीता को पाहिले ही जैसे अशोक वनके शिंशुपा वृक्ष की छाया के नीचे सीता को बैठी देखता है तो वह हर्ष से फूला नहीं समाता और सामने आकर आनन्द-गद्गद कण्ठ से सीता को साष्टाग प्रणाम करता है।

यहाँ पिछले तक्षण की भांति, जिसमें हनुमान् की पहिली भेंट दर्शायी गई है, हमें सीता एक पत्थर के चबूतरे पर बैठी दिखाई देती हैं; उनका सिर शोक के कारण झुका हुआ है और एक हाथ घुटने और जघाओं पर उत्तान पड़ा हुआ है; चबूतरे के पीछे उनकी भक्ति-प्रवण सखी और विपत्ति की सगिनी, बिभीषण की पुत्री, त्रिजटा खड़ी है; वह किञ्चित् सीता की ओर झुकी हुई है, उसका एक हाथ चबूतरे पर और दूसरा हाथ जनक-नन्दिनी राम-भार्या सीता की पीठ पर

रक्खा हुआ है, मानो वह उसे थपथपा रही हो और आश्वासन दे रही हो। वृक्ष के उपरले भागों में पत्तों के बीच दो पक्षी बैठे दिखाई देते हैं, जिनमें से बाईं ओर का पक्षी सम्भवतः एक फूल के गुच्छे को चुंचिया रहा है। इस मण्डली के सामने वांई ओर हनुमान् बैठा दिखाई देता है; वह एक पैर और घुटना जमीन पर टिकाये झुका हुआ है और उसका दूसरा पैर उठा हुआ है, जैसा कि स्वामी से अनुग्रह की याचना करने में आज-कल भी दक्षिण भारत में रिवाज है। उसके पीछे से उसकी विशाल पूँछ उठी हुई है, जो लंका के विनाश का कारण थी, और वह स्वयं पुष्पाञ्जलि मुद्रा के ढंग से आदर और श्रद्धा के भाव से हाथ जोड़े हुए है, जैसा कि आज भी दक्षिण भारत में रिवाज है, अर्थात् जब कोई अब्राह्मण किसी ब्राह्मण प्रभु के पास किसी अनुग्रह के लिये उपस्थित होता है तो वह भी इसी तरह हाथ जोड़ता है।

अड़सठवां दृश्य

इसमें लंका से फेनिल और तूफानी मकरालय लवणोदधि के ऊपर हनुमान् की वापिसी उड़ान का प्रदर्शन है, जो भारतवर्ष के तट पर प्रतीक्षा करनेवाले अपने साथियों जाम्बवान्, अंगद

आदि से आ मिलता है। यह अड़तालीसवें दृश्य का थोड़ा बहुत अनुकरण ही जैसा है, जिसका पहिले वर्णन किया जा चुका है; केवल नाके, हनुमान् के नहाने आदि की एक दो बातों का यहाँ अभाव है।

उनहत्तरवाँ दृश्य

इसमें भी हनुमान् अपने साथियों के पास लौटता हुआ दर्शाया गया है, जो हिन्द महासागर के उत्तरी तट पर उसकी बाट जोह रहे थे। वाल्मीकीय रामायण के सुन्दर काण्ड के ५७वें सर्ग के अनुसार कथा इस प्रकार है,—

"भारतवर्ष को लौटते हुए एक बार फिर अपने हाथों से मैनाक पर्वत के शिखर को छूने के बाद हनुमान् मलय पर्वत के एक टीले पर कूदता है, जो उसके ज़ोर से गिरने के मार को न सह सकने के कारण फटकर छिन्न भिन्न हो जाता है, मानो किसी भूचाल के कारण वह धराशायी हो गया हो। बन्दर उत्सुकता और हर्ष-निर्भर हृदय से उसके चारों ओर इकट्ठे होते हैं, और उसके लिए फलफूल और कन्दमूल आदि भक्ष्य पदार्थों के उपहार लाते हैं, क्योंकि उसके वहाँ पहुँचने से पहिले ही उन्होंने उसके

उड़ान की ध्वनि से अनुमान कर लिया था कि हनुमान् अपने विक्रम में सफल-मनोरथ होकर लौट रहा है। हनुमान् जाम्बवान् अंगद और अन्य वानर नेताओं और बड़े बूढ़ों के पैरों में गिरता है और उनसे चहलपहल की आवभगत ग्रहण करने और बहुत संक्षेप में वानरों को यह कह सुनाने के बाद कि सीता मिल गई हैं, वह अंगद के साथ अपने पराक्रम के ब्यौरे को सुनाने के लिये राम के पास लौट चलता है।"

यहाँ इस आलेख्य में हम सबसे परे बांये छोर पर हनुमान् को खड़ा देखते हैं; उसकी सारी आकृति उकसाहट के कारण तनी हुई जैसी प्रतीत होती है। उसके सामने एक मोटा तुन्दिल योधा है, जिसके बाल वृद्धावस्था के कारण पक गये हैं और जो हनुमान् का स्वागत करने के लिये हाथ बढ़ाये हुए है। यह जाम्बवान् है; उसके पीछे दो वानर योधा हैं, जिनमें से एक दूसरे के हाथ को पकड़े हुए है और अपने दूसरे हाथ को अपने हर्ष और विस्मय को प्रगट करने के लिये उसके वक्षःस्थल पर रक्खे हुए है। शायद यह वानरों का युवराज, वालि का पुत्र, अंगद है, और दूसरा नल और नील में से कोई एक। हनुमान् और जाम्बवान् के बीच एक छोटा सा बन्दर खड़ा है, जो आदर से हनुमान् के पैर छू रहा है, और उसके मुख की ओर देख रहा है; इस सारे दृश्य से प्रगट होता है कि किस प्रकार

वानर-सेना के दक्षिणी दल ने, जो सीता की खोज में निकला था, हनुमान् का स्वागत किया।

सत्तरवाँ दृश्य

इस में हनुमान् को राम के पास आकर अपने काम की सफलता का समाचार सुनाते और सीता का पता देते और उनका सन्देश सुनाते दर्शाया गया है। वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड के पैंसठवें सर्ग में हम देखते हैं कि बंदरों ने आनन्दातिशय के कारण अपनी दुश्चेष्टाओं के वशीभूत होकर राजा सुग्रीव की अभीष्ट विनोदस्थली, अर्थात् उसके मधुवन, को उजाड़ दिया है और वहाँ से वे राम लक्ष्मण के सन्मुख उपस्थित किये गये हैं। राम को प्रणाम करने के बाद वे कहते हैं कि सीता का पता लग गया है और वे अभी तक रावण के अशोक वन में जीवित हैं। जब राम विशेष विवरण पूछते हैं तो सब हनुमान् को आगे खड़ा कर देते हैं और वह, उस दिशा को प्रणाम कर के जिसमें सीता थीं, अत्यधिक आदर और विनय से सारी घटनाओं को सुनाना आरम्भ करता है, किन्तु विनीतता के कारण उन घटनाओं को छोड़ देता है जिनमें उसने आत्मविक्रम दिखलाया था। यहाँ हम राम को एक ऊँचे चौपाल पर बैठे देखते हैं, जो एक

पेड़ से सटकर बना हुआ है, जो आकृति से आम का पेड जैसा लगता है। राम ठीक उसी ढंग से बैठे हुए हैं जिस ढंग से मुगल और हिन्दू फारसी चित्रों में बाबर और दूसरे मुगल सम्राटों को सिंहासनासीन दर्शाया गया है। एक हाथ को बढ़ कर वे जंघा पर रक्खे हुए है, और दूसरे हाथ को अभय-मुद्रा अर्थात् रक्षा का विश्वास दिलाने की हालत में उठाये हुए हैं। उनके पीछे उनका छोटा भाई और वनवास की विपत्ति का सखा भक्ति-प्रवण राजकुमार लक्ष्मण खड़ा है; वे भी अपने बड़े भाई की भाति मुकुट धारण किये और आभरणों से अलंकृत हैं। श्रीरामचन्द्र के सामने एक घुटना टेके और दूसरा ऊपर को उठाये और पुष्पाञ्जलि मुद्रा से हाथ जोड़े हनुमान् बैठा है, और अयोध्या के निर्वासित राजकुमार की दुःख-भागिनी धर्म-भार्या के साथ अपनी भेंट और उनके कुशल-समाचार और सन्देश की चर्चा कर रहा है।

इकहत्तरवां दृश्य

यहाँ हम वानर-नेताओं को समुद्र की ओर कूच करते देखते हैं, जो उनको लंका द्वीप से पृथक् किये हुए है। जब हनुमान् सारी कथा कह सुनाता है तो राम और लक्ष्मण सुग्रीव

से इस बात में सहमत होते हैं कि अब क्षण भर भी विलम्ब न करना चाहिए किन्तु सीधे लंका को चल कर सीता का उद्धार करना चाहिए । अतएव यहाँ हम वानरराज सुग्रीव के सामने एक बन्दर को कूच करते देखते हैं, जो सम्भवतः उसका परिचारक और पंखा झलने वाला है । उसके पीछे राजा सुग्रीव है, जिसके पीछे अंगद आ रहा है और अंगद के पीछे एक और वानर नेता, नल या नील, कूच कर रहा है ।

बहत्तरवां दृश्य

सम्भवतः इस में भी समुद्र की ओर वानर-सेना का प्रयाण दिखलाया गया है । सामने का व्यक्ति शायद हनुमान् और उसके पीछे का युवराज अंगद है; दोनों ही संकल्प-मुद्रा की हालत में अपने हाथों को उठाये कूच कर रहे हैं ।

तेहत्तरवां दृश्य

इस दृश्य में युवराज अंगद को फिर कूच करते दिखलाया गया है ।

चौहत्तरवां दृश्य

इसमें राजा सुग्रीव और उसके पीछे पीछे हनुमान् को कूच करते दिखलाया गया हैं। दोनों ही अपनी हथेलियों को संकल्प-मुद्रा की हालत में बट कर उठाये हुए हैं।

पचत्तरवां दृश्य

इस दृश्य में एक दूसरे के ऊपर दो बन्दर दर्शाये गये हैं, जो अपने कन्धों पर डण्डों के सहारे खाद्य पदार्थों के टोकरों को लटकाये लिये जा रहे हैं; उपरला बन्दर सम्भवतः अपनी वृद्धा-वस्था और उन चीजों के भार से झुका हुआ दिखाई देता है जिन्हें वह लिये जा रहा है।

छहत्तरवां खण्ड

इसमें सम्भवतः आगे आगे राजकुमार लक्ष्मण को कूच करते दिखलाया गया है; उनके पीछे उनके बड़े भाई श्रीरामचन्द्र हैं। दोनों समुद्र पर पुल बांधने के लिए जा रहे हैं।

सतत्तरवां दृश्य

इसमें बन्दर सेतुबन्ध के लिये चट्टानों और शैलखण्डों को ले जाते दिखलाये गये हैं। आलेख्य के सबसे परे बांई ओर हमें

एक शक्तिशाली वानर सरदार, सम्भवतः अंगद, अपने कन्धों और हथेलियों पर एक छोटी पहाड़ी को तुलाकर लिये जाते दिखाई देता है, जिस पर शैल-खण्ड ऊपर को उठे हुए हैं। उसकी दाहिनी ओर एक और बूढ़ा व्यक्ति है, जो अपनी वृद्धावस्था और उस चट्टान के कारण जिसे वह ले जा रहा है झुका हुआ है। उसके सामने एक और तरुण और चुस्त बन्दर है, जो अपने वक्षःस्थल पर अपने हाथों से एक चट्टान के टुकड़े को थामे हुए है, जबकि उसके नीचे एक और बन्दर किसी शैल खण्ड को रस्सियों पर बांधकर लिये जा रहा है, जो उसके कन्धे पर तुला हुआ है। इस मण्डली के नीचे एक और बन्दर एक विशाल चट्टान को उखाड़ने की चेष्टा कर रहा है, जिसमें सम्भवतः वह एक लम्बे काष्ठ खण्ड से सब्बल का काम ले रहा है। पहिले बन्दर के पैरों पर अथवा उसके तले जो एक ठेले पर किसी पहाड़ के हरे भरे पार्श्व को लिए जा रहा है, हम एक और छोटे बन्दर को बैठा देखते हैं, जो अपने पैरों और हाथों से किसी चट्टान को उखाड़ने की चेष्टा कर रहा है।

अठहत्तरवां दृश्य

यहाँ हम श्यामायमान महासागर को तीन तीन मील लम्बी लहरों की पूर्ण भव्यता में प्रदर्शित देखते हैं, जो भाँति भाँति के

जल जन्तुओं से भरे हुए समुद्री चट्टानों पर टकराती और गर्जना करती हुई जैसी प्रतीत होती हैं। समुद्र के वक्षःस्थल पर हम दो वानर योधाओं को खड़ा देखते हैं, जिनमें से सामने का व्यक्ति अपने विशाल वक्षःस्थल पर दोनों हाथों से एक भारी शैल-खण्ड को तुलाये हुए है, जिसको सम्भवतः वह झुलाकर ठीक स्थान पर रखना चाहता है। शायद यह वानरराज सुग्रीव है। उसके पीछे एक और अधिक भारी शैल-खण्ड को अपने हाथों से थामे और अपने कन्धे पर तुलाये हुए एक और वीर दर्शाया गया है, जिसकी आकृति किसी बैठे हुए बन्दर की विलक्षण धुँधली आकृति-रेखाओं से मिलती जुलती है, जो नारियल का एक टुकड़ा लेकर दांतों से काट रहा है; वह सेतुबन्ध के लिए निर्माण सामग्री लाने में सुग्रीव को सहायता दे रहा है, और उसके रूप से ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्वयं पवन-पुत्र हनुमान् है।

उनासीवां दृश्य

इस दृश्य में हम देखते हैं कि विश्वकर्मा के पुत्र नल के द्वारा बनाये गये पुल से समुद्र को पार करके वानर-सेना लंका में पहुँच गई है। यहाँ हमें वानर-दलों के पांच प्रधान सेनानी, तीन एक पंक्ति में और दो एक पंक्ति में कूच करते दिखाई देते हैं। अतएव

अगली पांक्ति में सम्भवतः हम हनुमान् को पहचान सकते हैं, जो सबसे परले छोर पर है। उसके पीछे सम्भवतः सुग्रीव है, और सुग्रीव के पीछे वालि का पुत्र युवराज अंगद । उपरली पंक्ति में शायद वानर-दलों का महासेनाध्यक्ष नल है, और उसके पीछे वानरों का स्थपति नील, जिसने समुद्र पर पुल बाधने की आयोजना की थी। इस मण्डली के ऊपर वही साधारण ऊटपटाग पनतारनी सजावटें हैं।

अस्सीवां दृश्य

इसमें वानर सेना लंका को ढाहने और रावण को सीधा करने के लिये कूच करती हुई दिखलाई गई है । सबसे परे दाहिनी ओर का व्यक्ति शायद वानर-राज सुग्रीव है, और उसके पीछे का व्यक्ति पवन-पुत्र हनुमान्। दोनों अपनी हथेलियों को संकल्प मुद्रा की हालत में उठाये हुए हैं। उनके सिर के ऊपर वही साधारण सजावटें दिखाई देती हैं, जो यहाँ उनके प्रयाण में बाधाएँ जैसी प्रतीत होती है।

एकासीवां दृश्य

इस में राम और लक्ष्मण लंका को कूच करते दिखलाये गये हैं, और यद्यपि वाल्मीकीय रामायण के युद्ध काण्ड के अनुसार वे

सेना के अग्र भाग का सञ्चालन करते हैं तथापि यहाँ उनके हाथों में उनके विशाल धनुष नहीं हैं और वे दूसरे लोगों के समान कूच कर रहे हैं। साधारण सजावटें, जो सम्भवतः रूढि के अनुसार कल्पित वृक्षों और चट्टानों की बनावट को उपलक्षित करती हैं और जिनसे भूमि की चट्टीली और बीहड़ प्रकृति का परिचय मिलता है, इन वीरों के सामने और पीछे दर्शाई गई हैं। राम के सिर के ऊपर का ऊटपटांग आभरण किसी किरीट मुकुट या सिंह-वक्त्र के आकार का है, जब कि लक्ष्मण के सिर के ऊपर का अलंकरण किसी फण्टते हुए व्याल की धुंधली आकृति से मिलता जुलता है, जिससे दक्षिण भारतीय मन्दिर वास्तुकला के विद्वान् परिचित हैं।

बयासीवां दृश्य

इसमें सम्भवतः वानरसेना लंका के अन्दर कूच करती हुई दिखलाई गई है, क्योंकि इस समुदाय के सामने दूर पर एक राक्षसी महल के बाहरी भाग के विशाल अवयव दृष्टिगोचर होते हैं। इस मण्डली का सबसे निचला व्यक्ति एक छोटा सा बन्दर है, जो अपने से अधिक शोभन आकृति के दो और बन्दरों के बीच हाथ पैर टेक कर कूच कर रहा है; इन दोनों के कन्धों पर एक लट्ठ के बीच से एक घड़ियाल लटक रहा है।

लट्ठ के आकार और मध्यवर्ती भाग के झुकाव से प्रतीत होता है कि वह बांस का बना हुआ है । घड़ियाल की दूसरी ओर एक वन्दर अपने कन्धे पर बाणों से भरे हुए तरकस को लिये जा रहा है, जो राम अथवा लक्ष्मण का होगा, क्योंकि वाल्मीकि के अनुसार इस मिश्रित सेना के अन्य लोग केवल उन हथियारों से सज्जित थे जो उनको प्रकृति से प्राप्त हुए थे, अर्थात् उनके दान्त और नाखून (दन्त-नखायुधाः) । इस वन्दर के ऊपर की एक और पंक्ति, जिसमें इसी तरह के चार वीर विद्यमान हैं सम्भवतः शङ्ख, चक्र आदि, युद्ध के निशानों को लिये जा रही है, जो लम्बे डण्डों पर मढ़े और खचित किये गये हैं, अथवा शायद ये वे आनुसंगिक ध्वजाएँ हैं जो लकड़ी पर उनके स्थपति विश्वकर्मा के पुत्र नल से खोदी गई थी । सबसे परे बांये छोर का अन्तिम व्यक्ति किसी चीज को लिये जा रहा है, जो निश्चित रूप से नहीं पहचानी जा सकती और जिसका ज्ञान केवल उन्हीं लोगों को हो सकता है जो मागाफैट काल के जावा के युद्धशस्त्रों से से अभिज्ञ है ।

तिरासीवां दृश्य

इसमें भी वानर सेना की लड़ाई की तय्यारियां दर्शाई गई हैं । सामने के दो बंदर अपने हाथों में लम्बे डण्डे लिये जा रहे

हैं, जिनके सिरों पर गोटे और जरी के किनारोंवाली दो काफी बड़ी पताकाएँ फहरा रही हैं, जब कि उनके पीछे का तीसरा बन्दर अपने हाथ में एक बसूला और सम्भवतः एक छोटी सी झंडी लिये है। कूच करते हुए व्यक्तियों के पीछे सम्भवतः एक भवन दर्शाया गया है, जिसके पास से वे गुजरे हैं।

एक और खण्ड पर सम्भवतः पिछले दृश्य का ही एक परिशेष दर्शाया गया है। यहाँ हम सुग्रीव को त्रिकूट पर्वत की एक गुफा के आश्रय में देखते हैं, जिसके शिखर पर लंका बसी हुई थी। उसके पीछे उसका प्रसिद्ध परिचारक है, जिसके हाथ में कोई ऐसी चीज है जो विशीर्णता के कारण पहिचानी नहीं जा सकती, और दूसरे हाथ में एक छाता जैसा है जो सम्भवतः पत्तों का बना हुआ है, जैसे कि आज भी दक्षिण भारत में बनाये जाते हैं। इन दोनों के ऊपर, जो सम्भवतः इस पहाड़ की कन्दराओं और सुरंगों से कूच करते जा रहे हैं, दो और बन्दर दर्शाये गये हैं, जो किसी फल के पेड़ से फलों के गुच्छों का, सम्भवतः इन चट्टानों पर उगनेवाले आम के फलों का, आहार कर रहे हैं, और जिनके शरीरों पर कोई वस्त्र नहीं हैं।

चौरासीवां दृश्य

सम्भवतः इस दृश्य में एक टीले पर बैठे हुए दो वानर

नेता दर्शाये गये हैं, जो इस सुविधा के स्थान से शत्रु की समर-स्थलियों को देख रहे हैं। उपरला व्यक्ति शायद हनुमान् है, और उससे नीचे का उसका गाढ़ा मित्र युवराज अंगद।

पचासीवां दृश्य

यह पिछले पटल का परिशेष-मात्र है, और इसका विषय भी वही है अर्थात् वानर सेनानी एक टीले से शत्रु के समरस्थलों का पर्यवेक्षण कर रहे हैं। किन्तु यहाँ सबसे उपरला व्यक्ति सम्भवतः स्वयं वानरराज सुग्रीव है, जो रावण को ऐसी शिक्षा देने के लिये इच्छुक है जिसको वह कभी न भूले। शायद वह सोच रहा है कि इस सीता के हरनेवाले राक्षसाधम को ऐसी शिक्षा देने का सबसे अच्छा ढंग क्या हो सकता है। युद्ध काण्ड के चालीसवें सर्ग में हम उसे रावण के सिर के ऊपर उड़ने और मुकुट-हीन करते देखते हैं। सुग्रीव के नीचे का व्यक्ति सम्भवतः ऋक्ष-राज जाम्बवान् है, और उससे नीचे का व्यक्ति वानरदल का महासेनाध्यक्ष नील है।

छयासीवां दृश्य

इस दृश्य में हनुमान् और सुग्रीव राम के सन्मुख अपने शिविर में बैठे दिखाये गये हैं, जो अगले पटल का विषय है।

इसमें हम हनुमान् को दाहिनी ओर सामने अपने हाथों को अपने पेट से बटे हुए बैठा देखते हैं, जैसा कि आजकल भी मालाबार के लोगों में देखा जा सकता है और जिससे अपने प्रभु की आज्ञा को मानने की तत्परता और उसके प्रति आदर भाव सूचित होता है। सुग्रीव हनुमान् के पीछे बैठा है, और राम का मित्र होने से वह अधिक गौरवमय अवस्थिति से बैठा हुआ है। ये दोनों ही वीर इस पेड़ की छाया में बैठे हैं, जिसकी सबसे उपरली शाखा पर दो पक्षी सम्भवतः पुंस्कोकिल और कोकिला किसी चीज को, शायद आम की नई मञ्जरी को, चुंचियाते दर्शाये गये हैं, जिसे संस्कृत कवियों के वर्णन के अनुसार वे बड़े चाव से खाते हैं। इन दोनों वीरों के सामने एक एक गोल तश्तरी रक्खी हुई है, जिस पर कोई खाद्य पदार्थ, सम्भवतः कन्द मूल फल, रक्खे हुए हैं। हनुमान् के सामने और सुग्रीव के पीछे दो बंदर बैठे हैं, जो शायद उनके परिचारक अथवा सैन्य-दलों के अध्यक्ष हैं।

सतासीवां दृश्य

यह पिछले पटल का परिशेष है। यहाँ हम पच्ची किये हुए चबूतरे पर, जिसके पीछे से एक आम का पेड़ उग रहा है जिसकी शाखाओं में दो पक्षी एक दूसरे को प्रेम से देख रहे हैं,

चरित्र-नायक राम को अपने अपूर्व प्रताप और महानुभावता की स्थिति में बैठे देखते हैं; उनका एक हाथ उनके अङ्क में है और दूसरे हाथ में कोई ऐसी चीज है जो लोहे की लेखनी जैसी लगती है, जिसै दक्षिण भारत और मालाबार में ताड़ के पत्तों की पुस्तकों को लिखने में प्रयुक्त किया जाता है। उनके सामने तीन दौनों में खाद्य पदार्थ रक्खे हुए हैं, और उनके पीछे जमीन पर उनका भक्तिप्रवण भाई राजकुमार लक्ष्मण खड़ा है। नीचे लक्ष्मण के पैरों की बराबरी पर तीन बन्दर बैठे हैं; बांई ओर सबसे प्रथम बन्दर के हाथ में कोई प्राचीन काल की वीणा अथवा एकतारा है और शायद वह राम को सङ्गीत सुना रहा है, जब कि वे अपना भोजन कर रहे हैं। दूसरा बन्दर अपने हाथों में सावधानी से एक पानदान जैसा लिये हुए है और उसे अपनी छाती से लगाये हुए है। उससे परे पीछे को दाहिनी ओर तीसरा बंदर बैठा हुआ है, जो अपने हाथों से छाती से थूकदान लगाये हुए है, जिसका आकार और प्रयोग वैसा ही है जैसा दक्षिण में, और जिसे आजकल मालाबार में कोलम्बी कहते हैं और जो प्रत्येक साफ सुथरे भव्य नायर घर में पलंग के नीचे देखा जा सकता है।

अठासीवां दृश्य

इसमें वानर सेनानी युद्ध के लिए कूच करते दर्शाये गये हैं।

प्रत्येक के हाथ में एक एक बड़ी चौड़ी और नंगी तलवार है। उनके पीछे तीन साधारण वानर सैनिक कूच कर रहे हैं, जिन में से दो अपनी अपनी शक्ति के अनुरूप तलवार लिये जा रहे हैं, जबकि सबसे ऊपर और परे बांये छोर के बंदर के हाथ में कोई तलवार नहीं है। तीन वीर, जो एक दूसरे के पीछे एक ही पंक्ति में कूच कर रहे हैं, सम्भवतः हनुमान्, सुग्रीव और युवराज अंगद हैं। उनके सिरों के ऊपर वही साधारण ऊट-पटांग पनतारनी सजावटें हैं, जिनमें शैल-खण्ड और चट्टान सुन्दर नैसर्गिक ढंग से प्रदर्शि किये गये हैं।

उनन्वेवां दृश्य

यह पिछले पटल का परिशेष है, अथवा लंका में वानर जीवन के उसी पार्श्व को अर्थात् रणक्षेत्र में कूच करने की घटना को दर्शाता है। सामने हम वानर सेना के महासेनाध्यक्ष नल को देखते हैं। उसके पास एक लम्बी तलवार है, जो बीच में तंग और दोनों छोरों की ओर चौड़ी है और जिसको वह बेंट से पकड़े हुए है। वह पीछे को मुड़कर अपने वानर सैनिकों को आज्ञाएँ दे रहा है, जिनमें से चार उसके पीछे एक दूसरे के ऊपर प्रदर्शित किये गये हैं और सम्भवतः उसकी आज्ञाओं को अत्यधिक आदर-भाव से ग्रहण कर रहे हैं।

नव्वेवां दृश्य

यह खण्ड और ६१वा और ६३वा खण्ड एक ही दृश्य को प्रदर्शित करते हैं। ये तीनों परस्पर सम्बद्ध हैं और एक दूसरे के परिशेष कहे जा सकते हैं। इनमें विकराल वेष-धारी और प्रतापी रावण को दरबार में बैठे और समर-मंत्रणा करते अथवा लंका को बचाने और शत्रु को परास्त करने की युक्तियों पर वादविवाद करते दर्शाया गया है, जिसका वर्णन युद्धकाण्ड के १२वें और उससे अगले सर्गों में किया गया है।

नव्वेवें खण्ड में सम्भवतः रावण के प्रमुख समराध्यक्ष महोदर और महापार्श्व दर्शाये गये हैं। वे राक्षस-राज के पीछे आसीन हैं, जब कि उनके पीछे सम्भवतः रावण के दो प्रधान जासूस हैं, जिनमें से एक अर्थात् शरण बैठा हुआ है और दूसरा अर्थात् शुक खड़ा है।

इकानव्वेवां दृश्य

इस खण्ड में रावण सिंहासन पर बैठा युद्ध मंत्रणा करते दिखाया गया है। उसके पीछे उसका पुत्र समरविजयी इन्द्रजित् है, जब कि सम्राट् के नीचे उसके तमोली आदि निजी परि-

चारक हैं, जो जावा के पनकवनों की भाँति सदा चरित्र-नायक के साथ प्रदर्शित हैं।

बयानव्वेवां दृश्य

यह मण्डली सम्राट् के सिंहासन के सामने स्थित है। उनमें से कुछ व्यक्ति बैठे हुए हैं और कुछ खड़े हैं। उनकी संख्या लगभग आधा दर्जन है और एक आसीन व्यक्ति को छोड़ कर सब के सब तलवारों से सजे हुए हैं और युद्ध के लिये टूट पड़ने को तय्यार हैं। आसीन व्यक्ति हाथ जोड़ कर बड़ी नम्रता से अपने साथियों के कानों पर कुछ कह रहा है। यह सम्भवतः राक्षस सैन्यदल का समराध्यक्ष प्रहस्त है, जो सदा ही युद्ध के लिये प्रबल प्रेरणा करता था। उसके पीछे खड़ा हुआ दढ़ियल व्यक्ति सम्भवतः रावण का जनरल महापार्श्व है, जो शायद अपने साथी समराध्यक्ष और प्रभु के प्रस्तावों को स्वीकृति और हर्ष से सुन रहा है और स्वयं सम्मति देने के लिये उत्सुक है, जिसका वर्णन वाल्मीकीय रामायण के युद्ध काण्ड के १३वें सर्ग में किया गया है।

तिरानब्वेवां दृश्य

इस खण्ड में और इससे अगले दो खण्डों में रावण की सेना राम और सुग्रीव की वानर सेना से जूझने के लिये कूच करती दिखाई गई है।

यहाँ रावण की सेनाओं के छः प्रधान सेनाध्यक्ष तीन तीन की पंक्तियों में रणक्षेत्र को कूच करते दर्शाये गये हैं। सबसे पहिला व्यक्ति अर्थात् सबसे परे दाहिने छोर का व्यक्ति शायद रावण की पाप-प्रतिभा प्रहस्त है; यह वह जनरल है जो सदा ही रावण को युद्ध के लिये प्रोत्साहित करता रहता था। वह एक हाथ से मुक्का उठाये हुए है और उसके दूसरे हाथ में एक बड़ी नंगी सीधी और चौड़ी तलवार है। उससे पीछे का व्यक्ति शायद देवान्तक है; प्रहस्त की तरह वह भी एक खोपड़ी को कर्णावतंस की जगह पहिने हुए है। उससे पीछे का व्यक्ति अर्थात् सबसे परे बांई ओर का व्यक्ति, जिसके पास एक लम्बी दूज के चन्द्रमा की तरह मुड़ी हुई जैसी तलवार है, अपने पेट के परिमाण से और वाल्मीकीय रामायण में उसका जो विशेष वर्णन दिया गया है उसके अनुसार महोदर जैसा लगता है।

चौरानब्वेवां खण्ड

इसमें रावण के सैन्यदलों के सेनानी दो दो की पंक्तियों में रणक्षेत्र को कूच करते दिखाये गये हैं । सबसे परे बांई ओर निचली पंक्ति का व्यक्ति, जिसकी नाक कुछ कदर विशीर्ण हो गई है, एक डण्डा लिये जा रहा है जिसके छोर पर दूज के चाँद की आकृति का एक तेज नुकीला शस्त्र लगा हुआ है, जो शायद अर्द्धचन्द्र नाराच नाम से विख्यात हथियार है । सामने अथवा उसकी दाहिनी ओर के व्यक्ति के हाथ में एक लम्बा भाला है, जबकि उपरले दो व्यक्तियों में से दाहिने ओर के व्यक्ति के एक हाथ में एक झंडी है और दूसरे हाथ में कोई ऐसी चीज है जो पहचानी नहीं जा सकती, और उसका साथी एक हाथ से मुक्का उठाये है और उसके दूसरे हाथ में पुराने जमाने की एक विलक्षण आकार की तलवार है ।

पचानब्वेवां दृश्य

इस दृश्य में दानव सेना के साधारण सैनिक दर्शाये गये हैं। इन सबकी आकृति से भिन्न भिन्न प्रकार की कुरूपता झलकती है और साधारणतया सब नंगे हैं। इस मण्डली का सबसे नीचे का खड़ा हुआ व्यक्ति नंगा है, उसके कान लम्बे, फैले हुए और छिदे हुए हैं, उसकी आँखें कटे हुए अण्डे जैसी, मैली और

बाहर को निकली हुई हैं; उसके गले में स्नायुओं का एक आभरण है, उसके एक हाथ में एक मज़बूत डण्डा है और दूसरा हाथ पार्श्व से सटकर लगा हुआ है। उसके ऊपर किञ्चित् बाईं ओर को हटकर उस ही जैसा एक और भयावना व्यक्ति है, जिसके केश अग्नि की लपट जैसे लगते है जिनसे भाप निकलती प्रतीत होती है; उसके एक हाथ में एक बसूला है, जो आजकल भी दक्षिण भारत में, विशेष करके कच्चे नारियलों का छिलका निकालने में प्रचुरता से, प्रयुक्त होता है। उसकी दाहिनी ओर और उसके ऊपर भी दो और व्यक्ति हैं, जिनकी आकृति से वैसा ही जंगलीपन झलकता है और जिनके आभरण भी वैसे ही हैं।

छयानब्वेवां दृश्य

इस दृश्य में और इससे अगले आठ दृश्यों में युद्ध की भिन्न भिन्न घटनाएँ दर्शाई गई हैं, जिनके साथ पनतरन मन्दिर के रामायणीय तक्षणों के दृश्य समाप्त हो जाते हैं।

यहाँ लंका के रण-क्षेत्र का एक दृश्य अथवा राक्षसों और वानरों का एक संग्राम दर्शाया गया है। यह दृश्य चार भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रत्येक भाग में देखने योग्य बात

यह है कि किसी एक राक्षस पर कोई एक बन्दर या बंदरों का समुदाय आक्रमण करते दिखलाया गया है । इस प्रकार पटल के सबसे निचले भाग में हम एक नगे राक्षस को अपने हाथ में एक छोटा और चौड़ा आम के जैसे आकार का एक बसूला देखते हैं; उसके पैर आलीढ मुद्रा की हालत में जैसे आधा झुके हुए प्रतीत होते हैं, और सम्भवतः वह रण-क्षेत्र से भागने को है । उसके ठीक सामने एक बन्दर उसके ऊपर चढ़ रहा है, मानो वह कोई नारियल का वृक्ष हो । अपने एक पंजे से उसने राक्षस के उस हाथ को मजबूती से पकड़ लिया है जिस पर बसूला है और इस प्रकार उसके हथियार को निष्फल कर दिया है। उसकी दूसरी टाग शायद दूसरे पार्श्व में है और इस प्रकार वह अपनी शिकार को मजबूती से ऐंठे हुए है और राक्षस के मर्म-स्थलों पर प्रहार करने के लिये अपनी पूँछ को झुला रहा है; उसके नितम्ब कुछ अंश में उसके हृष्ट-पुष्ट उदर पर और कुछ अंश में उसकी जंघाओं पर टिके हुए हैं । इस प्रकार अपने दोनों हाथों के खाली होने से वह इस दानव के कानों को, उखाड़ रहा है, सम्भवतः उसके पहिले ही से फटे हुए और फैले हुए कानों का एक टुकड़ा फाड़ रहा है । इन योधाओं की बाईं ओर एक राक्षस, शायद कोई अफसर, खड़ा है; वह वस्त्र पहिने हुए है, उसके कानों में एक खोपड़ी आभूषण का काम

दे रही है और उसके केश उद्विग्न हुई साही के कांटों की तरह खड़े और सीधे हैं; उसके एक हाथ में तलवार है और दूसरे हाथ से वह एक बन्दर की गर्दन पकड़े हुए है जिसे छुड़ाने की चेष्टा में बन्दर उसकी बाँह पर पंजे मार रहा है। उसकी चन्द्र-कला जैसी टेढी गौदुम तलवार बन्दर की खोपड़ी पर प्रहार करने के लिये उसके हाथों में तय्यार है। इस युग्म के सामने दाहिनी ओर तीसरा समुदाय है, जिसमें हमें एक राक्षस बन्दरों के मिले हुए आक्रमण के विरुद्ध वीरता से जूझते दिखाई देता है। एक बंदर, जो प्रत्यक्षतया उसकी जंघाओं पर टिका हुआ है, उसके पार्श्व से एक बड़ा मांस-खण्ड नोचने की कोशिश कर रहा है; राक्षस अपने एक हाथ से उसके मुँह को मरोड़ कर अपने आप को बचाने की चेष्टा कर रहा है। एक और बन्दर उसके कण्ठ पर चढ़ गया है, और अपने हाथों से उसका गला घोंटने का प्रयत्न कर रहा है, और साथ ही उसके चेहरे से एक मांस का टुकड़ा नोचने अथवा अपने दांतों से उसकी एक आँख को निकालने की कोशिश कर रहा है। एक और बंदर उसके बायें हाथ से एक बसूले जैसे हथियार को छीन रहा है, अथवा अपने साथी बन्दर का बदला लेने की कोशिश कर रहा है जिसके चेहरे को शायद राक्षस अपने इस हथियार से काट रहा है। चौथे समुदाय में पटल के सिरे पर हम एक राक्षस को खड़ा

देखते हैं, जो अपने साथी देशभक्तों को बचाने के लिये रणक्षेत्र में कूदने को तय्यार है, और जिसके विरुद्ध दूर पर एक बन्दर आक्रमण करने के लिये दौड़ता हुआ नजर आता है।

सतानब्वेवां दृश्य

यह भी लड़ाई के दृश्य का प्रदर्शन है, जो सुविधा के लिये दो समुदायों में विभक्त किया जा सकता है। पहिले अथवा सबसे निचले समुदाय में हमें एक राक्षस दिखाई देता है जो घुटनों और अपनी एक कुहनी के बल चित पड़ा हुआ है, जहाँ उसे किसी बंदर ने उसके ऊपर कूद कर पटक डाला है, जो अब उसके बालों को पकड़े हुए है और एक हाथ से उन्हें उखाड़ रहा है और दूसरे हाथ से राक्षस को दबाये हुए है, जिससे वह अपने पार्श्व पर पड़े हुए हाथ को न छुड़ा सके। दूसरे समुदाय में हमें इसी तरह एक और नंगा राक्षस दिखाई देता है, किन्तु वह खड़ा है, उसके लम्बे बाल उसकी पीठ के पीछे झूल रहे हैं, उसके कान फटे हुए हैं और आँखें झरोखों की तरह बड़ी हैं; वह अपने दोनों हाथों से एक तरुण बन्दर को ऐंठे हुए है, जो उसके वक्षःस्थल पर है और जिसके सिर को वह अपने आहार के लिए अपनी पैनी दाढ़ों से काट रहा है।

अठानब्बेवां दृश्य

यहाँ भी एक लड़ाई का दृश्य दर्शाया गया है, जिसमें एक राक्षस सेनानी मुण्डमाला पहिने, साफ सुथरे वस्त्र धारण किये और हाथ में एक बसूला जैसा हथियार लिये खड़ा है; उस पर एक वानर सेनानी टूट पड़ा है, जो निःसन्देह उस पर ऊपर से कूदा होगा। यह वानर-सेनानी अपने एक हाथ से उसकी भुजा पर बड़े कठोर घूंसे लगा रहा है, और दूसरे हाथ से राक्षस को उसके केश पकड़ कर झकझोर रहा है, जिससे दैत्य का गला मुरक कर बन्दर की ओर मुड़ गया है।

निनानब्बेवां दृश्य

यहाँ संग्राम के दृश्य की एक आख्यायिका दर्शाई गई है, जिसमें वालि के पुत्र अंगद ने वज्रदंष्ट्र राक्षस को मार डाला है और जिसका वाल्मीकीय रामायण के युद्ध काण्ड के ५४ वें सर्ग में बड़ा अच्छा वर्णन किया गया है । अतएव हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत तक्षण का आधार युद्ध काण्ड का ३५वां श्लोक है (निर्मलेन शुद्धान्तेन खड्गेनास्य महच्छिरः, जघान वज्रदंष्ट्रस्य वालिसूनुर्महाबलः)।

यहाँ हम राक्षस सेनानी वज्रदंष्ट्र को हाथ में तलवार लिये

और गले में मुण्डमाला पहिने धरती पर बैठा देखते हैं; उसके बाल बिखरे हुए पीछे की ओर मूल रहे हैं, और दूसरे हाथ से वह अपने गले से अंगद की पाप जैसी पकड़ को छुड़ाने की कोशिश कर रहा है । समरवीर अंगद अपने नीचे पड़े हुए प्रतिस्पर्धी पर पैर रक्खे खड़ा है, और हाथ से अपने विशाल खड्ग को उठाये हुए है, जो वाल्मीकि के अनुसार वज्रदंष्ट्र के विशाल सिर पर गिर कर उसके दो टुकड़े कर डालता है और उसे सीधे यमसदन को भेज देता है । इस हत्याकाण्ड की रंगस्थली से हम दो राक्षसों को जान बचा कर पूर्ण वेग से भागते देखते हैं ।

---

१०० वां दृश्य

इसमें लंका की लड़ाई का एक दृश्य दिखाया गया है, जिसका वर्णन वाल्मीकीय रामायण के युद्ध काण्ड में मिलता है, जिसमें हनुमान् एक राक्षस सेनानी को मार कर यमलोक को भेज देता है । चूँकि हनुमान् ने अनेकों राक्षस मारे अथवा तत्काल उखाड़े हुए पेड़ों से उनके सिरों को चूरमूर कर या उन पर विशाल शैल-खण्ड फेंक कर मौत के घाट उतारा है, यह कहना सम्भव नहीं कि यहाँ उसने किस सेनानी को मारा है । शायद यह रावण के त्रिशिरा जैसे विख्यात जनरलों में से कोई एक है । यहाँ हमें एक राक्षस सेनानी अपनी कुहनी के बल धरती पर

लेटा हुआ दिखाई देता है; उसके गले में खोपड़ियों की माला है, और एक हाथ में, जो ऊपर को उठा हुआ है, वह एक लम्बी और चौड़ी तलवार को बेंट से पकड़े हुए है। एक पैर से उसके तने हुए पाँव को दबाये हनुमान् उसके ऊपर चढ़ा हुआ दिखाई देता है, जो अपने एक हाथ से राक्षस के उस हाथ को पकड़ हुए है जिसमें तलवार है। इस प्रकार उसको अशक्त करके हनुमान् अपने एक हाथ में एक विलक्षण लम्बे और भारी हथियार को लिये हुए है, जिससे निःसन्देह वह भीषण वेग से राक्षस की खोपड़ी पर गिरा कर उसके दो टुकड़े कर के उसे मृत्यु के मुख में ढकेलना चाहता है। हनुमान् से कुछ ऊपर दो और बन्दर दो राक्षसों को खदड़ते दिखाई देते हैं, जो रण-क्षेत्र से भागे जा रहे हैं।

---

१०१ वां दृश्य

इसमें सम्भवतः सुग्रीव के द्वारा रावण के महोदर नामी समराध्यक्ष का बध दिखलाया गया है, जो वाल्मीकीय रामायण के युद्ध काण्ड के ६८ वें सर्ग में बहुत ही हृदयंगम ढंग से वर्णन किया गया है, और शायद जिसका विषय इसी सर्ग के ३३–३५ सर्गों से लिया गया है। यहाँ हमें सबसे परे बांई ओर एक छोटा सा बन्दर हर्ष विस्मय और भय से, एक हाथ को

ऊपर उठायें दिखाई देता है । इस समुदाय का केन्द्रस्थ व्यक्ति, राक्षस समराध्यक्ष महोदर, अपने एक घुटने के बल धरती पर बैठा हुआ है, और स्वयं अपने ही किसी अनुचर को जमीन पर दाबे चूरमूर करने की चेष्टा कर रहा है, जो अपने आप को छुड़ाने की कोशिश कर रहा है । सेनाध्यक्ष के गले में मुण्ड-माला है, और एक खोपड़ी उसके कर्णावतंस का काम दे रही है । उसको जमीन पर पटक कर सुग्रीव अपनी एक टांग इस धराशायी दानव के पार्श्व पर रक्खे हुए है, और एक हाथ से उसके गले और कान को दृढ़ता से पकड़ कर मरोड़ रहा है, जब कि उसके दूसरे हाथ में एक नंगी तलवार उठी हुई है जो राक्षस के शरीर को छेदनेवाली है । इसके चारों ओर हमें वन्दर राक्षसों को खदेड़ते दिखाई देते हैं, जो पूर्ण वेग से भागे जा रहे हैं और जिनके कन्धों पर वे पंजे मार रहे है या उनके लम्बे झूलते हुए बालों से उनको पकड़ कर घायल कर रहे हैं और खिझा रहे हैं ।

---

१०२ और १०३ वां दृश्य

इन दो दृश्यों में राजकुमार लक्ष्मण, हनुमान् और एक सेनाध्यक्ष, सम्भवतः जाम्बवान्, को राक्षसी मांस के पहाड़-जैसे ढेर, रावण के सहोदर, कुम्भकर्ण के विरुद्ध युद्ध करते दिखलाया

गया है, जो कद में अन्य सब राक्षसों से बड़ा था।

पहले दृश्य में हम लक्ष्मण को आलीढ मुद्रा अर्थात् लक्ष्य-वेध की हालत में खड़ा देखते हैं। उनके दाहिने हाथ पर उनका विख्यात धनुष है और बांये हाथ पर एक और अस्त्र है, जिसको वे कुम्भकर्ण के विशाल वक्षःस्थल पर फेंकने को हैं, जिस पर कोई भी निशाना नहीं चूक सकता। लक्ष्मण से कुछ ऊपर किञ्चित् उठी हुई भूमि पर हनुमान् भी लक्ष्य-वेध की हालत में खड़ा है; उसका दाहिना हाथ बढ़ा हुआ है और बांये हाथ में वही विलक्षण शस्त्र है जिससे उसने त्रिशिरा की खोपड़ी फोड़ी थी। इन दोनों के मध्य में जाम्बवान् है; वह भी, लोहे की विशाल गदा जैसे शस्त्र को लेकर, युद्ध के यश का भागी होने के लिए आगे बढ़ रहा है।

दूसरे दृश्य में कुम्भकर्ण धरती पर घुटना टेके दिखलाया गया है। उसके गले में मुण्डमाला है और कानों पर मनुष्यों की खोपड़ियां लटक रही हैं। सबसे परे बांये छोर पर, उसके बांये घुटने के पास, एक बंदर अत्यधिक आतंक से भागा जा रहा है; उसका ठिठका हुआ शरीर और मुख सुन्दर स्वाभाविक ढंग से उसके भय को प्रदर्शित कर रहे हैं। दैत्य के सिर के ऊपर से वानर सेनाध्यक्ष नील किसी पेड़ के ठूंठ से उसकी आँख पर आघात करने की चेष्टा कर रहा है। कुम्भकर्ण अपने बांये हाथ

से दो वंदरों के गले घोंट रहा है और मणिबन्ध को छाती पर दबका कर एक और वंदर को रुद्ध-कण्ठ करके मृत्यु-मुख में भेजने को है। दूसरे हाथ से उसने दो वंदर मार कर जमीन पर पटक दिये हैं और एक और वंदर को पकड़ कर निर्जीव करने को है, जिसको छुड़ाने के लिए एक और बन्दर कुम्भकर्ण के मणिबन्ध पर चढ़ रहा है; इसी हाथ में वह पूँछों से एक छोटे से वानर-यूथ को पकड़े हुए है। उसके मुख की सीध में दूसरे वंदर आतङ्क से गिरते पड़ते भागे जा रहे हैं। यह सब युद्ध-काण्ड के ६७-६६ सर्गों में भली भाँति वर्णन किया गया है।

---

१०४ वां दृश्य

इस दृश्य में, जहाँ पनतरन की रामायणीय तक्षण-परम्परा समाप्त हो जाती है, सम्भवतः कुम्भकर्ण पर अङ्गद, हनुमान् और एक राक्षस, जो शायद विभीषण का कोई अनुचर है, और जिसके पास एक गोल ढाल और तलवार है, आक्रमण करते दिखलाये गये हैं। अङ्गद कुम्भकर्ण पर एक पर्वत उखाड़ कर फेंक रहा है, और हनुमान् उस पर लोहे की विशाल गदा से प्रहार कर रहा है।

जालतुण्ड का आलेख्य

प्राम्बनम् और पनतरन के रामायणीय तक्षण के अतिरिक्त, जिनमें रामायणीय-घटनाएँ प्रदर्शित की गई हैं, हमें रामायण की घटनाओं के विकीर्ण तक्षण जावा के अन्य स्थानों में भी उपलब्ध होते हैं जो पुरातत्त्व-विद् के फावड़े से पृथ्वी के गर्भ से प्रकाश में लाये गये हैं।

इस प्रकार एक पटल, जो प्रायः पूर्ण है और जिस पर एक रामायणीय आख्यान प्रदर्शित किया गया है, हाल ही में जाल-तुण्ड नामी स्थान में खोदकर निकाला गया है। यह स्थान कुछ ही समय पहिले तक श्मशान-घाट और पवित्र तीर्थ का काम देता था। आलेख्य-पटल की प्रतिमाओं के कुछ अंश, विशेष करके उनके चेहरे, विच्छिन्न हो गये हैं, और इसलिए यह असभ्य जंगली-जातियों की, और विशेष करके मुसलमानों की, करतूत मालूम होती है, जो आरम्भिक-काल से ही हिन्दू, यूनानी और फ़ारसी तक्षण कला के सुन्दर निर्माणों को इसी प्रकार देखते रहे हैं जैसे कोई भीत-चकित और झुंझलाया हुआ स्पेनी बैल किसी लाल चिथड़े को देखता है।

उक्त आलेख्य में प्रदर्शित-घटना सम्भवतः केकय देश के राजा युद्धजित् के पुरोहित का दिग्दर्शन कराती है, जो राम के पास यह प्रार्थना करने आ रहा है कि वे अपने पुत्रों के साथ

भरत को गन्धार-देश जीतने के लिए भेज दें, जिस का वर्णन उत्तर-काण्ड के १००वें सर्ग में किया गया है।

यहाँ पेड़ों से भरी हुई अरण्यस्थली में तीनों भाई राम, लक्ष्मण और शत्रुघ्न बैठे हुए दिखलाये गये हैं। राम के चरणों में सबसे परे बांये छोर पर हम एक राजकुमार को पुष्पाञ्जलि-मुद्रा से हाथ जोड़े बैठा देखते हैं। यह शायद राजकुमार भरत हैं, जो अपने ननिहाल जाने से पहिले अपने बड़े भाई श्रीरामचन्द्र से विदा हो रहे हैं। आलेख्य की दाहिनी ओर मध्य में हमें एक ब्राह्मणी मूर्ति खड़ी दिखाई देती है, जिसका चेहरा और हाथ विशीर्ण हो चले हैं। अतएव यह राजा युद्धजित् का ब्राह्मण सन्देशहर अर्थात् अङ्गिरा ऋषि का पुत्र गार्ग्य हो सकता है। उसके पीछे धरती पर घुटने टेके तीन व्यक्ति आसीन हैं, जो सम्भवतः राम के शाश्वतिक परिचारक और विश्वास-भाजन सहायक हनुमान्, अङ्गद और सुग्रीव हैं, यद्यपि यहाँ उनकी उपस्थिति वाल्मीकीय विवरण के अनुकूल नहीं है।

पूर्वी जावा से उपलब्ध आलेख्य-पटल

लगभग छः और तक्षण पूर्वी जावा से उपलब्ध हुए हैं जिनका समय बहुत अर्वाचीन है, अथवा सम्भवतः जिनका सम्बन्ध जावा की हिन्दूकला की अन्तिम अवस्था से हैं, जो सोलहवीं शताब्दी के लगभग इस द्वीप से अन्ततः अन्तर्हित हुई। जावा

की कला की इस अवस्था पर मलाया और एशिया के अन्य प्रान्तों के देशी प्रभावों की पूर्ण प्रमुता है, जिसकी उषा के प्रकाश में भारतीय कला का दीपक बुझ गया और अन्ततः इस्लाम की विजयिनी सेनाओं के फैलाये हुए अन्धकार में मिल गया। इन छः तक्षणों में सबसे अधिक रोचक वह तक्षण है जिसमें अत्यन्त प्रारम्भिक ढंग पर रावण के द्वारा सीता का अपहरण दर्शाया गया है, किन्तु जिसके निर्माण में बड़ी ऊर्जस्विता और नैसर्गिकता प्रदर्शित की गई है। यहाँ हम एक राक्षस को, जो रावण का वाहन है, धरती पर कुहनियां टेके देखते हैं, जो उठने ही को है और सम्भवतः उड़ने अथवा भागने को है। उसके दांत और नेत्र किसी व्याघ्र अथवा सिंह जैसे विशाल हिंस्र-जन्तु के जैसे हैं, उसके शरीर के अवयवों में से केवल उसके हाथ ही ऐसे हैं जो मनुष्य के जैसे प्रतीत होते हैं और जो दोनों ही मणिबन्धों पर टूटे हुए हैं। उसके शरीर के ऊपर, और अंशतः उसके शिर के ऊपर, उस ही जैसा एक व्याघ्रमुखी दानव एक स्त्री के शरीर को दृढ़ता से पकड़ कर थामे हुए है, जिसकी मुद्रा से ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई माता अपने शिशु को किसी मित्र या नातेदार को दे रही हो। इस दानव की नाक कुछ अंश में निशीर्ण हो गई है, और उसका शरीर अत्यन्त अपरिष्कृत और भद्दे ढंग पर तक्षण किया गया है, जैसा कि आजकल भी दक्षिण भारत में पुराने ढर्रे

के लोगों का रिवाज है।

अतएव उक्त स्त्रीरूपिणी प्रतिमा सम्भवतः सीता को और उस पर वरजोरी करने वाला अथवा उसका अपहरण करने वाला व्यक्ति लंकेश्वर रावण को प्रदर्शित करता है, जब कि इन दोनों को लेजाने वाला व्यक्ति किसी राक्षस को दर्शाता है जो रावण का वाहन है। इसी शाखा से सम्बन्ध रखनेवाले अथवा पनतरन के तक्षणों की अपेक्षा किञ्चित् उत्तरकालीन दो और तक्षण रामायणीय प्रदर्शन के अङ्ग कहे जा सकते हैं। ये तक्षण पूर्वी जावा में सुरवन के हिन्दू मन्दिर से उपलब्ध हुए हैं। पहिले में वनवास से पूर्व राम और सीता से राजमाताओं, कौशल्या और सुमित्रा, की भेंट दिखलायी गई है। इस दृश्य का उद्घाटन एक रूढि के अनुसार प्रचलित उद्यान में होता है, जहाँ उसके अनोखेपन के होते हुए भी हम आसानी से परिचित झाड़ियों और पेड़ों को, विशेष करके केले के पेड़ को जिस पर केलों के गुच्छे लटक रहे हैं और नारियल के पेड़ को जिसका तना सीधा और लम्बा है और जिसके पंख जैसे पत्ते हैं, पहिचान सकते हैं। सबसे परे दाहिनी ओर का व्यक्ति सम्भवतः राम है और सबसे परे बाईं ओर स्त्री-रूपिणी प्रतिमाएँ राजमाताओं की हैं, जब कि मध्यवर्तिनी मूर्ति सम्भवतः सीता को प्रदर्शित करती है। कौशल्या स्नेह से अपनी पुत्रवधू का हाथ पकड़े हुई है, जो सम्भवतः

अपने हाथ में जलपात्र लिये हुई है, ताकि वह उससे अपने पति के हाथ में स्वीकृति के जल का अभिषिञ्चन कर सके, जब कि श्रीरामचन्द्र वन को विदा होने से पहिले ब्राह्मणों और अन्य लोगों को अपनी सर्वस्व दान कर रहे हैं, जिसका वर्णन अयोध्या काण्ड में अत्यन्त रोचक और हृदयङ्गम ढंग से किया गया है।

तक्षण के दूसरे भाग में एक राक्षस पलथी मारे जमीन पर बैठा दिखलाया गया है। उसका शरीर सीधा लम्बाकार उठा हुआ है, और वह अपनी दोनों हथेलियों को दृढता से अपने घुटनों पर रक्खे हुए है। उसके मणिबन्ध भारी कङ्कनों से अलंकृत हैं, उसके कान फटे हुए और विस्तृत हैं, उसके गले में एक भद्दा सा कण्ठा है और उसकी नाभि और चूचियां खुली दिखाई गई हैं। उसका शरीर साधारण राक्षसों का जैसा ही है, उसकी आंखें गोल और बाहर को निकली हुई हैं, उसकी दाढ़ें सिंह की जैसी हैं, उसकी नाक चपटी और नासा-रन्ध्र गहरे हैं, जिनसे उसकी अनार्य आकृति व्यक्त होती है। उसके बाल जुल्फों के रूप में दिखाई देते हैं, और वह अपने विशाल शिर पर उस मण्डप को उठाये हुए प्रतीत होता है जिसके नीचे वह बैठा हुआ है, जब कि उसके ऊपर और वास्तुकला के उस अंश के ऊपर जिसको वह थामे हुए है सजावट की एक पंक्ति प्रदर्शित की गई है जिसमें रूढि के अनुकूल फूलों का केन्द्र प्रमुख है।

के लोगों का रिवाज है।

अतएव उक्त स्त्रीरूपिणी प्रतिमा सम्भवत सीता को और उस पर बरजोरी करने वाला अथवा उसका अपहरण करने वाला व्यक्ति लंकेश्वर रावण को प्रदर्शित करता है, जब कि इन दोनों को लेजाने वाला व्यक्ति किसी राक्षस को दर्शाता है जो रावण का वाहन है। इसी शाखा से सम्बन्ध रखनेवाले अथवा पनतरन के तक्षणों की अपेक्षा किञ्चित् उत्तरकालीन दो और तक्षण रामायणीय प्रदर्शन के अङ्ग कहे जा सकते हैं। ये तक्षण पूर्वी जावा में सुरवन के हिन्दू मन्दिर से उपलब्ध हुए हैं। पहिले में वनवास से पूर्व राम और सीता से राजमाताओं, कौशल्या और सुमित्रा, की भेंट दिखलायी गई है। इस दृश्य का उद्घाटन एक रूढि के अनुसार प्रचलित उद्यान में होता है, जहाँ उसके अनोखेपन के होते हुए भी हम आसानी से परिचित झाडियों और पेड़ों को, विशेष करके केले के पेड़ को जिस पर केलों के गुच्छे लटक रहे हैं और नारियल के पेड़ को जिसका तना सीधा और लम्बा है और जिसके पख जैसे पत्ते हैं, पहिचान सकते हैं। सबसे परे दाहिनी ओर का व्यक्ति सम्भवत. राम है और सबसे परे बाई ओर स्त्री-रूपिणी प्रतिमाएँ राजमाताओं की हैं, जब कि मध्यवर्तिनी मूर्ति सम्भवत सीता को प्रदर्शित करती है। कौशल्या स्नेह से अपनी पुत्रवधू का हाथ पकड़े हुई है, जो सम्भवत'

अपने हाथ में जलपात्र लिये हुई है, ताकि वह उससे अपने पति के हाथ में स्वीकृति के जल का अभिषिञ्चन कर सके, जब कि श्रीरामचन्द्र वन को विदा होने से पहिले ब्राह्मणों और अन्य लोगों को अपनी सर्वस्व दान कर रहे हैं, जिसका वर्णन अयोध्या काण्ड में अत्यन्त रोचक और हृदयङ्गम ढंग से किया गया है।

लक्षण के दूसरे भाग में एक राक्षस पलथी मारे जमीन पर बैठा दिखलाया गया है। उसका शरीर सीधा लम्बाकार उठा हुआ है, और वह अपनी दोनों हथेलियों को दृढता से अपने घुटनों पर रक्खे हुए है। उसके मणिबन्ध भारी कङ्कनों से अलंकृत हैं, उसके कान फटे हुए और विस्तृत हैं, उसके गले में एक भद्दा सा कण्ठा है और उसकी नाभि और चूचियां खुली दिखाई गई हैं। उसका शरीर साधारण राक्षसों का जैसा ही है, उसकी आंखें गोल और बाहर को निकली हुई हैं, उसकी दाढ़ें सिंह की जैसी हैं, उसकी नाक चपटी और नासा-रन्ध्र गहरे हैं, जिनसे उसकी अनार्य आकृति व्यक्त होती है। उसके बाल जुल्फों के रूप में दिखाई देते हैं, और वह अपने विशाल शिर पर उस मण्डप को उठाये हुए प्रतीत होता है जिसके नीचे वह बैठा हुआ है, जब कि उसके ऊपर और वास्तुकला के उस अंश के ऊपर जिसको वह थामे हुए है सजावट की एक पंक्ति प्रदर्शित की गई है जिसमें रूढि के अनुकूल फूलों का केन्द्र प्रमुख है।

पूर्वी जावा में चण्डिजागो के मन्दिर से एक मनोविनोदकारी तक्षण-खण्ड उपलब्ध हुआ है, जो सम्भवतः दो दृश्यों में विभक्त किया जा सकता है । पहिला दृश्य अथवा सबसे परे बांये छोर का व्यक्ति राजकुमार लक्ष्मण को प्रदर्शित करता है, जिन्हें राम ने अपने निवास-भवन के बाहर यह कह कर कड़ा पहरा देने के लिये नियुक्त किया था कि किसी व्यक्ति को अन्दर न आने देना, यदि कोई अन्दर आवेगा तो उसको मृत्यु-दण्ड दिया जावेगा। दूसरे दृश्य में शायद यही राजकुमार रोषाविष्ट दुर्वासा ऋषि को राम के सामने लाते हुए दर्शाया गया है, क्योंकि ऋषि ने यह धमकी दी थी कि यदि मुझे इसी क्षण महाराज रामचन्द्र के सन्मुख न ले जाओगे तो मैं सारे अयोध्या के राज्य को शाप दे डालूंगा । इस घटना का वर्णन वाल्मीकीय रामायण के उत्तर काण्ड के १०५–१०६ सर्गों में किया गया है, जहाँ हम देखते हैं कि लक्ष्मण सारे अयोध्या के राज्य के अभिशप्त होने की अपेक्षा आत्मविनाश को ही अधिक उचित समझता है । राम झुंझला कर लक्ष्मण को पूछ रहे हैं कि तुमने मेरी आज्ञा का उल्लङ्घन क्यों किया है, जब कि सम्भवतः ऋषि अपने सहस्रवर्ष के उपवास के अनन्तर राम से रुचिकर भोजन मांग रहा है । अन्तरिक्ष में प्रदर्शित दो व्यक्तियों में से दाहिनी ओर का व्यक्ति शायद ब्रह्मा है, और उसके पीछे बांई

ओर का व्यक्ति शायद वह दूत है जिसको उसने देवताओं की ओर से राम को यह स्मरण दिलाने के लिये भेजा था कि आप की पृथिवी पर रहने की अवधि समाप्त हो चुकी है और इसलिए आपको उसे छोड़कर शीघ्र ही स्वर्ग को लौट कर अपना उचित-स्थान ग्रहण करना चाहिए।

पूर्वी जावा में दो और तक्षण मिले हैं जो केदातन के मन्दिर पर खुदे हुए हैं। इनमें भगवान् विष्णु के वाहन दिव्य गरुड़ की चेष्टाएँ और विक्रम प्रदर्शित किये गये हैं। पहिले में उस विक्रम का दिग्दर्शन है जिसमें वह स्वर्ग से अमृत-कलश को छीनते हुए दिखलाया गया है, और दूसरे में उसके उस विक्रम का प्रदर्शन है जिसमें उसने महासागर के मध्यवर्ती किसी द्वीप के सारे दुष्ट निवासियों को अपने कन्दराकार मुख से निगल डाला था।

जिस प्रकार जावा में आरम्भिक उपनिवेश बसानेवाले प्रायद्वीप के दक्षिण तट से गये हुए तामिल या हिन्दू थे उसी प्रकार कम्बोडिया के आरम्भिक उपनिवेश बसानेवाले भी इसी हट्टी कट्टी जाति से सम्बन्ध रखनेवाले थे, अर्थात् ये भी वे लोग थे जो कृष्णा और महानदी के दक्षिण में रहते थे। ब्राह्मण कौण्डिन्य के अधिष्ठातृत्व में वे तामिल देश की कला और संस्कृति को काम्भोज प्रदेश में ले गये, और वहाँ उन्होंने एक विस्मयावह सभ्यता की

स्थापना की जो तब तक अपना बोलबाला बनाये रही जब तक हिन्दू जाति ने दक्षिण में इस्लाम के निरन्तर उठते हुए ज्वार के विरुद्ध अपने प्रभुत्व को बनाये रक्खा। जिस शताब्दी में हिन्दुओं ने अपने धर्म के शत्रुओं के प्रबल युद्ध के विरुद्ध अन्तिम वीरता का परिचय दिया उसी शताब्दी में उद्वेलित-समुद्रों से परे उनके दूर दूर तक फैले हुए साम्राज्य भी असभ्य जगली जातियों के आक्रमण का शिकार हो गये। यह सब कुछ होते हुए भी वे हमारे लिये अपनी तक्षण-साधना की प्राचीन कीर्तियों को छोड़ गये हैं, जिनमें मन्दिरों की भित्तियों और प्राकारों पर वाल्मीकि के अमर वीरकाव्य का प्रदर्शन कोई कम महत्त्व का नहीं है। नौवीं और चौदहवीं शताब्दियों के मध्यवर्ती काल के बने हुए कम से कम चार पुराने मन्दिर कम्बोडिया में ऐसे हैं जिनकी दीवारों पर रामायणीय कथा के दृश्य तक्षण के रूप में प्रदर्शित किये गये हैं। इन मन्दिरों के नाम हैं फनौम-पेन, वाटफ्राकेओ, बपुआन और अङ्कोरवाट। इनमें चूँकि अङ्कोरवाट के मन्दिर पर इस तक्षण-परम्परा के सबसे अधिक और सबसे बढ़कर नमूने समाविष्ट हैं, हम सबसे पहिले उस ही पर विचार करेंगे।

इस मन्दिर की गैलरियों में रामायणीय तक्षण दीवारों पर और अन्य अनेकों स्थानों पर बिना किसी क्रम अथवा कारण के खुदे हुए हैं, और अधिकाश दशाओं में वे महाभारत के दृश्यों के

साथ मिले हुए भी मिलते हैं। अतएव हमें यहाँ वह अविच्छिन्न परम्परा अथवा चतुरस्रता दृष्टिगोचर नहीं होती जो जावा में प्राम्बनम् के शिव-मन्दिर की विशेषता थी। फिर भी हम दृश्यों को चुन चुनकर उनकी तदीयता का पता लगाने की कोशिश करेंगे।

पश्चिमी गैलरी में अनेकों रामायणीय तक्षणों की तदीयता का पता लगाया जा सकता है, जिनमें से सब लङ्का के विख्यात युद्ध की किसी न किसी घटना को प्रदर्शित करते हैं। ये दृश्य एक ही ढंग से अत्यधिक एकतानता और पुनरुक्ति-पूर्वक प्रदर्शित किये गये हैं, जिससे उनको एक दूसरे से सुलझा कर पृथक् करना वस्तुतः बहुत कठिन काम है। सारा खुदा हुआ तक्षण घने बुने हुए वस्त्र के सदृश है, जिससे केवल गहनों और विशेष चित्रणों का ही चयन किया जा सकता है। इस आलेख्य के केन्द्र में हम एक दृश्य को पहचान सकते हैं, जिस में राम रावण पर आक्रमण करते हुए दर्शाये गये हैं। राम की सेना के बन्दर और रीछ हथियारों के बदले पेड़ों के तनों, चट्टानों के टुकड़ों और शैलखण्डों को प्रयुक्त करते हुए दिखलाये गये हैं, जिनको वे राक्षसों को लक्ष्य करके फेंक रहे हैं। इस भूल-भुलैयां के मध्य में दो व्यक्ति, जो एक दूसरे के सन्मुख खड़े हैं, साफ़ पहिचाने जा सकते हैं। इनमें से एक कोई दिव्य व्यक्ति है, जो एक विशाल-काय बन्दर के कंधों पर चढ़ कर युद्ध कर रहा

स्थापना की जो तब तक अपना बोलबाला बनाये रही जब तक हिन्दू जाति ने दक्षिण में इस्लाम के निरन्तर उठते हुए ज्वार के विरुद्ध अपने प्रभुत्व को बनाये रक्खा। जिस शताब्दी में हिन्दुओं ने अपने धर्म के शत्रुओं के प्रबल युद्ध के विरुद्ध अन्तिम वीरता का परिचय दिया उसी शताब्दी में उद्वेलित-समुद्रों से परे उनके दूर दूर तक फैले हुए साम्राज्य भी असभ्य जंगली जातियों के आक्रमण का शिकार हो गये। यह सब कुछ होते हुए भी वे हमारे लिये अपनी तक्षण-साधना की प्राचीन कीर्तियों को छोड़ गये हैं, जिनमें मन्दिरों की भित्तियों और प्राकारों पर वाल्मीकि के अमर वीरकाव्य का प्रदर्शन कोई कम महत्त्व का नहीं है। नौवीं और चौदहवीं शताब्दियों के मध्यवर्ती काल के बने हुए कम से कम चार पुराने मन्दिर कम्बोडिया में ऐसे हैं जिनकी दीवारों पर रामायणीय कथा के दृश्य तक्षण के रूप में प्रदर्शित किये गये हैं। इन मन्दिरों के नाम हैं फ्नौम-पेन, वाटफ्राकेओ, बपुआन और अङ्कोरवाट। इनमें चूँकि अङ्कोरवाट के मन्दिर पर इस तक्षण-परम्परा के सबसे अधिक और सबसे बढ़कर नमूने समाविष्ट हैं, हम सबसे पहिले उस ही पर विचार करेंगे।

इस मन्दिर की गैलरियों में रामायणीय तक्षण दीवारों पर और अन्य अनेकों स्थानों पर बिना किसी क्रम अथवा कारण के खुदे हुए हैं, और अधिकांश दशाओं में वे महाभारत के दृश्यों के

साथ मिले हुए भी मिलते हैं। अतएव हमें यहाँ वह अविच्छिन्न परम्परा अथवा चतुरस्रता दृष्टिगोचर नहीं होती जो जावा में प्राम्बनम् के शिव-मन्दिर की विशेषता थी। फिर भी हम दृश्यों को चुन चुनकर उनकी तदीयता का पता लगाने की कोशिश करेंगे।

पश्चिमी गैलरी में अनेकों रामायणीय तक्षणों की तदीयता का पता लगाया जा सकता है, जिनमें से सब लङ्का के विख्यात युद्ध की किसी न किसी घटना को प्रदर्शित करते हैं। ये दृश्य एक ही ढंग से अत्यधिक एकतानता और पुनरुक्ति-पूर्वक प्रदर्शित किये गये हैं, जिससे उनको एक दूसरे से सुलझा कर पृथक् करना वस्तुतः बहुत कठिन काम है। सारा खुदा हुआ तक्षण घने बुने हुए वस्त्र के सदृश है, जिससे केवल गहनों और विशेष चित्रणों का ही चयन किया जा सकता है। इस आलेख्य के केन्द्र में हम एक दृश्य को पहचान सकते हैं, जिस में राम रावण पर आक्रमण करते हुए दर्शाये गये हैं। राम की सेना के बन्दर और रीछ हथियारों के बदले पेड़ों के तनों, चट्टानों के टुकड़ों और शैलखण्डों को प्रयुक्त करते हुए दिखलाये गये हैं, जिनको वे राक्षसों को लक्ष्य करके फेंक रहे हैं। इस भूल-भुलैयां के मध्य में दो व्यक्ति, जो एक दूसरे के सन्मुख खड़े हैं, साफ पहिचाने जा सकते हैं। इनमें से एक कोई दिव्य व्यक्ति है, जो एक विशाल-काय बन्दर के कंधों पर चढ़ कर युद्ध कर रहा

है। अतएव यह व्यक्ति राम को छोड़कर और कोई नहीं हो सकता, जो हनुमान् की पीठ पर चढ़कर अपनी पत्नी के अपहारक और घातक शत्रु रावण को अपने अमोघ-बाणों का लक्ष्य बना रहे हैं। उनके सामने का विराट्-काय राक्षस रावण है, जो अपने दश सीस और बीस भुजाओं से पहिचाना जा सकता है।

इस समुदाय के निकट हमें एक और युद्ध का दृश्य दिखाई देता है, जिसमें एक राक्षस किसी विकराल रणहस्ती पर आरूढ है, और उसके ठीक ऊपर एक वानर सेनानी की प्रतिच्छाया है, जो अपने हाथों में एक पेड़ को उखाड़ कर उठाये हुए है। अतएव यह बानर सेनाध्यक्ष नील और रावण के प्रमुख समराध्यक्षों में से एक अर्थात् महोदर के युद्ध का दिग्दर्शन है, जो वाल्मीकीय रामायण के युद्धकाण्ड के सत्तरवें सर्ग के २६–३२ सर्गों में बहुत अच्छे नैसर्गिक ढंग से वर्णन किया गया है। उक्त उन्मूलित वृक्ष से नील महोदर की खोपड़ी पर ऐसा कठोर प्रहार करता है कि राक्षस निष्प्राण हो कर धड़ाम से धरती पर गिर पड़ता है।

एक और समर-दृश्य नरान्तक और अङ्गद के युद्ध और लड़ाई की अन्तिम अवस्थाओं को प्रदर्शित करता है। यहाँ अङ्गद के एक हाथ में एक वृक्ष है और दूसरे हाथ से वह बरबस

नरान्तक की तलवार को छीनने की चेष्टा कर रहा है, ताकि वह इस दानव की खोपड़ी को विदीर्ण करके उसे यम लोक को भेजे, जैसा कि युद्धकाण्ड के चौवनवें सर्ग के ३४--३७ श्लोकों में वर्णन किया गया है।

एक और चौथा दृश्य अङ्गद और वज्रदंष्ट्र और सुग्रीव और कुम्भ के मल्लयुद्ध को प्रदर्शित करता है, जिसका वर्णन युद्धकाण्ड में दिया गया है। किन्तु ये रणकौतुक और मल्लयुद्ध इतने नीरस और उद्वेजक हैं कि इनको यहीं पर छोड़ कर हम अधिक रोचक विषयों पर विचार करने के लिये अग्रसर होते हैं।

इन पटलों का उद्घाटन, जिन पर हम विचार करने लगे हैं, राम के द्वारा मिथिलेश्वर जनक के धनुष को झुकाने और तोड़ने से होता है, जिससे राम जनकनन्दनी का पाणिग्रहण करने में समर्थ होते हैं। इन पटलों का अन्त भी आनन्ददायक है, क्योंकि अन्तिम पटल पर हम सीता की अग्नि-परीक्षा के बाद राम और सीता को एक साथ पुष्पक-विमान पर बैठे देखते हैं।

इन पटलों पर भी समग्र घटना-क्षेत्र इतना विचपिच है और उसमें जीवन और कर्मण्यता की इतनी प्रचुरता है कि देखते देखते जी उकता जाता है।

पहिले पटल पर, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, धनुर्भङ्ग और राम के साथ सीता के पाणिग्रहण का दिग्दर्शन है। बाल-

काण्ड के सतसठवें सर्ग के १४–१७ श्लोकों में इस घटना का वर्णन इस प्रकार दिया गया है,—

"जनक की बातों को सुनने के पश्चात् विश्वामित्र कहते हैं—'तात राम ! यह है वह धनुष।' विश्वामित्र की बात के उत्तर में राम धनुष को नंगा करते हैं, फिर उसको देखते हैं और इसके बाद महर्षि से उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ाने और उसे पूर्ण-विस्तार से खींचने की अनुमति मांगते हैं। ऋषि और राजा दोनों की अनुमति पाकर श्रीरामचन्द्र सहस्रों मनुष्यों की भीड़ के सामने खेल में जैसे उस धनुष को बीचों-बीच पकड़ लेते हैं और उस पर बड़ी आसानी से प्रत्यञ्चा चढ़ाते हैं। फिर प्रत्यञ्चा को तान कर वे धनुष को खींचते हैं, मानो उससे तीर छोड़ने को हों। इस खिंचाव के कारण धनुष बीचों-बीच से टूटकर दो टुकड़े हो जाता है, और उससे वज्र की जैसी भयंकर ध्वनि निकलती है।"

यह पटल, जो मन्दिर के कुट्टिम पर उत्तर-पश्चिमी कोने में मिलता है, चार भागों में विभक्त किया जा सकता है। सबसे उपरले भाग का प्रस्तुत घटना से कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि उसमें अन्तरिक्ष में अथवा पृथिवी पर किसी युद्ध का दृश्य दिखलाया गया है। सम्भवतः यदि इसका कोई अभिप्राय हो सकता है तो हम उस युद्ध का उपलक्षण मान सकते हैं जो जनक ने सीता

के पाणिग्रहण से निराश हुए और इस कारण झुंझलाये हुए राजा-महाराजों के साथ किया था।

सिर से नीचे के दूसरे भाग में धनुर्भङ्ग की घटना का दिग्दर्शन है। यहां आलेख्य के मध्य में हम राम को खड़े देखते हैं। उनके सिर पर मणि और मुकुट विराज रहे हैं, उनके पैर आलीढ़-मुद्रा की दशा में एक दूसरे से पृथक् हैं, और ये अपने बांये हाथ से धनुष को बीचों-बीच पकड़ कर अपने सिर के ऊपर उठाये हुए हैं और उसको देख रहे हैं, जब कि उनके दाहिने हाथ में तीर है। इस केन्द्रवर्तिनी प्रतिमा के पार्श्व में दाहिनी ओर सबसे पहिले विश्वामित्र की प्रतिच्छाया प्रदर्शित की गई है, जो अपने दढ़ियल चेहरे से पहिचाने जा सकते हैं और चिन्तातुर दृष्टि से धनुष को निहार रहे हैं। उनके पीछे तीन और व्यक्ति आसीन हैं, जिनमें ऋषि की दाहिनी ओर का दूसरा व्यक्ति राजकुमार लक्ष्मण हो सकता है। राम की बांई ओर सबसे पहिले एक राजकुमारी सिंहासन पर बैठी हुई दिखलाई गई है, जो आभरणों और एक विलक्षण किरीट से अलंकृत है; उसके पीछे और व्यक्ति, सम्भवतः स्त्रियां, उपस्थित हैं। अतएव यह प्रतिच्छाया जनक-नन्दनी सीता की हो सकती है।

सिर से नीचे की तीसरी पंक्ति में हम मध्य में एक राजसी प्रतिमा को आसीन देखते हैं, जिसके सिर पर मुकुट विराज रहा

है और जिस के एक हाथ में एक फूल है। अतएव यह मिथिला के राजा जनक हो सकते हैं । राजा के पीछे उनका कोई दरबारी हाथ में पंखा लिये खड़ा है । इसके पीछे राजसी आभरणों से सजा हुआ एक और व्यक्ति है, उसके पीछे भी एक पंखा झलनेवाला है । अतएव यह व्यक्ति राजा जनक का भाई सिरध्वज हो सकता है, जिसकी कन्यायें सीता के साथ ही राजा दशरथ के दूसरे पुत्रों को ब्याही गई थीं ।

नीचे चौथी और पांचवीं पंक्तियों में राजा जनक के दरबार का दिग्दर्शन कराया गया है ।

दूसरे रामायणीय पटल पर राम और लक्ष्मण के द्वारा कबन्ध राक्षस का वध दिखलाया गया है, जिसका वर्णन हम पहिले कर चुके हैं । यहाँ प्राम्बनम् के कबन्ध की अपेक्षा यह राक्षस अधिक विचित्र ढंग से प्रदर्शित किया गया है, दृश्य अधिक स्वाभाविक है और तक्षण वाल्मीकि के विवरण के अनुसार है । वाल्मीकि के वर्णन के अनुसार यहाँ भी हम राम को कबन्ध की एक भुजा और लक्ष्मण को उसकी दुसरी भुजा विच्छिन्न करते देखते हैं ।

तीसरे पटल पर हम उस घटना को प्रदर्शित देखते हैं जिसमें विराध सीता को अपने कंधे पर लेकर जंगल के अन्दर भाग चला था । दैत्य का एक हाथ सीता की पीठ पर है और

दूसरे हाथ में वह अपने लम्बे भाले को उठाये हुए है जिसका वर्णन वाल्मीकि ने बड़े अच्छे ढंग से किया है। राम और लक्ष्मण दैत्य की दोनों ओर उसके विशाल वक्षःस्थल को अपने बाणों का लक्ष्य करते हुए दिखलाये गये हैं। यह दृश्य एक वनस्थली में प्रदर्शित किया गया है जिसमें घने वृक्ष और झाड़ियां दिखलाई गई हैं। यह प्रदर्शन भी प्राम्बनम् के तक्षण की अपेक्षा वाल्मीकि के विवरण के अधिक अनुकूल है।

चौथे पटल पर माया-मृग के वेश में मारीच का वध दिखलाया गया है, जिसका वर्णन हम प्राम्बनम् के रामायणीय तक्षणों में कर चुके हैं। प्रस्तुत आलेख्य में हम राम को आलीढ़ मुद्रा से उसके मध्य में खड़े देखते हैं। उनका धनुष अत्यन्त तना हुआ दिखलाया गया है, जिससे एक बाण छूट कर माया-मृग की गर्दन को छेद रहा है, जो इस वज्र-जैसे मरणान्तक आघात से स्तब्ध होकर अपने मुख को राम की ओर घुमाये हुए है। मध्यवर्ती समुदाय के दोनों पार्श्वों में दण्डकारण्य के ऋषि दीर्घ जटा-मुकुट धारण किये आसीन हैं, उनके हाथ आशीर्वाद-मुद्रा की हालत में हैं और वे राम को दीर्घ जीवन और समृद्धि का आशीर्वाद दे रहे हैं। इन समुदायों के पीछे घन-वृक्ष सुन्दर नैसर्गिक ढंग से दर्शाये गये हैं, जब कि उनके नीचे ज़मीन पर लता गुल्म आदि, जो उष्ण-कटिबन्ध के प्रत्येक जंगल में पाये

जाते हैं, वैसे ही अच्छे ढंग से प्रदर्शित किये गये हैं।

पांचवें रामायणीय पटल पर राम और सुग्रीव की मित्रता प्रदर्शित की गई है। यहाँ आलेख्य के मध्य में हम राम को एक वृक्षों से भरी हुई अरण्यस्थली के बीच प्रमुखता से आसीन देखते हैं। उनके पीछे बांई ओर किञ्चित् निम्न स्थल पर उनका भाई लक्ष्मण बैठा हुआ है, जिसके कंधे और वक्षःस्थल पर एक तलवार लटक रही है। लक्ष्मण के पीछे बांई ओर सम्भवतः नल और नील हैं। राम के सामने वक्षःस्थल से हाथ लपेटे अत्यन्त आदर भाव से सुग्रीव आसीन है। सुग्रीव के पीछे दाहिनी ओर दो और व्यक्ति बैठे हैं, जिन में से पहिला हनुमान् है और दूसरा जाम्बवान्।

छटे पटल पर राम के द्वारा विभीषण का स्वागत दर्शाया गया है। यहाँ पटल पर हम राम को वृक्षों से भरी हुई अरण्यस्थली में बीचों बीच बैठें देखते हैं। उनके पीछे हाथ में तलवार लिये राजकुमार लक्ष्मण हैं, और इनके पीछे सिर पर मुकुट धारण किये आसीन वानर शायद सुग्रीव है। सुग्रीव के पीछे दाहिनी ओर दो और वानर-सेनानी आसीन हैं, जिनमें से पहिला, जिस के होंठों पर मुसकान झलक रही है, शायद अङ्गद है और दूसरा वानर-सेना का समराध्यक्ष नील। राम अपने एक हाथ को अपनी अँकवार में रक्खे हुए हैं, और उनका दूसरा हाथ आशी-

वाद-मुद्रा में स्थित है। राम के सामने एक हाथ में तलवार लिये रावण का सबसे छोटा भाई विभीषण बैठा हुआ है, उसका दूसरा हाथ उसके वक्षःस्थल पर रक्खा हुआ है जिससे वह अपनी नेक नीयत और इमानदारी की दाद दे रहा है। विभीषण के पीछे दो वानर हैं जिनमें से एक अर्थात् उसके ठीक पीछे का वानर शायद हनुमान् है, जो विभीषण जैसे अपरिचित व्यक्ति के हाथों में राम की सुरक्षितता पर सन्देह कर रहा है।

सातवें पटल पर बालि और सुग्रीव का मल्लयुद्ध दर्शाया गया है, जिसका वर्णन हम पहिले कर चुके हैं। यह विवरण वाल्मीकीय वर्णन और प्राम्बनम् के तात्त्विक प्रदर्शन दोनों ही से भिन्न है। यहाँ हम आलेख्य के मध्य में वालि और सुग्रीव को युद्ध करते देखते हैं। सुग्रीव वालि के नीचे पड़ा हुआ है, जिसकी एक टांग सुग्रीव की टांगों से बटी हुई है और उसकी दूसरी टांग को सुग्रीव अपनी बाहों में लपेट कर उसे नीचे पटकने की चेष्टा कर रहा है। वालि का एक हाथ सुग्रीव की गर्दन पर है और दूसरे हाथ से वह उसकी खोपड़ी को विशीर्ण करने के लिए तलवार को उठाये हुए है। सुग्रीव अपने एक हाथ को वालि के कंधे पर रख कर उसकी चेष्टा को विफल कर रहा है। इस प्रकार वालि का तलवार से सज्जित होना न तो रामायण ही में मिलता है और न प्राम्बनम् के तक्षणों में।

इन दोनों मल्लों के ऊपर, अन्तरिक्ष में, उड़ते हुए व्यक्ति दर्शाये गये हैं जिनमें स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष अधिक हैं। इनके नीचे विविध वानर प्रदर्शित किये गये हैं, जिनमें से दाहिनी ओर के वानर वालि के अनुयायी हैं, और उनमें भी प्रथम व्यक्ति स्वयं उसका पुत्र युवराज अंगद है जो अपने सिर पर मुकुट धारण किये हुए है।

बांई ओर दूर पर एक और समुदाय प्रदर्शित किया गया है। यहाँ हम राम को धनुष ताने आलीढ-मुद्रा से स्थित देखते हैं। उनके एक हाथ में पक्षधर बाण है जिसको वे धनुष पर सन्धान करने को हैं। उनके पीछे एक हाथ में प्रत्यञ्चा चढ़ाये हुए धनुष और दूसरे हाथ में एक तीर लिये, जो पृथिवी की ओर झुका हुआ है, राजकुमार लक्ष्मण खड़े हैं।

उनके पीछे दो वानर उनके चरणों में बैठे हुए ऊपर को देख रहे हैं, और इसी प्रकार राम के सामने भी तीन बन्दर हैं जो उत्सुकता से लड़ाई के परिणाम की प्रतीक्षा में हैं। अत-एव ये वानर सुग्रीव के वे पांच अनुयायी होंगे जिनके साथ उसने भाग कर ऋष्यमूक पर्वत की शरण ली थी और सामने का व्यक्ति, जो अपनी तर्जनी से किसी वस्तु की ओर निर्देश कर रहा है, स्वयं हनुमान् होगा।

आठवें पटल पर सीता की अग्निपरीक्षा प्रदर्शित की गई है, जो न प्राम्बनम् के आलेख्यों में मिलती है और न पनतरन के

तक्षणों में। यह दृश्य वाल्मीकीय रामायण के युद्ध काण्ड के ११५–१२१ सर्गों में वर्णन किया गया है।

यह पटल बहुत कुछ निच्छिन्न और विशीर्ण हो चला है, जिससे निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि इसमें कौन कौन है। फिर भी हम थोड़ा बहुत अनुमान से काम ले सकते हैं। आलेख्य के मध्य में अग्नि की लपलपाती हुई ज्वालाएँ प्रदर्शित की गई हैं, जो सम्भवतः उस चिता को उपलक्षित करती हैं जिसको सीता ने अपने लिये लक्ष्मण से रचवाया था। दुर्भाग्य से पटल की निर्शीर्णता के कारण यहाँ सीता की आकृति का कोई पता नहीं चलता। अग्निस्तम्भों के सिरे की ओर दोनों पार्श्वों में उड़ते हुए जन्तु दर्शाये गये हैं, जो अत्यन्त भव्य आभरणों और मुकुटों से अलंकृत है और जिनमें से एक या दो सर्प की आकृति के धनुषों को धारण किये हुए हैं; अतएव ये देवता और दिक्पाल एवं ब्रह्मा और विष्णु होंगे जो स्वर्ग से राम को यह मन्त्रणा देने आये थे कि वे अपनी पत्नी के प्रति विष्णु के अवतार के अनुरूप आचरण करें, साधारण कोटि के क्षुद्र व्यक्ति की भाँति नहीं। अग्नि की ज्वालाओं के मध्य की ओर बाईं तरफ एक व्यक्ति अपने हाथ में धनुष लिये बैठा हुआ दर्शाया गया है, जिसके चेहरे से असीम शोक झलक रहा है। अतएव यह राजकुमार लक्ष्मण ही सकता है। ज्वालाओं की

दाहिनी ओर एक गौरवमय राजसी व्यक्ति प्रदर्शित किया गया है, जो आभरणों और मुकुट से अलंकृत है और तर्जनी से अग्नि की ओर निर्देश कर रहा है और जिसके चेहरे से अत्यधिक क्रोध झलक रहा है जिसमें करुणा का अभाव नहीं•। अतएव यह श्रीरामचन्द्र की प्रतिच्छाया हो सकती है। इनकी बराबरी पर सबसे परे दाहिनी ओर अत्यधिक आदर भाव से दो मुकुटधारी व्यक्ति बैठे हुए हैं; इनमें से पहिला व्यक्ति विभीषण हो सकता है जिसको राम ने हाल ही में लंका का राजा बनाया था, और दूसरा व्यक्ति सम्भवतः सुग्रीव है जिसको राम ने उसके बड़े भाई को मार कर किष्किन्धा के सिंहासन पर बैठाया था। ज्वालाओं के तल की ओर, बांई तरफ, हमें एक मुकुटधारी वानर दिखाई देता है, जो आग की लपटों को निहार रहा है और उत्सुकता और प्रतीक्षा की जैसी हालत में पैरों की उंगलियों पर खड़ा है। अतएव यह सीता का अनन्य भक्त, राम का स्वामिभक्त भृत्य और वानरराज सुग्रीव का मन्त्री हनुमान् हो सकता है। आलेख्य के दूसरे पार्श्व पर दाहिनी ओर दूसरे आसीन व्यक्ति उत्सुकता से अग्नि की ज्वालाओं को निहारते हुए दर्शाये गये हैं। अतएव ये वे दरबारी, सेनाध्यक्ष और अन्य लोग होंगे जो इस अवसर पर एकत्रित हुए थे और जिनके सामने सीता को बिना अवगुण्ठन के उपस्थित करके लज्जित किया गया था। इस पंक्ति के नीचे

दरबारियों और अन्य लोगों की एक और पाँक्ति दहकती हुई ज्वालाओं की दोनों ओर बैठी हुई दिखलाई गई है।

नौवें पटल पर राम को लंका विजय के बाद पुष्पक विमान पर अयोध्या को लौटते हुए दर्शाया गया है। इस घटना का वर्णन वाल्मीकीय रामायण के युद्धकाण्ड के १२४-१२५ सर्गों में किया गया है।

यहाँ इस पटल पर हम पुष्पक विमान को प्रदर्शित देखते हैं, जिसकी सबसे उपरली गैलरी के मध्य में राम की दिव्य और गौरवमय राजसी मूर्ति प्रमुखता से प्रदर्शित की गई है। पटल की निशीर्णता के कारण सीता और लक्ष्मण दोनों ही की प्रतिच्छायाएँ अन्तर्हित हो चली हैं। किन्तु राम की बाईं ओर उनके सच्चे वानर मित्र राजा सुग्रीव की आसीन मूर्ति पहचानी जा सकती है जो पीपल के पत्ते की आकृति के मेहराब के नीचे स्थित है, और इसी प्रकार ऐसे ही मेहराब के नीचे उनकी दाहिनी ओर विभीषण की आकृति का पता लगाया जा सकता है। इन सामन्तों के दोनों पार्श्वों में और इससे नीचे दो या अधिक पंक्तियों में वे सारे राक्षस और वानर दर्शाये गये हैं जो राम के साथ अयोध्या को आये थे; इनमें सुग्रीव के पीछे वानरों के बीच एक पंक्ति में कुछ स्त्रियां भी दृष्टिगोचर होती हैं।

कम्बोडिया के अङ्कोरवाट मन्दिर में

इन रामायणीय उपाख्यानों के अतिरिक्त, जिनका वर्णन पहिले किया जा चुका है, हम अङ्कोरवाट के भव्य मन्दिर में रामायण के अन्य आख्यानों को चूर्णलेप आदि पर प्रदर्शित देखते हैं, जिन में से निम्न लिखित दृश्य आसानी से पहिचाने जा सकते हैं,—

(१) रावण का किसी अज्ञात विपत्ति से विह्वल होना।

(२) वालि और सुग्रीव का मल्लयुद्ध, जिसमें राम के तीर से वालि की मृत्यु दिखाई गई है।

(३) वानरों और वालि के बन्धु बान्धवों का उसकी पत्नियों के साथ वानरराज के लिये शोक मनाना।

(४) युद्ध-क्षेत्र में राम और लक्ष्मण का इन्द्रजित् के दिव्य अस्त्र से बांधा जाना और बन्दरों का शोक और दुःख से कातर होना।

(५) कुम्भकर्ण पर बन्दरों का आक्रमण और उसका बन्दरों में आतङ्क फैलाना।

(६) हनुमान् का मैनाक पर्वत को उठा लाना, जिस पर मृत-सञ्जीवनी बूटी उग रही थी, और इस प्रकार राम लक्ष्मण और सारी सेना को चेत करना।

(७) राम का हनुमान् के कंधे पर चढ़कर रावण से युद्ध करना।

चूंकि इनमें से अधिकांश के अच्छे फोटो-ग्राफ प्राप्य नहीं हैं, हम यहाँ पर केवल एक दृश्य का विस्तार से वर्णन करेंगे। पेरिस के ब्लेकेदरो अजायब घर में वालि की मृत्यु के विलाप के दृश्य की एक बहुत बढ़िया प्रतिच्छाया विद्यमान है। इसमें हम आलेख्य के बीचोंबीच वानरराज को पीठ के बल धरती पर पड़ा हुआ देखते हैं, उसकी आँखें मृत्यु की मूर्च्छा में अर्द्धनिमीलित हैं, उसके कान कुण्डलों से अलङ्कृत हैं और उसके सिर पर कोनाकार राजमुकुट है। वह कण्ठा, कंगन, आदि आभरण भी पहिने हुए है और उसके वक्षःस्थल पर राम का पक्षधर बाण अभी तक चुभा हुआ है। उसके पीछे उसका भाई सुग्रीव उसके सिर को अपने अङ्क में लिये हुए है। उसके मुख से असीम शोक झलक रहा है जो गहरी निराशा का रूप धारण करते हुए प्रतीत होता है। वह भी आभरणों से अलङ्कृत है, किन्तु उसका मुकुट तिहरे नुकीले सिरों से युक्त है और एक दूसरे के ऊपर रखे हुए, क्रमशः घटते हुए परिमाण, के कलशों की तरह दिखाई देता है। वालि के सिर के पीछे सुग्रीव से किञ्चित् निम्न स्थान पर दो वानर-वीर आसीन हैं, जो सम्भवतः हनुमान् और नील हैं, और इनके पीछे दो और वानर-सरदार हैं। सुग्रीव के पास ही एक पंक्ति में पांच और वानर-वीर बैठे हैं, जो सम्भवतः वे पांच व्यक्ति हैं जो सुग्रीव के

साथ ऋष्यमूक पर्वत को भागे थे, ताकि वे निर्वास में अपने स्वामी का साथ दें। इन पांच वानर सरदारों के पार्श्व में पांच और व्यक्ति प्रदर्शित किये गये हैं, जो सम्भवतः सबकी सब स्त्रियां हैं। बांई ओर की पहिली स्त्री जो जमीन पर खड़ी है और सम्भवतः अपने हाथों से अपनी छाती पीट रही है, शायद सुग्रीव की पत्नी रुमा है, जिसको वालि ने बरबस उसके पति से छुड़ाकर अपने अन्तःपुर में रक्खा था, क्योंकि वह सारी वानर-सुन्दरियों में सबसे अधिक रूपवती थी। दूसरी रमणी, जो उसकी एड़ियों पर बैठी हुई है, शायद युवराज अंगद की माता तारा है। उसके पीछे युवराज अङ्गद प्रदर्शित किया गया है, जो अपनी माता के ही समान शोकाकुल चित्त से अपने पिता को अन्तिम श्रद्धाञ्जलि चढ़ा रहा है। इस विलाप के दृश्य की पृष्ठभूमि पर उष्ण कटिबन्ध के पेड़ों से हरी भरी घनी अरण्य-स्थली प्रदर्शित की गई है। सारा दृश्य स्वाभाविकता और भावावेश से अनुप्राणित और परिप्लावित हो रहा है।

कम्बोडिया के बापुआन (स्वर्ण-शृङ्ग) मन्दिर में

अङ्कोरवाट के विश्रुत मन्दिर से कुछ मील की दूरी पर बेयोन के उत्तर में बापुआन (स्वर्ण-शृङ्ग) मन्दिर स्थित है, जो सम्भवतः जयवर्मा पंचम के राजत्वकाल में उसके गुरु और पुरोहित मुनि शिवाचार्य की देख-रेख में बना था। यह गगन-

भेदी, शुण्डाकार, विशाल मन्दिर परिमाण और घनता में केवल मिस्र-देश के दो सबसे बड़े पिरामिडों से उतरकर है; उसका प्रत्येक पार्श्व चार सौ फीट लम्बा है, और मन्दिर एक दूसरे के ऊपर बने हुए चबूतरों पर स्थित है, जिनमें प्रत्येक एक एक गैलरी से घिरा हुआ है। सबसे ऊँची गैलरी का प्राचीर दृश्यों और निम्न आलेख्यों से आकीर्ण है, जिनमें प्रधान दृश्य श्रीकृष्ण अथवा राम के जीवन की घटनाओं को प्रदर्शित करते हैं।

रामायण के दृश्यों में से निम्नलिखित आलेख्य आसानी से पहिचाने जा सकते हैं,—(१) हनुमान् के द्वारा राम वा लक्ष्मण का सुग्रीव को मिलना और उसके साथ अग्नि को साक्षी करके मित्रता गाँठना।

(२) वालि और सुग्रीव का अन्तिम युद्ध, जो खमेर शिल्पियों को इतना रुचिकर और हृदय-हारी रहा है।

(३) लंका के युद्ध-क्षेत्र में राम और रावण का विकट संग्राम।

(४) सीता की अग्निपरीक्षा।

(५) राम का राज्याभिषेक।

बापुआन (स्वर्णशृङ्ग) के अतिरिक्त कम्बोडिया में और भी मन्दिर हैं जिनकी दीवारों, वीथियों और प्राचीरों पर रामायण की शृङ्खल आख्यायिकाएँ निम्न तक्षणों के रूप में प्रदर्शित की

गई हैं। इनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मन्दिर ये हैं,—

(१) चनलुङ्ग का पुराना मन्दिर, (२) प्रिंगक्रींग का मन्दिर, (३) कुकक्रनेट का देवालय।

कुकक्रनेट के मन्दिर में रामायणीय प्रदर्शनों के अतिरिक्त हमें वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखनेवाले विषयों को समझानेवाली आख्यायिकाएँ भी आलेख्य के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं; उदाहरण के लिये गजलक्ष्मी और विष्णु अनन्तशयन का अभिषेक, *जिसमें लक्ष्मी अपने पति के पैर दाबती हुई दिखलाई गई है।*

प्राह थीट बैरे के मन्दिर के दरवाजों के शहतीरों पर दो निम्न आलेख्य ध्यान देने योग्य और बहुत रोचक हैं। इन में उत्तरवर्ती द्वार पर समुद्र-मन्थन का दृश्य दिखलाया गया है, जो कम्बु की सन्तान (खमेरों) के लिये सदा हृदयहारी रहा है। यह दृश्य केवल अंकोरवाट के मन्दिर पर ही दो बार नहीं दर्शाया गया है किन्तु कम्बोडिया में अन्यत्र भी इसके कम से कम आधा दर्जन प्रदर्शन विद्यमान हैं। इसी प्रकार अप्सरा मीरा की सन्तान पर वालि और सुग्रीव के युद्ध का भी असाधारण प्रभाव पड़ा है, और इसलिए आश्चर्य नहीं कि प्राह थीट बैरे के उत्तरी द्वार पर भी यह दृश्य अंकित किया गया है, यद्यपि यहाँ यह प्रदर्शन अंकोरवाट के मन्दिर के इसी विषय के प्रदर्शन से बिल्कुल भिन्न है। यहाँ इस आलेख्य में कम्बोडिया के तत्सम्बन्धी अन्य

आलेख्यों की अपेक्षा अधिक ऊर्जस्विता प्रदर्शित की गई है। आलेख्य के मध्य में हम दोनों वानर-बन्धुओं को असीम क्रोध से एक दूसरे पर टूटते हुए देखते हैं। एक पैर को आलीढ-मुद्रा से आगे बढ़ा कर और दृढ़ता से धरती पर जमा कर और अपने शरीर के भार को धरती पर टिके हुए घुटने के बल सम्हाल कर, वर्षा ऋतु के श्यामवर्ण बाष्पमय गम्भीर नीरद की भाँति गरजते हुए और झुंझलाते हुए वे एक दूसरे पर अपने मुक्कों से वज्र जैसे कठोर और विद्युत् जैसे तीव्र प्रहार कर रहे हैं। वालि दाहिनी और सुग्रीव बाईं ओर है, दोनों की आकृति एक जैसी है और दोनों एक जैसे ही मुकुट धारण किये हैं। सुग्रीव के पीछे एक पेड़ की आड़ में, जो अपने पत्तों से पीपल का पेड़ जैसा लगता है, राम की अंशतः छिपी हुई प्रतिच्छाया प्रदर्शित की गई है; उनकी टांगें आलीढ मुद्रा से स्थित हैं और वे अपने दीर्घ और दृढ़ धनुष से, जो उनके दाहिने हाथ में पूर्ण विस्तार से तना हुआ है, तीर छोड़ रहे हैं।

दाहिनी ओर वालि के पीछे सम्भवतः राजकुमार लक्ष्मण प्रदर्शित किये गये हैं, जो अपने धनुष से लैस हैं और बिल्कुल शान्त और स्थिर दिखाई देते हैं; उनका दाहिना हाथ उनके वक्षःस्थल पर है और उनके होंठों से मधुर मुस्कान झलक रही है। लक्ष्मण का यह प्रदर्शन वाल्मीकीय विवरण के प्रतिकूल

लक्ष्मण के पीछे एक वानर धरती पर बैठा हुआ है 'और वालि और सुग्रीव के जैसा ही मुकुट धारण किये हुए है । उसका बांया हाथ उसकी अँकवार में है और अपने दाहिने हाथ को वह लक्ष्मण की भांति अपने वक्षःस्थल पर लगाये हुए है । उसके चेहरे पर बहुत भारी और गहरी चिन्ता की प्रतिच्छाया पड़ी हुई है, और वह विचार-सागर में डूबा हुआ जैसा प्रतीत हो रहा है । अतएव यह सुग्रीव के सुहृद् और प्रधान-मन्त्री हनुमान् के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता, जो टकटकी लगाये युद्ध के परिणाम को देख रहा है और यह जानने के लिये उत्सुक है कि देखें राम अपनी प्रतिज्ञा 'का पालन करते हैं या नहीं ।

बेयोन के विश्रुत-मन्दिर में

यशोधपुर या अंकोरथाम (नगरधाम) नगर के ठीक मध्य में बेयोन का विश्रुत मन्दिर स्थित है, जिसकी दीवारों पर उसके स्थापक और कम्बोडिया के सबसे अधिक प्रतापी राजाओं में से एक, अर्थात् यशोवर्मा ,की जीवनी और उसके विक्रम अंकित किये गये हैं । इनमें जनरल, सम्राट् और महान् विजेता के रूप में केवल उसके कार्य ही प्रधान रूप से प्रदर्शित नहीं हैं किन्तु यहाँ हम उसकी भीषण शारीरिक शक्ति और उसके विशाल कद का भी दर्शन करते हैं, क्योंकि यहाँ एक आलेख्य में हम उस

को एक सिंह से लड़ते हुए और उसका गला मरोड़ते हुए देखते हैं, मानो वह भीगे हुए वस्त्र का टुकड़ा हो जिससे कोई पानी निचोड़ रहा हो। सम्राट् के वैयक्तिक पराक्रम के कारनामों और स्वयं उसके और उसके समराध्यक्षों के रणकौतुकों के अतिरिक्त हमें रामायण और महाभारत के भी कतिपय प्रदर्शन उपलब्ध होते हैं। महाभारत के प्रदर्शनों में अर्जुन और किरात-वेशधारी शिव का युद्ध उल्लेखनीय है, जिसको महाकवि भारवि ने अपने विश्रुत काव्य किरातार्जुनीय में और भारतीय तक्षणकला ने महाबलीपुरम् के चट्टान पर स्थित अर्जुन की विख्यात तपोभूमि पर अमर बना दिया है, जो बकिंगहम नहर मार्ग से मद्रास से पैंतीस मील दूर है।

रामायण के प्रदर्शनों में से कम से कम चार प्रदर्शन पहिचाने जा सकते हैं। ये हैं,—(१) वह दृश्य जिसमें सम्भवतः देवतालोग भगवान् विष्णु से प्रार्थना कर रहे हैं कि वे पृथिवी पर मनुष्य के रूप में अवतर कर संसार को रावण की निष्ठुरताओं से मुक्त करें। यहाँ हम लहरों से उद्वेलित क्षीरसागर को और पूर्ण कर्मण्यता से युक्त मछलियों आदि के रूप में उसमें रहनेवाले जल-जन्तुओं को प्रदर्शित देखते हैं। आलेख्य के बांये छोर पर हम विष्णु को देखते हैं जो अपने एक हाथ को आशीर्वाद मुद्रा से उठाये हुए हैं। उनके दोनों पार्श्वों में झुके हुए व्यक्ति दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमें से दाहिनी ओर के व्यक्ति

व्यक्ति सम्भवतः राजा जनक है, जिनके सिर पर मुकुट विराजमान है और जो मुसकराते हुए अपनी बांई ओर के आसीन व्यक्ति के साथ बातें कर रहे हैं। इस व्यक्ति की दिव्य आकृति से प्रतीत होता है कि यह इक्ष्वाकु वंश के कुल पुरोहित महर्षि विश्वामित्र हैं। इस मण्डली के नीचे एक और जनसमुदाय है, जो सम्भवतः राजा जनक के दरबारियों को प्रदर्शित करता है, और जनक की दाहिनी ओर की प्रतिच्छाया जो बहुत कुछ विशीर्ण हो गई है शायद मिथिलेश्वर की पुत्री सीता हैं। इस आलेख्य की पृष्ठभूमि पर नैसर्गिक और कृत्रिम वनस्पति-जगत् के मध्य में सुन्दर मण्डप दर्शाये गये हैं।

(४) इस दृश्य में रावण को कैलाश पर्वत को झकझोरते हुए दिखलाया गया है। यही दृश्य कम्बोडिया के बांटेयी स्रेयी (ईश्वरपुर) के मन्दिर के तक्षणों में भी प्रदर्शित किया गया है, जो दक्षिण भारतीय हिन्दुओं की तक्षण कला का अभिप्रेत विषय रहा और जिसको इसी कारण एलोरा और एलिफैंटा के चट्टानों के तक्षणों में प्रधान स्थान दिया गया है। यहाँ हम शिव को अपनी दाहिनी और बांई ओर के व्यक्तियों के मध्य में किञ्चित् ऊँचे आसन पर बैठे देखते हैं। उनका दाहिना हाथ वरद-मुद्रा की हालत में स्थित है और बांये हाथ में त्रिशूल लेकर वे उसको अपने वक्षःस्थल पर रक्खे हुए हैं।

देवताओं को और बाईं ओर के ऋषियों को प्रदर्शित करते हैं। भगवान् के ऊपर देवी देवता, गन्धर्व और किन्नर मंडराते हुए दिखाई देते हैं, जिनमें से कुछ अपने हाथों में मालाएँ लिये हुए हैं और कुछ केवल अञ्जलिमुद्रा की हालत में हाथ जोड़े हुए हैं। विष्णु के पैरों के नीचे कमलयोनि ब्रह्मा हाथ जोड़े राजलीला आसन से कमल पर बैठे हुए दर्शाये गये हैं, जब कि रक्तकमल की अनगिनत पंखुड़ियां तह की तह उठती हुई और उन्हें ढांपती हुईं जैसी दिखलाई गई हैं।

(२) सम्भवतः यह दृश्य उस घटना का दिग्दर्शन है जिसमें राम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के लिए सुबाहु, मारीच और अन्य राक्षसों से युद्ध करते हैं, यद्यपि हमें इस अटकल में पूर्ण निश्चय नहीं है।

(३) सम्भवतः इस दृश्य में राम को अजगव धनुष तोड़ते और फलतः जनक-नन्दनी सीता का पाणिग्रहण करते दिखलाया गया है। यहाँ आलेख्य में हम रामको आलीढ मुद्रा की हालत में धनुष ताने और उस पर और पृथिवी पर दृष्टि गड़ाये देखते हैं। उनकी दाहिनी ओर दो और व्यक्ति आसीन हैं, जिनमें से राम के पास का व्यक्ति शायद उनका भाई लक्ष्मण है जो अपने हाथ में धनुष लिये एकाग्र चित्त से अपने भाई की करतूत को निहार रहे हैं। राम की बांईं ओर भी दो व्यक्ति आसीन हैं, जिनमें से राजमण्डप के नीचे का

व्यक्ति सम्भवतः राजा जनक है, जिनके सिर पर मुकुट विराजमान है और जो मुसकराते हुए अपनी बांई ओर के आसीन व्यक्ति के साथ बातें कर रहे हैं। इस व्यक्ति की दिव्य आकृति से प्रतीत होता है कि यह इक्ष्वाकु वंश के कुल पुरोहित महर्षि विश्वामित्र हैं। इस मण्डली के नीचे एक और जनसमुदाय है, जो सम्भवतः राजा जनक के दरबारियों को प्रदर्शित करता है, और जनक की दाहिनी ओर की प्रतिच्छाया जो बहुत कुछ विशीर्ण हो गई है शायद मिथिलेश्वर की पुत्री सीता हैं। इस आलेख्य की पृष्ठभूमि पर नैसर्गिक और कृत्रिम वनस्पति-जगत् के मध्य में सुन्दर मण्डप दर्शाये गये हैं।

(४) इस दृश्य में रावण को कैलाश पर्वत को झकझोरते हुए दिखलाया गया है। यही दृश्य कम्बोडिया के बांटियी स्रेयी (ईश्वरपुर) के मन्दिर के तक्षणों में भी प्रदर्शित किया गया है, जो दक्षिण भारतीय हिन्दुओं की तक्षण कला का अभिप्रेत विषय रहा और जिसको इसी कारण एलोरा और एलिफैंटा के चट्टानों के तक्षणों में प्रधान स्थान दिया गया है। यहाँ हम शिव को अपनी दाहिनी और बाई ओर के व्यक्तियों के मध्य में किञ्चित् ऊँचे आसन पर बैठे देखते हैं। उनका दाहिना हाथ वरद-मुद्रा की हालत में स्थित है और बाये हाथ में त्रिशूल लेकर वे उसको अपने वक्षःस्थल पर रक्खे हुए हैं।

उनकी दोनों ओर के व्यक्ति हाथ जोड़े उनकी आराधना करते हुए जैसे प्रतीत होते हैं। इस आलेख्य की विशेषता, जो अन्यत्र देखने में नहीं आती, यह है कि इसमें शिव के साथ पार्वती नहीं दर्शायी गई हैं। समाधिस्थ शिव के बहुत नीचे रावण अपनी भुजाओं से कैलाश पर्वत को झकझोरता हुआ प्रदर्शित किया गया है। उसके कंधों की दोनों ओर दस दस भुजाएँ दिखलाई गई हैं। उसके दस सिरों में से उसका सबसे बड़ा और प्रधान सिर बीचोंबीच प्रदर्शित किया गया है और गर्दन के ठीक ऊपर यह सबसे निचला सिर है। दूसरे सिरों में से दूसरी पंक्ति के तीन सिर मुख्य दिशाओं की ओर प्रदर्शित किये गये हैं, और सबसे ऊपर शिखर पर केवल एक सिर दर्शाया गया है। उसका एक पैर लक्ष्यवेध की हालत में स्थित है और दूसरे पैर के घुटने को चट्टान के टूटे कूट अथवा कठोर धरती पर टेक कर वह कैलाश पर्वत को उखाड़ फेंकने की चेष्टा कर रहा है। उसकी दोनों ओर अजगर और विषैले नाग दिखाई देते हैं, जो अपने विवरों से निकल कर संक्षुब्ध जैसे हो रहे हैं और क्रोध से फुंकारते हुए अपने फनों को उठाये हुए हैं। बाईं ओर किञ्चित् ऊँचे स्थल पर कैलाश के रहनेवाले गन्धर्व, किन्नर और शिव के अन्य गण भय से गिरते पड़ते भागे आ रहे हैं

श्रौर इस हड़बड़ी में सिंह, जंगली सुअर, मृग जैसे बनैले पशु भी, जो यहाँ सुन्दर नैसर्गिक ढंग से दर्शाये गये हैं, उनके साथ साथ भागते हुए दिखलाये गये हैं।

बांगकौक के निकट वाट प्राइ केद के मन्दिर में, जो अब उजाड़ हो गया है, हमें एक द्वार के ऊपर का शहतीर मिलता है जो अंशतः विशीर्ण और विच्छिन्न हो चला है, जिस पर एक रामायणीय घटना दर्शायी गई है जो सम्भवतः वालि की मृत्यु और उसके दाह-संस्कार की सूचक है । आलेख्य के मध्य में हम वालि के मृत शरीर को उत्तान पड़ा हुआ और तना हुआ देखते हैं। उसके सिर पर मुकुट है और उसके कानों से कुण्डल लटक रहे हैं । मृत वानराज के सिर के निकट एक राजसी व्यक्ति अत्यन्त शोक और तीव्र वेदना की हालत में जमीन पर बैठा हुआ दिखाई देता है, उसके सिर पर मुकुट और कानों पर कुण्डल हैं, और वह अत्यन्त निराशा की दशा में अपने दाहिने हाथ को अपने कपोल पर रक्खे हुए है। उसके पैरों के निकट सम्भवतः उसकी पत्नी तारा है, जो अत्यन्त विनीत भाव से अपने पति और प्रेमी को अन्तिम श्रद्धाञ्जलि चढ़ा रही है । तारा के पीछे एक और छोटा सा वानर ठिठक कर बैठा हुआ है, जो सम्भवतः युवराज अङ्गद है, और जो अपने प्राणाधिक पिता की मृत्यु के कारण सिसक रहा है । दाहिनी ओर

सुग्रीव से कुछ ऊपर शायद विवेकशील हनुमान् आसपास बैठे हुए व्यक्तियों को सान्त्वना दे रहा है । थोड़ी से कुछ और व्यक्तियों के सिर और शरीर अंशतः दृष्टिगोचर होते हैं, किन्तु भ्यालेख्य की जीर्णता के कारण न तो उन्हें पहिचाना ही जा सकता है और न उनके पहिचानने से किसी प्रयोजन के सिद्ध होने की ही आशा है ।